वर्ष 41 अंक : 3 10.5.2018 गुरुवार (मई-जून) वार्षिक शुल्क : ` 111.00

भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम को पाये

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् । विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ॥ शिक्षापत्री, ११६

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

उत्सव का परिसर–दिव्यधाम

यहाँ जो भी आए होंगे, वे लौट कर ये नहीं कहेंगे कि हम दिल्ली के उत्स में गए थे, ये ज़रूर कहेंगे कि हम हमारे उत्सव में गए थे। – प.पू. गुरुजी

शताब्दी शिविर की पूर्व तैयारियाँ...

सर्वोपरि उत्सव होगा। बस, सब भजन करते हुए मिलजुल कर सेवा - कार्य करना। – संतभगवंत प.पू. साहेबजी

अहो हो, खूब अद्भुत उत्सव !
1952 से 1966 तक काकाजी - पप्पाजी का बगीचा जैसा था, ऐसा ही दर्शन यहाँ हो रहा है !

– प.पू. ज्योति बहन

*[**अहो हो !** यह उत्सव तो बहुत ही अद्भुत हुआ। पूरे उत्सव में चारों ओर भरपूर मिठास थी। जहाँ नज़र डालें वहाँ अपनत्व से युक्त एकत्व की भावना का उठाव दिखता था। अहो हो ! गुरुहरि हरिप्रसादस्वामी और साहेब की मूर्ति पधरा कर तो डंका बजा दिया। **जिसमें 'स्व' की अस्मिता नहीं होती, वही अपने आपको कुछ न मान कर सभी को महाराज का स्वरूप मानता है।** गुरुजी स्वयं ऐसा जीते हैं। अपने संबंध वालों में ऐसा ही सिंचन किया है, इसलिए सभी स्वरूपमय हो गए हैं। आपने गुरुजी की शोभा बढ़ाई... 1952 से 1966 तक काकाजी - पप्पाजी का बगीचा जैसा था, ऐसा ही दर्शन यहाँ होता है।*

प्रत्यक्ष स्वरूप में खो जाएं, तभी अपना आकार रहता नहीं... गुरुजी सभी के साथ मिलजुल कर रहते हैं और स्वयं मूर्ति में लयलीन रह कर मूर्ति स्वरूप बन गए...

एक बार काकाजी ने प्रश्न पूछा कि अक्षरधाम की चाबी क्या ? हम तो विचार में पड़ गए और कितने शब्द लिख डाले। रात को काकाजी ने पूछा कि अक्षरधाम की चाबी का जवाब लिखा ? हम कुछ कहें, इतने में तो वे स्वयं ही बोले –

'यथार्थ स्वरूपनिष्ठा - रख कर आज्ञा का पालन करो...'

बस यही निशान पकड़ कर हम - तुम लग पड़े...]

गुरुहरि काकाजी - पप्पाजी की बंधुजोड़ी शताब्दी शिविर की फलश्रुति रूप, **प.पू. ज्योति बहन** के उपरोक्त आशीर्वाद वाक़ई **गुरुहरि योगीजी महाराज** की परावाणी का एहसास कराते हैं –

हम जैसे अन्य किसी को भाग्यशाली मानना यही हमारी भूल...

गर्व से हम जिसे 'योगी परिवार' – 'गुणातीत कुनबा (समाज)' कहते हैं,
जिसने हमें अपने अभिन्न अंग के रूप में अपनाया है,
उसी के दृष्टा-सृष्टा **गुरुहरि काकाजी एवं पप्पाजी महाराज का शताब्दी पर्व**,
शिविर के रूप में 'भारत की राजधानी दिल्ली' के अशोकविहार स्वामिनारायण मंदिर में
हर्षोल्लास से मनाया जाना जीवन की एक अनमोल पूँजी कही जाए।
और साथ ही,
प्रगट ब्रह्मस्वरूप **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी एवं संतभगवंत साहेबजी** की
संगमरमर की मूर्तियों का प्रतिष्ठित होना 'गुणातीतभावना' का एक प्रतीक है।
अब दिल्ली मंदिर का सिंहासन –

श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज,

अक्षरपुरुषोत्तम की सनातन युगल उपासना के प्रवर्तक,

और

गुणातीत समाज के आद्य सर्जकों के साथ-साथ नींव की विभूतियों की प्रगट हाज़िरी से परिपूर्ण हो गया!

यूं तो **प.पू. गुरुजी** के आशीर्वाद और **प.पू. आनंदी दीदी** के मार्गदर्शन में सालभर से शिविर की प्लानिंग और तैयारियाँ शुरू हो गई थीं। परंतु, अन्नकूटोत्सव के बाद से युद्धस्तर पर सेवा होने लगी और उसे करने का बल और सूझ भी कृपा करके गुणातीत स्वरूपों ने स्वयं दी।

* दिनाँक 19 नवंबर की रात को सभा के बाद, करीब 9:40 से 11:00 बजे तक प.पू. गुरुजी ने मंदिर में उपस्थित एक-एक सेवक को याद करके, पराँठे व थेपले पर खुद अपने हाथों से सब्जी और मक्खन डाल-डाल कर प्रसाद दिया; जिसका रहस्य **प.पू. दीदी** ने सभी को समझाया –

  गुरुजी ने राज़ी होकर, इस प्रसाद से एक-एक सेवक को दस सेवकों के बराबर सेवा करने की एनर्जी दी है।

* प.पू. गुरुजी, प.पू. काकाजी के कहे अनुसार, कोई भी महत्त्वपूर्ण कार्य बड़ों को पूछ कर या उनकी निश्रा में ही करते हैं और वैसे भी **यह तो न केवल दिल्ली का, बल्कि बृहद् गुणातीत समाज का उत्सव था।** सो, दिसंबर महीने की शुरुआत में ही जब प.पू. गुरुजी को **भारत के वित्तमंत्री श्री अरूण जेटलीजी** से मिलने के लिए एपॉइंन्टमेन्ट मिली, तो प.पू. गुरुजी ने सबसे पहले **प.पू. स्वामिजी, संतभगवंत प.पू. साहेबजी** एवं **प.पू. वशीभाई** से फोन पर बात करके साथ में चलने की विनती की। हाँलाकि 21 दिसंबर को तो सभी को आना ही था। लेकिन, **स्वरूपों के प्रति प.पू. गुरुजी का पूज्यभाव और प.पू. गुरुजी के साथ स्वरूपों का जो अद्‌भुत संबंध व प्रेम है,** उसका सम्यक् दर्शन हुआ। सभी ने तुरंत ही आने के लिए 'हाँ' कर दी। बेशक, नादुरुस्त तबियत के कारण प.पू. स्वामिजी का आना रद्द हुआ। लेकिन, प.पू. वशीभाई 10 की रात को आ गए और 11 की दोपहर तक प.पू. साहेबजी सेवक पू. अर्पितभाई के साथ दिल्ली मंदिर पहुँच गए। सायं 5:00 बजे श्री जेटली साहेब से मिलने गए और वहाँ पू. मनोजभाई सोनी के दफ्तर में पधरामनी करते हुए रात को मंदिर पहुँचे। अगले दिन 12 दिसंबर की सुबह करीब सवा दस बजे एयरपोर्ट जाते हुए **संतभगवंत प.पू. साहेबजी** शिविर के स्थल पर गए, जिसे प.पू. गुरुजी ने **'दिव्यधाम'** नाम दिया था। वहाँ टॅन्ट इत्यादि कुछ नहीं लगा था, केवल सफ़ाई हो रही थी। तब प.पू. साहेबजी ने अपने करकमलों में गुलाब की पंखुड़ियाँ लेकर दो बार धुन करके आशीर्वाद रूप वचन कहे –

  सर्वोपरि उत्सव होगा। बस, सब भजन करते हुए मिलजुल कर सेवा-कार्य करना।

  पूरे सभा मंडप और मंच के स्थल पर संतभगवंत प.पू. साहेबजी ने पुष्प वर्षा की।

  इस प्रकार, इन्होंने सर्वत्र शक्ति का संचार किया... साथ ही यह शिविर पूरे गुणातीत समाज की संयुक्त

होने के कारण, **1 दिसंबर** से ही **पू. गुरुजी (निष्कामजीवनस्वामिजी), पू. विज्ञानस्वामिजी, पू. बापुस्वामिजी, पू. ईलेशभाई, पू. हेमंतभाई मोदी, पू. वजुभाई** इत्यादि के नेतृत्व में, कई मुक्त दिल्ली मंदिर आकर अपनी-अपनी क़ाबिलीयत के अनुसार सेवा में जुट गए। **प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी** के साथ संत, युवक व बहनें एवं गुणातीत ज्योत से **प.पू. जसु बहन 20 दिसंबर** को दिल्ली आ गईं और... अगले दिन **21 दिसंबर** की सायं तक **संतभगवंत प.पू. साहेबजी, प.पू. शांतिभाई साहेब, प.पू. अश्विनभाई, प.पू. ज्योति बहन, प.पू. प्रेम बहन** एवं **प.पू. सुमन बहन** व कई मुक्त दिल्ली मंदिर पहुँच गए।

85 वर्षीय प.पू. ज्योति बहन की आयु और तबियत व दिल्ली की ठंड देखते हुए, उन्हें कष्ट न लेने के लिए प.पू. गुरुजी ने शिविर में न आने का प्रस्ताव रखा था। बेशक, भीतर से प्रार्थना करते हुए दिल्ली के मुक्तों की इच्छा बनी तो रही कि प.पू. ज्योति बहन स्वस्थ तबियत से इस उत्सव में ज़रूर पधारें। सो, उनकी पुकार सुन कर, 'योगी परिवार' के सर्जन की साक्षी बनीं और प.पू. काकाजी-पप्पाजी की निश्रा में गुणातीत रीति-नीति और स्थिति को पाई प.पू. ज्योति बहन कुछ भी गिने बिना, एक दिव्य माँ के रूप में सभी को आशिष व बल देने के लिए दिल्ली पहुँच ही गईं।

22 दिसंबर की सुबह **प.पू. दिनकरभाई, प.पू. भरतभाई, प.पू. महेन्द्र बापु, प.पू. वशीभाई** के साथ **प.पू. माधुरी बहन** एवं पवई मंदिर से जुड़े मुक्त, गुणातीत ज्योत से **पू. हंसाबहन गुणातीत, पू. माया बहन** एवं **पू. डॉ. नीलम बहन** के साथ व्रतधारी बहनें व मुक्त तथा **प.पू. शास्त्रीस्वामिजी, कोठारीश्री प.पू. प्रेमस्वामिजी** के साथ हरिधाम के संत, सहिष्णु भाई व भक्तिआश्रम की बहनें भी दिल्ली आईं। दोपहर की फ्लाईट से **प.पू. हंसा दीदी** एवं **प.पू. पदु बहन** भी मानो सेवा में जुटे मुक्तों का उत्साह बढ़ाने के लिए आ गईं। हाँलाकि प.पू. पदु बहन को अस्थमा की तकलीफ और ठंड के मौसम के कारण डॉक्टर्स उन्हें मना करते रहे, लेकिन प.पू. आनंदी दीदी द्वारा फोन पर एक ही बार की प्रार्थना सुन कर, वे भी आ ही गईं। यूं गुणातीत समाज से जुड़े देश-विदेश के अधिकांश मुक्त **22 दिसंबर** की सायं तक शिविर के लिए आ गए। क्योंकि – आज ही के मंगलकारी दिन दिल्ली-अशोकविहार स्वामिनारायण मंदिर के सिंहासन में, **प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी एवं संतभगवंत प.पू. साहेबजी की संगमरमर की मूर्ति** प्रत्यक्ष स्वरूपों के वरद् हस्तों से स्थापित होनी थी।

बंधुजोड़ी शताब्दी शिविर इस बार अशोकविहार के रामलीला ग्राउंड में आयोजित की गई थी। जैसे कि प.पू. गुरुजी ने इस परिसर का नाम **'दिव्यधाम'** दिया, वाक़ई नाम के अनुरूप पूरी शिविर के दौरान सभी ने वहाँ अनोखी दिव्यता का अनुभव किया। ऐसा लगा कि मानो एक अलग ही दुनिया में आ गए हैं। दिव्यधाम परिसर में सभाखंड का नाम हर बार की तरह **'कल्पवृक्ष'** रखा था। इसके मुख्य प्रवेश द्वार के समक्ष गुरुहरि **काकाजी-पप्पाजी की मूर्ति के हॉलो कट-आउट से थ्री डी त्रिकोण पॅरेगन** जो बनाया था, वो सभी के लिए आकर्षण का केन्द्र बना था और रात के अंधेरे में उसे फोकस करती चार लाईट्स तो इन आद्य सर्जकों की निश्रा में बैठ कर प्रार्थना करने के लिए प्रेरित करती थीं।

सायं 4:30 बजे 'दिव्यधाम' – **'कल्पवृक्ष'** सभा खंड में **प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी** एवं **संतभगवंत प.पू. साहेबजी** की पट की मूर्ति के समक्ष, गुरुहरि काकाजी महाराज के पुराने जोगी **पू. विनोदभाई पुरोहित** ने यज्ञ का शुभारंभ किया। **गुणातीत समाज** की **एकता के प्रतीक रूप** सभी केन्द्रों से कुल **12 दंपतियों** को यज्ञ में बिठाया गया। सायं करीब 6:00 बजे प.पू. हंसा दीदी, प.पू. ज्योति बहन, प.पू. जसु बहन, प.पू. प्रेम बहन एवं प.पू. दीदी ने श्रीफल की आहुति देकर यज्ञ की पूर्णाहुति की। तत्पश्चात् प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूपों, गणमान्य अतिथियों एवं केन्द्रों के चुनिन्दा मुक्तों ने मंदिर के लिए प्रस्थान किया। मंदिर के प्रमुख द्वार पर गुणातीत स्वरूपों की निश्रा में **पू. मल्कानी अंकल एवं पू. गर्ग अंकल** ने एक दिन पहले ही बन कर तैयार हुए **'बंधुजोड़ी शताब्दी द्वार'** का उद्घाटन किया। उद्घाटन के बाद सभी मंदिर के 'कल्पवृक्ष' हॉल में गए। लाल रंग की ज़रीयुक्त पोशाक और आज सुबह ही हरिधाम – **प.पू. प्रेम बहन** द्वारा अर्पण किए सुंदर मोर मुकुट पहने श्रीजी महाराज सबका मन मोह रहे थे। पू. विनोदभाई पुरोहित के मंत्रोच्चार के साथ प्रत्यक्ष स्वरूपों के करकमलों से मूर्तिप्रतिष्ठा की विधि हुई। तुरंत ही सेवक श्री ठाकुरजी के समक्ष अन्नकूट आयोजित करने में जुट गए और इसी दौरान प्रत्यक्ष स्वरूपों ने निम्न आशीर्वाद दिए...

संतभगवंत प.पू. साहेबजी

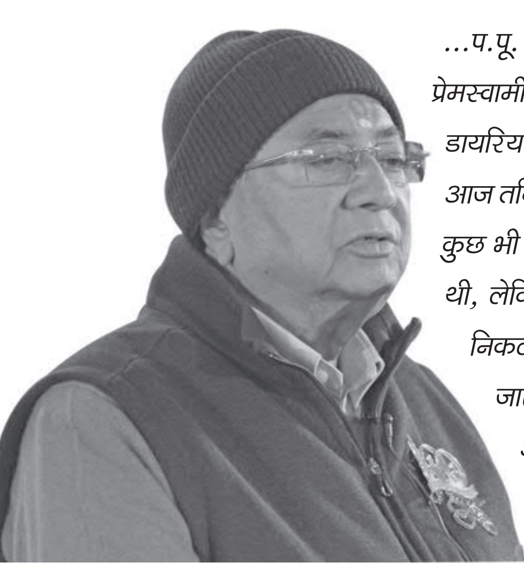

...प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी आने वाले थे; पर, आज सुबह गुरुजी और मेरी प्रेमस्वामी से बात हुई, तो पता चला कि हरिप्रसादस्वामिजी को 4-5 दिन से डायरिया हो गया था। बहुत अशक्ति थी, कल ही थोड़ा ख़ुराक ले पाए और आज तबियत थोड़ी अच्छी हो रही थी। प्रेमस्वामी ने फोन करके प्रार्थना करी कि कुछ भी करके या चार्टड फ्लाइट से भी आ जाएँ। प्रेमस्वामी की बहुत ख़्वाहिश थी, लेकिन त्यागवल्लभस्वामी का फोन आया कि 5-6 बजे तक मुश्किल से निकल पाएंगे और चार्टड फ्लाइट लेकर आएंगे तो भी रात को 9-10 बज जाएंगे। सो, अक्षरविहारीस्वामिजी व सबने तै किया कि विधि हम कर लें और प्रतिष्ठा की आरती कल स्वामिजी करेंगे। आज 'संध्या आरती' होगी और गुरुजी की बहुत ख़्वाहिश थी कि स्वामिजी के करकमलों से सब हो, तो 'प्रतिष्ठा की आरती' कल प.पू. स्वामिजी के करकमलों से होगी। यूं कल सुबह रियल प्रतिष्ठा होगी।

*जब ये मूर्तियों की बात छिड़ी थी, तो मैंने गुरुजी से बहुत प्रार्थना की थी कि ऐसा मत करो। **हम कुछ नहीं हैं, जो भी हैं योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी, बा, हरिप्रसादस्वामिजी और संतों की कृपा से हैं।** हमारी ऐसे मूर्ति रखने की बात कर रहे हो, जबकि ऐसे हम हैं ही नहीं । लेकिन, गुरुजी की महानता है। वे महिमा के स्वरूप हैं। यदि मेरे बस में होता तो मैं गुरुजी की मूर्ति पधराने की बात करता। क्योंकि **दिल्ली में जो माहात्म्ययुक्त समाज खिल रहा है, उसके पीछे काकाजी, पप्पाजी, हरिप्रसादस्वामिजी का***

आशीर्वाद और गुरुजी का बहुत बड़ा पुरुषार्थ है। उन्होंने जो तपस्या की है, सबको जो इतना प्रेम दिया है और माहात्म्य का सिंचन किया है, उसका यह फल है। काकाजी कहते थे कि सर्वदेशीय समझ से गुणातीत समाज में विकास हो। आप और हम सब अलग-अलग जगह से आए हैं, पर हम सबको यही अनुभूति होती है कि **यहाँ रीयली सर्वदेशीय समझ का समाज है।** इन सबका – छोटे से लेकर बड़े तक, सबके प्रति जो प्रेम, पूज्यभाव और प्रभु के भाव से सेवा की जो उमंग है, वो सच में 'गुरुजी की गुणातीत अवस्था' का दर्शन है। तो, रीयल अर्थ में मूर्ति गुरुजी की होनी चाहिए। परंतु, गुरुजी में इतना दासत्वभाव - सेवकभाव है कि हम जैसे को आगे करते हैं।

तो, आज मेरी तो गुरुजी से प्रार्थना है कि यहाँ मेरी मूर्ति रखी है, तो ऐसा हमें बना देना। ऐसा आशीर्वाद देना; क्योंकि संतों के आशीर्वाद से ही काम होता है। हमारा कोई साधन, कोई पुरुषार्थ या कोई तपस्या इसमें काम नहीं आती। भगवान और भगवान स्वरूप ऐसे संतों के आशीर्वाद से हम सबको मूर्ति रूप बनना है... सच में हरिप्रसादस्वामिजी की हूबहू मूर्ति पधराई है। गुरुजी की अपने इष्टदेव, अपने गुरु – काकाजी, पप्पाजी, हरिप्रसादस्वामिजी के प्रति जो गुरुभक्ति, निष्ठा, प्रेम है और अपनी पत्रिका, लेखों द्वारा या जो भी प्रकाशन द्वारा उन्होंने जो दर्शन कराया है, वो इस मंदिर में दिख रहा है। ऐसी भक्ति हम सबमें प्रगट हो, ऐसा आज गुरुजी आशीर्वाद दें – ऐसी इस प्रसंग पर मेरी प्रार्थना। जय स्वामिनारायण।

प.पू. दिनकर अंकल

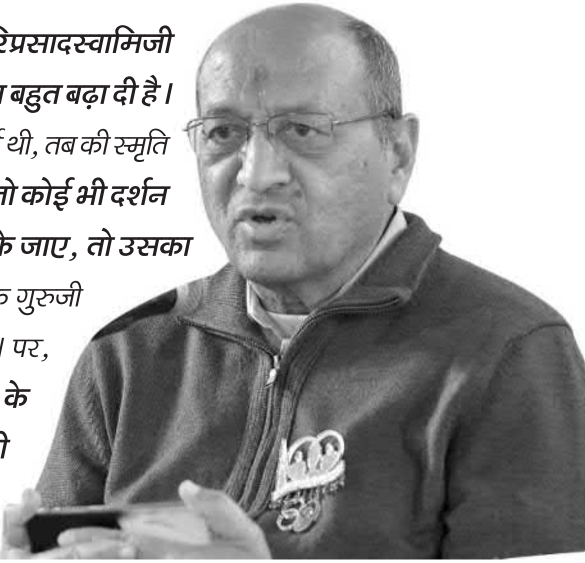

...आज बहुत आनंद का दिन है। **गुरुजी ने आज यहाँ हरिप्रसादस्वामिजी और साहेबजी की मूर्ति मंदिर में पधरा कर मंदिर की शोभा बहुत बढ़ा दी है।** गुरुजी ने इस मंदिर में जब काकाजी और पप्पाजी की मूर्ति पधराई थी, तब की स्मृति याद आ जाती है। **गुरुजी के अंतर में यही भावना है कि यहाँ जो कोई भी दर्शन करने आए और ऐसे संतों का गुण, महिमा से दर्शन करके जाए, तो उसका भारी श्रेय हो जाए।** अभी साहेबदादा ने भी एक प्रार्थना की कि गुरुजी का भी इधर मूर्ति के रूप में दर्शन करें, तो बहुत आनंद होगा। पर, **गुणातीतानंदस्वामी की मूर्ति का मुखारविंद और गुरुजी के मुखारविंद में बहुत समानता दिखाई पड़ती है और वही गुणातीत परंपरा आज जारी है।**

कल से शिविर की भी शुरुआत होगी। गुरुजी की ऐसी भावना है कि एक शिविर के रूप में हम सब निष्ठा वाले, महिमा वाले मिल कर कुछ ऐसे प्रसंगों का ध्यान व गुणगान करें जिससे हमारी यात्रा बहुत जल्दी से आगे बढ़े...

तो, गुरुजी के चरणों में प्रार्थना है कि हमें ऐसा आशीर्वाद देते रहें जिससे कि वे जो करवाना चाहते हैं वो जल्दी-जल्दी हो जाए। हम ब्रह्मरूप होकर परब्रह्म की भक्ति के अधिकारी बन जाएं और ऐसे गुणातीत स्वरूपों

की महिमा जितनी भी ज़्यादा समझेंगे, उतना ज़्यादा फ़ायदा है। महिमा में जो भी कसर है, वो भी चली जाए यही प्रार्थना है। सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

प.पू. अश्विनभाई (मोगरी)

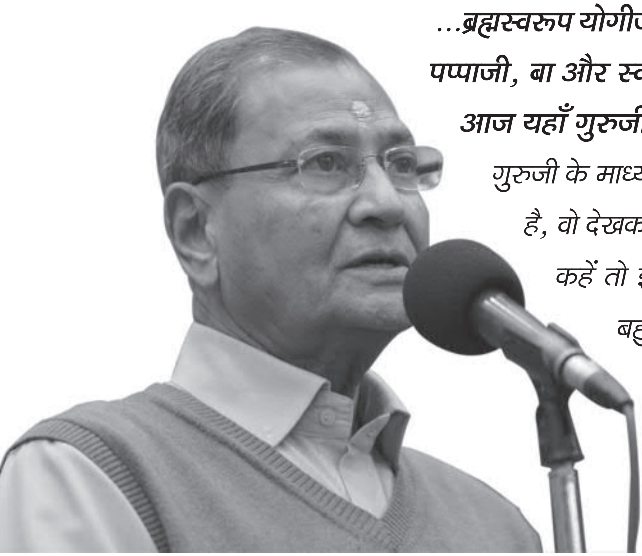

...ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज ने लगातार जो पाठ पढ़ाया और काकाजी, पप्पाजी, बा और स्वामिजी ने जिस बात को बार-बार पक्का कराया, वो आज यहाँ गुरुजी द्वारा साकार देख कर अत्यंत आनंद होता है। *प.पू. गुरुजी के माध्यम से, इनके कार्यों से, इनकी कथा से हमें जो प्राप्ति हुई है, वो देखकर अत्यंत खुशी और आनंद होता है। काकाजी के शब्दों में कहें तो इस समय यदि योगीजी महाराज स्थूल रूप से होते, तो बहुत प्रसन्नता व्यक्त करते। इसी तरह आज शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी महाराज, पप्पाजी महाराज और स्वामिजी की पुनीत उपस्थिति में इतनी ही प्रसन्नता व्यक्त करने का ये मौका है।*

काकाजी-पप्पाजी बंधुजोड़ी शताब्दी के समय पर इनकी जीवनगाथा के 100 साल में क्या हुआ ? – ऐसा कोई प्रश्न करे, तो उसको हम प्रत्यक्ष उदाहरण के रूप में बता सकते हैं कि ये हुआ है। इन्होंने जो गुणातीत अस्मिता की बात की है, गुणातीतभाव की बात सिखाई है, इसी बात की गुरुजी ने यहाँ (दिल्ली में) पच्चास साल बैठ कर जो तपस्या की है और हम सबके दिलों में यह भाव प्रगटाने के लिए दिन-रात इन्होंने प्रगट स्वरूपों से जो प्रार्थना की है, उसके परिणाम से आज हम एकाकार होकर, गुणातीतभाव से, गुणातीत स्वरूपों की मूर्ति के स्वरूप में इनका दर्शन कर रहे हैं।

साहेबजी ने आशीर्वचन में शताब्दी पर्व पर हम सबके लिए यही याचना की कि ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज के 125 साल का प्रागट्य पर्व, काकाजी-पप्पाजी का 100 साल का महोत्सव और दिल्ली में निवास करते हुए गुरुजी की साधना के 50 साल की यही फलश्रुति हो कि ***गुरुजी की तंदुरुस्ती अच्छी बनी रहे।***

उनका 80वाँ प्रागट्यदिन जब हम मना रहे हैं, तो हम सब सच में अंतःकरण से कबूल करते हैं कि 50 साल में उन्होंने जो दिया, वो जो कह रहे थे, वह बात तब हमारी अक्ल-सूझ में नहीं आ रही थी। वो जो देख रहे थे, हमें दिखाने की कोशिश कर रहे थे, वो हम देख नहीं पाते थे। लेकिन, उन्होंने इतना परिश्रम किया, इतनी तपस्या की कि 50 साल में अभी जो उनकी दृष्टि है, उनका जो विज़न - जो गुणातीतभाव है, वह अभी थोड़ा-सा, कुछ न कुछ हमारी सोच व समझ में आया और प्रयत्नपूर्वक हमारे हर रोज़ के वर्तन में लाने की हम लोग कोशिश कर रहे हैं... *इस संकल्प की प्रतिष्ठा करनी है कि इन सभी स्वरूपों के प्रति हमें कभी भी मनुष्यभाव न आए, सदा ही दिव्यभाव रहे और इनके संबंध वाले सभी के प्रति निर्दोषभाव रख कर सुहृद्भाव रख कर, काकाजी, पप्पाजी, सोनाबा और स्वामिजी की भावना को हम*

साकार कर पाएं – ऐसी हमारी इस अवसर पर मंगल प्रार्थना है।

इस खुशी के अवसर पर दिल्ली के हरिभक्तों को हम विशेष रूप से धन्यवाद देते हैं कि इनकी जो गुरुभक्ति, गुरुनिष्ठा है, गुरुजी के प्रति इनका जो प्रेमभाव है, वो प्रत्यक्ष रूप से हम सबके हृदय को स्पर्श करता है। इसमें दिन - प्रतिदिन अधिक वृद्धि होती रहे... जय स्वामिनारायण।

कोठारीश्री प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामिजी (हरिधाम)

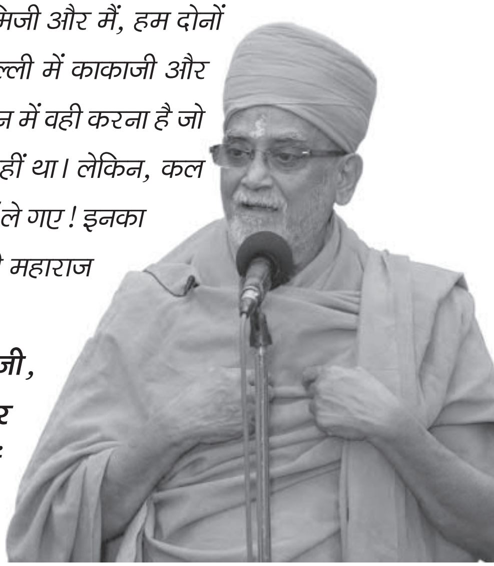

...कल हम सब लोग अमदावाद से ट्रेन में आ रहे थे। शास्त्रीस्वामिजी और मैं, हम दोनों बैठे थे। मैं सोच रहा था – 1967 में गुरुजी के साथ जब पहली बार दिल्ली में काकाजी और स्वामिजी ने सेवा में मुझे भेजा, तब से मन में यही पक्का रखा था कि जीवन में वही करना है जो स्वामिजी और काकाजी कहें... अन्य कोई विचार नहीं था, कुछ ज्ञान नहीं था। लेकिन, कल गुरुजी के सामने जब देखा, तो यही सोच रहा था कि गुरुजी सबको कहाँ ले गए ! इनका पहले का जीवन देखें और अभी का जीवन देखें, तो पता चले कि योगीजी महाराज और काकाजी ने क्या काम किया है ?

स्थूल भक्ति तो हम सब करते हैं, लेकिन योगीबापा, काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी ने जो सूक्ष्म भक्ति की है, वह सर्वदेशीयता और सुहृद्भाव के प्रवर्तन की सूक्ष्म भक्ति है। गुरुजी ने अपने जीवन में यह करके दिखाई है। यह बहुत बड़ी बात है।

स्थूल भक्ति करना बहुत अच्छा लगता है। इसमें मान - सम्मान बहुत मिलता है, लेकिन सूक्ष्म भक्ति में बहुत कुछ सहन करना पड़ता है। **बहुत तेजस्वी और बुद्धिशाली होने के बावजूद भी बुद्धू बन कर, सहन करके गुरुजी ने जो कार्य किया वह वंदनीय है।** बात करनी बहुत आसान है, लेकिन योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी और स्वामिजी, साहेबजी, अक्षरविहारीस्वामिजी सुहृद्भाव और सर्वदेशीयता की बात लेकर जो दौड़ रहे हैं, उस बात को पकड़कर अपना जीवन बनाना बहुत कठिन बात है। गुरुजी के जीवन में देखें, तो इनकी प्रकृति के विरुद्ध की यह बात है। फिर भी इन्होंने यह बात पकड़ी, क्योंकि इन्हें काकाजी के साथ ऐसा लगाव था। इन्होंने काकाजी का ऐसा स्वीकार किया था। तो, **योगीबापा ने क्या कृपा कर दी कि जो भाव इनका काकाजी के प्रति था, वही भाव पप्पाजी के प्रति, वही भाव स्वामिजी के प्रति, वही भाव साहेबजी के प्रति और वही भाव अक्षरविहारीस्वामिजी के प्रति तथा सबके प्रति हो गया। इस गुणातीतभावना का दर्शन आज गुरुजी ने करवाया, बहुत खुशी की बात है।**

अश्विनभाई ने बहुत अच्छी बात बताई कि जितना भी धन्यवाद दें उतना कम है। आप सबने भी गुरुजी का भरोसा किया, जीवन में बहुत बड़ी बात हुई है। वे बोलने - चलने में ऐसे ही हँस कर बात टाल देते हैं, लेकिन ऐसी बात नहीं है, यह बहुत बड़ी बात हुई है। बड़ी बात इसलिए हुई है कि इन्होंने भगवान स्वामिनारायण को अखंड रखा है। तो सबने जो भरोसा किया है, वो गुरुजी का नहीं किया है, बल्कि भगवान स्वामिनारायण,

काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी का किया है।

आज गुरुजी के चरणों में इतनी प्रार्थना करनी है कि ***गुरुजी आप बहुत बुद्धिशाली और तेजस्वी थे। बिना परखे आप किसी का भरोसा नहीं करते। दिमाग़ में बात नहीं बैठे तो कभी आप झुकते नहीं। लेकिन, आपके ऊपर जैसे सबकी कृपा ढली, ऐसी हम सब पर हो जाए। आप सब में संबंध ही देख रहे हैं। आपने कभी नहीं देखा कि हरिप्रसादस्वामिजी का सेवक है, पप्पाजी का है या साहेबजी का है, ऐसा कभी नहीं देखा। यह दिल से महसूस होता है।*** *आज मूर्तिप्रतिष्ठा उत्सव पर आप इतनी कृपा, ऐसा आशीर्वाद देना कि सुहृद्‌भाव - सर्वदेशीयता की जो बात आपने सहजभाव से पकड़ कर अपना जीवन बना लिया, वो हमारा भी जीवन बन जाए इतनी प्रार्थना। आप जैसे सब में संबंध ही देख रहे हैं, सब में योगीजी महाराज का ही दर्शन कर रहे हैं और इसीलिए 'कुटुंबभाव' का दर्शन यहाँ होता है। यह बात हम सबके जीवन में साकार हो, ऐसी कृपा स्वामिजी, साहेबजी, अक्षरविहारीस्वामिजी, गुरुजी, दिनकरभाई हम सब पर करें। सबको जय स्वामिनारायण!*

प.पू. गुरुजी

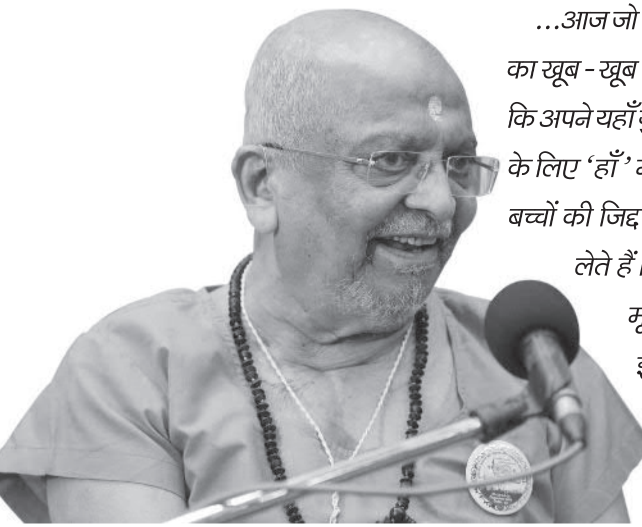

...आज जो ये नज़ारा देखने को मिला, उसके लिए स्वामिजी और साहेबजी का खूब - खूब धन्यवाद तो क्या ? पर नतमस्तक हूँ। आप सब भी जानते हैं कि अपने यहाँ गुणातीत विभूतियाँ कभी भी अपने होते हुए अपनी मूर्ति रखवाने के लिए 'हाँ' नहीं करेंगी और वो ही ख़ानदानी इनमें है। पर कहते हैं न कि बच्चों की जिद्द के सामने बुरे दिख कर भी बाप अपने बच्चों की बात मान लेते हैं। बस ठीक इसी तरह, स्वामिजी ने कहो या साहेब ने कहो, मूर्तियाँ प्रतिष्ठित करने की मेरी जिद्द के लिए 'हाँ' कर दी। इसके पीछे मुझे किसी को जताने की या एक लेबल लगाने की भावना नहीं है कि ये हमारे स्वरूप हैं या ये इस केटेगरी के हैं। पर इसके पीछे कई मुद्दे आते थे।

मुझे याद है एक बार काकाजी के साथ हम बैठे थे। तब शास्त्रीजी महाराज के वड़ताल छोड़ने की बात पढ़ रहे होंगे। उसे समझाते हुए काकाजी ने बात की कि – देखो, अदाश्री ने कहा – 'मैं भगतजी बोल रहा हूँ' और शास्त्रीजी महाराज ने वो बात मान ली। आपको ख्याल होगा कि 26 जनवरी के प्रवचन में काकाजी बोले थे – भगतजी जागास्वामी थे, जागास्वामी अदा थे, अदा भगतजी थे। फिर काकाजी बोले भी कि हम अभी ये नहीं कर पाए हैं। उस समय पर हम यह ज़रूर समझे थे कि काकाजी ने बोला है – 'हम अभी कर नहीं पाए हैं।'

'86 से पहले काकाजी से ऐसी बात जब दिल्ली में हुई तब मैंने उनसे पूछा था कि आप जो बात बता रहे थे, तो हमने क्या नहीं किया ? हमें तो हरेक के प्रति भाव है और मुझे तो है ही। तो वे बोले – ऐसी बात नहीं है। एक प्रसंग है कि महाराज ने संतों से पूछा कि तुम किसके हो ? तो कइयों ने कहा – हम लक्ष्मीनारायण के, हम

राधारमण के, हम नरनारायण के, हम राधाकृष्ण के। तब महाराज को कहना पड़ा – मेरा कोई नहीं। इस तरह आज सब जानते हैं कि दादुभाई - बाबुभाई को संस्था से अलग करने पर जब तुम लोग ऐसे चल पड़े, तब जाकर 'गुणातीत समाज' बना है। पर, ***आज कोई कहता है क्या कि मैं गुणातीत समाज का हूँ ? कोई कहता है – मैं हरिधाम का, मैं मिशन का, मैं ज्योत का हूँ और तू कहेगा मैं दिल्ली का - दादुकाका का हूँ।*** *उसके बजाय* ***हमें यह पकड़ना है कि हम सब 'गुणातीत समाज' के हैं।***

इससे हम जो सुहृद्‌भाव की बात करते हैं, वो साकार होगी। स्वामिजी ने भी एक बार कहा था कि ब्रह्मरूप होकर वर्तने की अपेक्षा, सुहृद्‌भाव से वर्तना अच्छा है। ब्रह्मरूप होकर तो हम वर्त ही नहीं पाते। आत्मा रूप नहीं वर्त पाते, तो ब्रह्मरूप की तो बात ही कहाँ रही ? तो, यह एक बहुत आसान तरीका है।

पर, इतना करने से भी यह नहीं समझना कि यह करने से हमारे भीतर में ब्रह्मभाव प्रगट होता है। ***ब्रह्मभाव तो ऐसे ब्रह्मस्वरूप संत की कृपादृष्टि हम पर पड़े, तभी होता है।***

इसका लीटमस टेस्ट क्या कि वो हरेक को ब्रह्मस्वरूप माने। यह आपको साहेब में नज़र आएगा। जब मुझे भी वे ब्रह्मस्वरूप कहते हैं, इसका मतलब हमें समझना पड़े कि साहेब ब्रह्मस्वरूप संत हैं...

प्रेमस्वामी शायद मौजूद थे जब मैं स्वामिजी के पास मूर्ति की रज़ामंदी लेने गया था। स्वामिजी ने बड़ी रिलकटन्ट्ली 'हाँ' कर दी थी। मैंने बताया कि साहेबजी की भी रखनी है, तो बोले बराबर है।

फिर हम हॉल की लॉबी के पास स्वामिजी के साथ खड़े रहे, तब मैंने कहा कि स्वामी, आशीर्वाद दो शिल्पी हूबहू मूर्ति बनाए। साथ में कोई खड़ा था, वह एकदम बोला कि शिल्पी 'बोलती' मूर्ति बना दे ऐसा आशीर्वाद दो। तब मैंने कहा कि शिल्पी मूर्ति 'बोलती' नहीं कर पाएगा, 'हूबहू' कर पाएगा। बोलती मूर्ति तो स्वामी स्वयं कर सकते हैं। आप भी जानते हैं कि मैं स्वामिजी, साहेब, अक्षरविहारीस्वामिजी के साथ खुलकर भी बोल देता हूँ। हंसी - मज़ाक भी कर लेता हूँ।

स्वामिजी ने भी बेहिचक उस समय कहा – ये जो कहता है, वो बात सच है।

पू. प्रेमस्वामी की ओर देख कर प.पू. गुरुजी ने कहा – *तुझे याद हो तो स्वामी बोले थे कि ये जो कह रहा है, वो सही है। सो, मेरा कहना है कि आज साहेब आए हैं, स्वामिजी कल आने वाले हैं। मुझे ऐसा फील हो रहा था कि स्वामिजी आए नहीं... पर अपने महाराज कैसे हैं ? हम जानते हैं कि* ***'स्वामी यानि हरिधाम का मुकुट !'*** *तो आज हरिधाम से आया मुकुट ही महाराज को पहनाया है। यूं स्वामी ने अपना काम पूरा कर दिया।*

मेरी एक भावना रही है कि कोई भी यहाँ आए, उसे लगना चाहिए कि 'यह हमारा मंदिर है।' हमने मंदिर की इन्ट्रोडक्शन के लिए जो पुस्तक निकाली है, उसे अक्षरपुरुषोत्तम मंदिर - दिल्ली नाम न देकर ***'हमारा मंदिर'*** *दिया है। पीछे संत लोग जहाँ रह रहे हैं उसे हम* ***'अपना घर'*** *कहते हैं। अब साहेब ऐसे आशीर्वाद दें कि हमारेपन की यह भावना हमारे ऐसे जेस्चर्स में या किताबों में सिर्फ लिखने - करने में न रहे। आने वाले हर एक को लगे भी कि 'ये हमारा मंदिर है।' हमारी भी यह भावना बरकरार बनी रहे, ऐसे आज अक्षरविहारीस्वामिजी, साहेब, प्रेमस्वामी सब आशीर्वाद दे जाएं ऐसी प्रार्थना। सहजानंदस्वामी महाराज की जय।*

और... जैसे कि प.पू. साहेबजी ने ज़िक्र किया कि कल जब प.पू. स्वामिजी आएंगे, तब प्रतिष्ठा की आरती करके विधि संपन्न करेंगे; यूं अंत में 'सायं आरती' के बाद सभी ने प्रसाद के लिए प्रस्थान किया।

23 दिसंबर की सुबह करीब 9:15 बजे प्रत्यक्ष स्वरूपों के आगमन के बाद, **गुरुवर्य योगीजी महाराज की 125वीं जन्मजयंती** एवं **गुरुहरि काकाजी - पप्पाजी** की **शताब्दी** के उद्घोष से शिविर का शुभारंभ हुआ।

गुरुहरि काकाजी **प्राणायाम-स्वरूपयोग** पर अत्यंत ज़ोर देते एवं गुरुहरि पप्पाजी संघध्यान करवाते थे। सो, इन दोनों विभूतियों की स्मृति करते हुए, प्रगट स्वरूपों की निश्रा में **पू. वालिया साहेब** एवं **पू. मोतीलाल बाजवानजी** ने, गुरुहरि काकाजी की परावाणी के साथ सभा खंड में उपस्थित मुक्तों से सर्वप्रथम प्राणायाम-योग-धुन करवाई। तत्पश्चात् 'स्वामिनारायण धुन' के नाद से **पू. डॉ. दिव्यांग** एवं गुणातीत प्रकाश के **पू. इलेशभाई** ने **'योगी छे अक्षरधाम, एमां रही स्वयं महाराज अहीं विचरे...'** भजन से दिव्यता का माहौल उत्पन्न कर दिया।

सर्वप्रथम **पू. राकेशभाई** ने प्रत्यक्ष स्वरूपों, महानुभावों एवं मुक्तों का स्वागत एवं आभार व्यक्त किया। बंधुजोड़ी शताब्दी शिविर के उपलक्ष्य में स्वरूपों के स्वागत हेतु मोतियों के विशिष्ट हार बनाए गए थे, जिसकी दोनों सेर में गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी का लोगो और पेन्डेन्ट में बंधुजोड़ी शताब्दी एवं प.पू. गुरुजी के 80वें प्राकट्य पर्व का लोगो अंकित था। दिल्ली मंदिर के सभी संतों एवं युवकों ने हार एवं बॅज अर्पण करके स्वरूपों का अभिवादन किया। इसी प्रकार, प.पू. आनंदी दीदी एवं अक्षरज्योति की व्रतधारी बहनों व भाभियों ने स्वरूप व सद्गुरु बहनों को हार अर्पण किया।

गुरुवर्य योगीजी महाराज की 125वीं जयंती की स्मृति में पवई मंदिर के मुक्त समाज ने, गुरुवर्य योगीजी महाराज स्वरूप प्रगट ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामिजी को विशिष्ट हार अर्पण किया, जिस पर गुरुवर्य योगीजी महाराज के सूत्र अंकित थे।

प.पू. गुरुजी अकसर कहते हैं कि डॅकोरेशन का अर्थ केवल यह नहीं कि अच्छे फूल लगा दिए या ड़िजाईन बना दिया, बल्कि **डॅकोरेशन थ़ीमफुल होनी चाहिए**। प.पू. गुरुजी की इसी बात को मद्देनज़र रखते हुए शिविर के प्रत्येक सत्र के लिए सचित्र थ़ीम योजित करवाई थी। आज गुरुवर्य योगीजी महाराज की 125वीं जयंती निमित्त उनकी ही कही निम्न बोधकथा द्वारा प्रगट प्रभु के अभिप्राय की भक्ति का मर्म जाना –

वचन का मूल्य :

एक राजा था। उसने अपने राज्य में एलान करवाया – *'यदि कोई कुएँ में छलाँग लगाने के बाद भी कोरा बाहर निकलेगा, उसे दस हज़ार सोने की मोहरें इनाम में दी जाएगी।'*

यह एलान सुन कर सभी विचार में पड़ गए – *'ऐसा भला कैसे हो सकता है?'*

पर, राजा का एक सिपाही था। उसने ठान लिया कि मैं छलाँग लगाऊँगा।

उसने राजा से कहा – *'मैं कुएँ में छलाँग लगाऊँगा।'*

राजा ने कहा – *'ठीक है।'*

यह देखने के लिए लोगों का जमघट लग गया। कुएँ में छलाँग लगाने के बाद, सिपाही उसके रहट पर बैठकर भीगा हुआ लौटा। यह देख कर सब लोग हँसने लगे।

राजा ने दूसरी बार एलान करवाया। फिर से उसी सिपाही ने कुएँ में छलाँग लगाई और भीगा हुआ लौटा। यूं राजा ने सात बार एलान करवाया और सातों बार उसी सिपाही ने कुएँ में छलाँग लगाई और हर बार वो भीगकर लौटता। ऐसी आज्ञा करने वाले राजा और हर बार कुएँ में छलाँग लगा कर, भीगे हुए सिपाही को लोग मूर्ख समझने लगे।

अंत में राजा ने उस सिपाही को बुलाया और उससे पूछा – *'तू जानता था कि कुएँ में छलाँग मारने के बाद कोई कोरा लौट नहीं सकता, फिर भी तू सात बार कुएँ में कूदा। ऐसा क्यों किया?'*

सिपाही ने कहा – *'मैं आपके वचन को व्यर्थ नहीं जाने देना चाहता था; इसलिए जानबूझ कर मैंने कुएँ में बार-बार छलाँग लगाई।'*

राजा ने उस सिपाही को दस हज़ार सोने की मोहरें दी और लोगों से कहा – *'देखो मैं मूर्ख नहीं हूँ। मैं भी जानता था कि पानी में डूबकी मारने के बाद कोई भी कोरा नहीं रह सकता, परंतु मुझे यह जानना था कि मेरे राज्य में मेरे वचन का मान कौन रख सकता है? लोगों को मेरे वचन का मूल्य कितना है? मुझे यह परीक्षा लेनी थी। यह सिपाही इस परीक्षा में उत्तीर्ण हो गया। सातों बार भीग कर आया, परंतु मेरे वचन को निरर्थक नहीं जाने दिया।'*

जिस प्रकार सिपाही ने बुद्धि बंद करके राजा के वचन का पालन किया, तो उसे इनाम मिल गया। **उसी प्रकार गुरुवचन का किसी भी संजोग में पालन करें, तो अक्षरधाम की प्राप्ति मौज में हो जाए।**

गुरुहरि योगीजी महाराज द्वारा कथित इस बोधकथा को गुरुहरि काकाजी महाराज ने स्वयं जीकर दर्शाया। **सन् 1948 में दिल्ली आ रहे अक्षरनिवासी गुलज़ारीलाल नंदाजी को आशीर्वाद देते हुए, गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज ने कहा था कि उत्तर भारत में स्वामिनारायण का संदेशा फैलाना है। यह अति दुर्लभ कार्य संयोगवश तब संभव न हुआ। लेकिन, गुरुहरि काकाजी महाराज ने उस संकल्प को मूर्त करने के लिए, 1967 में 5 दिसंबर को प.पू. गुरुजी एवं संतों को पहली बार दिल्ली भेजा था।**

गुरुहरि काकाजी महाराज की गुरुहरि योगीजी महाराज के साथ कैसी एकता-**आत्मीभाव** होगा कि स्थूल रूप से उनका बापा से कोई संपर्क नहीं था, पर सन् 1969 के नवंबर महीने में गुरुहरि योगीजी महाराज ने लगातार रट लगाई ही थी –

'दिल्ली में शीघ्र ही शिखरबद्ध मंदिर करो, शास्त्रीजी महाराज को वहाँ पधराना है।'

आज अशोकविहार-दिल्ली में शिखरबद्ध मंदिर देखकर, एहसास होता है कि जिस प्रकार सिपाही ने राजा के वचन को व्यर्थ नहीं जाने दिया, उसी प्रकार **विज़नरी विभूति गुरुहरि काकाजी महाराज ने अपने आराध्य स्वरुपों के संकल्प, वचन को आत्मसात् करके, हम सभी को इस मंदिर के द्वारा आज जीतेजी अक्षरधाम के सुख की अनुभूति कराई और करा रहे हैं...**

सचित्र थीम देखने के बाद, जिन्हें गुरुहरि काकाजी ने अक्षरधाम का अपना सेवक कह कर नवाज़ा ऐसे **प.पू. महेन्द्र बापु** ने शताब्दी वंदना की –

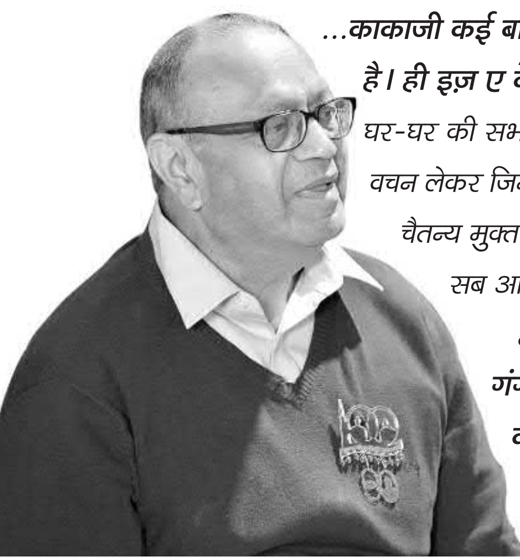

...काकाजी कई बार कहते थे गुरुजी का मन उनकी बॉडी से 30 फुट आगे रहता है। ही इज़ ए वेरी एडवांस थिंकर। *आज भी ये माहौल ऐसा दिखता है जैसे हमारी घर-घर की सभा हो। शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज के समय से, उनका वचन लेकर जिन-जिन्होंने अपना जीवन दाँव पर लगाया, साधक-साधु बने ऐसे सब चैतन्य मुक्त आज रियलाइज़्ड-एनलाइटन्ड सोल, ब्रह्मस्वरूप संत बन गए हैं। वे सब आज इस सभा में उपस्थित हैं।*

हरिप्रसादस्वामिजी कई बार कहते हैं – ताड़देव आत्मीयता की गंगोत्री है। वही 'ताड़देव' नाम देकर गुरुजी ने यहाँ भी आत्मीयता की गंगोत्री जारी रखी है और आज उसी आत्मीयता की गंगोत्री में हम स्नान करने के लिए बैठे हैं।

...शास्त्रीजी महाराज-योगीजी महाराज, काकाजी-पप्पाजी जो मक़सद लेकर आए, उन्हें जो सिद्ध कराना था, वह यदि हम सिद्ध नहीं करेंगे तो आती हुई नई पीढ़ी को हम क्या संदेश देकर जाएँगे ? सो, काकाजी का ये सूत्र साकार करने के लिए उन्होंने हमें इकट्ठा किया है। काकाजी ने वर्षों पहले कहा था– भगतजी, जागास्वामी और अदाश्री तीनों गुणातीत स्वरूप थे। गुरुजी ने मंदिर में भी वही बात लिखवाई है–

भगतजी, जागास्वामी और अदाश्री – तीनों गुणातीत स्वरूप थे। हमें एक देशस्थ ज्ञान को ट्रांसेन्ड करके सर्वदेशीयता में जाना है – अभेददृष्टि और अविरोधवृत्ति ही दृढ़ कर लेनी है।

*इस अवसर पर हम देखते हैं कि **गुरुजी ने सबसे बड़ा स्टेप ये लिया कि कल पू. हरिप्रसादस्वामिजी महाराज और पू. साहेबजी महाराज की मूर्ति की प्रतिष्ठा की** और आज स्वामिजी आरती करेंगे। **सबको लगेगा कि ये मंदिर हमारा मंदिर, गुणातीत समाज का मंदिर है। यूं गुरुजी हमें अविरोधवृत्ति और अभेद दृष्टि की दिशा में ले जाना चाहते हैं।** मैं यहाँ **बुक स्टॉल पर** गया, वहाँ देखा तो **हमारे सत्संग की जितनी भी ब्रांच या जितने भी मंदिर हैं, उन सबकी पुस्तकें यहाँ उपस्थित हैं और सभी स्वरूपों की मूर्ति भी वहाँ मिलती हैं।** यूं गुरुजी चाहते हैं कि हम अभेददृष्टि और अविरोध वृत्ति की ओर कदम उठाएं।*

*इसलिए उन्होंने हमें शिविर का सूत्र दिया हुआ है – **'गुणातीत समाज की एकता और अखंडता हमारा मंत्र है।'***

...गुरुजी का यही संकल्प था कि हमें यह उत्सव सिर्फ धूमधाम - बैंडबाजा और प्रदर्शन करके नहीं, लेकिन आत्मीय स्वजनों की एक शिविर के रूप में मनाना है और इस अंतरयात्रा में हम सबको शामिल होना है।

बापा की 125वीं जन्मजयंती – उनकी सारी जीवनभावना, जीवनशैली, जीवनमर्म के बारे में सोचें तो तीन शब्दों में आ जाता है–संप, सुहृद्भाव और एकता। स्वामिजी भी यही आग्रह करते हैं। इसलिए गुरुजी ने हमें

इस मंत्र के द्वारा यह आदेश दिया है कि एकता और अखंडता ही हमारा मंत्र है। आज साहेबजी यहाँ पधारे हैं। काकाजी ने उन्हें भी 'एकता एज एकांतिकपणुं' मंत्र दिया था और उन्होंने वह सिद्ध किया है... ***काकाजी ने कहा था – संप, सुहृद्भाव और एकता होगी, तो ही एकांतिक धर्म सिद्ध होगा।***

वे कहते – धर्म और सनातन धर्म का मूल 'एकता' है, समता और साधुता उसकी नींव है, सुहृद्भाव उसकी शक्ति है। आज हम ऐसा प्रवाह बहाएं जिससे कि एक ऐसा प्लेटफार्म तैयार हो जाए, जहाँ आने वाली पीढ़ी को कोई मानसिक द्वंद्व न रहे। हम जिसे भी मानें, जहाँ भी जाएं 'सब गुरु एक हैं'। हम जिन्हें मानें, उन्हें प्यार से - दिल से समर्पित होकर जिएं और उन्हें राज़ी कर लें। पर और किसी के प्रति अलगाव न रखें। इस हेतु हमें अपने - अपने भावों से पर जाना पड़ेगा। बाकी तो ह्यूमन माइंड इस ए डिविज़न... काकाजी बार-बार कहते थे – तुम्हारे रॉकेट को नो माइंड लैंड में ले जाओ। पप्पाजी ने भी वही संदेश दिया है। पप्पाजी गुणातीतानंदस्वामी के तीसरे प्रकरण की 70वीं बात बार-बार समझाते थे। चार बातें जीव का जीवन हैं –

1. आज्ञा, 2. उपासना, 3. एकांतिक में प्रीति, 4. भगवदी के साथ सुहृद्भाव।

सुहृद्भाव की अंतिम कक्षा हमारी 'एकता' है, लेकिन एकता के भी प्रकार हैं। एकता स्थूल, मानसिक, भावात्मक और दिव्य एकता है। हमें दिव्य एकता में अपने रॉकेट को लॅन्ड करना है।

तो, हे महाराज! हे स्वामी! आज सब स्वरूप - सब एनलाइटन्ड सोल्स उपस्थित हैं; जिनके ऊपर शास्त्रीजी महाराज, बापा, काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी – सबकी दृष्टि है। आज यही अक्षरधाम की सभा है और आज यही अक्षरधाम की पार्लियामेंट है। आज यहाँ योगीजी महाराज, काकाजी - पप्पाजी पूर्णरूप से प्रगट हैं, तो उनसे हमें यही प्रार्थना करनी है कि आपने चाहा था, तो हम नो माइंड लँड में जाएँ। लेकिन वी हॅव नॉट ट्रांसेंडेड इट टोटली।

इसके लिए गुरुजी ने मंत्र दिया – ***'गुणातीत समाज की एकता और अखंडता हमारा मंत्र है...'***

इसी दौरान, संतभगवंत प.पू. साहेबजी से घनिष्ठता से जुड़े पतंजलि योगपीठ के **आचार्यश्री बालकृष्णजी महाराज** पधारे। पू. पुरी अंकल ने हार, बॅज, शाल एवं मोमेन्टो अर्पण करके उनका स्वागत किया।

तत्पश्चात् अनुपम मिशन के **प.पू. शांतिभाई साहेब** ने अपने वरद् हस्तों से भजन संग्रह **'स्वर्ण स्वर भाग - 13 व 14'** का अनावरण करके आशीर्वाद दिया –

*...**यहाँ भक्ति का समंदर है।** सबके हृदय में प्रभु व गुरुजी के प्रति प्रेम और भक्ति है। महाराज, स्वामी, शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी, साहेबजी, अक्षरविहारीस्वामिजी – सभी दिव्य स्वरूपों के प्रति की भक्ति का दर्शन हो रहा है। ऐसी भक्ति से काकाजी ने साक्षात्कार किया - समाधि अवस्था में गए। समाधि अवस्था में उन्होंने योगीजी महाराज का जो दर्शन किया; उसके बाद सारा जीवन उन्हें समर्पित कर दिया, यही समाधि है। हम जानते हैं कि काकाजी अपने जीवन के पल - पल के वर्तन में ऐसा जिए हैं। काकाजी और पप्पाजी, दोनों ने मिल कर योगीजी महाराज के स्वरूप का दर्शन स्वामिजी,*

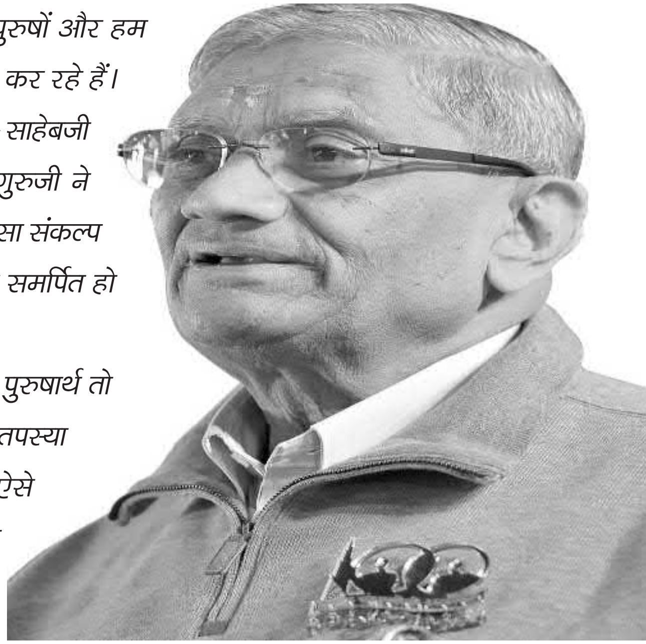

अक्षरविहारीस्वामिजी, साहेबजी, गुरुजी जैसे दिव्य सत्पुरुषों और हम सबको करवाया। उसी के फलस्वरूप आज हम ये दर्शन कर रहे हैं।

वो दर्शन क्या है ? तो काकाजी - पप्पाजी ने, स्वामिजी - साहेबजी ने योगीजी बापा के चरणों में जो समर्पण किया और गुरुजी ने काकाजी के चरणों में जो समर्पण किया, वो तो हम भी ऐसा संकल्प करते हैं कि ऐसे दिव्य पुरुषों के चरणों में हमारा जीवन समर्पित हो जाए।

'पंचम पुरुषार्थ' पुस्तक अनावरित होने वाली है। पुरुषार्थ तो सब करते हैं। भगवान पाने के लिए ऋषि-मुनियों ने भी तपस्या की है, भगवान पाने के लिए वह उनका पुरुषार्थ था। ऐसे पुरुषार्थ के उपरांत बहुत पुरुषार्थ करने पर भगवान का दर्शन होता है। इससे ज़्यादा पुरुषार्थ करते हैं, तो ऐसे प्रगट संत स्वरूप में भगवान का दर्शन होता है। यदि और पुरुषार्थ बढ़ता है, तो ऐसे दिव्य गुणातीत सत्पुरुष मिलने पर उनके चरणों में जीवन समर्पित करने का संकल्प होता है। फिर ऐसे दिव्य पुरुष के साथ आत्मबुद्धि और प्रीति से जुड़ जाते हैं।

काकाजी 'स्वामिनारायण प्रकाश' में जो लेख लिखते थे, उसे गुरुजी ने 'पंचम पुरुषार्थ' द्वारा संपादित किया है। वो 'पंचम पुरुषार्थ' क्या था, काकाजी क्या करवाना चाहते थे – वो सब इन लेखों से हमें दर्शन होता है... योगीजी महाराज ने शास्त्रीजी महाराज के चरणों में अपने आपको समर्पित किया और दासत्वभाव से जिए। काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी, साहेबजी, गुरुजी के जीवन को देखते हैं, तो बिलकुल दासत्वभाव से जीते हैं। ये दासत्वभाव उत्तम स्थिति है। काकाजी ने आज्ञा दी – दिल्ली जाओ ! यहाँ आकर उन्होंने क्या किया ? वह सारा दर्शन आज हम कर रहे हैं। गुरुजी यहाँ मानवरूप में हमारे साथ घूमते रहते हैं। उनका जो मानवस्वरूप है - मानवभाव या मनुष्यभाव है, उसमें कभी - कभी मनुष्यभाव आ जाता है। परंतु, करना तो 'दिव्यभाव' है। हम भक्ति और सेवा, भजन व प्रार्थना इसलिए करते हैं कि पूर्ण रूप से ऐसे दिव्य पुरुष जो प्रगट हैं, उन्हें ब्रह्मस्वरूप मान कर स्वीकार करना है। यदि उन्हें ब्रह्मस्वरूप मान लिया, तो हम अपने विचार, मन, इच्छा से कुछ नहीं कर पाएँगे। बस, उनका भाव - इच्छा क्या है ? वे हमसे जो कराना चाहते हैं, वही हम कर सकेंगे। हमारी इन्द्रियों - अंतःकरण पर पूरा कंट्रोल हो जाएगा और वे जो कहते हैं वही हम कर पाएँगे।

ऐसी सेवा करने से क्या होगा कि गुरुजी जैसे दिव्य पुरुष - ब्रह्मस्वरूप संत के कारण हमारे जीवन में दृढ़ता हो जाएगी। अपनी कृपा से जब वे आशीर्वाद देते हैं, तो हम संपूर्ण रूप से दासत्वभाव से भरपूर हो जाते हैं - शून्य बन जाते हैं। हमारी वाणी, विचार, वर्तन – प्रत्येक क्रिया में दासत्वभाव - सेवकभाव आ जाता है, गुरु

का भाव नहीं रहता। ***हम सब गुरुजी को 'गुरुजी' कहते हैं, फिर भी वे दासत्वभाव से भरपूर हैं। यह हम सब देखते हैं और अनुभव किया है...***

सभी स्वरूप हम पर कृपा करें कि हम भी ऐसा जीवन जीएँ कि जिस गुरु की प्राप्ति हुई है, जिस ब्रह्मस्वरूप संत के साथ हमारा संबंध हुआ है, उनके पास बिलकुल शून्यभाव से जिएँ... गुरुजी की कृपा से यहाँ के सारे समाज का जो दर्शन हुआ है, वे जो भक्ति करते हैं, जो सुहृद्भाव - एकता है, ऐसी एकता हमेशा दिन - प्रतिदिन बढ़ती रहे तथा गुरुजी के प्रति ऐसा निर्दोषभाव, दिव्यभाव हो। जय स्वामिनारायण।

प.पू. शांतिभाई साहेब की आशिष के बाद ब्रह्मज्योति के प्राणाधार **संतभगवंत प.पू. साहेबजी** ने कृपावर्षा बरसाते हुए कहा–

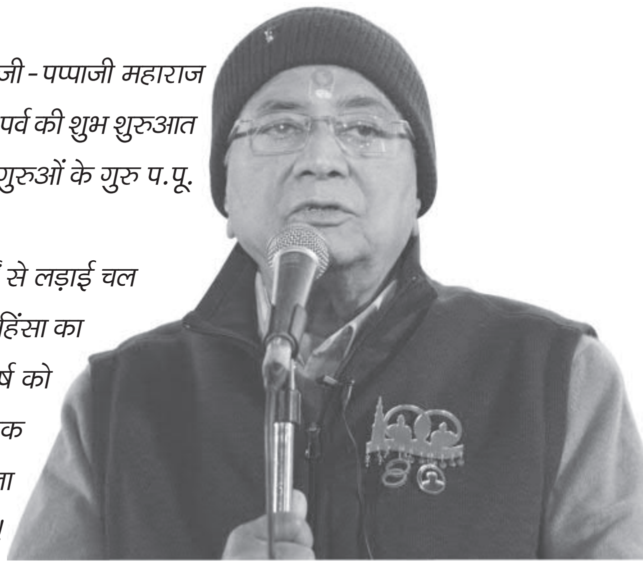

...गुणातीत समाज के इस केन्द्र में आज से प.पू. काकाजी - पप्पाजी महाराज के बंधुजोड़ी शताब्दी पर्व और प.पू. गुरुजी के 80वें प्रागट्य पर्व की शुभ शुरुआत हो रही है। इस अवसर पर आज की सभा में हम सबके गुरुओं के गुरु प.पू. योगीजी महाराज का 125वाँ प्रागट्य पर्व मना रहे हैं।

भारत वर्ष जब गुलाम था, तब आज़ादी के लिए वर्षों से लड़ाई चल रही थी। लेकिन, गुजरात से एक आदमी आया, उसने अहिंसा का शस्त्र लेकर, असहकार के मार्ग पर चलते हुए भारत वर्ष को आज़ादी दिलाई, भारत को स्वतंत्रता दी। तब यूरोप के एक चिंतक रोमारोला ने कहा था – ये मुट्ठीभर हड्डीवाला आदमी – एक फ़कीर इतना बड़ा काम करके चला गया! वह आने वाली पीढ़ियों के लोग नहीं मानेंगे कि ऐसा एक आदमी कर गया। इसी तरह आध्यात्मिक क्षेत्र में योगीजी महाराज ने अपने प्रेम - हेत और अपने जीवन के प्रभाव से स्वामिनारायण संप्रदाय के ही नहीं, बल्कि सभी धर्म के संतों को जो प्रेरणा दी और युवकों को अपने हेत - प्रेम से वश करके, उन्हें चारित्रशील - भक्तिमय साधु बना कर, शास्त्रीजी महाराज की उपासना के कार्य का झंडा पूरे विश्व में फैला दिया। स्वामिनारायण मंत्र को गूँजाया। पर, आने वाली पीढ़ियाँ यह नहीं मानेंगी कि एक औलिया जैसे साधु ने यह काम किया। हम बहुत भाग्यशाली - नसीबदार हैं कि वे ख़ुद ऐसा काम कर गए और विशेष काम - कृपा यह की कि महंतस्वामी, हरिप्रसादस्वामी, गुरुजी, अक्षरविहारीस्वामिजी जैसे संतों की हमें भेंट दी है और उनके सान्निध्य में हमें रखा; वो उन्होंने हम पर बहुत बड़ी कृपा करी है।

आज हमारी सभा में आचार्यजी पधारे हैं। हमारे ही हैं, हमारे साथ बहुत ही रहे हैं। स्वामिनारायण संप्रदाय और संतों के साथ उनका ज़्यादा लगाव है। वर्षों पहले ***रामदेवजी महाराज और बालकृष्णजी*** *1992 से 2000 – आठ साल तक जब कनखल के छोटे आश्रम में रहते थे, तब दो-दो वीक हमारे साथ आकर रहते थे। एक बार वे जा रहे थे, तो हम विदा करने के लिए मंदिर के पास खड़े रहे। तब बालकृष्णजी ने मुझसे*

कहा – मेरा यहाँ से जाने का दिल नहीं हो रहा है। मुझे होता है कि यहीं रूक जाऊँ। लेकिन, हम सबने कहा – भगवान ने रामदेवजी और आपको कनखल में अपने काम के लिए और पूरे विश्व में योग फैलाने के लिए रखा है, तो आप वहीं काम करते रहना। मुझे बहुत खुशी है कि वैदिक योग का काम चलता रहा है। हम जानते हैं कि वेद के समय से भारत ने योग की भेंट दी है। लेकिन, कई वर्षों से हम देखते हैं कि रामदेवजी और आचार्यजी की टीम और ***अपने माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्रभाईजी ने भी पूरे विश्व में योग फैला दिया है और 'योग डे' भी मनाते हैं।*** *जैसे कि हमारे गुरुजी ने बताया – आप में से कई लोगों को मालूम नहीं होगा कि आचार्यजी पतंजलि प्रॉडक्ट के मैनेजिंग डायरेक्टर है और अभी जो एवॉर्ड दिए गए, उनमें* ***विश्व के रिचेस्ट पर्सन्स में आचार्यजी की गिनती हो गई है।*** *लेकिन, ये मस्त फ़कीर हैं, उनकी जेब भी नहीं है। साथ ही गुरुजी ने यह भी बताया* ***स्पिरिच्युअल वेल्थ पाए हुए रिचेस्ट साधु हमारे हरिप्रसादस्वामिजी हैं।*** *वर्ल्ड की हाईएस्ट पोज़ीशन वाले दोनों संतों के सानिध्य में बैठ कर, हम अपने गुरुदेव योगीजी महाराज का बर्थडे मना रहे हैं। हम हरिद्वार जाते थे, तो देखते थे कि कुछ नहीं था। लेकिन, रामदेवजी महाराज और आचार्यजी की लगन थी, उनके भीतर प्रजा को देने की जो भावना - आग थी, तो उन्होंने आयुर्वेद - योग द्वारा विश्व को कितना दिया, उसकी हम कल्पना नहीं कर पाते हैं। लेकिन, बहुत प्रेमालु, सहज, निर्मानी और भावुक हैं। ये संतों का लक्षण है। ऐसे साधु के द्वारा भगवान काम करते ही हैं।*

आज गुरुजी के आमंत्रण से पधारे हैं, तो बहुत - बहुत खुशी हुई। ***हमारे गुरुजी की हेल्थ की देख-रेख भी वे रखते हैं आचार्यजी आपसे मेरी स्पेशियल रिक्वेस्ट है कि 100 साल तक गुरुजी को अच्छा रखना। ऐसी हेल्थ रहे कि चलते-फिरते, खाते-पीते सबको दर्शन दें... सबके आध्यात्मिक उत्थान के लिए ऐसे प्रगट संत की बहुत आवश्यकता है।*** *तो, आपको हमारी व सारे समाज की प्रार्थना है... हम गुरुजी के साथ गए थे, तो रामदेवजी महाराज और आचार्यजी ने पूरा दिन समय देकर गुरुजी के हेल्थ का चेकअप किया था...*

रियली ***गुरुजी ने शून्य में से सर्जन किया।*** *गुरुजी को अपने गुरुदेव काकाजी, पप्पाजी, योगीजी महाराज, हरिप्रसादस्वामी के प्रति जो भाव - भक्ति है, उसका दर्शन दिल्ली आने वाले भक्तों को अवश्य होता है... योगीजी महाराज ने गुरुजी को दीक्षा देकर महंतस्वामी के साथ रखा, तो महंतस्वामी के साथ इतनी भक्ति से जुड़ कर रहे। हरिप्रसादस्वामिजी के साथ रहने का हुआ, तो स्वामिजी के साथ भी दासत्वभाव से भक्ति की। काकाजी - पप्पाजी का तो उनके हृदय में इतना स्थान था कि वे उनके समक्ष देखते रहते थे। इन सबकी जो प्रसन्नता प्राप्त हुई, तो गुरुजी आज खुद काका, पप्पा, योगीरुप, स्वामीरुप बन कर हमको दर्शन दे रहे हैं।*

योगीजी महाराज के 125वें प्रागट्य पर्व पर हमें बहुत खुशी है कि योगीजी महाराज ने हमें ऐसे संतों की भेंट देकर, उनके सान्निध्य में साधना करके भक्ति के मार्ग पर चलने का अद्भुत अवसर प्रदान किया है। ये तीन दिन उनके माहात्म्य का गान होगा।

राजधानी दिल्ली में प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी एवं संतभगवंत प.पू. साहेबजी की संगमरमर की मूर्तिप्रतिष्ठा निमित्त, स्वरूप बहनों की निश्रा में हुए यज्ञ का लाभ लेते गुणातीत समाज के सभी केन्द्रों के मुक्त...

गुरुजी ने गुणातीतभावना का दर्शन करवाया...
मूर्तिप्रतिष्ठा उत्सव पर गुरुजी आप इतनी कृपा, ऐसा आशीर्वाद देना कि
ब्रह्मस्वरूप काकाजी की जीवनशैली–'सुहृद्‌भाव व सर्वदेशीयता' आपने
सहजभाव से पकड़ कर अपना जीवन बना लिया, वो हमारा भी जीवन बन जाए...

– प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामिजी

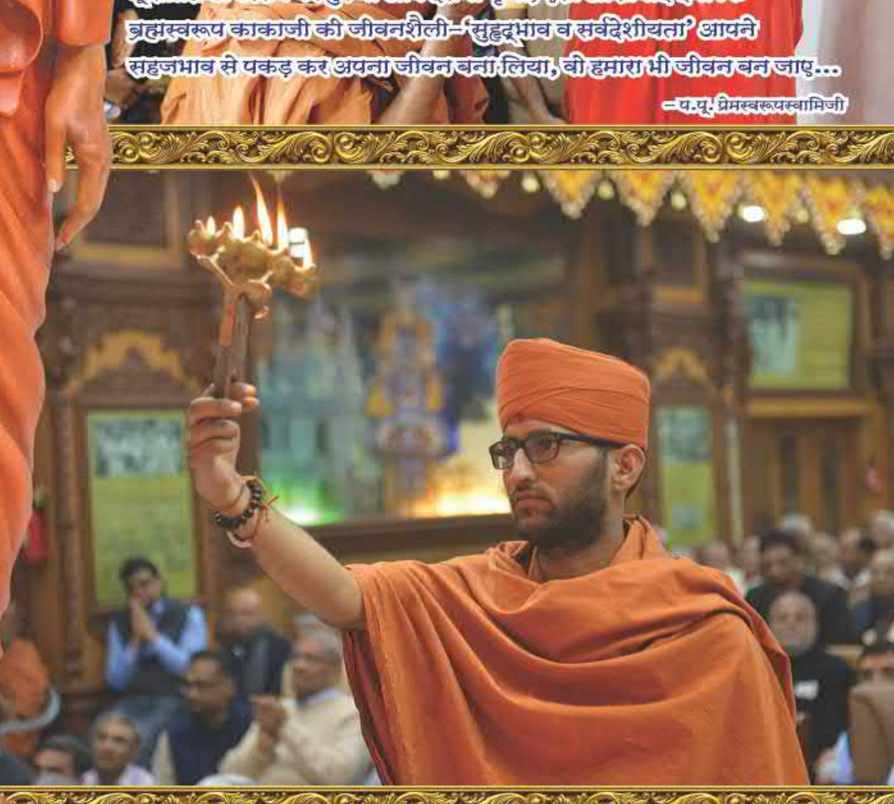

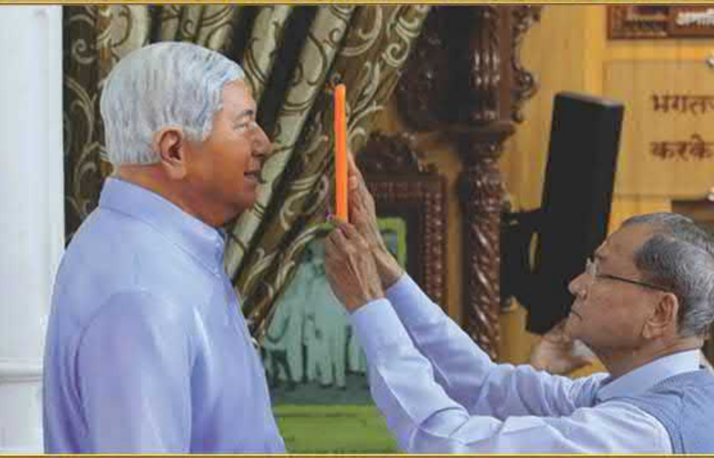

सर्वदेशीयता की ऐसी प्रतिष्ठा करनी है कि सभी स्वरूपों के प्रति
हमें कभी भी मनुष्यभाव न आए, सदा ही दिव्यभाव रहे और इनके
संबंध वाले सभी के प्रति निर्दोषभाव रख कर सुहृद्‌भाव रखें...

–प.पू. अश्विनभाई (मोगरी)

चिरंजीव स्मृति रूप 'बंधुजीड़ी शताब्दी द्वार' का गुणातीत स्वरूपों की निश्रा में उद्घाटन...

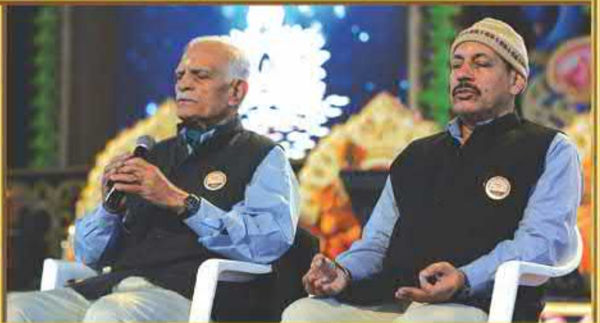
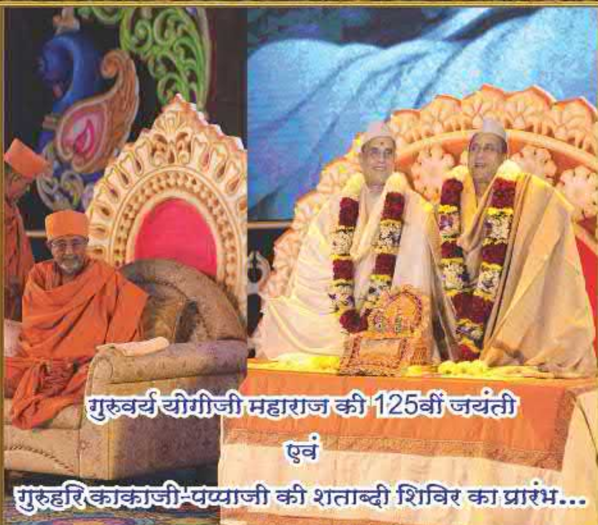

गुरुवर्य योगीजी महाराज की 125वीं जयंती

एवं

गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी की शताब्दी शिविर का प्रारंभ...

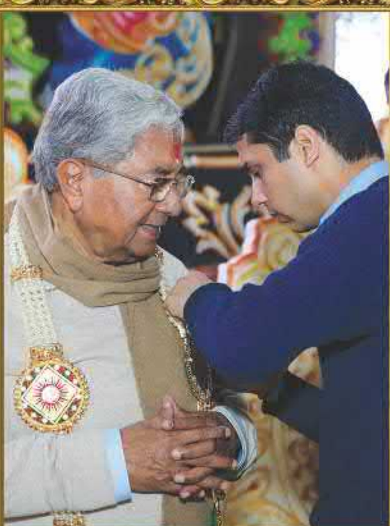

योगीजी महाराज कहते थे–

'संप, सुहृद्‌भाव और एकता रखो और मिलजुल कर काम करो।'

माहात्म्य में रहते–निर्दोषभाव से रहते यहाँ के सारे समाज में वह ब्रह्मसूत्र कार्यान्वित हो रहा है...

– संतभगवंत प.पू. साहेबजी

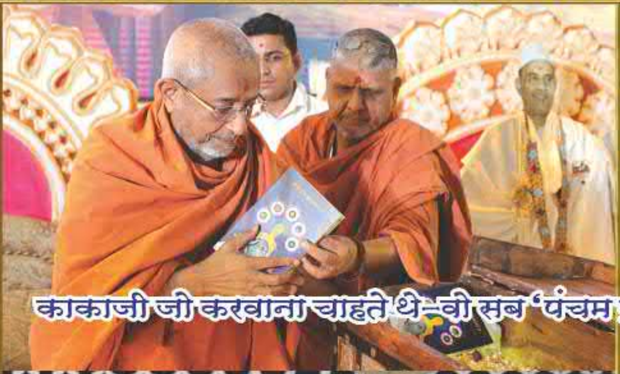

काकाजी जो करवाना चाहते थे-वो सब 'पंचम पुरुषार्थ' पुस्तक के लेखों से हमें दर्शन होता है...

– प.पू. शांतिभाई साहेब

'योगी छे अक्षरधाम, एमां रही स्वयं महाराज अहीं विचरे...'

बहनें भगवान भजें तो क्या हरज़ है?

– गुरुवर्य योगीजी महाराज

झेला वचन योगी का पप्पा, काका, बा की त्रिमूर्ति ने...

गुरुजी के मन में तनिक भी ऐसा नहीं है कि ये मेरा है या नहीं, काकाजी का है या नहीं, ज्योत का है या मिशन का है। गुणातीत समाज का यह सदस्य है–बस वहीं बात ख़तम हो जाती है।
– प.पू. पदु बहन

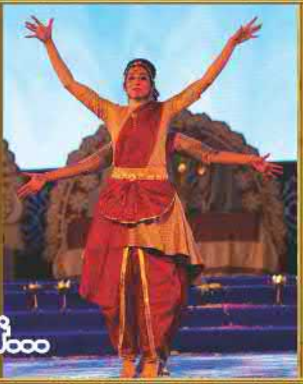

काका-पप्पा ने प्रगटाया, भाव गुणातीत बहनों में...

एकता वही एकांतिकभाव, काकाजी ने बताया...
सारा गुणातीत समाज एक, पप्पाजी ने बताया...

येन स्त्रीशक्तिः विजयते... येन ब्रह्मस्वरूपिणी विजयते।।

पप्पाजी-काकाजी का समागम कर सकें, इसलिए
जोगीबापा ने हमें अलग करके इन स्वरूपों की भेंट दी...
– प.पू. हंसा दीदी

'स्वामिश्रीजीनी जय जय गाता...'

गुरुजी ने बहुत भव्य सिंचन किया है... बहनों की मुखिया आनंदी दीदी को पू. ज्योति बहन पुष्प कलगी अर्पण करें...
–प.पू. हंसा दीदी

गुरुजी ने काकाजी को अधिकार दिया, तो काकाजी की उन पर दृष्टि पड़ गई...
– प.पू. प्रेम बहन

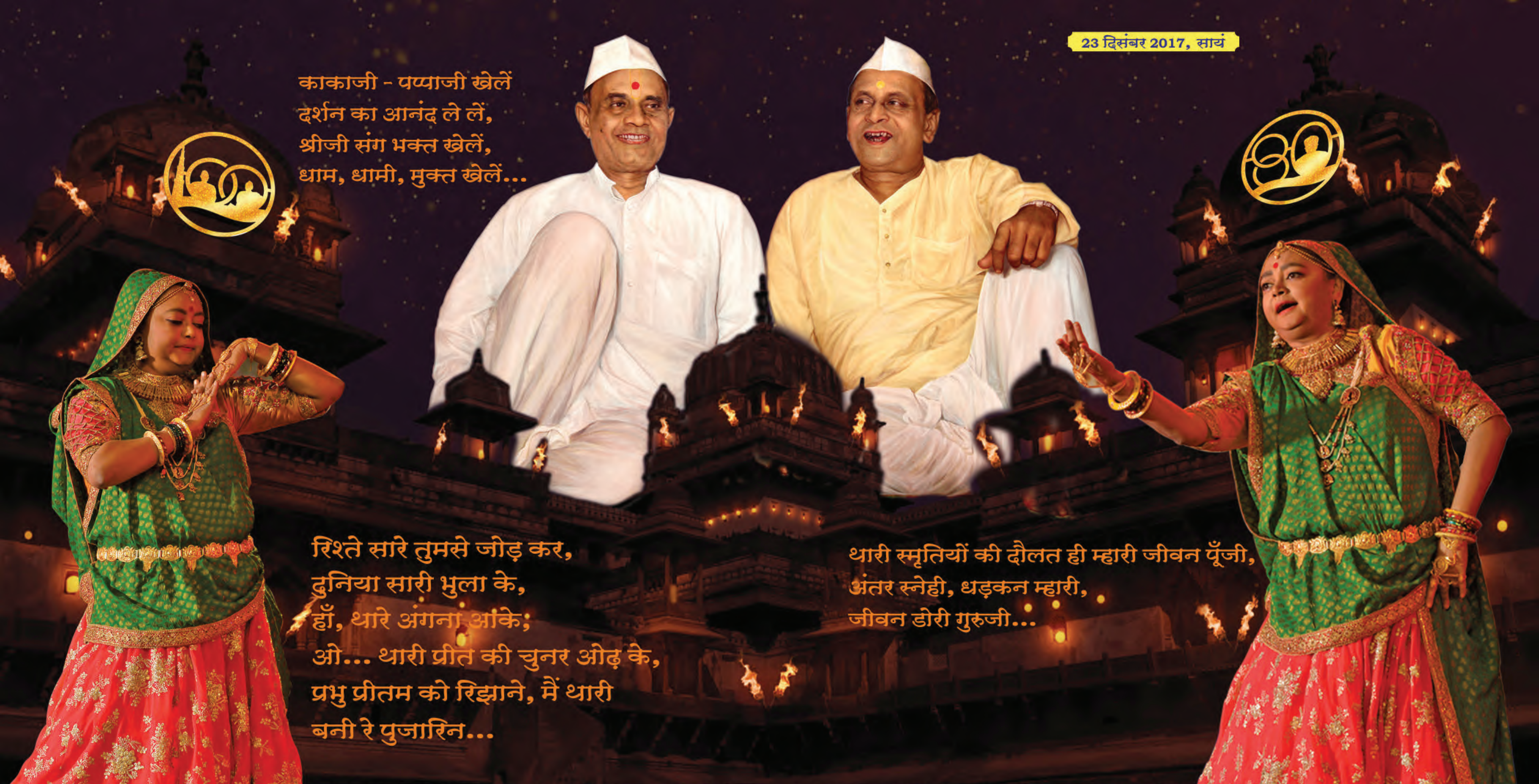

काकाजी - पप्पाजी खेलें
दर्शन का आनंद ले लें,
श्रीजी संग भक्त खेलें,
धाम, धामी, मुक्त खेलें...

रिश्ते सारे तुमसे जोड़ कर,
दुनिया सारी भुला के,
हाँ, थारे अंगना आके;
ओ... थारी प्रीत की चुनर ओढ़ के,
प्रभु प्रीतम को रिझाने, मैं थारी
बनी रे पुजारिन...

थारी स्मृतियों की दौलत ही म्हारी जीवन पूँजी,
अंतर स्नेही, धड़कन म्हारी,
जीवन डोरी गुरुजी...

पुराने समय की गाड़ियाँ...

वर्षों पहले गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी एवं प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी जैसी दिव्य विभूतियों ने कैसे-कैसे साधनों से सत्संग का किस प्रकार विकास किया और उस परिश्रम का परिणाम ही यह 'गुणातीत समाज' है।

गुणातीत समाज के केन्द्रों के संतों, मुक्तों एवं हरिभक्तों द्वारा प.पू. गुरुजी को विशिष्ट हार, मुकुट एवं स्मृति भेंट अर्पण...

मैं 80 साल का हूँ ही नहीं...
18 साल का हूँ। शरीर से नहीं,
हार्ट से मैं 18 साल का हूँ।
– प.पू. गुरुजी

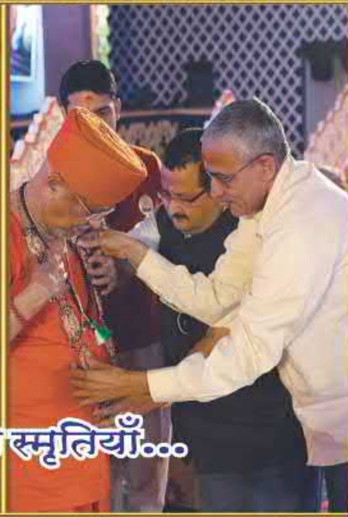

प.पू. गुरुजी के 80वें प्राकट्योत्सव की दिव्य स्मृतियाँ...

बापा, काका, पप्पा, स्वामिजी और सोनाबा रूपी पंचम कृपा का पात्र आज हमें प.पू. मुकुंदजीवनस्वामिजी-गुरुजी के द्वारा प्राप्त है।

–प.पू. अश्विनभाई (मोगरी)

गुरुजी ने कहा था–हम सब गुणातीत समाज के सदस्य हैं। हम दिल्ली, सांकरदा, विद्यानगर वाले नहीं हैं; हम किसी के नहीं हैं, हम सब गुणातीत समाज के हैं। हम सब गुणातीत समाज के सदस्य बनेंगे, तो ब्रह्मभाव प्रगट होगा, वर्ना ब्रह्मभाव प्रगट नहीं हो सकता...

–प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी

गुरुजी की निकली सवारी, गुरुजी की मूर्ति है निराली...

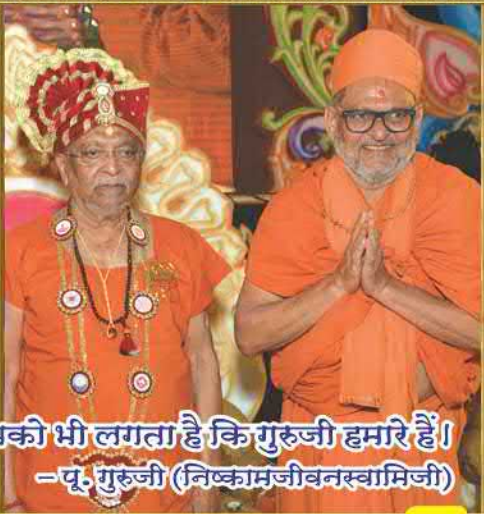

आप सबको लगता है कि गुरुजी हमारे हैं, ऐसा ही हम सबको भी लगता है कि गुरुजी हमारे हैं।

–पू. गुरुजी (निष्कामजीवनस्वामिजी)

गुरुजी ने कैसा भव्यातिभव्य कार्य किया कि खुद शून्य-अस्तित्वहीन बन गए। एकदम अंधेरे में पत्थर फेंका और काका-पप्पा के वचन पर 'याहोम' हो गए। शून्य में से समर्थ बन गए।

– प.पू. ज्योति बहन

मैं यहाँ देखता हूँ कि सबमें बहुत माहात्म्य है। ये सच है कि जहाँ माहात्म्य है - निरपेक्षभाव से भक्ति कर रहे हैं, उन सबके फेस पर आनंद, आनंद, आनंद ही दिखता है। आनंद का ऐसा महासागर यहाँ उमड़ता देखकर बहुत ख़ुशी हुई। छोटे बच्चे - बड़ों को देखो, काम करने वाले को देखो, माला फिराने वाला देखो, मंदिर में देखो, पंडाल में देखो, जहाँ भी जाओ सबको योगीजी महाराज के रूप गुरुजी को राज़ी करने का - उनके दर्शन करने का भीतर से माहात्म्य है। स्वामिजी व अक्षरविहारीस्वामिजी के प्रति भी इतना माहात्म्य है। अश्विनभाई, शांतिभाई, दिनकरभाई, भरतभाई, प्रेमस्वामी, शास्त्रीस्वामी सबके प्रति माहात्म्य है। ***योगीजी महाराज कहते थे कि 'संप, सुहृद्भाव और एकता रखो और मिलजुल कर काम करो।' योगीजी महाराज का वह ब्रह्मसूत्र, माहात्म्य में रहते – निर्दोषभाव से रहते यहाँ के सारे समाज में कार्यान्वित हो रहा है, जिससे उनके मुँह पर आनंद छलक रहा है।*** *यही योगीजी महाराज की श्रेष्ठ 125वीं जन्मजयंती मनाई कहा जाएगा। योगीजी महाराज के अनुसार हम जीवन जिएँ। योगीजी महाराज यानि – आनंदस्वरूप! सहजानंदस्वामी ने अपने गुरु द्वारा अपना नाम रखवाया – सहजानंद! मीन्स सहज में जो आनंद मिलता है, जिनके दर्शन - स्मृति से, जिनकी बातें सुनने से, जिनका गुणगान गाने से भीतर से सहज आनंद प्रगट होता है – वो सहजानंद और योगीजी महाराज भी सहजानंद रूप थे कि सदा ही आनंद करो, आनंद करो। योगीजी महाराज की कोई भी मूर्ति देखेंगे, तो वह इतनी आनंदयुक्त मूर्ति है कि उसे देख कर, दर्शन करके हम भी आनंदविभोर बन जाते हैं। 'आनंद' गुणातीत की देन है। यह कब प्राप्त होता है ? जब माहात्म्य से निर्दोषभाव युक्त सेवा करते हैं और भजन- प्रार्थना का बल मिलता है, तब होता है।*

यहाँ दिल्ली के केन्द्र में गुरुजी ने 50 साल में क्या किया ? उन्होंने यहाँ बैठकर अक्षरपुरुषोत्तम उपासना का संदेश दिया। मीन्स – भगवान के प्रति प्रेम व निष्ठा है कि मेरे जीवन में जो हो रहा है, होता रहेगा और होता है, वो मेरे भगवान ही कर रहे हैं। वो भगवान कहाँ हैं ? तो, ऐसे संत पुरुष के द्वारा भगवान प्रगट हैं; उनके प्रति प्रेम रखेंगे और उनके संबंध वाले सबके प्रति निर्दोषभाव रखेंगे, तो भीतर से आनंद प्रगट हो जाएगा। उपासना की यही सही रीत गुरुजी के सान्निध्य में बैठकर, यहाँ दिल्ली के सब मुक्तों ने जीवन में पाई है। उन सबको देखते हैं कि वे आनंदविभोर होकर काम करते हैं और यही सही रीत में योगीजी महाराज का 125वां प्रागट्य पर्व मना रहे हैं।

हम सभी को काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी, अक्षरविहारीस्वामिजी, गुरुजी, दिनकरभाई, भरतभाई, अश्विनभाई, शांतिभाई, प्रेमस्वामी, शास्त्रीस्वामी और ये सब संत बहनों के सान्निध्य में भक्ति करने का मौका मिला है, तो बापा के इस प्रागट्य पर्व पर हम प्रार्थना करते हैं कि उनका ब्रह्मसूत्र – 'संप, सुहृद्भाव और एकता रखो', 'हिलमिल कर काम करो' – हम सबके जीवन में साकार हो और बापा का जो कार्य है, उसे बढ़ाने के लिए हम मिल-जुलकर काम करें।

गुरुजी, अक्षरविहारीस्वामी और स्वामिजी की तबियत बहुत अच्छी रहे, यही आज योगीजी महाराज के प्रागट्य पर्व पर प्रार्थना है और आचार्यजी से मेरी फिर से प्रार्थना है कि दिल्ली में तो आप बहुत आते-जाते होंगे,

तो अवश्य हमारे गुरुजी के पास आते रहना और गुजरात आओ तो हमारे अपने आश्रम में भी आना यही प्रार्थना। सबको जय स्वामिनारायण।

संतभगवंत प.पू. साहेबजी के आशीर्वाद के तुरंत बाद **दिल्ली पुलिस – लॉ एन्ड ऑर्डर के स्पेशियल कमिश्नर श्री एस.पी. सिंह** दर्शन हेतु आए, प.पू. गुरुजी ने पुष्पहार एवं बॅज से उनका स्वागत किया। और... **आचार्यश्री बालकृष्णजी महाराज** ने निम्न व्यावहारिक एवं आध्यात्मिक सूझ दी –

...आज के इस पावन मंच पर जहाँ पर दिव्य संतों का दर्शन हो रहा है, वहीं पर इस सभागार में संतों के सान्निध्य से अपने जीवन को पवित्र बना कर, पूर्णानंद को प्राप्त करने के लिए उपस्थित भक्त समूह हमारे मध्य में है। मैं मंच पर परम पूज्य श्रद्धेय वंदनीय स्वामी हरिप्रसादजी महाराज और हमारे प्रति जिनका अनुग्रह और आशीर्वाद - शुभकामना हमेशा बड़ी कृपा बरसती है, ऐसे प.पू. साहेबजी और प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी तथा जिन्होंने अपने तप - पुरुषार्थ से हम सबको यहाँ पर एकत्रित किया व जो मूल में प्रेरणा के स्रोत हैं, ऐसे परम पूज्य वंदनीय गुरुजी महाराज और मंच पर बैठे प.पू. भरतभाईजी, हमारे प.पू. अश्विनभाईजी, प.पू. शांतिभाईजी तथा अन्य सभी पूज्यनीय संतवृंद व आप सबको मैं भावतः वंदन, अभिनंदन और प्रणाम करता हूँ।

जब पतंजलि का प्रारंभ भी नहीं हुआ था, दिव्ययोग मंदिर ट्रस्ट की स्थापना भी नहीं हुई थी, उससे पहले से ही पूज्य साहेबजी और अनुपम मिशन से पतंजलि का नाता है और यह नाता इस जन्म के लिए नहीं, अपितु जन्म - जन्मांतर के लिए है, मैं ऐसा मानता हूँ। उसी समय पू. गुरुजी के दर्शन का लाभ हुआ और आज तक वह संबंध-भाव अटूट है, अखंड है और अखंडित रहेगा, इसमें कोई संशय नहीं है। क्योंकि शास्त्रों में ऐसा कहा है कि सूर्योदय का जो पूर्वार्द्ध होता है – सूर्य का जो उदय का काल होता है उसी तरह संतों की मैत्री होती है। ज्यों-ज्यों दिन की वृद्धि होती है – त्यों-त्यों वह मैत्री और संबंध प्रगाढ़ता को प्राप्त होता है। इसी प्रकार श्रद्धेय स्वामिजी और पतंजलि योगपीठ तथा हम सबका संबंध, साहेबजी के साथ जो रिश्ता है वह अटूट व अखंड है। आज शरीर से रुग्ण हैं, आयु से वृद्ध हैं फिर भी आप देखेंगे कि ***गुरुजी महाराज के चेहरे पर जो सौम्यता, भव्यता, दिव्यता है, उससे मैं मानता हूँ यदि भक्त अपना कल्याण करना चाहे, तो उनके दर्शनमात्र से अपना कल्याण हो सकता है वे ऐसी विभूति हैं।***

शास्त्रों में कहा है कि संत तीर्थरूप होते हैं। इसीलिए कहा है– ***'साधुनां दर्शनं पुण्यं'*** *अर्थात् संतों का दर्शन पुण्यदायक है।* ***'तीर्थभूता ही साधवः'*** *साधु स्वयं में तीर्थ के रूप होते हैं। वे जीते - जागते, चलते - फिरते तीर्थ हैं।* ***'कालेन फलति तीर्थः'*** *जो तीर्थ है, वहाँ पर जाने का जो फल है वो समय आने पर मिलता है। परंतु* ***'सद्यः साधु समागमः'*** *! जो संत के संग का फल है, उसके लिए प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ती है। तो, ऐसे*

तीर्थरूप संत का दर्शन होना आप लोगों का भी सौभाग्य है।

हमारा तो बचपन भी संतों में गुज़रा। जब हमने दुनिया और जीवन को समझने का प्रयास किया, उसे भी संतों से ही समझा और आज जो कुछ भी कर रहे हैं, वो संतों की कृपा का प्रसाद ही है; इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं है। संतों का आशीर्वाद और परमात्मा की कृपा के प्रतिरूप ही देश के लिए, इस राष्ट्र के लिए कुछ करने की एक भावना है जिससे कि भारतीय संस्कृति- सनातन वैदिक की इस परंपरा को किस तरह से हम दुनिया में बढ़ा सकते हैं। आज समाज के अंदर बड़ी विषमताएँ, विकृतियाँ, प्रतिकूलताएँ, संघर्ष, अवसाद, तनाव है। जहाँ भी जाएँ वहाँ नकारात्मकता है। जहाँ भी जाएँ वहाँ दुनिया के साधनों की वृद्धि तो है, परंतु ***मानवीय मूल्यों का ह्रास हो रहा है। यदि इस ह्रास को रोकने में कोई सक्षम है, तो वो संत लोग ही हैं;*** *इसके अतिरिक्त दूसरा कोई रास्ता नहीं है।*

हमें केवल अपने कल्याण के लिए ही संतों के पास नहीं जाना है। आगे आने वाली पीढ़ियों को यदि आप बचाना चाहते हैं, तो संतों के सान्निध्य के अतिरिक्त दूसरा कोई मार्ग नहीं है। हमारे जीवन में संस्कार होंगे, हमारे जीवन के अंदर सच्चरित्रता और आध्यात्मिकता होगी, तो ही हम जीवन को सही ढंग से समझ पाएँगे- जी पाएँगे।

साहेबजी अभी मेरे विषय में कह रहे थे कि दुनिया का बड़ा धनी आदमी है। मैं सच बताऊँ, तो ये कपड़े भी किसी के दिए हुए हैं। आप लोग जैसे भक्त जो देते हैं वही पहनता हूँ। आज तक मैं भगवान से यही प्रार्थना करता हूँ और आप सब संतों से भी हमारी यही प्रार्थना है कि ***हमें ऐसे ही आशीर्वाद दे दें कि दुनिया बढ़े या घटे, दुनिया के पदार्थ घटे या बढ़े, भौतिक समृद्धि जाए या रहे, परंतु हमारे मन में, हमारे भाव में जिस संकल्प से हमने ये साधुमार्ग को प्रारंभ किया था, उसमें कभी न्यूनता और क्षीणता न आने पाए।*** *संसार के साधन कार्यसिद्धि के लिए हैं, ये हमारे जीवन का लक्ष्य नहीं है। ये हम गृहस्थों को भी सिखाते हैं। ये काम करना हमने साहेबजी आप लोगों से सीखा है। जब मैं आप लोगों के यहाँ गया, देखें तो ये पहली घटना थी और दुनिया के लिए अद्भुत है कि हम कहें कि पैंट कमीज़ों में भी संन्यासी रहते हैं। आजकल तो संन्यासी के भगवे कपड़े में कहीं पैंट कमीज़ छिपा होता है। यहाँ पैंट कमीज़ों के अंदर भगवा छिपा हुआ है, बस फ़र्क़ यही है। एक उदाहरण है कि किस तरह कर्मयोग के द्वारा भक्तियोग की साधना की जाती है। उपासना का ये स्वरूप देखना हो, तो अनुपम मिशन एक उदाहरण है। संत लोग अपनी फॅक्ट्री में गोंद बनाते हैं। ऐसी फॅक्ट्री चलानी तो हमने आपसे सीखी। वो अलग बात है कि हमारी थोड़ी बड़ी हो गई और कोई कहानी नहीं है...*

साहेबजी आपके चेहरे की मुस्कुराहट, आपके चेहरे की सरलता, साधुता, निश्छलता एक छोटे से बच्चे की तरह आपकी भोली-सी जो मुस्कुराहट है, वो सबको आकर्षित करती है, सबको प्रेरणा देती है और पूरे देश के लोगों के लिए भी आप सभी लोग एक उदाहरण हैं। हमें बड़ा गर्व है कि आप लोगों का आशीर्वाद हमारे सिर पर है, हमारे लिए शुभकामनाएँ हैं।

जहाँ तक गुरुजी की सेवा की बात रही, तो हम सेवा करने वाले नहीं हैं, परमात्मा की कृपा आपके ऊपर

है; आपका आदेश होगा, भगवान को हमें जो निमित्त बनाना होगा, हम हर क्षण तैयार हैं। क्योंकि आपकी मुस्कुराहट से हज़ारों लोगों को मुस्कुराहट मिलती है, आपकी प्रसन्नता से हज़ारों लोगों को प्रसन्नता मिलती है।

इसीलिए हम हज़ारों लोगों की सेवा न कर पाएँ, तो ऐसे लोगों की सेवा कर लें जिनमें से एक को ठीक करने से बहुत ठीक होते हों; वो हमारे लिए भी बहुत सौभाग्य की बात होगी।

तो मेरी बहुत शुभकामनाएँ, आप सबको मेरा प्रणाम-वंदन है। संतों के चरण में पूज्य श्रद्धेय स्वामिजी भी आज यहाँ उपस्थित होते, लेकिन दक्षिण भारत में उनका पहले से ही प्रोग्राम था, उस कार्यक्रम में श्रद्धेय स्वामिजी गए हुए हैं। उनकी ओर से, पतंजलि योग पीठ परिवार की ओर से – जुड़े हुए आप सब भी पतंजलि परिवार के अंग हैं, क्योंकि ***साहेबजी और हम लोग व गुरुजी अलग नहीं हैं।*** *भगवान ने अपने-अपने काम में लगा रखा है, सब उसी के काम को करने में जुटे हुए हैं, तो सबको बहुत-बहुत प्रणाम और वंदन। ओम।*

इस सत्र के अंत में **प्रगट ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामिजी** ने अपने करकमलों से, गुणातीत समाज के लिए अनमोल पुस्तक **'पंचम पुरुषार्थ'** का विमोचन किया। सन् 1966 से पूर्व बॅप्स संस्था द्वारा प्रकाशित **'स्वामिनारायण प्रकाश'** में और बाद में **'श्री अक्षरपुरुषोत्तम सत्संग पत्रिका'** में **गुरुहरि काकाजी** ने अपने लेखों-ज्ञानवार्ता से अध्यात्म की-प्रगट प्रभु को राज़ी करके, परमपद की प्राप्ति करने की जो कुंजियाँ बताई हैं, उसका संपूर्ण खज़ाना इसमें निहित है।

पुराने समय की संदूक़ी में से इस पुस्तक का अनावरण करके **प्रगट ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामिजी** ने **'संत समागम'** का अत्यधिक महत्त्व बताते हुए आशीर्दान दिया–

...योगीजी महाराज विज़नरी थे, पारदर्शक, सरल, ख़ानदानी, भगवद्‌भाव को प्राप्त किए हुए थे। उनके आशीर्वाद से सब कुछ सरल हो जाता था... कथावार्ता की जुगाली करनी ही है।

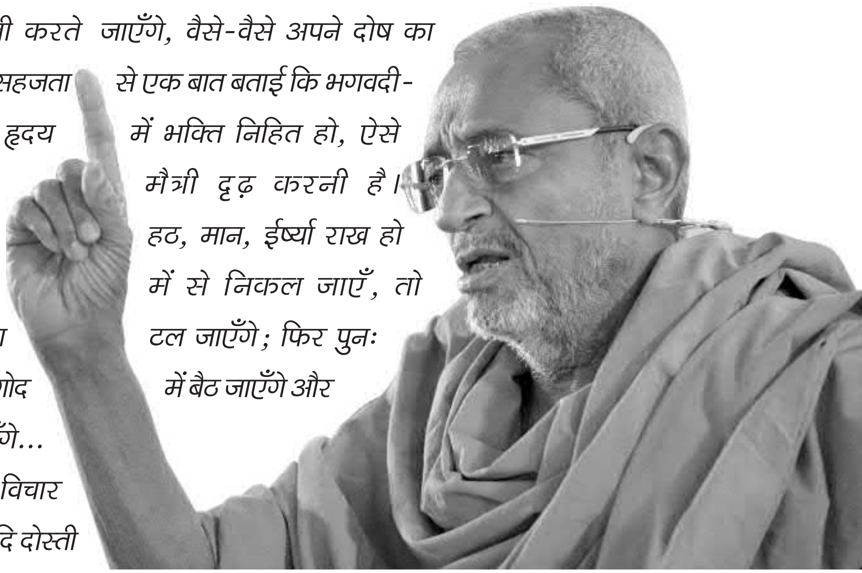

कथावार्ता की जैसे-जैसे जुगाली करते जाएँगे, वैसे-वैसे अपने दोष का दर्शन होगा... योगीजी महाराज ने सहजता से एक बात बताई कि भगवदी-संत का समागम करना। जिसके हृदय में भक्ति निहित हो, ऐसे किसी भगवदी साधु के साथ हमें मैत्री दृढ़ करनी है। फलस्वरूप कैसे भी काम, क्रोध, हठ, मान, ईर्ष्या राख हो जाएँगे। हठ, मान, ईर्ष्या हमारे जीव में से निकल जाएँ, तो समझना कि जन्म-मरण के रोग टल जाएँगे; फिर पुनः जन्म लेना नहीं पड़ेगा। भगवान की गोद में बैठ जाएँगे और भगवान के आनंद से सुखी हो जाएँगे... बुद्धि और हृदय में शुभ-पवित्र विचार प्रगटाने हैं... माँ जैसे संत के साथ यदि दोस्ती

पक्की हो जाए, तो हठ, मान, ईर्ष्या, अपेक्षा – उपेक्षा जैसे राक्षसों को किसी भी प्रकार निकलना पड़ता है। इसलिए गुणातीतानंदस्वामी ने कहा कि ***दो अच्छे साधु और चार अच्छे हरिभक्तों के साथ दोस्ती होनी चाहिए।*** *ऐसा करेंगे तो स्वामी की बात के चौदह प्रकरण सिद्ध हो जाएँगे। संत का समागम मुफ़्त में नहीं मिलता। हज़ारों जन्मों का पुण्य उदित होता है, तब संत समागम मिलता है...*

संत के समागम बिना –

पाँच इंद्रियाँ विवेकी नहीं बन सकतीं,

शुभ विचार प्रकटते नहीं,

चिंता राख नहीं होती,

मेरा-तेरा, खींचातानी जीवन में से जाती नहीं।

संत का समागम हो, तो घर में कभी क्लेश उत्पन्न न हो।

हर एक में हठ, मान, ईर्ष्या और काम, क्रोध, लोभ है। कृष्ण परमात्मा ने इन सबको नरक का द्वार बताया है। गुणातीतानंदस्वामी ने अपनी बातों में भी उन्हें नरक का द्वार बताया है। इसलिए गुरुहरि योगीजी महाराज ने सूत्र दिया कि संप, सुहृद्भाव, एकता से जिएँगे, तो ये सब टल जाएँगे... साधु के समागम के बिना जन्म-मरण का रोग जाता नहीं। जन्म-मरण के रोग की कोई मॅडीसिन नहीं है। अभी तक मिली नहीं है और मिलने वाली भी नहीं है... वी आर धी मोस्ट फॉरच्युनेट पीपल इन धी वर्ल्ड... वर्ल्ड नहीं स्वर्ग! स्वर्ग में चिंतामणि बहुत होंगी, जिससे किसी चीज़ से छुओ तो वो सोने की हो जाए। लेकिन, वहाँ हठ, मान, ईर्ष्या दूर नहीं होती। हठ, मान, ईर्ष्या निकालने के लिए तो साहेब, शांतिभाई, अश्विनभाई जैसे संतों का समागम करना पड़े...सभी स्वरूपों के चरणों में एक ही प्रार्थना है कि हमें ऐसा बुद्धियोग दो कि हे प्रभु! माँ जैसे साधु के साथ हमारी मैत्री अखंड टिकी रहे। हमें संतों के प्रति मनुष्यभाव न आए, वे हमें जँचें और वे हमें जँचेंगे तो हमारे काम, क्रोध, ईर्ष्या टल जाएंगे...

संत के समागम बिना –

शुभ विचार प्रकट नहीं होते,

सच्चा प्रेम प्रकट नहीं होता,

सुहृद्भाव प्रकट नहीं होता,

सरलता प्रकट नहीं होती।

संत का समागम तो चाहिए, चाहिए और चाहिए ही।

बेकार विचारों को जीव में से निकालने के लिए समागम मस्ट, मस्ट, मस्ट... भगवान और संत की कृपा के बिना सच्चा प्रेम मिलता नहीं है... संत माँ हैं और प्रभु बाप हैं। प्रभु का भजन और संत समागम हम करते ही रहें, करते रहें... संतों को स्वार्थ नहीं, उन्हें अपेक्षा नहीं, उपेक्षा नहीं। संतों का प्रेम निर्दोष-पवित्र है। इसीलिए जन्म-मरण का रोग टलता है... संप, सुहृद्भाव, एकता से जब तक न जिया जाए, तब तक हठ, मान, ईर्ष्या, काम, क्रोध और लोभ टलते नहीं। जाग्रत होकर सुहृद्भाव और सरलता से जीओ, ताकि शुभ विचार प्रकटें, पवित्र विचार और भक्ति प्रकटे... माँ जैसे साधु के साथ दोस्ती करके, हम हमारे जीवन को कृतार्थ करके इक्कतर पीढ़ी को तारें...

23 दिसंबर – सायं करीब 5:00 बजे **गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी बंधुजोड़ी शताब्दी एवं प.पू. गुरुजी के 80वें प्राकट्य दिन** निमित्त **बहनों की सभा** का मंगल प्रारंभ हुआ। विन्टेज बग्गी में गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी की मूर्ति की निश्रा में बिराज कर वड़ील बहनों ने सभा मंडप में प्रवेश किया। **'अलबेला सजन आयो री...'** भावनृत्य से स्वागत करते हुए सत्संग की युवतियाँ उन्हें मंच तक लेकर आईं। सभा के प्रारंभ में प.पू. गुरुजी एवं प.पू. दीदी से खूब अपनत्व से जुड़ी **पू. शिल्पी माथुरजी** ने 'स्वामिनारायण धुन' प्रस्तुत करके माहौल को इलॅक्ट्रीफाई कर दिया। सुबह की भाँति इस सत्र में भी स्क्रीन द्वारा **बहनों के आध्यात्मिक उत्थान** का निम्न रहस्य जाना...

14 अक्तूबर, 1963 धनतेरस की दोपहर को ताड़देव में आराम में जाते हुए गुरुहरि पप्पाजी ने बहनों से कहा– *'इस दुनिया में तुम्हारा जो प्रिय हो, उसे नूतन वर्ष का कार्ड लिखो।'*

बहनों को अंतर में हुआ– *'हमारे लिए तो एक पप्पा और दूसरे बापा हैं। उनके अतिरिक्त कोई है ही नहीं। पप्पाजी तो यहाँ विराजमान हैं, सो प.पू. बापा को ही कार्ड लिखते हैं।'*

ऐसा सोच कर एक नोटबुक के गत्ते पर अक्षरदेरी का चित्र बना कर रंग भर कर प्रार्थना लिखी। गुरुहरि पप्पाजी ने वह पढ़ कर, उसमें थोड़ा बदलाव करवाया और पू. तारा बहन उसे तुरंत पोस्ट कर आईं।

तब प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी, प्रभुदासभाई के रूप में गुरुवर्य योगीजी महाराज के सेक्रेटरी बन कर सेवा करते थे। नए वर्ष के दिन उन्होंने प.पू. बापा के समक्ष सारी पोस्ट पढ़ीं। उन्होंने बहनों द्वारा भेजे कार्ड का कवर देखा। उस पर लिखा नहीं था कि किसने भेजा है। सो, उन्हें हुआ कि शायद दादर मंदिर से संतों ने कार्ड भेजा होगा। इसलिए पढ़ने के लिए खोला तो उस पर ज्योति, तारा, हंसा, लक्ष्मी नाम देखा। प.पू. प्रभुदासभाई ने कार्ड पढ़ा–

साक्षात् को,

जैसे अनुपम योगेश्वरों ने आपके भरोसे भगवान भजने का कदम उठाया है।
वैसे ही आपके भरोसे जीतेजी एकांतिक होने के लिए,
हमने हमारी नाव भवसागर में आपके आसरे पर छोड़ी है।
भले जगत न जाने, लेकिन हे नाथ! आप तो जानते हैं न ?
कृपादृष्टि रखना।
'तेरी रुचि जीवन मेरा, दिव्यता बढ़ा देना सुंदीरवर शामळिया...'

– ज्योति, तारा, लक्ष्मी, हंसा के जय स्वामिनारायण!

'यो वेति युगपत्सर्वम् प्रत्यक्षेण सदा स्वतः' *– स्मृति करते नाथ तुम्हारी,*
मन होता है अविकारी; सुंदीरवर शामळिया

बहनों की यह प्रार्थना सुन कर प.पू. बापा राज़ी हो गए!

प.पू. प्रभुदासभाई ने प.पू. बापा से पूछा– *'बापा! आप इसमें आशीर्वाद लिखेंगे ?'*

प.पू. बापा ने कहा – *'हाँ लाओ, लिख दूँ।'*

और... उसी कार्ड में प.पू. बापा ने आशीर्वाद लिख दिए –

एकांतिक धर्म महाराज सिद्ध करवाएँगे।

वचनामृत गढडा प्रथम 23, गढडा मध्य 30, 45, अमदावाद 2, 3

– साधु ज्ञानजीवनदास के जय स्वामिनारायण!

यह बात गुरुहरि काकाजी ने प.पू. गुरुजी को बताई थी। **प.पू. गुरुजी ने** सहज ही गुरुहरि काकाजी से **पूछा** – *गुणातीतानंदस्वामिजी ने तो अपनी बातों में लिखा है कि बहनें एकांतिक धर्म सिद्ध कर ही नहीं सकतीं।* **गुरुहरि काकाजी** ने फट् प.पू. गुरुजी से कहा – ***उसी गुणातीत ने अब ये आशीर्वाद दिए हैं न!***

यह सुन कर प.पू. गुरुजी को एहसास हुआ कि जैसे **अनादि महामुक्त भगतजी महाराज** ने **गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज** को वड़ताल छोड़ने के लिए मना किया था, पर **अनादि महामुक्त अदाश्री** ने कहा –

'मैं भगतजी ही तुम्हें कह रहा हूँ कि वड़ताल का दरवाज़ा छोड़ दो' –

यूं गुरुहरि काकाजी को कितना प्रत्यक्षभाव होगा कि गुणातीतभाव अखंड है और उसे प्रगटाई हुई प्रगट विभूति अब जो कह रही है, वही परम सत्य है; फिर पुरानी कही बात की अहमियत नहीं रखनी चाहिए।

ऐसे विरल आशीर्वाद की झांकी देखने के बाद, गुरुवर्य योगीजी महाराज द्वारा एकांतिक धर्म सिद्ध करने का आशीर्वाद प्राप्त करके, समस्त स्त्री जाति के लिए स्वतंत्रता का प्रतीक बनीं, गुणातीत समाज के सभी केन्द्रों की अध्यात्म वीरांगनाओं को नमन करने हेतु युवतियों ने **'प्रेमल, कोमल, मृदुल, वत्सल...'** भावनृत्य प्रस्तुत किया। युवतियों द्वारा व्यक्त की गई भक्ति का अनुभव करके सभी स्वरूपों ने मंच पर अपना आसन ग्रहण किया। गुणातीत ज्योत की बहनों द्वारा गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी की मूर्ति को हार अर्पण किए जाने के बाद प्रेरणामूर्ति **प.पू. हंसा दीदी** ने आशीर्वाद देते हुए कहा –

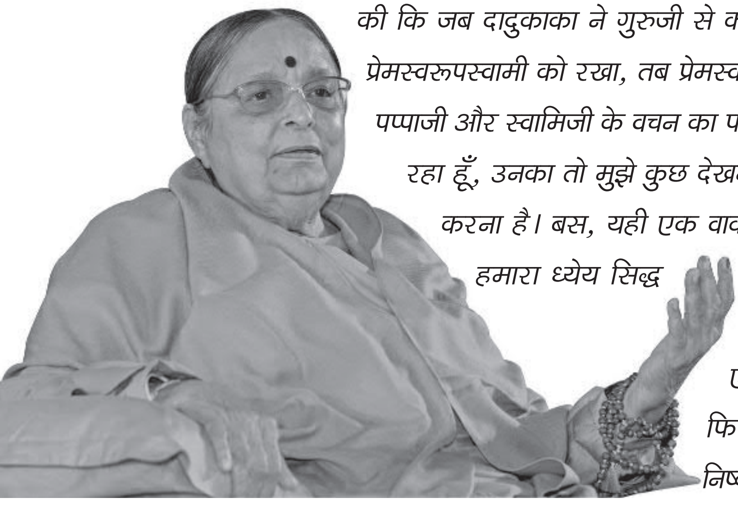

*...**'गुरुजी' यानि ताड़देव के हमारे साथीदार – दिलीपभाई!** कल प्रेमस्वामी ने बात की कि जब दादुकाका ने गुरुजी से कहा कि तुम दिल्ली जाओ और उनकी सेवा में प्रेमस्वरूपस्वामी को रखा, तब प्रेमस्वरूपस्वामी ने सोच लिया कि मुझे तो काकाजी, पप्पाजी और स्वामिजी के वचन का पालन करना है। इसलिए मैं जिसकी सेवा में जा रहा हूँ, उनका तो मुझे कुछ देखना ही नहीं है। मुझे केवल अपना निशान सिद्ध करना है। बस, यही एक वाक्य निरंतर हम सभी के लिए है, जब तक कि हमारा ध्येय सिद्ध नहीं होता...*

पप्पाजी-काकाजी किस प्रकार एक होकर रहे? एक तो दोनों भाइयों को एक-दूजे से प्रेम और फिर योगीबापा का आशीर्वाद मिला। उन दोनों का निष्काम प्रेम और सर्वोपरि स्वरूपनिष्ठा! उसका सारा

परिणाम है। दोनों गृहस्थी, धन, धाम, कुटुंब वाले थे, लेकिन योगीबापा ने क्यों उन्हें साक्षात्कार करवाया? क्यों उन्हें इतनी अधिक सत्ता दी? उसकी वज़ह यह है कि निष्कामभाव से मौके की सेवा की और सच्चे सत्पुरुष की आंतरिक प्रसन्नता प्राप्त कर ली...

एक बार **दादुकाका** ने व्यापार के लिए लोन लिया था। तभी शास्त्रीजी महाराज ने गढडा का मंदिर बनाना शुरू किया था। शास्त्रीजी महाराज दादुकाका को पुत्र के समान मानते थे। शास्त्रीजी महाराज मुंबई आए, तब दादुकाका दर्शन करने के लिए आए। तब शास्त्रीजी महाराज एकदम उदास होकर बैठ गए। पिता उदास हो, तो बेटे को कहाँ चैन पड़ता है? दादुकाका ने उनसे पूछा – क्या हुआ?

शास्त्रीजी महाराज ने कहा – क्या करूँ, वृद्धावस्था में मुझे क्या सूझा कि मैंने गढडा का मंदिर बनाना शुरू किया।

काकाजी कई बार कहते थे कि हमें झमूरा बन जाना है। इसलिए काकाजी शास्त्रीजी महाराज के झमूरे बन गए। उन्होंने शास्त्रीजी महाराज की रुचि देख ली कि अभी उन्हें क्या चाहिए? तो, अपने व्यापार के लिए एल.सी. खुलवाने के लिए जो पैसे इकट्ठे किए थे, वो तुरंत ही शास्त्रीजी महाराज को समर्पित कर दिए; इस बात को हम सभी जानते हैं। इस बात से प्रसन्न होकर शास्त्रीजी महाराज ने कहा – बोल, तुझे क्या चाहिए? तो, जैसे गुणातीतानंदस्वामी ने चंदन का लेप लगवा कर, भगतजी महाराज को गले लगाया था, वैसे ही शास्त्रीजी महाराज ने दादुकाका को गले लगाया। वही चंदन सोनाबा, ज्योति बहन, तारा बहन ने इकट्ठा करके रख लिया। उसका सभी दर्शन करते हैं। मौके की यह सेवा कही जाए।

इसी प्रकार, **वच. अत्यं. 26** में महाराज ने कह दिया है – साधु गुण युक्त बाइयों की सेवा बाइयों को करनी चाहिए। भाइयों की सेवा भाइयों को करनी चाहिए। पर, ऐसे साधु गुण युक्त कोई बहन होनी चाहिए न? इसलिए शास्त्रीजी महाराज की प्रसन्नार्थ योगीजी महाराज ने पप्पाजी को अफ्रीका से बुलाने के लिए काकाजी को साक्षात्कार करवाया।

पप्पाजी से दादुकाका ने कहा – तुम शरद्पूर्णिमा के उत्सव में गोंडल जाओ और वहाँ बापा से पूछना कि ये ज्योति-तारा का क्या करना है?

काकाजी स्वयं भी जा सकते थे। लेकिन, उन्हें पता था कि योगीजी महाराज के पास बाबुभाई को भेजना है। बापा से पप्पाजी ने पूछा – दादुभाई पुछवा रहे हैं कि ये ज्योति बहन और तारा बहन का क्या करना है?

जोगीबापा ने कह दिया – बहनें भगवान भजें तो क्या हरज़ है? महाराज जोग दे देंगे और वह कार्य आपको करना है।

उसका फल अब दिखाई दे रहा है। उस वचन का पालन किया और ताड़देव के उस घर में बहनों का समूह एकत्र हुआ।

गुरुजी, दिलीपभाई के रूप वहाँ पधारते थे। लेकिन, काकाजी उन्हें जानते थे तो दिल्ली भेजा। दिल्ली क्यों भेजा? तो, काकाजी के पास जोगीबापा के वचन की स्मृति थी। जोगीबापा ने कहा था कि हमें दिल्ली में मंदिर

करना है और आज देखते हैं कि **कैसा भव्य समाज आज खड़ा कर दिया है। इस समाज में श्रद्धा, विश्वास, विवेक, माहात्म्य है। गुरुजी का इतना अधिक माहात्म्य है।** शुरुआत में तो कैसा जीवन था, वो तो पकाई साहेब वगैरह सब जानते हैं। पप्पाजी-काकाजी द्वारा हमें ऐसे सत्पुरुष मिले हैं और **हम पप्पाजी-काकाजी का समागम कर सकें, इसलिए जोगीबापा ने हमें अलग करके इन स्वरूपों की भेंट दी।** आज हम देखते हैं कि हरिप्रसादस्वामी महाराज यदि संस्था में होते, तो उनका क्या स्थान होता ? पहले हुए साधु महंतस्वामी महाराज। सारा ये भव्य समाज हरिप्रसादस्वामी महाराज ने किया।

ऐसा ही काम बहनों के लिए करना था। इसलिए जोगीबापा ने अपनी पावर इस्तेमाल करके 52 से 66 तक माया को शांत रखा, पाँव के नीचे दबा कर रखा, वर्ना अंदर-अंदर तो चलता ही था। पर, माया की चलने नहीं दी और जब बहनों के लिए मकान हो गया और बहनें वहाँ रहने के लिए गईं, तब 28 मई को बापा ने कहा–लो, तुम्हारे दादुकाका और बाबुकाका की तुम्हें भेंट दे रहे हैं। भेंट स्वीकार कर लो। उनका सच्चा समागम करना। स्वामिजी ने भी बहनों को पसंद किया, बहनें संपूर्ण समर्पित हो गईं। 1984 में पप्पाजी ने बा द्वारा प्रेम बहन एवं हरिधाम की बहनों को दीक्षा दिलवाई। गुरुजी ने आनंदी दीदी को भी... जैसे सुबह 'वचन का मूल्य' देखा, उसी प्रकार गुरुजी ने काकाजी का वचन आत्मसात् किया। गुरुजी कितने होशियार, उनकी बुद्धि में भी नहीं बैठता था, लेकिन ऐसी परिस्थिति में संकल्प पूरा करने की ताक़त, वचन का पालन करने की ताक़त पाई। भगवान ने उनकी संपूर्ण मदद की है।

आज सुबह स्वामिजी ने अद्भुत आशीर्दान दिया। बहुत समय से हम इनसे हठ, मान, ईर्ष्या की बात सुनते हैं। जब तक हम में से ये नहीं निकलेंगे, तब तक स्वामिजी की सामान्य लगती ये बात, जो कि सामान्य नहीं है वह निकलेगी नहीं। हम में हठ, मान, ईर्ष्या होती ही है। हमें भीतर में टटोलना पड़ता है। लेकिन, भीतर में टटोल कर केवल बैठे नहीं रहना पड़ता, बल्कि स्वीकार करना पड़ता है कि हाँ, मुझमें मान, ईर्ष्या है। फलां को हार पहनाया वह मानो पसंद नहीं आया हो, तो तुरंत अंतर्दृष्टि करना कि उसे पहनाया तो मुझे क्यों नहीं पसंद आया ? जब अपना दोष खुद देखना सीखेंगे, तभी हमारे 'सच्चे सत्संग' की शुरुआत होगी। हम ऐसी इच्छा, भावना और याचना करेंगे कि हे महाराज ! आप ऐसे संतों के द्वारा प्रगट हो, तो हमें हठ, मान, ईर्ष्या में से बाहर निकालो, तब अक्षरधाम का सुख जीतेजी प्राप्त करेंगे। फिलहाल किसी को दुःख नहीं है। लेकिन, हमारी मनमानी हो तो सुख-सुख, मान मिले तो सुख-सुख। लेकिन, हमारी उपेक्षा हो, अवगणना हो, कोई प्रशंसा न करे, तो भीतर में थोड़ी उथल-पुथल हो जाती है।

हमें 'सच्चा सत्संग' करना है और इसके लिए कहीं जाने की ज़रूरत नहीं है। घर में बैठ कर भी प्रभु से प्रार्थना हो सकती है। हे महाराज ! अब मेरा अहं निकाल देना। मुझे अपने अस्तित्व में नहीं, आपके अस्तित्व में रहना है। ताकि आपको पहुँचे ऐसी सेवा मुझे करनी है।

तो, आज इस भव्य दिन–काकाजी-पप्पाजी की शताब्दी, कितना भव्य उत्सव और फिर गुरुजी महाराज को 80 वर्ष पूर्ण हुए। **हमें यह 'भक्ति उत्सव' मना कर, पराभक्ति में जाना है कि हमारी भक्ति**

भगवान को पहुँचनी चाहिए। हम जो भी कुछ करें, वो हमारे भीतर बैठा अहंकार खा न ले, प्रभु को पहुँचे ऐसी सेवा करनी है। *ऐसे भव्य दिन पर हम हमारे प्रभु से कहें कि आप तो हमारे साथ हैं ही; वो तो आपने विश्वास दिलाया ही है कि आई एम ऑलवेज़ विध यू – मैं आपके साथ हूँ। तो आप मेरे साथ हैं ही। पर,* ***मेरी मुझसे रक्षा करना। मेरे प्रत्येक कदम में पहले आप रहना और फिर मुझे चलाना मेरे प्रभु।*** *हमारा ये सारा उत्सव... ग्यारह बहनें हैं, लेकिन गुरुजी ने बहुत भव्य सिंचन किया है। तो, इन बहनों की मुखिया आनंदी दीदी को* ***पू. ज्योति बहन*** *पुष्प कलगी अर्पण करेंगी।*

उपरोक्त आशीर्वचन के अंत में प.पू. हंसा दीदी ने प्रार्थना करते हुए कहा – ***मेरी मुझसे रक्षा करना...*** प.पू. हंसा दीदी, गुरुहरि पप्पाजी को पूर्णतः आत्मसात् करी ऐसी दिव्य विभूति हैं कि अपनी वाणी, विचार और संकल्प से वे संबंध वालों की सर्व प्रकार से रक्षा करती हैं। पर, उनका यह वाक्य खूब ही विचारणीय है। दरअसल इस प्रार्थना द्वारा **प.पू. हंसा दीदी ने हम सबको सचेत किया है कि हम अपने मन, बुद्धि, मान, बड़प्पन, महत्त्वाकांक्षा, इच्छा, अपेक्षा इत्यादि के बहकावे में आकर, अनमोल संबंध को गँवा न दें।** सो, प.पू. हंसा दीदी के पुनीत चरणों में कोटि नमन कि उन्होंने हमें ऐसी सूझ दी!

प.पू. हंसा दीदी के निवेदन अनुसार, पुष्प कलगी के रूप में **प.पू. आनंदी दीदी** पर प्रसन्नता व्यक्त करके **प.पू. ज्योति बहन** ने आशिषवर्षा की –

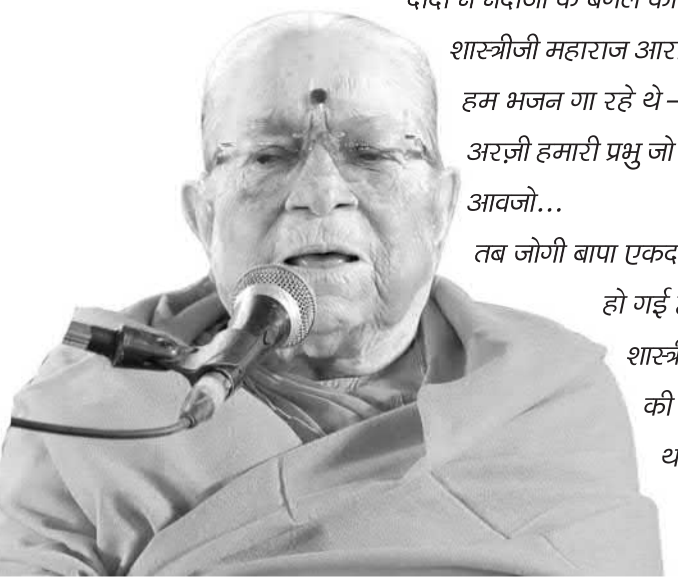

दीदी ने नंदाजी के बंगले की जो बात की, तब दीदी और हम सब छोटे-छोटे थे; शास्त्रीजी महाराज आराम कर रहे थे और जोगीबापा आरती करने जा रहे थे। हम भजन गा रहे थे –

अरज़ी हमारी प्रभु जो ने दफ्तरमां, क्यारे ए लक्ष्यमां लेवाय रे। दीनबंधु वे'ला आवजो...

तब जोगी बापा एकदम खड़े रह गए और बोले हम सबकी अरज़ी स्वीकार हो गई है। किसने अरज़ी स्वीकारी! किसने आशीर्वाद दिए! शास्त्रीजी महाराज ने रसिकभाई को (महाराज के) चरणारविंद की जोड़ दी थी। शास्त्री महाराज ने रसिकभाई से कहा था – जो दास का दास बने, तू उसे ये चरणारविंद देना। बाद में शास्त्री महाराज तो अंतर्धान हो गए, लेकिन जब काकाजी नंदाजी का काम करके अमदावाद आए, तब वो चरणारविंद की जोड़ उन्हें भेंट दी। वो चरणारविंद ताड़देव में आए; रोज़ उसका सुंदर दर्शन करते थे। फिर 1963 की साल में योगीबापा ने कहा – हे दादुभाई! हमने तुम्हें जो चरणारविंद दिए हैं, वे हम दादर मंदिर में पधरा देंगे, तो सबको दर्शन होगा। काकाजी ने कहा – हाँ, बापा। वे चरणारविंद आज भी दादर मंदिर में हैं। ***ऐसे स्वरुप किसी में बंधते नहीं हैं। बस सत्पुरुष का वचन ही 'विधि' और अन्य सब 'निषेध'।***

काका और पप्पा ने बापा का वचन मूर्तिमान किया।

बापा को अक्षरधाम का स्वरुप मानने के बाद उन्होंने जो बिगुल बजाया, उसमें हम सब का नंबर लग गया। उसमें पाँच तो अपने संत थे – गुरुजी, कोठारीस्वामी, ज्ञानस्वरुपस्वामी, अक्षरविहारीस्वामी और पाँचवें माधवस्वामी। वे ललिता भाभी के घर जाते और कहते हमें साधु बनना है, तो हम पूरी - सब्जी बनाना सीखेंगे। क्योंकि हमें वहाँ जाकर सब बनाना होगा न, तो हमें सीखना पड़े। फिर कहते कि ऊपर जाकर बा को नहीं बताना कि ये सब ऐसा कर रहे हैं। वे सब बना कर खाते और आनंद - मज़ा करते...

गुरुजी यानि बहुत शार्प मेमरी - एकदम शार्प। एक बार योगीजी महाराज का मांझा (अफ्रीका) से पत्र आया। उसमें सबके नाम लिखे थे, उसमें गुरुजी का नाम नहीं था। पप्पाजी ने सोचा – दिलीप अभी आएगा तो देखेगा। सो, पप्पाजी ने छोटे अक्षर से उनका नाम लिख दिया। गुरुजी तो महा बुध्धिशाली। पत्र पढ़ कर, देख कर कहने लगे – आपने लिखा है न ? परंतु, गुरुजी को ऐसा हुआ कि बापा की डायरी में मेरा नाम नहीं ? इतनी दूर, मांझा से पत्र आया और मेरा नाम नहीं ? यूं सोच कर ऐसे रोए कि जोगीबापा का पत्र वहाँ से आया कि हे दिलीपभाई ! आप के आँसू की धारा यहाँ टरोरो तक पहुँची। कैसी तीव्रता से भजन किया होगा कि बापा को पत्र में लिखना पड़ा।

बापा जयपुर से अटलादरा आने वाले थे। तब इन पाँच ही जनों को बुलाया था। तो, बा को ऐसा लगा कि अब इनका मुंडन कर ही देंगे, सो उन्हें हुआ कि सबको टीका करके भेजूं। गुरुजी कहने लगे – मुझे नहीं जाना है, मुझे पूजन नहीं करवाना है। तो, उन्होंने पूजन भी नहीं करवाया और गए भी नहीं। बाकी सब गए, बापा के दर्शन किए - मिले। ऐसे ही ज्ञानस्वरुपस्वामी जिनका नाम वासुदेव था, वे मैच के बहुत शौक़ीन थे। जब बापा ने मिलने के लिए बुलाया, तो ज्ञानस्वरुप कहने लगा – मुझे नहीं जाना है। लेकिन, बा और पप्पाजी ने कहा कि बापा बुला रहे हैं, तो जाना है। वो बोला – ठीक है आज शाम को जाकर, उनसे मिल कर कल शाम को वापिस आ जाऊँगा। रात को पहुँच कर सुबह मिले। फिर पूछा – बापा अब जाऊँ ? बापा तो अंतर्यामी ! उन्होंने कहा – नहीं, हमें तो हिंमतनगर जाना है। हिंमतनगर जाकर रात को सबको छत पर बिठा कर ठंडा फ्रूट सलाद बनवा कर खिलाया और कहा – मुझे तो सब को वच. अंत्य 26 जैसा बनाना है, इसीलिए मैं आया हूँ। सबको अंत्य 26 जैसा बनाने के लिए बापा का कार्य था और उन्होंने यह जाना कि दादुभाई और बाबुभाई ऐसे हैं, जो जगत को गिने बिना मेरा ये कार्य करेंगे। काका, पप्पा, बा पर कलश उड़ेल दिया। सच 52 से 66 तक 'जोगी भगवान है, जोगी भगवान है, जोगी भगवान है' – ऐसा कह - कह कर सब का माहात्म्य गाया और महाराज व गुणातीत को पहचानने का जो कार्य था, वो दादुकाका ने किया कि 'वही के वही महाराज आज जोगीबापा के रूप में आए हैं। उन्हें यदि हम पहचान लेंगे, तो ही हमारा अंतिम जन्म होगा।'

...दीदी ने जैसे बताया कि सब सही हो गया, ज्योत का मकान पूरा बन गया उसके बाद विमुख प्रकरण हुआ। हम सब तो (दादर मंदिर) जाते थे। पर, 40 संतों को काका - पप्पा ने बापा का माहात्म्य समझाया था और इसीलिए वे सब दादर मंदिर महंतस्वामी की आज्ञा लेकर बापा से मिलने के लिए निकले। आज देखें कि हर

एक संत भागीरथ कार्य कर रहे हैं। हर एक 'स्वरुप' बन गए। बापा अपना कार्य अनंत रीति से कर रहे हैं।

67 की साल में जब गुरुजी को यहाँ (दिल्ली) भेजना था, निवास करवाना था, तब कुछ भी नहीं था। किराए के मकान में रहते थे और कुछ था ही नहीं, पर काका के वचन का पालन किया।

एक बार गुरुपूर्णिमा पर पप्पाजी सांकरदा मंदिर गए हुए थे।

पप्पाजी ने कहा – मूसल तो बजता है, पर हमें तो सब्बल बजाना है।

मतलब – विरुद्ध प्रकृति वालों के साथ मैत्री करनी और उसका कुछ देखना नहीं।

पप्पाजी ने गुरुजी से कहा – अक्षरविहारी में दिव्यभाव रखना, अगले साल मैं तुमसे पूछूँगा।

गुरुजी ने कहा – ठीक है।

गुरुजी ने सोचा – प्रसंग तो बनते ही हैं। पर, बाबुकाका ने कहा है, इसलिए पूरा एक साल नहीं देखना।

फिर जब अगली गुरुपूर्णिमा पर पप्पाजी सांकरदा गए, तो उन्होंने गुरुजी से पूछा – क्या रिज़ल्ट आया?

गुरुजी ने कहा – बाबुकाका, फेईल हो गया।

पप्पाजी ने पूछा – क्यों?

गुरुजी ने कहा – आपने कहा था, सिर्फ इसीलिए झुक जाता था।

पप्पाजी ने कहा – हाँ, बस यही, तू अपना पक्का कर कि मुझे निर्दोषबुद्धि रखनी है, दिव्यभाव रखना है।

फिर यह दृढ़ता करी कि दिव्यभाव रखना है।

बाद में काकाजी ने यहाँ (दिल्ली) भेज दिया और अब गुरुजी सब्बल बजा रहे हैं। बाँस में छेद करते हैं, तो बांसुरी बनती है। लेकिन, ***गुरुजी ने सब्बल में छेद किया और हम देखते हैं कि कैसा भव्यातिभव्य कार्य किया कि खुद शून्य - अस्तित्वहीन बन गए। एकदम अंधेरे में पत्थर फेंका और काका - पप्पा के वचन पर 'याहोम' हो गए। शून्य में से समर्थ बन गए।*** *बापा, काकाजी, पप्पाजी का परिश्रम... काकाजी एक सप्ताह यहाँ, दूसरे हफ्ते कहीं और, फिर किसी और जगह जाते। किस हेतु? ऐसे रत्न तैयार करने के लिए और वे रत्न तैयार हुए।*

शरदपूर्णिमा के दिन रात को 12 बजे एक हीरे में से अनंत हीरे बने, ऐसे ही भगवान ने वर्तमान समय में कर दिया है। हमारे महिला मंडल के लिए भी मुझे कोटि - कोटि आनंद होता है कि भगवान ने जगह - जगह ऐसे स्वरुप दे दिए। दीदी, देवी बहन, प्रेम बहन, दिल्ली में आनंदी बहन, माधुरी बहन, जयश्री बहन – लंडन, अमेरिका हर जगह ऐसे 'स्वरुप' रख दिए।

...*ये मनुष्य देह बार - बार नहीं मिलता। ये मिला और उसमें इतने अच्छे संजोगों में हमें स्थान मिला और इस जन्म को अंतिम जन्म बना लें, तो दूसरा जन्म नहीं लेना पड़ेगा।* ***इस पृथ्वी पर स्वर्ग - अक्षरधाम प्राप्त हुआ, ऐसा मान कर अक्षरधाम का सुख लें। शुभ संकल्प और अंतर में शांति प्रदान करे उसका नाम 'संत'।*** *हमें यह करना है और वो करें।*

कल एक बड़ा प्रसंग हुआ। ***गुरुजी ने स्वामिजी और साहेबजी की मूर्ति प्रतिष्ठा का सुंदर आयोजन***

किया था। आरती करने का समय हुआ, तब साहेबजी ने कहा–कल स्वामिजी आकर आरती करेंगे, तो गुरुजी ने तुरंत मान लिया। गुरुजी द्वारा खुद किया वो संकल्प या कार्य, मेइन कार्य था; उसके लिए हँसते मुख से छोड़ देना और दूसरे दिन वैसे ही स्वीकार करना, वो स्वरहित होने का एक लक्षण है। *वर्ना हम मायूस हो जाते हैं, हमारे अहंकार को टच हो जाए, तो उठ के चले जाते हैं, दुःखी हो जाते हैं, पर गुरुजी को ऐसा कुछ भी नहीं। गुरुजी सच में स्वरहित 'स्वरुप' बन गए।* ***हमें उनसे इतना तो सीखना ही है कि जब हमारे मान को चोट पहुँचे, तब यह मानें कि भगवान कर रहे हैं।*** *पर, वह कैसे करेंगे ? बस स्वामिनारायण-स्वामिनारायण मंत्र... मंदिर में इतने बड़े अक्षरों में लिखा है कि ऐसा हो तब स्वामिनारायण मंत्र जपना और किसी के लिए कोई भी विचार नहीं करना कि इसने यह कहा इसलिए ऐसा हुआ।* ***हमारी बुद्धि बहुत मोटी है, कल्याण के लिए बुद्धि तीक्ष्ण रखनी चाहिए।***

सच में हम सब बहुत ही भाग्यशाली हैं कि ऐसा जोग मिला, ऐसे स्वरुप हमें मिले। हमारा लालन-पालन करते हैं। सभा में दो -दो घंटे हो जाते हैं सो कुछ रिफ्रेशमेन्ट देते हैं कि मेरे स्वरुपों को भूखा नहीं रख सकते। वो भी ध्यान रखते हैं। कितनी बड़ी बात कही जाए! ऐसा लगता है कि वे मुक्तों में महाराज को देखते हैं। सुखपाल में सोना, शक्कर का हलवा खाकर, रेशम की रज़ाई ओढ़ कर, भगवान भजना–ऐसे सानुकूल संजोग आज हैं। तो, हम उसका लाभ उठाएँ और बस लग पड़ें कि ओहोहो ! ये मौका, जोग, प्राप्ति और देह एक साथ हमें मिला। हे महाराज धन्यवाद ! आप हमें ऐसे ही अपने में लयलीन कर देना, अस्तित्वहीन बना देना। आपका जैसा स्वरुप है, उसकी वैसी ही पहचान करवा कर हमें कृतार्थ करना, यही प्रार्थना। जय स्वामिनारायण।

(प.पू. हंसा दीदी द्वारा भेजी प्रार्थना पढ़ते हुए) *हाँ रुको-रुको, गुरुजी की तबियत अच्छी रहे और उनकी शताब्दी मनाई जाए, ऐसी तबियत हो जाए यही प्रार्थना। उसके लिए एक ही मिनिट धुन कर लें, इतने सारे इकठ्ठे हुए हैं तो अच्छा है। सहजानंदस्वामी महाराज की जय।*

आज बहनों की सभा में गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी बंधुजोड़ी शताब्दी के साथ-साथ प.पू. गुरुजी का 80वाँ प्राकट्य दिन भी मना रहे थे। उत्तर भारत के कुछ मुक्तों ने गुरुहरि काकाजी का स्थूल दर्शन किया है, तो कइयों ने नहीं भी किया; लेकिन प.पू. गुरुजी की वाणी, वर्तन और विचार से गुरुहरि काकाजी आज भी प्रत्यक्ष हैं। साथ ही साथ, मुक्तों के अंतर में अन्य गुणातीत स्वरूपों का माहात्म्य सिंचन करते हुए, सभी की व्यावहारिक व आध्यात्मिक परवरिश करने में प.पू. गुरुजी ने मानो अपने लहू का पानी किया है। सो, ऐसी भावना व्यक्त करती बहनों व भाभियों की छोटी-सी वीडियो क्लिप का दर्शन स्क्रीन पर किया।

तत्पश्चात् गुणातीत ज्योत की ओर से और **प.पू. हंसा दीदी** की आज्ञा से **पू. हर्षा बहन** एवं बहनों ने ***'स्वामिश्रीजीनी जय जय गाता...'*** भजन द्वारा गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी एवं प.पू. गुरुजी के प्रति भक्तिसुमन अर्पित किए।

भजन द्वारा स्वरूपों को अंतर से नमन करने के बाद **प.पू. प्रेमबहन** ने आशीर्वाद दिया–

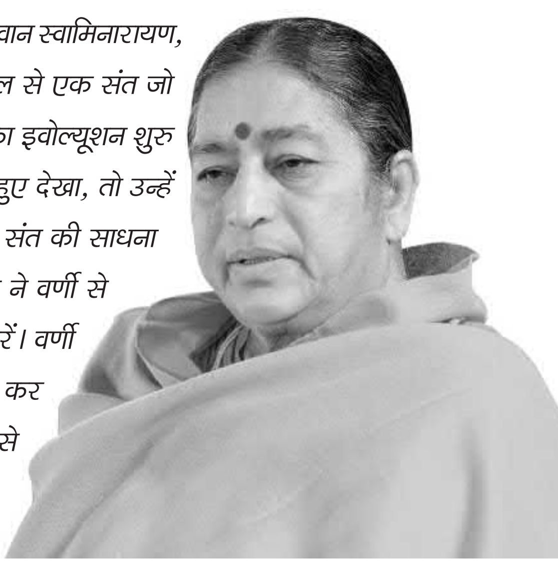

1983 में स्वामिजी ने प्रवचन करते हुए बहुत सुंदर बात की थी कि भगवान स्वामिनारायण, नीलकंठ वर्णी वेश में जब वन विचरण कर रहे थे, तब पचास साल से एक संत जो सिन्सियर साधना कर रहे थे, उसके फलस्वरूप उनकी आत्मा का इवोल्यूशन शुरु हुआ। वो संत देह और मन से दुःखी थे। सो, वर्णी को जब जाते हुए देखा, तो उन्हें आवाज़ दी–ओ महाराज, यहाँ आइए। वर्णी नज़दीक आए। उस संत की साधना ऐसी थी कि उसे ख्याल पड़ रहा था कि ये भगवान हैं। उस संत ने वर्णी से प्रार्थना की कि मैं देह और मन से दुःखी हूँ। कृपया मुझे सुखी करें। वर्णी हाथ में लिए सेब को खाते हुए चले जा रहे थे। वर्णी ने सेब दिखा कर पूछा–यह खाना है ? मेरा झूठा है। संत ने वर्णी से कहा कि आप जिसे खा रहे हैं, उसका तो कल्याण हो ही रहा है, पर वो जिस पेड़ पर लगा था, उसका भी कल्याण हो गया। फिर मेरे कल्याण में क्या कमी रहने वाली है ? सो, प्रसादी के रूप में वह सेब संत ने ग्रहण किया। फिर उसने वर्णी से आशीर्वाद माँगा और वर्णी ने निश्चिंतता व निर्मानीभाव का आशीर्वाद दिया। दोबारा उसने कहा कि मुझे और भी कुछ माँगना है, आप देंगे ? महाराज ने 'हाँ' की। उसने कहा कि जब भी मैं आपको याद करूँ, तब आप मुझे इसी रूप में दर्शन देंगे ? 'हाँ' कह कर महाराज वहाँ से चल पड़े। वर्षों बीत गए, गढडा में सभा हो रही थी और तब महाराज ने पुनः यह प्रसंग याद किया। तब मुक्तानंदस्वामी में प्रवेश करके महाराज ने हम सबके लिए प्रश्न पुछवाया–महाराज, उसने तो कुछ भी नहीं किया, फिर भी आपने मुफ़्त में निश्चिंतता दे दी, पर हम तो निरंतर साथ में रहते हैं, तो हमें निश्चिंतता होगी ? महाराज मुक्तानंदस्वामी की बहुत मर्यादा रखते थे, फिर भी महाराज ने एक सूचन किया–मुक्तानंदस्वामी, जो करना है वह नहीं होता और जो नहीं करना, वह हो रहा है। उन्होंने पूछा–क्या ? महाराज ने कहा–दूसरों का गुण नहीं लेते। ऐसी शिविर, उत्सव जो कुछ हो रहा है, वह इसलिए कि हम भक्तों का गुण ले सकें। गुण लेकर हम घर जाएँ। गुणगान गाने के लिए हम सब इकट्ठे हुए हैं।

आज सुबह भजन सुन रहे थे कि गुरुजी ने काकाजी को जीवंत रखा है। काकाजी जब स्वधाम पधारे, उसके बाद स्वामिजी पहली बार ताड़देव पधारे। वहाँ काकाजी के सोफे पर काकाजी की मूर्ति थी और स्वामिजी वहाँ दंडवत् कर रहे थे। वहाँ उपस्थित सेवकों को ऐसा हुआ कि काकाजी के सोफे पर स्वामिजी को बिठाएँ तो ? अतः स्वामिजी से आग्रह किया कि काकाजी के सोफे पर आप विराजो, मूर्ति खिसका दी। स्वामिजी ने कहा मैं इस सोफे पर नहीं बैठ पाऊँगा। यह तो शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज की प्रसादी का सोफा है। वे बोल रहे थे कि सेवकों ने पकड़ कर स्वामिजी को बिठा दिया। वे थोड़ी देर बैठे और फिर खड़े हो गए। फिर सभा में गोष्ठि करते हुए बात की–आप लोगों को लगता होगा कि मैं विवेक रख रहा हूँ कि काकाजी के सोफे पर मुझ से नहीं बैठा जाएगा, पर ऐसा नहीं है। ***शायद तुम ऐसा मानते होगे कि काकाजी चले गए हैं। पर, मैं***

ऐसा मानता हूँ कि काकाजी आज भी प्रत्यक्ष हैं और इस सोफे पर विराजमान हैं। *इसलिए मैं बैठ नहीं रहा था, पर आप लोगों ने जबरदस्ती बिठाया, तो फिर मैंने ऐसा विचार किया कि मैं काकाजी की गोद में बैठ गया हूँ। गुणातीत पुरुषों को जीवन में निरंतर लाईव रखने का यह विज़न कोई अलग बात है। हाज़िर ही हैं, गए ही नहीं हैं, कर्ता-हर्ता मान कर जिएँ, यह बिलकुल अलग विचार है।*

ताड़देव में कितने साधक भाई रहते... समूह जीवन में व्यावहारिक बातें भी होती हैं। एक बार काकाजी के लिए साबुन लाने की बात चल रही थी। सो, एक साधक ने कहा कि इस बार लक्स साबुन लाएँ। दूसरे ने कहा–नहीं, सिनथॉल लाते हैं। तीसरे ने कहा–नहीं, पियर्स लाते हैं–ट्रान्सपेरन्ट साबुन। फिर कुछ निर्णय नहीं ले पाए। सो, सब इकट्ठे होकर काकाजी के पास गए। काकाजी ने देखा कि सब इकट्ठे होकर आए हैं, तो लगता है कि कुछ बात करनी है। काकाजी ने सबसे पूछा, तो सेवकों ने बताया– काकाजी, इस बार आपके लिए कौन-सा साबुन लाएँ ? काकाजी ने इन्स्टन्ट कहा–सुहृद्भाव का साबुन! फिर वो भले मिट्टी का होगा, तो भी मुझे जँचेगा। ***योगीजी महाराज का जीवनमंत्र है कि सुहृद्भाव जीव का जीवन है और इन पुरुषों ने अपने जीवन में तो चरितार्थ किया ही है, लेकिन हम किस प्रकार इस मार्ग पर चलें, इसके लिए निरंतर परिश्रम कर रहे हैं।***

...वडोदरा में एक जगह जागास्वामी की जयंती की सभा थी। तब रमणभाई गांधी स्वामिजी के जोग में नहीं आए थे। काकाजी को उन्होंने आमंत्रण दिया था। काकाजी वहाँ पधारे; वहाँ काकाजी का स्वागत हुआ और स्टेज पर बिठाया। फिर काकाजी को बात करने के लिए कहा गया। काकाजी दो-चार लाइनें ही बोले थे कि दो-तीन जनों ने कहा–ये दादुभाई को किसने आमंत्रण दिया ? अभी कार्यकर्ता आएँगे, तो वे हम पर नाराज़ होंगे। इन्हें यहाँ नहीं ठहरने दे सकते, इन्हें भेज देना चाहिए। यह कितनी बड़ी बात कही जाए कि काकाजी प्रवचन कर रहे थे और उन्हें कह दिया कि आपको तो यहाँ से जाना पड़ेगा, वर्ना हमें डाँट खानी पड़ेगी। उस समय काकाजी के मुख पर किसी भी प्रकार का क्षोभ नहीं था। उनके साथ वासणा वाले भीखाभाई थे। उन्हें दुःख हुआ कि यह क्या बात हुई कि आमंत्रण देने के बाद ऐसी उपेक्षा और अपमान करते हैं। काकाजी ने उनसे कहा–हमें सुन लेना चाहिए, सारा दर्शन किया करो। हमारी उपेक्षा कोई कर ही नहीं सकता। इस विषय में जब वहाँ के रमणभाई गाँधी को पता चला, तो उन्हें काकाजी का खूब गुण आया कि गुणातीत समाज के ये पुरुष कितनी ऊँची भावना से जीते हैं और उसके बाद रमणभाई गाँधी स्वामिजी के जोग में आए। उनके संपर्क से कितने लोग स्वामिजी के जोग में आए। यूं ***इन पुरुषों ने बहुत कसनी सही है, जिसकी हम कल्पना नहीं कर सकते।***

पप्पाजी को योगीजी महाराज ने आज्ञा दी थी कि तुम महंतस्वामी का समागम करने जाना। पप्पाजी सिन्सियरली रोज़ ही महंतस्वामी का समागम करने के लिए जाते थे। वहाँ आधे घंटे तक बैठते, लेकिन एक भी शब्द महंतस्वामी बोलते नहीं थे। पर, खूब भाव से योगीजी महाराज की आज्ञा का महिमा से पालन करने के लिए वे जाते। एक बार ***महंतस्वामी सभा में सहज बोल गए कि 'बचाव करना भी अपना मान है।'***

पप्पाजी ने वो सूत्र पकड़ लिया *और जब योगीजी महाराज ने उन्हें मुंबई में खजानची की सेवा सौंपी, तब योगीबापा आधी सेवा गोंडल भेजने की बात करते और आधी सेवा मुंबई में रखने के लिए कहते। सो, अन्य अधिकारियों को ऐसा होता था कि इतनी सेवा आती है, तो आधी कहाँ जाती है ? वे पप्पाजी से न बोलने वाले शब्द कहते कि इन्हें तो बहनों का आश्रम बनाना है, इसलिए सारे पैसे खा जाते हैं इत्यादि। ऐसी कई - कितनी बातें कहीं। लेकिन, ऐसे भी कई थे कि जिन्होंने पप्पाजी को परखा हुआ था। सो, उन्होंने कहा – बाबुभाई, आपके पास तो पूरा हिसाब साफ़ लिखा हुआ है। तो आप सबको बताओ ताकि सबकी बोलती बंद हो जाए। तब पप्पाजी ने कहा – महंतस्वामी ने कहा था कि अपना बचाव करना भी मान है। ऐसी आध्यात्मिक बात हमें कौन बता सकता है ? स्वामिजी ने आज एक बात दोहराई कि दो अच्छे साधु और चार अच्छे हरिभक्त के साथ दोस्ती करना। जन्माष्टमी बिल्डिंग में गोरधनकाका के घर साप्ताहिक सभा होती थी, तब एक मुक्त आरती के समय महिमा के वेग में चप्पल पहन कर ही ठाकुरजी की आरती करता था। गोरधनकाका ने एक-दो बार उसे सूचन किया, लेकिन कुछ उसने सुना - करा नहीं। सो, उन्होंने पप्पाजी से बात की – फलां मुक्त ऐसा करता है, क्या करना चाहिए ? पप्पाजी ने कहा – वह मुक्त सिर पर जूते रख कर भी आरती उतारे, तो भी वह दिव्य है। एक अन्य सूचन करते हुए कहा –* ***भक्त सही वर्ते ज़रूरी नहीं, पर भक्त जिस प्रकार वर्ते उसे दिव्य मानना ज़रूरी है।***

गुरुजी की महिमा की बात कोठारीस्वामी ने एक बार अपने प्रवचन में की थी कि स्वामिजी जब योगीजी महाराज के साथ विचरण में जाते थे, तब नहाने-धोने, सोने की कोई सुविधा नहीं थी। लेकिन ऐसी असुविधाओं में बापा के साथ विचरण करते थे। तब एक बार स्वामिजी ने बापा से प्रश्न पूछा – बापा, आप इतनी असुविधा में विचरण करते हैं और अभी तक कितनी कसनी में रहे ? तब बापा ने कहा – शास्त्रीजी महाराज का दर्शन और संबंध ऐसा है कि हज़ारों कसनी एक मिनिट जैसी लगती है, ऐसी महिमा है। स्वामिजी ने पुनः पूछा – बापा, ऐसी महिमा कब उदित होगी ? तब योगीबापा ने कहा – बड़े पुरुष की कृपादृष्टि हो और बड़े पुरुष को अधिकार दें, तब ऐसी महिमा प्रगटती है। यह प्रसंग कहते हुए कोठारीस्वामी ने बात की – ***गुरुजी ने काकाजी को अधिकार दिया, तो काकाजी की उन पर दृष्टि पड़ गई।*** *इसलिए गुरुजी के हृदय में महिमा का प्रवाह बह रहा है। छोटे-बड़े सभी के प्रति उनकी एक जैसी दृष्टि है। पत्रिका में एक प्रसंग आया था। निदांश नाम के ढाई साल के बालक के घर गुरुजी गए थे। उसके दादा गुरुजी को बता रहे थे कि मेरे पोते को सारी गाड़ियों की नॉलेज है कि कौन-सी गाड़ी है। उस दिन गुरुजी मर्सीडीज़ में गए होंगे; वह देख कर बालक बोल उठा – मुझे इसमें बैठना है। गुरुजी को पता चला, तो वहाँ से लौटते हुए अपनी गाड़ी की चाबी उस बच्चे के पापा को दी कि इसे लॉंग ड्राईव पर ले जाओ, वह खुश हो जाएगा। इतने* ***छोटे बच्चे की बात ध्यान में रख कर इतनी महिमा समझना बहुत अनोखी बात है।*** *अभी हमने* ***भक्तों के इन्टरव्यू का लाईव दर्शन किया, तो ख्याल पड़ा कि गुरुजी और दीदी ने कितनी अच्छी, किस प्रकार परवरिश की है।*** *तो, हर एक को कितना प्रेम है। वच. लोया 3 के अनुसार, भगवान और संत के लिए क्या न हो, ऐसी हर एक के हृदय की*

भावना का दर्शन किया।

काकाजी जब स्वधाम पधारे, तब स्वामिजी मुंबई थे और फिर ट्रेन से वडोदरा स्टेशन उतरे। उन्हें पता चला कि गुरुजी भी थोड़ी देर में दूसरी ट्रेन से आ रहे हैं। इसलिए स्वामिजी स्टेशन पर रूक गए। गुरुजी जब स्टेशन पर उतरे और प्लेटफार्म पर स्वामिजी को देखा, तो वहीं दंडवत् करने लगे। कितनी भारी कसौटी कही जाए कि जब अपने प्राण पुरुष ने देह त्याग दिया हो तब मन की ऐसी व्याकुल अवस्था होती है और उस समय भी खुद ऐसी भक्ति अदा करना चूके नहीं!

***इन पुरुषों का जो विज़न है, वो हमारे जीवन में आए।** दीदी, ज्योति बहन ने कितने अच्छे आशीर्वाद दिए हैं। सच में **इन पुरुषों को राज़ी कर सकें, ऐसा स्वाध्याय-भजन करें। ऐसी कथा की जुगाली कर सकें और जीवन में बड़ों का आदर-सम्मान रख सकें और उनकी निश्रा में बालक बन कर जी सकें** – ऐसी स्वामिजी के चरणों में प्रार्थना!*

गुरुहरि पप्पाजी के वचनानुसार मुक्तों को स्वरूपनिष्ठा दृढ़ कराने वाली **प.पू. पदु बहन** के आगमन ने दिल्ली के मुक्त समाज के प्रति उनका अपनापन तो व्यक्त किया ही और आशीर्वाद से सत्संग की समझ भी दी–

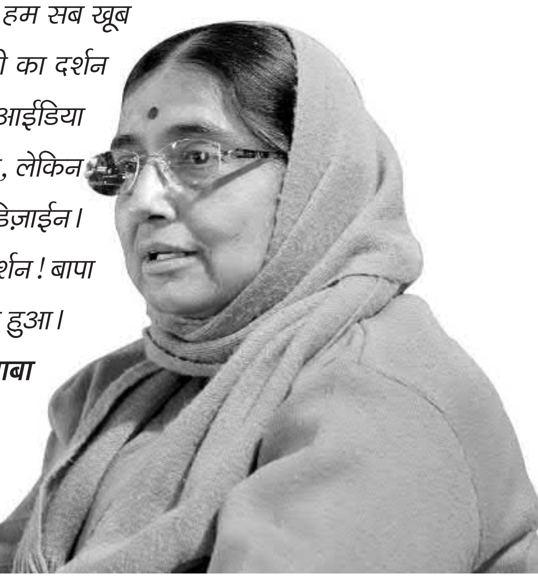

*सभा की शुरुआत ही ऐसी हुई है कि उसके लिए क्या शब्द कहें? हम सब खूब भावविभोर हो गए ऐसी शुरुआत थी। स्क्रीन पर काकाजी-पप्पाजी का दर्शन और वडील बहनों ने बापा को जो कार्ड लिखा था... जिन्होंने भी यह आईडिया दिया हो, उन्हें हमारा बहुत-बहुत धन्यवाद! हमने सिर्फ बात सुनी थी, लेकिन यह दर्शन नहीं किया था। दीदी के हस्ताक्षर वाला कार्ड, कार्ड का डिज़ाईन। बापा लिख रहे हैं, ऐसा दर्शन! स्वामिजी सेवकभाव से बैठे हैं, ऐसा दर्शन! बापा ने स्वामिजी को आशीर्वाद लिख कर दिया, वह देख कर बहुत आनंद हुआ। जब सारा पिक्चराईज़ हो रहा था, तब **काकाजी, पप्पाजी और सोनाबा** बहुत याद आ रहे थे।*

*सच, ये **त्रिपुटी** ने जो कार्य किया है और उनकी निश्रा, संकल्प व सान्निध्य में रहने को मिला, इस बात का आनंद और क़ैफ गुरुजी को कितना है, वह सारी सभा में हमें देखने को मिलता है। **गुरुजी के 80वें प्राकट्य दिन पर कुछ बोलना तो रहता नहीं, क्योंकि उनका कार्य ही बोलता है। साँस-साँस में उन्होंने काकाजी का कैसा साक्षात्कार कर लिया है कि उनके अंतर में अन्य कोई बात ही नहीं, अपनी कोई अस्मिता ही नहीं है। अपने स्टेटस की कोई कॉन्सियसनेस नहीं।** उनके द्वारा इतना कार्य होता है, सबको शांति मिलती है और उनका इतना बड़प्पन है, उसकी अस्मिता अपनी बुद्धि में न रहना, वो तो सच में ऐसे गुणातीत स्वरूपों में हम ओतप्रोत न रहे हों – उनके माहात्म्य का साक्षात्कार न हो, तो संभव ही नहीं है। काकाजी को यह जँचेगा, पप्पाजी को यह पसंद आएगा या बा को यह पसंद आएगा,*

महाराज इस प्रकार राज़ी होंगे, ऐसा विचार या याद करके उन्होंने नहीं किया। सहज, चौबीस घंटे के चिंतन में यदि बात हो, उसी बात में निरंतर समग्र तंत्र हो, तभी प्रभु अपने आप कार्य करते हैं।

आज जो सभी भक्तों ने गुरुजी के बारे में बात की, ऐसा गुरु बनना तो सबको पसंद आता है। ऐसी बातों का दर्शन करके, हमें मन में आए कि हम भी ऐसा जतन करें या ऐसे संभालें, जिस प्रकार वे सभी को संभाल लेते हैं। पर, ऐसे गुरुभाव की वो बातें नहीं थीं। ये आध्यात्मिकता की बिलकुल ऊँची बातें थीं। ***गुरुजी स्वयं अपने नहीं रहे, तब यह बात संभव हुई।*** *यदि उनके अंतर में तनिक भी ऐसा होता कि सब मेरे हैं, सब मुझे मानते हैं, इनका ध्यान मुझे ही रखना होता है या ऐसा ध्यान रख कर सबके जीवन में स्थान लेना है, किसी ऐसी गिनती से यदि कोई कदम उठाया होता, तो हंसा मासी ने जैसे बात की कि वे अपने जन्मदिन पर मंदिर से लौट रही थीं और पीछे से गुरुजी ने पप्पाजी की मूर्ति भिजवाई; यह दर्शाता है कि* ***गुरुजी के मन में तनिक भी ऐसा नहीं है कि ये मेरा है या नहीं, काकाजी का है या नहीं, ज्योत का है, मिशन का है*** *– ऐसी कोई बात ही नहीं।* ***गुणातीत समाज का यह सदस्य है – बस वहीं बात ख़तम हो जाती है।*** *सच में,* ***अन्यों को हम जितना बड़प्पन देते हैं, उतना बड़प्पन हमें मिलता है।*** *बड़प्पन पाने के लिए कोई प्रयत्न नहीं करना पड़ता...*

ज्योति बहन, तारा बहन, दीदी, देवी बहन ने जो कार्य किया, उसके नक़्शे कदम पर हम चले हैं। इन लोगों की यदि ऐसी निष्ठा, समर्पण और वफ़ादारी नहीं होती, तो हम कोई भी पीछे आए नहीं होते। फिर भी ये लोग कितने सेवकभाव से जीते हैं। आनंदी दीदी का एक प्रसंग है कि सारी रात जग कर उन्होंने काकाजी द्वारा सौंपा कोई काम संपन्न करके दिया था। अपने सत्पुरुष की सेवा करने पर हमें अंदर आनंद तो होता ही है। आनंदी दीदी काम करने के बाद फाइल लेकर काकाजी के पास गईं। उनके अंतर में सहज ऐसा होगा कि काकाजी बहुत खुश हो जाएँगे। उसके बजाय काकाजी ने खड़काना शुरू किया कि तुम जताना चाहती हो कि यहाँ मैं काकाजी की पसर्नल सेक्रेटरी हूँ... मैं कैसा काम करके लाई... मेरे जैसा तो कोई काम नहीं कर सकता... आनंदी दीदी ने बताया था कि एक सैकण्ड के लिए ऐसा हुआ कि काकाजी ऐसा क्यों करते हैं? पर, दूसरे ही क्षण भीतर में ऐसा आनंद आ गया कि काकाजी कितने भरोसे से मुझ पर ऐसा शासन करते हैं। ***आनंदी दीदी पहले से ही साधना करके आई होंगी।*** *तभी मन में ऐसा विचार आ सकता है।* ***तुरंत ऐसा विचार आना, रीट्रीट करना, आनंद में रहना इस जन्म की साधना की बात नहीं है।***

...काकाजी ने गुरुजी को यहाँ आने की आज्ञा की और इतने बुद्धिशाली होने के बावजूद, काकाजी का वचन जो पूर्ण किया, उसका यह परिणाम है। ऐसे पात्रों को महाराज अपने साथ ही लेकर आते हैं। गंगा के नीर की भाँति प्रेमबहन ने भी सभी स्वरूपों की कितनी अच्छी बात की। स्वाध्याय और मनन करने की इनकी आदत है। एक-एक सैकण्ड अपने स्वरूप का चिंतन है। 'मैं ऐसी हूँ...' जैसे अहंकार का पाश हो, तो अन्य को प्रभाव नहीं पड़ सकता।

सच में हम बहुत भाग्यशाली हैं। शुरुआत का जो भावनृत्य था, शुरुआत की आध्यात्मिक यात्रा का जो दर्शन था, वह देख कर अंतर गद्‌गद् हो गया कि ऐसे सत्पुरुष के हम हैं! ऐसे समाज के हम मुक्त हैं!

...अहोनिश अपने स्वरूप के मनन-चिंतन में, उनकी स्मृति और भूमिका में जीते हैं। जबकि हम क्षणभर

इस समाधि में, तो कभी मानसिक गिनती में या दूसरे विचार या प्रतिभाव। किसी न किसी छोटे-बड़े स्पंदन में हम एकाध मिनिट के लिए चले जाते हैं, इतना फ़र्क़ है। फिलहाल जो हमारी भावसमाधि है, ऐसी समाधि में हम रहें।

सुबह स्वामी रामदेवजी महाराज के आचार्य श्री बालकृष्णजी ने अहो क्या बातें की हैं! उनके पास इतनी सिद्धि-दैवत् है फिर भी गुरुजी, साहेबदादा, स्वामिजी के प्रति उनका जो भाव-माहात्म्य था, वह सुन कर ऐसा होता है कि हम तो पल-पल इन विभूतियों के सान्निध्य में जीते हैं। उन्हें कितना आनंद था कि इतने वर्षों से मेरा इनके साथ संबंध है, इनका आशीर्वाद मिलता है। जबकि हम पर तो ये स्वरूप आशीर्वाद और संकल्प का प्रवाह बहा रहे हैं।

योगीजी महाराज ने पप्पाजी से कहा था कि बहनें भगवान भजें तो क्या हरज़ है। गुणातीतानंदस्वामी ने तो इस बात पर कहा था कि स्त्रियाँ एकांतिक नहीं हो सकतीं। गुरुजी ने यह प्रश्न पूछा और काकाजी ने जो जवाब दिया। तब हमें ख्याल पड़ता है कि ***हमारी तो कोई कक्षा नहीं थी, पर इन स्वरूपों के कारण हम हैं।*** *जिनके कारण हम हैं, उनके समक्ष मस्तक कैसे ऊपर किया जा सके?*

किसी ने मान दिया या नहीं, किसी ने मान्यता दी या नहीं दी... आत्मा यदि परमात्मा में लय और लीन होगी, तो किसी मान-बड़प्पन की कोई क़ीमत नहीं। प्रगट स्वरूप जो इतना परिश्रम करते हैं, उसके पीछे उनकी एक ही भावना है कि सभी सुखी हो जाएँ। पप्पाजी हमेशा अपने आशीर्वचन में कहते थे कि सभी मेरे जैसे सुखी हो जाएँ। काकाजी हमेशा कहते–मैं किसकी घरवाली हूँ... उन्हें अपनी महिमा नहीं गानी थी, लेकिन हमें समझाना था, तुम्हें कौन मिला है।

...जब से आए हैं तब से दर्शन करके इतना आनंद होता है कि स्वरूप कितना खुश होते होंगे... स्वामिजी व साहेबजी की मूर्ति गुरुजी ने पधराई। गुरुजी का 75वाँ प्राकट्य पर्व मनाया था, तब 'हमारा मंदिर' पुस्तक प्रकाशित की थी। ***गुरुजी की बातें केवल बातों में नहीं हैं; वे प्रॅक्टिकल में होती हैं।*** *स्वामिजी और साहेबजी की मूर्ति पधराने के पीछे उनकी भावना है कि जो भी मुक्त आएँ, उन्हें लगे कि यह मंदिर हमारा है। अपने स्वरूप की मूर्ति देख कर सहज ही आत्मीयता-भाव बढ़ता है।*

तो सच, जैसी इन सभी स्वरूपों के हृदय में सर्वदेशीयता है... ***काकाजी कहते थे कि सर्वदेशीयता नहीं होगी, तो एकांतिक धर्म सिद्ध नहीं होगा।*** *सो,* ***स्वरूपों से प्रार्थना कि हम हमारे न रहें, हम किसी संस्था के न रहे, हम किसी समाज के न रहें, हम अपने भक्तों के न रहें, बस केवल आपके होकर, आप जब जो सेवा कराएँ, जो सूझाएँ वो केवल निमित्त मात्र बन कर करें।*** *जैसे दीदी ने कहा, सही अर्थ में ऐसी पराभक्ति करते रहें, ऐसा पात्र हमें बनाना। ऐसी पात्रता हम में है तभी हमें पसंद किया है। तो, ऐसे पॉज़ीटिव विचार के साथ, क़ैफ के साथ हम सभी लग पड़ें और स्वरूपों का परिश्रम सफल करें–यही प्रार्थना!*

सच, राजधानी दिल्ली में आयोजित यह बंधुजोड़ी शताब्दी शिविर, संपूर्ण गुणातीत समाज की एकता व अखंडता का प्रतीक बन गई! **गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी** ने समय-समय पर अपनी **परावाणी** द्वारा मुक्तों को मुफ़्त में निहाल किया है। ऐसी दिव्य विभूतियों के आशीर्वाद भी उन्हीं की तरह शाश्वत् हैं। सो, गुणातीत ज्योत की ओर से उनकी विडियो डी वी डी **'वरस्या अनराधार'** विमोचन करने के लिए **प.पू. आनंदी दीदी** से प्रार्थना की गई। लेकिन, सदैव बड़ों को आगे रख कर जीवन जीते प.पू. गुरुजी की शैली को जीव में ढाली हुई, प.पू. आनंदी दीदी

ने सेविका की अदा से प.पू. हंसा दीदी के वरद् हस्तों से डी वी डी अनावरित करवाई और दिल्ली सत्संग समाज की ओर से सभी स्वरूपों के श्रीचरणों में **प.पू. आनंदी दीदी** ने आशिष याचना की –

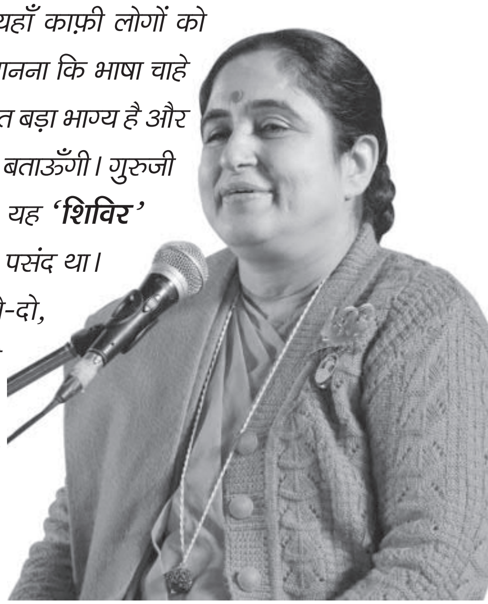

...बहुत देर से आप गुजराती भाषा में सुन रहे होंगे। मुझे ख्याल है यहाँ काफ़ी लोगों को गुजराती भाषा समझ में नहीं आती। लेकिन मेरी एक बात विश्वास से मानना कि भाषा चाहे समझ आई हो या न आई हो, लेकिन ये जो दर्शन हो रहा है, वो हमारा बहुत बड़ा भाग्य है और गुजराती भाषा में करी हुई इन बहनों की बातें मैं आपको हिन्दी में ज़रूर बताऊँगी। गुरुजी ने काकाजी-पप्पाजी की बंधुजोड़ी शताब्दी को ***'महोत्सव'*** *न रख कर, यह* ***'शिविर'*** *रखी, इसके पीछे इनकी भावना थी कि काकाजी को शिविर करना बहुत पसंद था।*

आप लोगों ने देखा होगा कि अबकी बार स्वरूपों के सिवा, सिर्फ दो-दो, तीन-तीन मिनिट के इंटरव्यूज़ रखे हैं, पर अन्य किसी का 'लाभ' रखा ही नहीं है। शिविर का मतलब भी यही है कि ये स्टेज पर जो सब बैठे हैं, उन्होंने जो जीवन जिया है उनसे हम ऐसा कुछ पा लें। सो, सबसे पहले 'योगी परिवार' में गुणातीतभावना को प्रगटाई हुई इन सब दिव्य विभूतियों के चरणों में पंचांग प्रणाम।

दूसरा, आप सबके रूप में ये स्वरूप ही बैठे हैं, तो आप सब बहनों और भाइयों को बहुत भाव भरे जय स्वामिनारायण। मैं बहुत अच्छी तरह से जानती भी हूँ और दिल से मानती हूँ कि आप सब जो यहाँ आए हैं, वो काकाजी-पप्पाजी के प्रति एक भक्ति अदा करने आए हैं और गुरुजी राज़ी हो जाएँगे इस भावना से आए हैं। कार्ड का मॅटर बनाया, तो उसमें भी लिखा है कि किसी भी निमित्त जब-जब 'योगी परिवार' इकट्ठा होता है, तब गुरुजी की खुशी एकदम अलग होती है। उनके चेहरे का रंग ही बदल जाता है। पहले तो कई बार मज़ाक में भाभियाँ उन्हें कहलवाती भी कि आपके मायके वाले आए हुए हैं, इसलिए आप बहुत खुश दिखाई दे रहे हैं। असल में कल से ही– जब से फंक्शन शुरु हुआ, तब से ही कोठारीस्वामिजी और योगिनी बहन की कमी खल रही है; लेकिन मुझे यह भी विश्वास है कि इस सभा में वे हाज़िर ही होंगे, क्योंकि काकाजी-पप्पाजी की शताब्दी हो, गुरुजी का 80वाँ बर्थडे मनाया जा रहा हो और कोठारीस्वामिजी व योगिनी बहन न हों, ऐसा हो ही नहीं सकता...

गुणातीत समाज में जब से मेरी एंट्री हुई है, तभी से मुझे काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी, अक्षरविहारीस्वामिजी, साहेबजी, दिनकर अंकल, गुरुजी, सोनाबा, ज्योति बहन, दीदी, देवी बहन, तारा बहन, प्रेम दीदी, जसु बहन, सुमन दीदी, माधुरी दीदी सबका बहुत प्यार मिला है। अश्विनभाई तो हमारे 'मामा' हैं। मैं उन्हें 'मामा' ही कहती हूँ। तो, यहाँ सब बहनें भी अश्विनभाई को 'मामा' मानती हैं। शांतिभाई, भरतभाई, वशीभाई, सारे समाज का बहुत ही प्यार मिला है।

मुझे याद है कि जब मैं यहाँ कॉन्टेक्ट में आई और काकाजी के दर्शन हुए, तब काकाजी फॉरेन जाने वाले थे। मुझे कुछ भी पता नहीं था कि 'प्रगट स्वरूप' क्या होता है ? 'विभूति' क्या होती है ? सिर्फ गुरुजी का फर्स्ट दर्शन करते ही मुझे भीतर में बहुत शांति महसूस हुई थी और एक लगाव के कारण मैं यहाँ संपर्क में आ गई।

काकाजी जब फॉरेन से लौटे, तो मेरे लिए पिंक कलर की एक गुड़िया लाए थे। वहाँ सब हरिभक्त बैठे थे। काकाजी ने कहा – गुड्डी, मैं ये तुम्हारे लिए लाया हूँ और अंतर्यामी रूप से साथ में एक मार्मिक वाक्य बोले – ये बेबी बचपन में गुड़िया से खेली नहीं है, इसलिए मैं इसके लिए गुड़िया लाया हूँ। वाक़ई, मैं बचपन में किसी गुड़िया से खेली नहीं थी। मुझे ऐसा याद ही नहीं आता कि मैं किसी खिलौने या गुड़िया से खेली होऊँगी। इस रूप में काकाजी ने मुझे अपना प्रथम लाड़ दिया। तब पता नहीं था कि इतनी बड़ी विभूति मेरे लिए गुड़िया लेकर आई हैं, वर्ना मैं उसे ज़रूर संभाल कर रखती। स्मृति पट पर काकाजी की उस समय की ऐसी कई स्मृतियाँ हैं।

1986 जनवरी, हरिधाम में गुणातीत द्विशताब्दी का फंक्शन हुआ था, तो गुरुजी से काकाजी ने पूछा – आनंदी और स्मिता को मैं अपने साथ बॉम्बे ले जाऊँ ? तुम्हें इनका कुछ काम तो नहीं है। गुरुजी ने कहा – नहीं, मुझे तो कोई काम नहीं है। आगे का तो ऐसा कुछ पता नहीं था कि काकाजी स्थूल देह त्याग देंगे। लेकिन, स्मिता दीदी और मैं काकाजी के साथ बॉम्बे गए थे। वहाँ 31 जनवरी को भरतभाई का प्रागट्य पर्व मनाया और 3 फरवरी का फंक्शन पहले हो चुका था। तो, 3 फरवरी 1986 की शाम को काकाजी, योगिनी दीदी व माधुरी दीदी इत्यादि के साथ मुझे हेमलता बहन झवेरी के यहाँ ले गए थे। 3 फरवरी का दिन वैसे भी अपने गुणातीत समाज के लिए बहुत मंगलकारी दिन है और काकाजी का सान्निध्य ! हेमलता बहन ने काकाजी को 101 रुपए की भेंट दी। 86 में तो 101 रुपए बड़ी फीगर मानी जाती थी। तो, काकाजी ने कहा – हेमलता, मारी एक वात मानशो ? इसमें से 100 रुपये विद्यानगर 'ज्योत' में भिजवा दो। हेमलता बहन मना करने लगीं कि मैं वहाँ अलग से भेज दूंगी। काकाजी ने कहा – नहीं, मैं कह रहा हूँ न, आप मेरी बात मानो। फिर काकाजी ने उन्हें ज्योत में भेजने के लिए आग्रहपूर्वक कहा और एक रुपया बचा था, तो उसके लिए काकाजी ने कहा – ये गुड्डी को दे दो, उसका कुछ ज़्यादा खर्चा नहीं है। प्रसादी के उस रुपये की स्मृति मेरे माइंड पर आज भी है।

ऐसा ही दर्शन मैंने पप्पाजी का भी किया है। प्रसंग बहुत छोटे-छोटे हैं, लेकिन बताते हैं कि ये स्वरूप हर प्रकार से हमारी कितनी फ़िकर करते हैं। एक एक्सीडेंट में मेरी टेलबोन क्रेक हो गई थी। तीन-चार साल तक कुछ पता ही नहीं चला कि क्या प्रॉब्लम है ? 1997 दिसंबर में पप्पाजी दिल्ली आए हुए थे। साथ में डॉ. नीलम दीदी भी थीं। पप्पाजी को पता चला कि आनंदी को ऐसी तकलीफ है, लेकिन उसका ठीक से कुछ इलाज नहीं हो पाया है। तो, पप्पाजी ने गुरुजी से कहा – मैं आनंदी को साथ में ले जाता हूँ और अमदावाद के डॉक्टर को दिखाएँगे। **बड़े पुरुष कितने गरज़ू और सस्ते बनते हैं,** मैं वह बात कर रही हूँ। पप्पाजी, नीलम दीदी मुझे साथ में ले गए और अमदावाद में मेरी टेलबोन का ऑप्रेशन हो गया। बाद में रेस्ट करने के लिए गुणातीत ज्योत में आई। रेस्ट करने के लिए मुझे ज्योति बहन के पुराने कमरे के पास ठहराया था। रात को दस - ग्यारह बजे रूम के बाहर मुझे थोड़ी हलचल सुनाई पड़ी। मुझे हुआ इस समय बहनें क्या कर रही होंगी ? तो, मैंने दृष्टि को बाहर भेजकर पता करवाया। दृष्टि ने बाहर देखने के बाद मुझे बताया कि दिसंबर महीने में पप्पाजी बहनों के लिए गोंद - मेवा डलवा कर मेथीपाक - अड़दिया बनवाते हैं और उन्होंने बहनों को आज्ञा की थी कि सर्दी के एक महीना हरेक बहन को एक पीस ज़रूर खाना है, क्योंकि कमर के दर्द वगैरह के लिए वह अच्छा रहता है। वह बना - बना कर उसकी ट्रे मेरे कमरे के बराबर वाले कमरे में बहनें उठा - उठा कर रखती जा रही थीं। यह

जान कर मुझे एकदम विचार आया कि ओहो! स्वरूप जब हमारी ऐसी स्थूल परवरिश कर रहे हैं, तो आध्यात्मिक चेतना की तो कैसी परवरिश करते होंगे! यह तो स्थूल का एक्जाम्पल है। हमारी चेतना की आध्यात्मिक प्रगति के लिए आज ये सभी स्वरूप उतना ही परिश्रम कर रहे हैं।

इन सभी स्वरूपों ने मुझे बहुत ही अपनापन दिया है। 1989 में मुझे हार्ट की तकलीफ़ आई; एक वाल्व श्रिंक हो गया था। उस समय टेक्नोलॉजी इतनी फास्ट नहीं थी। किसी फंक्शन निमित्त या वैसे ही स्वामिजी से आशीर्वाद लेने के लिए गुरुजी हरिधाम गए थे, तो मैं भी साथ में गई थी। तब गुरुजी ने स्वामिजी को बताया होगा कि आनंदी को ऐसे प्रॉब्लम आई है। तो स्वामिजी एकदम बोले – अरे ! ये तो छोटी - सी फुंसी है, बिल्कुल चिंता ही नहीं करना और उसे तो आगे जाकर तुम्हारी बहुत सेवा करनी है। तो, बिलकुल भी घबराए नहीं। स्वामिजी ने ऐसे दो - तीन सॅन्टेंस कहलवाए थे और गुरुजी ने मुझे मॅसेज भिजवाया कि आनंदी से कहो कि अब रिलेक्स - निश्चिंत हो जाए। स्वामिजी ने आशीर्वाद दे दिया है कि कुछ भी नहीं होने वाला है...

यहाँ गुरुजी की निश्रा में हम रहते हैं। साधु की मर्यादा के कारण गुरुजी का सारा जीवन अगर दूर से भी निहारते हैं, तो उन्होंने स्थूल और आध्यात्मिक दोनों जतन किए हैं... प्रगट की निष्ठा, सुहृद्भाव, निर्दोषबुद्धि ये सारे शब्द मैंने यहाँ पर ही आकर सुने थे। आध्यात्मिक जतन किस तरह किया है, वो बता रही हूँ। 1982 से 1984 तक – दो साल तक मैं स्टेनोग्राफर का जॉब करती रही। मैं रंगीन कपड़े पहनती थी, सो ऑफिस में किसी को पता नहीं था कि मैं भगवान भजने वाली हूँ। ऑफिस में दो-तीन फ्रैंड्स थी। उन्हें पता चला कि मैं अशोक विहार से आती हूँ। तो, एक दिन स्टाफ की एक लड़की कनिका ने मुझसे कहा – जनक, एक काम करोगी ? तुम अशोक विहार से आती हो, हमारे एक रिलेटिव अशोक विहार में वॉटर टैंक के पास रहते हैं। उन्हें एक रजाई देनी है, वह दे दोगी ?

...मैंने सोचा कि मुझे ऑफिस तक गाड़ी लेने आएगी और उसमें रजाई ले जाने में क्या हरज़ है ? मैंने तो सहजभाव से 'हाँ' कर दी। मेरे ख्याल से इस कारण मंदिर पहुंचने में रोज़ से 10 मिनिट का फ़र्क़ पड़ गया होगा। मैं मंदिर पहुंची तो गुरुजी ने पुछवाया – आज ऑफिस से आने में गुड्डी को देर हो गई ? मैंने सहजभाव में कहलवाया – गुरुजी, फ्रेंड ने एक रजाई दी थी, वह अशोकविहार देती हुई आई हूँ। मेरे लिए तो यह बहुत नॉर्मल बात थी। लेकिन, गुरुजी ने इस बात पर बहुत नाराज़गी ग्रहण की। मुझे तो वो बात समझ ही नहीं आई और न कोई ऐसा था भी कि जो उस बात को मुझे समझाता। लेकिन थोड़े सालों के बाद जब मैंने बहनों का बनाया 'गुणातीत ज्योत' का भजन सुना – 'हेत, माया, दया और प्रीति आपसे ले जाए न दूर', तब मुझे पता चला कि गुरुजी की वो नाराज़गी एकदम सही थी। मेरा दया का स्वभाव था कि दूसरों को मैं कैसे हेल्पफुल हो जाऊँ। उस पर चोट लगाने के लिए उन्होंने ये चरित्र किया था। हम साधु के चरित्र को ऊपर-ऊपर से देखते हैं, इसलिए समझ नहीं पाते। लेकिन, ये सभी स्वरूप कुछ अलग ही हैं – 'गोकुल गांव का पिण्डा न्यारा।' सो, इन्हें हम अपने जैसा न समझें।

...गुरुजी कई बार अपनी बातों में कहते हैं – **सत्संग में काकाजी और पप्पाजी जो जिए, वो कुटुंबभाव कोई काल्पनिक बात नहीं है।** अभी थोड़े दिन पहले ही एक प्रसंग गुरुजी ने बताया। गुरुजी बात करते-करते एकदम ढीले भी हो गए कि अक्षरविहारीस्वामिजी को जब दीक्षा देनी थी, तो पप्पाजी उन्हें स्टेशन छोड़ने

नहीं गए थे। गुरुजी ग्रांट रोड पर□फिफ्थ फ्लोर पर रहते थे, जहाँ लिफ्ट वगैरह कुछ नहीं थी। तो, जब गुरुजी को दीक्षा लेनी थी, तब दोपहर को पाँच फ्लोर चढ़कर पप्पाजी उनके घर आए और खाना खाया। वहाँ से लौट कर पप्पाजी ताड़देव गए और वहाँ के चार फ्लोर चढ़े। उसी दिन शाम को गुरुजी गोंडल जाने के लिए निकलने वाले थे। तो, शाम को पप्पाजी दोबारा तैयार हुए। किसी मुक्त ने पूछा – पप्पाजी कहाँ जा रहे हैं ? पप्पाजी कहने लगे – दिलीप को स्टेशन छोड़ने जा रहा हूँ। उसने कहा – दोपहर को तो आप मिलकर आए थे और खाना भी वहीं खाया था। अभी नहीं जाएँगे तो चलेगा। ***पप्पाजी*** *कहने लगे –* ***मेरे भतीजे को छोड़ने के लिए मैं नहीं जाऊँगा, तो कौन जाएगा ?*** *यूं उन्होंने ये रिलेशन्स सच में माने थे।* ***यह सॅन्टेन्स कहते हुए गुरुजी की आँखों में पानी आ गया था।*** *विचार करें कि एक ही दिन में पाँच मंज़िल ग्रांट रोड के चढ़े और चार मंज़िल ताड़देव की चढ़ने के बाद फिर गुरुजी को छोड़ने स्टेशन गए और फिर स्टेशन से लौटने के बाद चार मंजिल ताड़देव के कैसे चढ़े होंगे ?* ***काकाजी, पप्पाजी और सोनाबा – इन लोगों ने धाम, धामी, मुक्तों के लिए खुद जीकर बताया है। पप्पाजी तो कहते – मेरी दुनिया तो आप लोग ही हो, मेरी दुनिया बहुत छोटी है।***

हमने तो कोई साधन नहीं किया है, तब भी ये स्वरूप हमें लाड़ लड़ाते ही रहते हैं और गुरुजी का जीवन तो आज आदर्श रूप बना है। उन्हें हर पल बस संबंध दिखता है कि मैं भक्तिरूप क्या कर दूँ! किस तरह काकाजी-पप्पाजी को अमर कर दूँ! यही विचार आता रहता है कि काकाजी-पप्पाजी को क्या पसंद था ? हमें किस प्रकार जीना है, वे खुद वर्त कर बताते हैं। बहुत दिनों से उनके मन में ये बात चल रही होगी कि स्वामिजी और साहेबजी की मूर्ति मंदिर में पधरानी है। हम लोगों की सोच तो बहुत छोटी होती है। हमने तो यही सोचा था कि पप्पाजी की मूर्ति स्थापना के बाद अब तो मंदिर कम्प्लीट हो गया। पर, एक दिन बातों-बातों में वे बोले –
1966 में संस्था ने जब हमें विमुख किया, उसके बाद काकाजी-पप्पाजी को आगे रखकर स्वामिजी और साहेबजी ने जो कंधे से कंधा मिलाकर साथ दिया; गुणातीत समाज की नींव में वे समा गए, उसका मैं साक्षी हूँ।

सो, गुणातीत समाज की नींव के इन पुरुषों की मूर्ति पधरानी ही है। हमें तो कल्पना भी नहीं थी कि किस जगह स्वामिजी और साहेबजी की मूर्ति सॅट होगी, लेकिन उन्होंने आशीष वगैरह से सब नपवा कर वो जगह भी सॅट की। वे हर पल भक्तिपूर्ण विचार में रहते हैं।

अभी निमंत्रण कार्ड छपे, तो उसके अगले दिन पंजाब जाने वाले थे। सो, देर रात को ही कार्ड पैक कराए और कहने लगे – काकाजी-पप्पाजी की शताब्दी है, तो पंजाब में मैं सबको पर्सनली कार्ड देकर आऊँगा। सबने कहा भी कि गुरुजी, वहाँ मौसम अच्छा नहीं है। तब भी वे खुद पंजाब जाकर सबको कार्ड दे आए और दिल्ली लौटने पर कहने लगे कि गुजरात में भी सब स्वरूपों को मैं अपने हाथ से काकाजी-पप्पाजी की शताब्दी का कार्ड देकर आऊँगा। लेकिन, पंजाब से लौट कर ठंड लगने के कारण बीमार हो गए और जा नहीं पाए। उसका उन्हें बहुत दुःख भी हुआ...

ऐसी कई बातें तो शायद नया समाज जानता भी नहीं होगा। मैं जब सत्संग में आई तब दिल्ली मंदिर में गाड़ी नहीं थी, कुछ व्यवस्था ही नहीं थी। पंजाब में नया-नया ही सत्संग था, 'स्वामिनारायण' नाम तक कोई जानता नहीं था। लेकिन, काकाजी एक बार वहाँ गए, तो उनकी प्रतिभा से सब बहुत प्रभावित हुए। तब कांतिकाका बॉम्बे से एम्बेसेडर गाड़ी लेकर आए थे और गुरुजी व संतों को खुद ड्राइव करके दिल्ली से पंजाब ले गए थे। मतलब वे पहले बॉम्बे से ड्राइव करके दिल्ली लाए और फिर दिल्ली से पंजाब गए। नया-नया सत्संग डेवलप हो रहा था; सो रात को एक-एक बजे तक जागना, सबके साथ बैठना पड़ता था। पंजाब से कांतिकाका संतों को लेकर लौट रहे थे। एक ढाबे पर कांतिकाका ने गाड़ी रोकी। गुरुजी ने सोचा कि कांतिकाका को फ्रॅश होने जाना होगा इसलिए गाड़ी रोकी है। पर, कांतिकाका ने ढाबे पर जाकर सोडे की एक बोतल ली और उससे अपनी आँखें धोईं। वो किसलिए कि इतने दिनों की थकान इकट्‌ठी होने के कारण उन्हें झपकी आ रही थी। कांतिकाका आँखें धोकर गाड़ी में आए। गुरुजी तो कुछ समझे नहीं। गुरुजी ने पूछा – कांतिकाका, आँख में कुछ चुभ रहा है ? वे बोले – नहीं, गाड़ी चलाते समय मुझे झपकी न आ जाए, इसलिए आँखों को सोडे से धो रहा था। अब आराम से गाड़ी चला पाऊँगा, नींद नहीं आएगी। हम सोचें कि वे कैसा जिए हैं।

स्टेज पर बैठे हुए ये सब ऐसा जीवन जिए हुए हैं। मेरे ख्याल से 5 सितंबर 2013 को मैंने ज्योति बहन को फोन किया था कि ज्योति बहन, इस बार 11 दिसंबर को मल्कानी अंकल की 50वीं मॅरेज एनिवर्सरी है। आपके प्रति उन्हें बहुत भाव है, यदि आप आएँगी तो मल्कानी अंकल बहुत खुश हो जाएँगे। ज्योति बहन उस समय अमदावाद में थीं। ज्योति बहन ने कहा – आनंदी, अभी मैं अमदावाद आई हुई हूँ। शाम को विद्यानगर लौट कर पहले हंसादीदी और देवी बहन से पूछ कर प्रोग्राम बनाऊँगी। फोन ओवर होने के बाद मेरे माइंड में यह बात घूमती रही कि आज ***ज्योति बहन*** *तो स्वतंत्र हैं, उन्हें तो किसी से पूछने की ज़रूरत ही नहीं है। लेकिन ऐसा जीकर वे हमें सिखाती हैं कि* ***साथीदारों को साथ रख कर जीना चाहिए।***

28 मई को पप्पाजी ने स्थूल शरीर का त्याग किया। 29 मई को विद्यानगर में अंतिम विधि करी। 30 तारीख की सुबह छः-साढ़े छः का टाइम था कि दिल्ली से मॅसेज आया कि गुरुजी की पूर्वाश्रम की मम्मी ललिताबा को हार्ट-अटैक आया और उन्होंने शरीर छोड़ दिया। गुरुजी के कमरे के बाहर हम लोग खड़े थे। मैंने पुछवाया – गुरुजी, वहाँ ऐसा हुआ है तो मैं फ्लाइट से चली जाऊँ? गुरुजी ने कहलवाया – नहीं, वहाँ शोभनाभाभी, पुरी साहब वगैरह हैं, वे लोग संभाल लेंगे। तुम्हें जाने की ज़रूरत नहीं है। सेवक का फर्ज़ तो वही है कि जो गुरु में से आए वही करना है। लेकिन, इतने में ही 'ज्योत' में से हंसा दीदी का फोन आया – आनंदी, ललिताबा ने शरीर छोड़ दिया है, तो मैं दिल्ली जाऊँ? हम कल्पना करें कि भले ही दीदी, ज्योति बहन, पदु बहन ने पप्पाजी को अखंड प्रगटाया हुआ है; लेकिन, सत्पुरुष के स्थूल सान्निध्य का विरह तो खलता ही है। हम भीतर से व्याकुल हो ही जाते हैं। दीदी ने जब मुझसे कहा – गुरुजी से पुछवा लें कि ललिता बा के लिए मैं दिल्ली जाती हूँ। तब मुझे एकदम ऐसा हो गया कि सच में ये लोग कुछ अलग विभूति हैं, तभी ऐसा विचार आ सकता है न ! बाकी हम खुद डूबे हों और छोटी बहनों को भी संभालना हो, उस समय हमारी हालत भी बहुत ठीक नहीं थी, लेकिन दीदी ने इतने स्टेबल माइंड से पुछवाया और मैंने गुरुजी से कहलवाया, तो गुरुजी ने कहा – वहाँ सब हो

जाएगा, दीदी से कहो कि जाने की जरूरत नहीं है। यूं, ये लोग खुद जीकर सत्संग की परिभाषा समझाते हैं।

इस एईज में आज जसु बहन यहाँ आए हैं। उन्होंने पप्पाजी को कितना धारकर भी रखा है। हम देख रहे हैं कि सभी स्वरूपों की अभी एईज हो रही है। फिर भी मुझे फोन पर बोलीं – मुझे तो दिल्ली आना ही है, आना ही है, आना ही है। हाँ, मैंने पदु बहन को फोन किया कि पदुबहन, आप आओ। पहले से मुझे पदु बहन की बातें बहुत अच्छी लगती हैं। पदु बहन के बारे में ज्योत की किसी बहनों में से मैंने एक बात सुनी थी। मुझे ऐसी बातें बहुत टच कर जाती हैं। हम बाल बना रहे हों और कंघी हाथ से नीचे गिर जाए। कंघी नीचे से उठाने में कितने सॅकंड लगते हैं ? मेरे ख्याल से दो - तीन सॅकंड। इस बारे में भी पदु बहन अंतर्दृष्टि करती हैं कि ये कंघा उठाने तक में मैं पप्पाजी की मूर्ति भूल तो नहीं गई ? हम तो मूर्ति को भूल करके कितना कुछ कर जाते हैं ? आज प्रेम दीदी आए हैं आपको शायद गुजराती में उनकी बातें समझ नहीं आई होंगी, लेकिन आप प्रेम दीदी की सिर्फ 'हेलो जय स्वामिनारायण' भी सुनेंगे, तो आपको भीतर में एक शांति का एहसास होगा। भगवान रखी विभूतियों का ये दर्शन है।

शुरुआत में मैंने जो बताया कि मुझे पूरे गुणातीत समाज का, दिल्ली के भाई-भाभियों का, सभी का प्यार मिला है। यहाँ मॅन पावर शॉर्ट है, लेकिन संतों, युवकों, बहनों व गृहस्थों ने दिन - रात नहीं देखा और ये सारा एरेंज्मेंट करने में बेहद जुड़ गए, तो उन सभी को बहुत - बहुत धन्यवाद। काकाजी-पप्पाजी, ये सारे स्वरूप, स्वामिजी आप लोगों की सेवा से बहुत राज़ी हुए ही होंगे और वे आपको आध्यात्मिकता में एक स्टॅप तो आगे ले ही गए होंगे, जो आपको ज़रूर महसूस होगा। आपकी ये सेवा व्यर्थ नहीं जाएगी, क्योंकि काकाजी - पप्पाजी ने रजिस्टर्ड कर लिया है ! **काकाजी - पप्पाजी स्थूल देह से भले गए हैं, पर अभी भी इस सभा में हाज़िर हैं।** अगर हम इस फीलिंग से इस सभा में बैठेंगे, तो हमें यह ज़रूर एहसास होगा। मुझे हुआ है ; जब भी मैंने ज्योति बहन, दीदी को किसी निमित्त या किसी जगह स्नॅप देखकर या किसी बात में याद किया होगा, तो उसी दिन अचूक ज्योति बहन, दीदी का किसी न किसी बहाने से फोन ज़रूर आ ही जाएगा। मुझे फील भी होता है कि ये ज्योति बहन, दीदी का फोन नहीं है, ये तो काकाजी और पप्पाजी का फोन है। यह मैंने बहुत बार महसूस किया है।

मैं गुणातीत समाज में सबसे छोटी हूँ, मुझे वो बड़ा फ़ायदा हो गया ! सभी के प्यार के लिए मेरे पास शब्द तो नहीं हैं। पर, मेरा भाव आप सब स्वीकार करना और दीदी ने तो प्रार्थना करी कि गुरुजी की शताब्दी उनकी हाज़िरी में हम मनाएँ ; लेकिन, उससे आगे मेरे मन में एक बात है, जो मैंने शिकागो में भी की थी कि दीदी, सिर्फ गुरुजी की नहीं, **आप सभी स्वरूपों की हाज़िरी में हम आपकी शताब्दी मनाएँ।** सिर्फ गुरुजी की तबियत की बात नहीं है। ये सभी स्वरूप – स्वामिजी से लेकर जयु बहन तक सब हाजिर हों और हम शताब्दी मनाएँ...

काकाजी कहते थे कि समय की गम पड़ जाए वह 'समागम' है। हमें समय की वॅल्यू ख्याल पड़े। इन स्वरूपों की हाज़िरी में हमारा एक - एक सॅकंड बहुत वॅल्यूएबल है। हम टाइम वेस्ट न करें। ये स्वरूप हमें जो देना चाहते हैं, वह इनके पास से हम ले लें। गुणातीतानंदस्वामिजी की बातों में है कि सबको देने के लिए अक्षरधाम से (गुणातीतज्ञान के) जो पोटले वे बाँध कर लाए थे, वो वैसे के वैसे ही वापिस ले जा रहे थे। तो यह बात हमें रीपीट नहीं करनी है। हमें इन स्वरूपों को तत्त्व से पहचानना है। ये कुछ अलग

हैं, इनका उठना-बैठना, खाना-पीना, हरेक चैतन्य के संकल्प को पूरा करने के लिए है। तो अब टाइम की वॅल्यू समझें।

एक बार मेरा मसूड़ा फूल गया था और अंदर इन्फॅक्शन हो गया था। मैं डॅन्टिस्ट के पास गई, तो मेरे साथ गई डॉक्टर अर्ची ने उन्हें कहा – दीदी तो बहुत अच्छी तरह से ब्रश करती हैं, फिर भी उन्हें ये तकलीफ़ कैसे हो रही है ? तो डॉक्टर ने बहुत अच्छा बताया – तुम ब्रश कितनी देर करते हो, उससे कुछ मायने नहीं रखता, लेकिन तुम ब्रश किस तरह करते हो वो मेईन बात है। मैं वो बात सुन रही थी, तो मुझे विचार आया कि हमें ऐसा होता है कि हम चालीस साल से सत्संग में हैं, इतने साल से सत्संग में हैं, हम तो बहुत पुराने हैं, हमने तो बहुत सेवा करी है; ये एक कॉन्शियसनेस है। महत्त्व की बात ये नहीं है कि आप कितने सालों से सत्संग में हैं। लेकिन इन गुणातीत पुरुषों ने हमें जो दिया, वो हमने कितना लिया ? यह प्रश्न हम सबको अपने आप से करना है। हम सभी खूब अंतर्दृष्टि करें कि हमें इन लोगों से जितना पाना था, क्या सच में हमने वो पाया है ? जैसे गुरुजी बहुत बार कहते हैं कि काँच के बर्तन की तरह हमें स्वरुप संभालते ही रहें। ओहो, बुरा न लग जाए, ओहो मूड ऑफ न हो जाए।

साधु हमें कुछ कह न सके, उससे बड़ा दुर्भाग्य कुछ नहीं हो सकता है और साधु हम पर हर प्रकार से अधिकार करे, उससे बड़ा कोई सौभाग्य नहीं हो सकता।

तो, आज सभी गुणातीत स्वरूपों के चरणों में मेरी अंतर से प्रार्थना है कि आपका स्वरुप जैसा है, वैसा हम तत्त्व से पहचान सकें। हम कोरे न रह जाएँ। अक्षरधाम से इतना कष्ट उठाकर, आप लोग जो देने के लिए धरती पर हमारे लिए आए हैं, हम सच में ले सकें ऐसी प्रार्थना। सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

तत्पश्चात् प.पू. आनंदी दीदी की निश्रा में भगवान भजती **पू. परछाईं दीदी**, जो कि नृत्य एवं चित्रकला द्वारा भक्तिभरे हृदय से सांस्कृतिक कार्यक्रमों एवं सुसज्जा की वर्षों से सेवा करती रहती हैं, उन्होंने सत्संग की युवतियों के साथ **'आयो रे आयो श्रीहरि खेलवाने...'** घूमर प्रस्तुत किया। गुरुहरि काकाजी ने प.पू. गुरुजी को साथ ले जाकर पंजाब के मुक्तों पर खूब मेहर की है, सो बंधुजोड़ी शताब्दी के इस अवसर पर युवतियों ने पंजाब का लोकनृत्य **'आया, आया, बंधुजोड़ी महोत्सव आया...'** गिद्दा किया।

सायं करीब पौने छः बजे से मुख्य सभा आरंभ हुई और तकरीबन साढ़े दस बजे तक चली। मुक्त समाज तो श्रद्धापूर्वक बैठा ही था, परंतु मंचस्थ सभी स्वरूपों के प्रति अंतर नमन करता था कि 80-85 या 70 - 75 वर्ष की आयु में ख़ुद ग़रज़ रख कर, इतनी ठंड में भी सबको दिव्य स्मृतियाँ व प्रेरणा देने के लिए वे इतने घंटे लगातार विराजमान रहे...

हमें जिन प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूपों की निश्रा प्राप्त हुई है, उनकी जीवनशैली कोई न कोई शिक्षा देती है। प.पू. गुरुजी का संपूर्ण जीवन निहारें, तो उन्होंने अपनी कार्यशैली-बातों से मुक्तों को यह दृढ़ कराया है कि छोटे बन कर रहने में सच्चा बड़प्पन है और हमेशा लॉ प्रोफाइल रहने में ही सच्ची साधुता समाई है। अबकी बार भी उन्होंने अपने अंतर की यही इच्छा ज़ाहिर की कि गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी बंधुजोड़ी शताब्दी के अंतर्गत ही मेरा 80वाँ प्राकट्य दिन मना लेना।

24 दिसंबर की सुबह 9:00 बजे शुरू हुए इस सत्र में 'विन्टेज कार्स' में बैठ कर प्रत्यक्ष स्वरूपों ने पंडाल में प्रवेश किया। पुराने समय की इन गाड़ियों द्वारा यह दर्शाने का प्रयास किया था कि वर्षों पहले गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी एवं प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी जैसी दिव्य विभूतियों ने कैसे-कैसे साधनों से सत्संग का किस प्रकार विकास किया और उस परिश्रम का परिणाम ही यह 'गुणातीत समाज' है। मंच पर स्वरूपों द्वारा अपने आसन पर स्थान लेने के बाद, **प.पू. गुरुजी के 80वें प्राकट्य दिन** निमित्त **प.पू. गुरुजी के** निम्न **विशिष्ट गुण** का वीडियो क्लीप द्वारा दर्शन किया–

मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी स्वयं श्रीजी महाराज के रहने का धाम थे, फिर भी उन्हें महाराज के स्थूल दर्शन की कैसी तान होगी कि एक बार महाराज बहनों की सभा करके देर रात को लौट रहे थे, तब गुणातीतानंदस्वामिजी बरसात में छप्पर के नीचे खड़े रहे कि महाराज यहाँ से गुज़रेंगे, तो उनके दर्शन हो जाएँगे। स्वामिश्री ने अपने वर्तन से हम सभी के लिए आदर्श स्थापित किया कि हर समय, हर क्रिया प्रगट सत्पुरुष युक्त होनी चाहिए।

स्वामिश्री के ऐसे प्रसंग हम सबने सुने हैं। लेकिन, इसी पद्धति को अपनाए प.पू. गुरुजी की हूबहू जीवनशैली तो हमारी नज़र समक्ष है।

दादर-अक्षरभुवन में जब बापा आते, तो गुरुजी साक्षात् ब्रह्म का विश्राम करते दर्शन करने के लिए रात को उनके कमरे में बैठते।

इसी प्रकार, बापा के स्वरूप काकाजी, पप्पाजी या हरिप्रसादस्वामिजी जब भी दिल्ली मंदिर आते और वे आराम में गए होते, तो बाहर के हॉल में, अपने सोफे के आगे फर्श पर बिछे बिस्तर पर बॅक गद्‌दी लगा कर, गुरुजी सारी रात जगे जैसे रहते और जैसे ही दरवाज़े की झीरी में से कमरे की लाईट जलती नज़र आती, तो अंदर पूछने जाते कि कुछ चाहिए तो नहीं। साथ ही प्रत्यक्ष स्वरूप के दर्शन का सुख लेते। यूं, सत्पुरुष ही स्वयं जीकर हमें बताते हैं कि प्रत्यक्ष गुरु की कैसी महिमा, माहात्म्य और उनके दर्शन की तान होनी चाहिए।

प.पू. गुरुजी के 80वें प्राकट्य वर्ष के साथ-साथ, उन्हें **दिल्ली में आए इस वर्ष पचास साल भी पूर्ण हुए।** सो, पूर्व तैयार की गई वीडियो क्लीप्स द्वारा स्वरूपों एवं मुक्तों के मुख से जाना कि किन परिस्थितियों में प.पू. गुरुजी शुरुआत के दिनों में रहे और कैसा संघर्ष किया! तत्पश्चात् **पू. डॉ. दिव्यांग** ने **'तू सबसे प्यारा ख़ाविंद हमारा...'** भजन प्रस्तुत किया। वैसे तो प.पू. गुरुजी का पल-पल का जीवन ही एक उपदेश है। परंतु, कई बार इन्होंने मज़ाक में या सहजता में मुक्तों को गुणातीतज्ञान और गुणातीत साधु होने की क़वायत दी है। इसके अतिरिक्त, गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी की गोद में पल कर कुटुंबभाव की जो भावना प.पू. गुरुजी ने अपने भीतर दृढ़ की, उसी का दिल्ली के मुक्त समाज में सिंचन किया। स्क्रीन द्वारा मुक्तों के ऐसे अनुभवों का सभी ने दर्शन व श्रवण किया।

इस दौरान विन्टेज कार में विराजमान होकर, **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी** ने पंडाल में प्रवेश किया। प.पू.

स्वामिजी का स्वागत करने हेतु गए प.पू. गुरुजी भी पुनः उनके साथ पंडाल में प्रविष्ट हुए। मंच पर पहुँच कर 85 वर्षीय प.पू. स्वामिजी ने श्री ठाकुरजी एवं गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी की मूर्ति के समक्ष साष्टांग दंडवत् करके अपना आसन ग्रहण किया।

प.पू. गुरुजी के 80वें प्राकट्य पर्व निमित्त मंदिर के संतों, सेवकों एवं बहनों ने थर्मोकॉल की बोल्स का विशिष्ट हार बनाया गया था, जिस पर बारीक अक्षरों में स्वामिनारायण मंत्र लिखा हुआ था और निम्न प्रार्थना अर्पण की थी –

प.पू. गुरुजी अकसर कहते हैं कि गुरुहरि काकाजी महाराज ने ताड़देव में जो भजन किया है, उसकी रॉयल्टी हम आज भोग रहे हैं। इसी प्रकार, साधु होने के बाद प.पू. गुरुजी ने अपने इन 57 सालों में लगातार जितना भजन किया है और आज भी करवा रहे हैं, उसकी रॉयल्टी भोग कर हम सुखी हो रहे हैं। हर प्रसंग पर प.पू. गुरुजी भजन का ही बल लेते हैं और हर एक को यही सीख देते हैं, तो अब हम केवल भजन का ही बल लेकर जीने लग पड़ें; ताकि इस लाईट वेटेड हार की तरह हमेशा हल्का महसूस करें।

पचास सालों की इस सीख की कृतज्ञता के प्रतीक रूप **पू. नवीनभाई, पू. आशिष** एवं **पू. नक्षु** यानि तीन पीढ़ी जब सभी की ओर से प.पू. गुरुजी को यह विशिष्ट हार अर्पण करने गई, तब प.पू. गुरुजी ने स्वामी सेवकभाव से प.पू. स्वामिजी को यह हार अर्पण करवाया। जैसे कि प.पू. स्वामिजी भी प.पू. गुरुजी को भजनिक कहते हैं, सो उसी की स्मृति कराते हुए प.पू. स्वामिजी के आशीर्वचन की ऑडियो क्लीप सुनी। बाद में प.पू. स्वामिजी का यह प्रासादिक हार प.पू. गुरुजी को अर्पण किया गया।

थोड़े वर्ष पहले संतभगवंत प.पू. साहेबजी ने प.पू. गुरुजी के एक प्राकट्योत्सव पर कहा था कि हारविधि इत्यादि के लिए अधिक समय नहीं देना चाहिए। सो, उनके इस सूचन का पालन करते हुए **दिल्ली मंदिर** से जुड़े अलग-अलग प्राँतों एवं विदेश **के हरिभक्तों** की ओर से केवल एक ही **सामूहिक हार प.पू. गुरुजी को अर्पण किया। दिल्ली की ठंड में** गुणातीत समाज की एकता की ऊष्मा को दर्शाते हुए, इसके पुष्प गुणातीत समाज के ध्वज के रंगों की **ऊन से बनाए** थे और आकृति प.पू. गुरुजी के 80वें प्राकट्य का प्रतीक थी। इस कार्यक्रम में गुणातीत समाज के केन्द्रों के संतों, मुक्तों एवं हरिभक्तों ने भी प.पू. गुरुजी को विशिष्ट हार, मुकुट एवं स्मृति भेंट अर्पण की...

- **हरिधाम-भक्ति आश्रम** की ओर से मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी की कृपादृष्टि प्राप्त, निष्कामी 'मोर' के पेन्डेन्ट वाला कलात्मक हार अर्पण किया गया।
- अनुपम मिशन की ओर से **संतभगवंत प.पू. साहेबजी** ने मूर्ति दी, जिसमें ऐसा प्रतीत हो रहा था कि प.पू. गुरुजी एक बालक की भाँति गुणातीत स्वरूपों की गोद में विराजमान हैं।
- गुणातीत ज्योत की ओर से अर्पित हार का डिज़ाईन **प.पू. ज्योति बहन** ने स्वयं तैयार करवा कर, प.पू. गुरुजी के 80वें प्राकट्य के प्रतीक रूप अस्सी कंठियों से सुशोभन कराया था।

❋ पवई मंदिर की ओर से एक अद्‌भुत स्मृति भेंट दी गई, जिसमें प.पू. गुरुजी से जुड़े पचास प्रसंगों को **प.पू. भरतभाई** ने स्वहस्त लिख कर तैयार किया था।

इसी वर्ष **6 दिसंबर** को प.पू. गुरुजी को दिल्ली आए पचास वर्ष (गोल्डन ज्युबिली) पूर्ण हुए, सो गुणातीत स्वरूपों, पूजनीय संतों एवं गणमान्य अतिथियों को गुलाब का गोल्डन फूल अर्पित किया गया। तत्पश्चात् **पू. विज्ञानस्वामिजी** ने शताब्दी वंदना की–

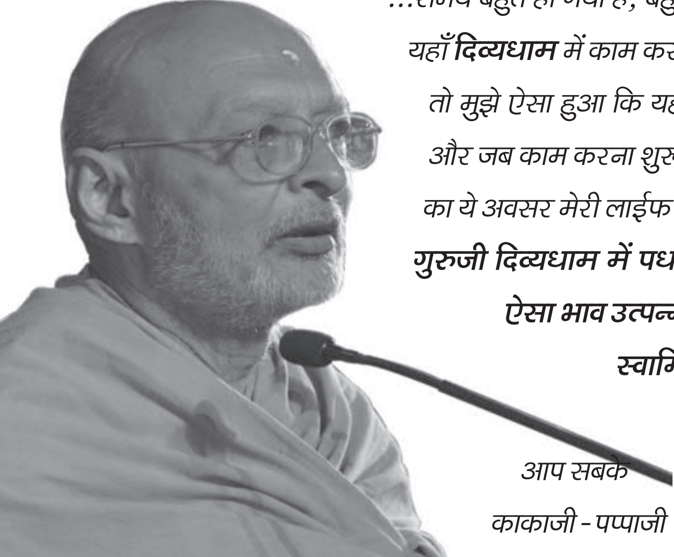

*...समय बहुत हो गया है, बहुत कुछ कहना है, लेकिन एक प्रसंग कहूँगा। हम लोग यहाँ **दिव्यधाम** में काम कर रहे थे। जब काकाजी-पप्पाजी की पैनल की बात आई, तो मुझे ऐसा हुआ कि यह काम कौन करेगा? और... ये सेवा मेरे हिस्से आई और जब काम करना शुरू किया, तब मन में ऐसा होता था कि काकाजी-पप्पाजी का ये अवसर मेरी लाईफ में लास्ट है। उसी विचार से मैं थोड़ा शून्य हो गया। तभी **गुरुजी दिव्यधाम में पधारे।** एट वॅरी धेट मोमेन्ट ही केम इन वर्कशॉप। **मुझे ऐसा भाव उत्पन्न हुआ कि मेरे पप्पाजी - काकाजी आ गए। भगवान स्वामिनारायण कहो या योगीजी महाराज या काकाजी-पप्पाजी ने उन्हें भेजा।***

*आप सबके साथ ऐसा ही दूसरा प्रसंग शॅयर करूँगा। जब काकाजी - पप्पाजी की पेनल के ट्राईएंगल का काम चल रहा था, तो ऊपर सब जोईन्ट नहीं हो रहा था। एक कारीगर को मैंने ऊपर भेजा, लेकिन ऐसा सोचा कि अब ये काम नहीं हो पाएगा और यह तो मैं नहीं कहूँगा कि ये मेरी लाइफ की लास्ट सेवा... मगर हिम्मत करके मैं ऊपर चढ़ गया। चढ़ने के बाद ऐसा सोचा कि अब क्या होगा, कैसे होगा? मगर करना तो है ही, तो करेंगे ही करेंगे। मैं थोड़ा करने वाला हूँ, वे (प्रभु) करने वाले हैं। काम करने की मेरी मोमेन्ट्स एण्ड पर आ गई थी। उसी समय गुरुजी पधारे और गाड़ी में से मुझे दर्शन दिया। **मुझे यह खुशी होती है कि जिनके साथ आनंद-मज़ाक करते थे, वे अब स्वरूप बन गए!** हमारा संदेश उनके पास वैसे ही पहुँच जाता है; हमारा संदेश उन तक पहुँचे वो तो अलग बात है, लेकिन उस संदेश का जवाब भी वे दे रहे हैं। वे ऐसे अनुभव सबको कराते ही रहते हैं। ऐसे गुरुजी के लिए हम क्या कह सकते हैं? लेकिन, काकाजी-पप्पाजी की उमंग खूब-खूब बढ़ रही होगी कि ये गुरुजी तैयार हो गए। योगीजी महाराज को आनंद होता होगा कि 'मेरा मकंद' तैयार हो गया! हम सबके दिमाग़ व दिल में वे ऐसे बस गए हैं। तो, ऐसे स्वरूप को हमारी ओर से ऐसी प्रार्थना करें कि वे जो चाहते हैं, वैसी हमारी जिंदगी, विचार, वाणी और वर्तन बन जाए – ऐसी गुरुजी से प्रार्थना।*

प.पू. गुरुजी ने गुरुवर्य योगीजी महाराज, गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी तथा प्रत्यक्ष दिव्य स्वरूपों से जो गुणातीतज्ञान-कुँजियाँ पाई हैं, उसे अकसर दोहराते हुए मुमुक्षुओं के अंतरद्वंद्वों को वे शांत करते हैं। सो,

अबकी बार भी प.पू. गुरुजी के आशीर्वचनों के संकलन **'मार्गदर्शिका - 11 व 12'** को **संतभगवंत प.पू. साहेबजी** ने अनावरित करके आशीर्वाद दिया–

...तीन दिन एक साथ ये दिव्य संतों व स्वरूपों के माहात्म्यगान, दर्शन का अनोखा लाभ हमें मिला। कुछ सुनें भी नहीं, लेकिन यहाँ बैठे-बैठे हारविधि इत्यादि का दर्शन करने में कितना आनंद आता है। भगवान को राज़ी करने के लिए, भगवान को अखंड धार कर जीवन जीने के लिए और संतों के प्रति जो प्रेम है, उसका इसके द्वारा दर्शन होता है।

गुणातीतानंदस्वामी ने अपनी बातों में लिखा है–सामान्य चरवाहा यदि खुश हो जाए, तो वह दस-बारह भेड़ भेंट में दे देगा। कोई किसान खुश हो जाए, तो पाँच-पच्चीस मन आम भेंट में देगा। कोई धनवान-लखपति प्रसन्न हो जाए, तो दो-पाँच लाख रुपये भेंट में दे दे। पर, भगवान राज़ी होते हैं, तो वे क्या भेंट में देते हैं? ***भगवान राज़ी हों, तो ऐसे साधु का संग देते हैं और उस साधु की पहचान हो जाए, उस हेतु बुद्धियोग देते हैं।*** *सच, हम सब पर - 'गुणातीत समाज' पर भगवान स्वामिनारायण और योगीजी महाराज ने इतनी अपरंपार कृपा बरसाई है कि काकाजी, पप्पाजी, प्रमुखस्वामी, महंतस्वामी, हरिप्रसादस्वामी, अक्षरविहारीस्वामी, गुरुजी जैसे अद्‌भुत संतों की भेंट दी। और... काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी ने दिल्ली मंडल पर इतनी कृपा बरसाई कि हमें गुरुजी की भेंट दी। अभी जीवन प्रसंगों से दर्शन किया कि* ***काकाजी की आज्ञा, पप्पाजी और स्वामिजी के आशीर्वाद से गुरुजी पचास साल से धुनी जमा कर यहाँ विराजमान हुए हैं।*** *उसके बाद उन्होंने जो यात्रा आरंभ की, उसका परिणाम दिख रहा है। गुणातीत समाज का एक आदर्श है कि ब्रह्मरूप होकर परब्रह्म की सेवा का अधिकार प्राप्त करें। जब ब्रह्मस्वरूप होंगे, तभी परब्रह्म की सेवा का अधिकार प्राप्त होता है। ब्रह्मरूप होने के लिए ऐसे ब्रह्मस्वरूप संत की आवश्यकता है। ऐसे ब्रह्मस्वरूप साधु की सेवा करने से ही गुरुरूप अर्थात् प्रभुरूप हो सकते हैं। तब अन्यों को माया से परे करके, चैतन्य को शुद्ध करके प्रभु के चरणों में समर्पित कर सकते हैं।*

अक्षरपुरुषोत्तम उपासना की यह सारी जो पद्धति है, उसका फल देखें तो गुरुजी ने योगीजी महाराज के सान्निध्य में दीक्षा लेकर, महंतस्वामी, हरिप्रसादस्वामी की सेरेछाया में साधना शुरू की। काकाजी-बा का असाधारण हेत, पप्पाजी का आशीर्वाद, महंतस्वामी-हरिप्रसादस्वामी जैसे दिव्य पुरुषों का मार्गदर्शन, उनका नेतृत्व... ***गुरुजी सच में इतने सिन्सियर और ऑनेस्ट कि इनके वचनानुसार वे जीवन जीते थे। तो***

अब योगीरूप, काकारूप, पप्पारूप, हरिप्रसादस्वामीरूप, महंतस्वामीरूप बन गए। दिल्ली के भक्तों के लिए सच में वे अक्षरपुरुषोत्तम का साकार रूप हैं। परब्रह्म की सेवा का अधिकार प्रभु ने उन्हें दिया है।

अभी हमने सब स्वरूपों, संतों, हरिभक्तों के अनुभव सुने, उससे ख्याल पड़ा कि कैसे-कैसे चैतन्य उनके पास आए, कैसा भाव लेकर आए, वह कुछ भी देखे बिना उन पर हेत-प्रेम बरसा कर, उनके लिए धुन-भजन व प्रार्थना की। सबसे सेवा करवा कर, ट्रान्सफॉर्मेशन किया। परब्रह्म की ऐसी अद्‌भुत भक्ति गुरुजी पचास वर्ष से कर रहे हैं। जिसके परिणामस्वरूप यहाँ अद्‌भुत गुणातीत समाज की रचना हुई है। यहाँ के संत, संत बहनों, गृहस्थ भक्त, युवक-युवतियों को देखें, तो सबको सभी के प्रति एक जैसा सरीखा भाव। बड़ा हो या छोटा, यहाँ से आया है कि वहाँ से आया है, यह कुछ भी देखे बिना... जैसे भगतजी महाराज ने गोरधनदास कोठारी से कहा –

‘वड़ताल के दरवाज़े के अंदर रहते हैं, उन्हें ब्रह्म की मूर्ति मान कर प्रभु के भाव से सेवा करो, तो तुम कैसे भी होगे बदल जाओगे। तुम्हारे संकल्प की बीमारी टल जाएगी।’

नींव की यह बात गुरुजी ने समग्र मुक्तों के जीव में ऐसी डाल दी है कि यहाँ छोटे-बड़े सभी प्रभु के भाव से सेवा करते हैं, प्रभु के भाव से सबसे मिलते हैं; उसका हमें दर्शन होता है और हमें अपनेपन का एहसास होता है। ***काकाजी और कांतिकाका –दोनों कुटुंब ने एक होकर जो परिवार की भावना बताई, उसका लार्ज स्केल पर यहाँ गुरुजी ने दर्शन कराया है।***

3 फरवरी को काकाजी को जब साक्षात्कार हुआ, तब उन्होंने स्वामिनारायण भगवान और योगीबापा से प्रार्थना की कि आपने जो मुझे दर्शन कराया और सुख दिया, वह मेरे सभी सगे-संबंधियों को मिले। हम काकाजी के सगे-संबंधी हैं, तो हमें वह सुख अपने आप मिलता जाता है। लेकिन एक शर्त है... काकाजी के लेखों का ग्रंथ ***‘पंचम पुरुषार्थ’*** *जो प्रकाशित किया है, उसमें* ***काकाजी का एक ही मुद्दा है कि मानवरूप मिले अक्षरपुरुषोत्तम के गुणातीत स्वरूप में सम्यक् निर्दोषबुद्धि रखो। उनकी आज्ञा का निःशंकभाव, अहोहोभाव व वफ़ादारी से पालन करो। उनके संबंध वालों के प्रति निर्दोषभाव युक्त भक्ति-सेवा करेंगे, तो ‘पंचम पुरुषार्थ’ की इस साधना के फलस्वरूप हम काम-क्रोधादि रहित अपने आप हो जाएँगे। यह सारी साधना गुरुजी अपने प्रेम और हेत से खुद हाज़िर रह कर, कथावार्ता, धुन-भजन, प्रार्थना करवा कर करा रहे हैं। पचास साल की साधना में से यह समाज खड़ा हुआ, जिसका दर्शन करने का हमें मौका मिला है।***

गुरुजी की मार्गदर्शिका सी डी बहुत अच्छी प्रकाशित की है। उसके कवर पर लालटेन बनाई हुई है। पहले के समय में लाईट या बैटरी नहीं थी। तब लालटेन लेकर दस फुट तक दिखता था, जितना आगे जाते उतना दिखाई देता था। इसी तरह साधना में जितनी ज़रूरत होती है, उतना दर्शन होता जाता है; उसे फोकस करती

अद्‌भुत सी डी योगी डिवाईन सोसाईटी दिल्ली से लोकार्पण हो रही है। वह सुन कर उसके अनुसार जीवन जीने का हम प्रयत्न करें।

गुरुजी को 1961 में दीक्षा लिए 58 वर्ष हुए। दीक्षा लेकर महंतस्वामी के पास दादर मंदिर रहे और पाँच वर्ष के बाद 1966 में तो सोखड़ा आ गए। स्वामिजी के साथ एक-दो साल सोखड़ा-सांकरदा रहे और फिर काकाजी की आज्ञा से सीधा दिल्ली आए। काकाजी के दिए आदेश, सिद्धांत और नियम के अनुसार दिल्ली को अपना कार्यक्षेत्र बनाया। निर्दोषभाव से सभी भक्तों का जतन किया। इन्होंने खुद हमारे प्रति कितना निर्दोषभाव रखा। हमें तो ***उनसे कैसे बात करनी, कैसे चलना, उठना-बैठना, कुछ भी मालूम नहीं था। ऐसे संजोगों में भी गुरुजी ने हमसे प्रेम – हेत करके, हम में ओतप्रोत होकर, भाइयों, बहनों, गृहस्थों, युवक-युवतियों को प्रभु में जोड़ कर, पराभक्ति रूप सेवा करवा कर अद्‌भुत समाज का दर्शन कराया। यही गुरुजी की गुणातीत अवस्था का दर्शन कराता है।*** *सिद्धदशा वाले, वचनसिद्ध, ऐश्वर्य, प्रताप, चमत्कार बताने वाले कई साधु होंगे और इस पृथ्वी पर हैं। लेकिन, अपने संपर्क में आते चैतन्य को साफ़-सुथरा करके प्रभु के चरणारविंद में जो धरे, वो गुणातीत अवस्था का साधु ही कर सकता है। ऐसी गुणातीत अवस्था के साधुओं का हमें लाभ मिलता है, हमारा कितना भाग्य कहा जाए। हरिप्रसादस्वामिजी, अक्षरविहारीस्वामिजी, गुरुजी, प्रेमस्वामी, अश्विनभाई, शांतिभाई, दिनकरभाई, भरतभाई जैसे को देख कर मस्तक झुक जाता है। ऐसी संत बहनें भी हैं।*

शुरुआत से हमें योगीजी महाराज के प्रति असाधारण प्रेम और हेत था और बापा ने ही हमें हरिप्रसादस्वामिजी, काकाजी, पप्पाजी से जोड़ा और इनके प्रति बापा जैसा ही भाव... उनकी जिस पर कृपादृष्टि हो जाए, उसके प्रति अपनेआप ही प्रेम उमड़ता है। हम सब जानते हैं कि गुरुजी, प्रेमस्वामी और कोठारीस्वामी काकाजी के लाड़ले संत थे। काकाजी के प्रति उन्हें असाधारण प्रेम; इसलिए हमें इन सबके प्रति अपने आप प्रेम उमड़ता है। काकाजी को इनके प्रति बहुत प्रेम था। दिल्ली सेन्टर हुआ, तब से शांतिभाई, अश्विनभाई, हमारे संत भाई और विद्यानगर की संत बहनों ने यहाँ आकर, गुरुजी द्वारा शून्य में से सर्जन करने में जो सहयोग दिया है, वे सभी मुक्त आज हाज़िर हैं। बहुत आनंद की बात है कि इन सबको यहाँ आकर बहुत आनंद हो रहा है कि वाह, योगीजी महाराज का जो कार्य, उसे काकाजी-पप्पाजी का संकल्प और स्वामिजी के सान्निध्य में रह कर गुरुजी साकार कर रहे हैं। उससे सबको परम आनंद, परम शांति होती है।

गुरुजी ने पूरे समाज में जो कुटुंबभावना प्रगटाई, वो प्रगटाने का बापा, काकाजी, पप्पाजी और स्वामिजी का भाव है।

समग्र गुणातीत परिवार, फिर जो जहाँ हो वहाँ, योगी डिवाईन सोसाईटी, पवई, ताड़देव, मुंबई, इंग्लैंड, अमेरिका, अनुपम मिशन, योगी डिवाईन सोसाईटी - सोखड़ा, सभी अक्षरपुरुषोत्तम - शास्त्रीजी महाराज के उपासक हैं। शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज की कृपा वाले हैं। काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी के सान्निध्य

में भक्ति करने वाले हैं। तो कुटुंबभाव सभी संतों, युवकों, संत बहनों, गृहस्थों में प्रगटे और सभी हमेशा आनंदकल्लोल करते हुए, हँसते-खेलते हुए, तन, मन, धन और आत्मा से खूब सुखी बने रहें। आज आपके प्राकट्य पर्व पर अंतर से आशीर्वाद देना। गुरुजी, अक्षरविहारीस्वामिजी और स्वामिजी से भी प्रार्थना...

हरिप्रसादस्वामिजी *को देखें तो 85वर्ष की आयु है और एक घंटा-डेढ़ घंटे से ज़्यादा वे बैठ नहीं सकते। उन्हें कितना दर्द होता है, लेकिन* ***अपने दुःख व देह को गिने बिना, स्वामिजी केवल योगीजी महाराज की भक्ति मान कर, कितने घंटे हमारे साथ बैठते हैं।*** *उनकी तबियत दो दिन पहले तक खराब थी, फिर भी उनके दिल में था कि मुझे दिल्ली जाना है। तो, खुद आकर हमें दर्शन और आशीर्वाद दिया। स्वामिजी के चरणों में भी प्रार्थना कि आपकी, काकाजी और पप्पाजी की जैसी इच्छा है, ऐसे गुणातीत समाज की रचना आज आप सबके आशीर्वाद से गुरुजी द्वारा यहाँ साकार हुई है। समग्र गुणातीत परिवार में यह भावना साकार बने, ऐसा आशीर्वाद आप बरसाना। पंडाल व स्टेज पर बैठे सभी की ऐसी प्रार्थना। जय स्वामिनारायण!*

संतभगवंत प.पू. साहेबजी के आशीर्दान के बाद, प.पू. गुरुजी के कॉस्मोपोलिटियन गुण को दर्शाते हुए सत्संग के युवकों ने **'गुजराती, मराठी, मारवाड़ी एवं पंजाबी'** – चार भाषाओं के मिश्रित भजन पर भावनृत्य करके सबके हृदय में उमंग-उत्साह ऐसा भरा कि स्टेज पर कई मुक्त अपने भाव प्रकट करने के लिए उमड़ पड़े और बहनों के विभाग में भी सत्संग की युवतियाँ व भाभियाँ, प.पू. हंसा दीदी, प.पू. ज्योति बहन, प.पू. आनंदी दीदी, प.पू. माधुरी बहन को साथ में लेकर आनंदकल्लोल करने लगीं।

तत्पश्चात् जैसे कि प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी प.पू. गुरुजी को अपना छोटा भाई ही मानते हैं, सो उन्होंने सांकरदा मंदिर की ओर से दिल्ली के मुक्तों को राज़ी कर देने की भावना से विशिष्ट सौगात प्रस्तुत की। जिसकी भूमिका बताते हुए **प.पू. गुरुजी (पू. निष्कामजीवनस्वामिजी)** ने कहा–

...बहुत आनंद की बात है कि गुरुजी ने बंधुजोड़ी शताब्दी निमित्त हम सभी को बुला लिया। विशेष तो हम संतों को अपना मान कर सेवा का लाभ भी दिया। योगीजी महाराज कहते–यहाँ तो चहुँ ओर शक्कर बिछाई हुई है। सच में यहाँ देखा और अनुभव किया कि माहात्म्य का माहौल, माहात्म्य रूपी शक्कर सर्वत्र बिछाई हुई है। जहाँ देखें, जिससे भी मिलें या काम करें वहाँ माहात्म्य देखने को मिलता है...

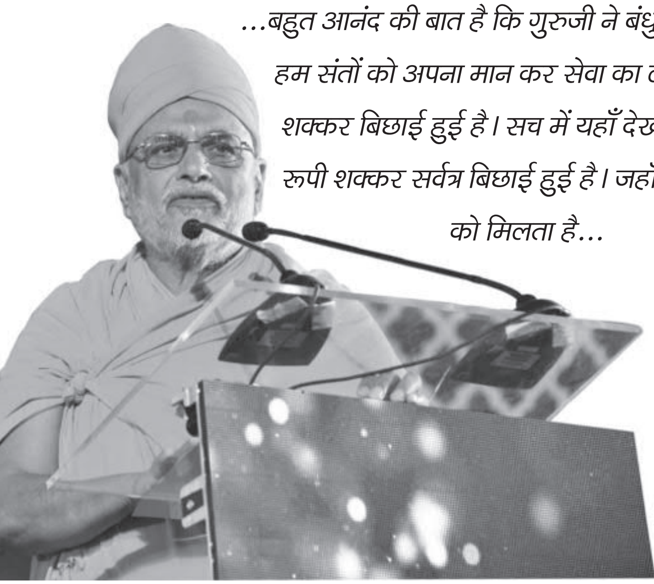

आज के महामंगलकारी पर्व–दिव्य बंधुजोड़ी शताब्दी पर्व के साथ-साथ गुरुजी का 80वाँ प्राकट्य दिन! इसके अतिरिक्त उन्हें दिल्ली आए पचास वर्ष पूरे हुए हैं–स्वर्ण दिन! हम जानते हैं कि गुरुजी कुछ न कुछ नया करते रहे हैं, नई स्मृति याद रहे ऐसा करते हैं। इसलिए स्वरूपों को पंडाल में पुराने ज़माने की एन्टीक कार के अंदर

लेकर आए। कइयों ने तो ऐसी कार देखी भी नहीं होगी। यूं एक नई स्मृति दी। ठीक इसी प्रकार, स्वामिजी (अक्षरविहारीजी) भी कुछ न कुछ नया करते रहते हैं। इसलिए यह भी कहा जाता है कि कुछ नया न करें, वे अक्षरविहारीस्वामिजी न कहे जाएँ। जैसे कि ***आप सबको लगता है कि गुरुजी हमारे हैं, ऐसा ही हम सबको भी लगता है कि गुरुजी हमारे हैं।*** *सो, हमने मीटिंग की कि गुरुजी के लिए हम क्या करें ? इस लोक की वस्तु तो उन्हें चाहिए नहीं। तो, सबको विचार आया कि बापा और काकाजी कई बार कहते – बड़े पुरुष सहजता से राज़ी नहीं होते। लेकिन, उनके भक्तों को क्या पसंद है, उन्हें क्या चाहिए, उसकी महिमा समझ कर भक्तों को राज़ी करेंगे, तो 'स्वरूप' अपने आप राज़ी हो जाएँगे। सो, भक्तों को राज़ी करने के लिए एक कार्यक्रम का आयोजन किया है। जैसे गुरुजी स्वरूपों को एन्टीक कार में बिठा कर लाए, उसी प्रकार हम गुरुजी की एक मूर्ति को पालकी में बिठा कर लाएँगे। हमारे बिम्पलभाई द्वारा रचित भजन* ***'गुरुजी की निकली सवारी'*** *के साथ पालकी यात्रा मंच तक पहुँचेगी।*

और... नाचते-आनंद करते हुए मंच पर पहुँचने के बाद, उपस्थित प्रगट स्वरूपों द्वारा मूर्ति प्रसादी की करवा कर पालकी को विराजमान किया गया। सांकरदा की ओर से संत जब प.पू. गुरुजी को पुष्पमाला अर्पण करने के लिए आए, तो प.पू. गुरुजी ने वह हार प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी को पहनाने का आग्रह किया और स्वयं प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी के पास गए। काफ़ी देर तक एक-दूजे के माहात्म्य की खींचातानी चलती रही। अंत में प.पू. गुरुजी ने सांकरदा के संतों के साथ वह हार प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी को अर्पण किया; पर तुरंत ही उस हार में प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी ने प.पू. गुरुजी को शामिल करके सभी को अनोखी स्मृति दी। तत्पश्चात् पालकी में विराजित बड़ी मूर्ति का छोटे रूप में पू. मल्कानी अंकल द्वारा उद्‌घाटन हुआ। प.पू. गुरुजी के 80वें प्राकट्य पर्व के प्रतीक रूप, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी प.पू. गुरुजी की 80 छोटी मूर्ति लेकर आए थे।

समय की मर्यादा के कारण उस दिन प्रतीक रूप में केवल पू. मल्कानी अंकल को मूर्ति दी एवं अन्य मुक्तों को 26 दिसंबर को मंदिर में देने की घोषणा की। पश्चात् सांकरदा के **पू. स्नेहलस्वरूपस्वामी** ने माहात्म्यदर्शन कराते हुए कहा–

बहुत आनंद का दिन, अक्षरधाम का माहौल! गुरुजी का 80वाँ प्राकट्य पर्व हम मना रहे हैं, तो दिल में आनंद समाता नहीं। गुरुजी के जीवन पर आधारित डॉक्युमेन्ट्री देखी। गुरुजी का जीवन अद्‌भुत है, बहुत निहारा है। उन्होंने जो साधना की है या जो कुछ भी हमारे लिए किया है, उनके वो लीलाचरित्र की हमें जुगाली करनी है।

...कल जैसे गुरुजी ने बात की कि गुरु के आशीर्वाद से देहभाव से परे होकर ब्रह्मभाव में जाने के लिए उनके लीलाचरित्र स्मरण करके ईदम् कर लेने चाहिएँ, यह साधक का फर्ज़ है। इतनी लायकता यदि प्राप्त करेंगे और गुरुजी के समक्ष दो हाथ जोड़ कर, उनकी आज्ञा का पालन कर लेंगे, तो गुरुजी की आंतरिक प्रसन्नता मिलने पर हमारे अंतर में ठंडक हो जाएगी। मेरे जीवन में गुरुजी ने बहुत काम किया है। काकाजी

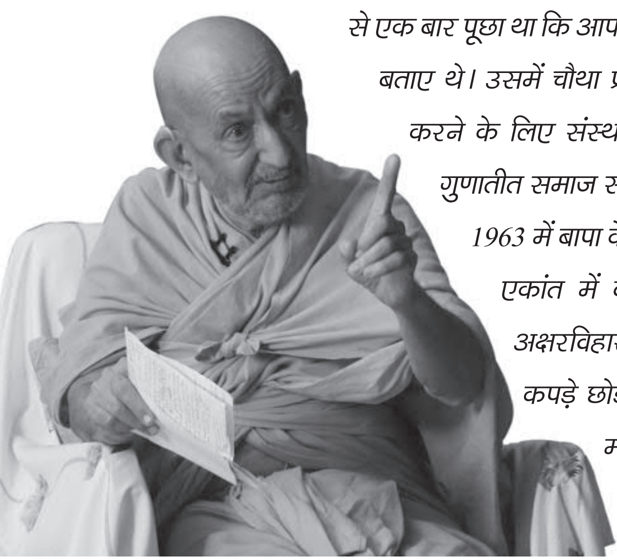

से एक बार पूछा था कि आपके आनंददायक दिन कौन-से हैं ? तब काकाजी ने चार प्रसंग बताए थे। उसमें चौथा प्रसंग था 28 मई 1966, जब काकाजी-पप्पाजी को विमुख करने के लिए संस्था के ट्रस्टियों ने नोटिस जारी किया था। दरअसल, सारा गुणातीत समाज स्थापित करने के लिए वह ठहराव किया था। मुझे याद है कि 1963 में बापा के साथ मैं जब पंचतीर्थी के लिए गया था, तब मैंने उनके साथ एकांत में बात की थी। बापा ने महंतस्वामी, हरिप्रसादस्वामी और अक्षरविहारीस्वामी की खूब महिमा गाई और कहा कि कभी सफ़ेद कपड़े छोड़ना नहीं यह मुझे वचन दो और सारी जिम्मेदारी शास्त्रीजी महाराज और मेरी है। मैंने भी बापा को वचन दिया कि सफ़ेद कपड़े नहीं छोडूँगा। **मैंने मन ही मन सोच लिया कि हरिप्रसादस्वामी, अक्षरविहारीस्वामिजी और मुकुंदजीवनस्वामी यदि मुझे नरक में ले जाएँगे, तो मैं वहाँ भी जाने के लिए तैयार हूँ। पर, आज मैं छाती ठोक कर कह सकता हूँ कि इन तीनों स्वरूपों ने मुझे अक्षरधाम के मध्य में बिठा दिया है...**

गुरुजी ने मुझे बहुत संभाला है। गुरुजी का जीवन 61 से 63 तक मैंने देखा है... गुरुजी के लीलाचरित्र मुझे स्मरण करवाने के लिए थे। तब माधवस्वामी गुरुजी की सेवा में थे। अक्षरविहारीस्वामी ने मुझसे कहा कि गुरुजी द्वारा जो भी होता है, उसमें दिव्यता रखना और भविष्य में देखना कि गुरुजी कैसे बन जाएँगे ! **आज गुरुजी साक्षात् काकाजी स्वरूप बन गए हैं।** 1967-68 में मैं पत्रिका की सेवा में था। तब मैं भगत था और गुरुजी ने मुझे स्टील का पत्तर दिया था। बीस साल तक मैंने वो पत्तर संभाल कर रखा। एक बार मेरे जन्मदिन पर गुरुजी ने शॅफर पेन दी थी। प्रसादी की वह पेन लेकर मैं काकाजी के पास गया कि आप मुझे आशीर्वाद लिख कर दे दें। काकाजी ने मुझे लिख कर दिया– रात को नियमित प्रार्थना करना और स्वरूपयोग करना। तेरे जीवन में महान विस्फोट हो जाएगा। एक बार योगीबापा को स्नान कराते हुए हमने बापा से कहा–बापा, आप स्वस्थ हो गए हैं। बापा ने कहा–ऐसा नहीं कहना। ऐसा कहोगे तो सब मुझे मंदिरों में ले जाएँगे। मुझे तुम सबके साथ रहना है। तुम खूब बलवान हो जाओ और महंतस्वामी जैसी स्थिति हो जाए, ऐसा बनाना है। हमने बापा से कहा–बापा, ऐसा बना दो न ! तब बापा बोले– मैं जैसा कहता हूँ, वैसा किया करो। मेरे आशीर्वाद से तुम्हारी चेतना पलट जाएगी। योगीजी महाराज के आशीर्वाद से कब चेतना बदल जाती है, वह ख्याल नहीं पड़ता।

...सभामंडप में प्रवेश करते हैं, तो बाहर इसका नाम **'कल्पवृक्ष'** लिखा हुआ है... हरिप्रसादस्वामिजी, अक्षरविहारीस्वामिजी, गुरुजी, साहेब, दिनकर अंकल जैसे **स्वरूप मिले हैं और तब यदि हम मूर्तिसिद्ध नहीं हुए, तो कुछ किया ही नहीं।** लेकिन, हम ऐसा संकल्प करें कि ऐसी लायकता प्राप्त करें। लायकता

प्राप्त करेंगे, तो मौजरूप में अक्षरधाम मिलेगा। गुरुजी मौजरूप सबको अक्षरधाम दें यही प्रार्थना!

पू. स्नेहलस्वामी के माहात्म्यदर्शन के बाद, **सांकरदा** के पू. वजूभाई एवं पू. बिम्पलभाई 180 की रींग्स से बनाया विशिष्ट हार अर्पण करने के लिए प.पू. गुरुजी के पास आए, तो प.पू. गुरुजी ने वह हार भी प.पू. स्वामिजी की प्रसादी का करवा कर पहना। फिर **सांकरदा की बहनों** की ओर से पू. बापुस्वामी और पू. ब्रह्मानंदस्वामी ने विशिष्ट हार एवं मुकुट अर्पण किया और **प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी** ने आशीर्वाद देते हुए कहा–

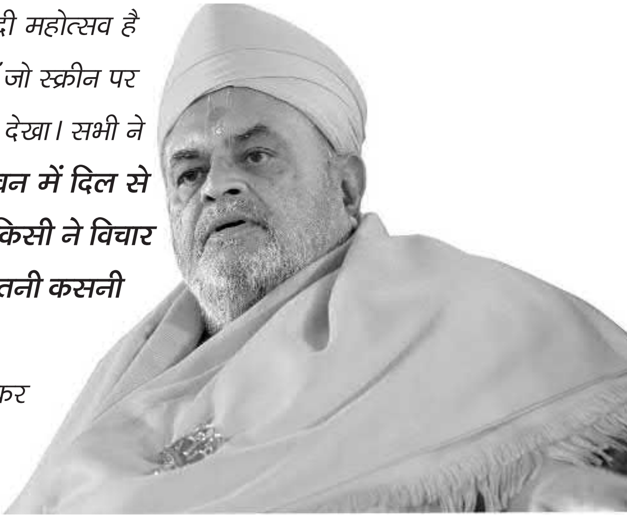

...आज हमें दो अवसरों की उपलब्धि है। बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव है और गुरुजी के जन्मदिन का भी अवसर है, इसलिए यहाँ जो स्क्रीन पर बताया गया था, उसमें हमने गुरुजी के बारे में बहुत कुछ देखा। सभी ने गुरुजी का वर्णन किया। ***गुरुजी ने सब गृहस्थों के जीवन में दिल से खूब काम किया है। पर, मेरा कहना यह है कि क्या किसी ने विचार किया कि इसमें गुरुजी ने कितना कष्ट उठाया है, कितनी कसनी सही है?***

तो, अब हमें यह सोचना है कि हम गुरुजी के लिए क्या कर सकते हैं! तो, जैसे साहेबजी ने अभी बताया कि हम सबको ब्रह्मरूप बनाने के लिए काकाजी-पप्पाजी सबने कसनी सही है; उसी तरह हमें ब्रह्मरूप बनाने के लिए गुरुजी ने भी काम किया है। लेकिन, गुरुजी का ऋण अदा करने की अब हमारी बारी है। गुरुजी ने हमारे घर-कुटुंब को सुखी करने के लिए जो काम किया है, वो सब ठीक है। हम सब आनंद, खुशी में कहते हैं कि हमें बहुत मज़ा - आनंद है, हम बहुत सुखी हैं। पर, हमें उनका संकल्प, प्रार्थना, भजन को सार्थक करने के लिए ब्रह्मरूप होना है। हम सबको ब्रह्मरूप होना है और ब्रह्मरूप होने के लिए हम सब एक रूप होकर ब्रह्मरूप हों; सो हम सब अलग-अलग नहीं हैं। गुरुजी ने सभी कुटुंब के साथ मैत्रीभाव दृढ़ किया, कुटुंबभाव क्रियेट किया। मगर अब हमें उसके आगे जाना है।

...पप्पाजी से (हंसा) दीदी ने एक बार पूछा–आपकी रूचि और रहस्य क्या है? पप्पाजी ने बताया कि जो भगवान भजते हैं, वे जीतेजी अक्षरधाम का सुख प्राप्त करके अपनी साधना पूर्ण करें और समग्र गुणातीत समाज किसी भी तरह एक हो जाए। पप्पाजी और काकाजी का यह संकल्प है। दो दिन पहले मंदिर में सभा थी तब ***गुरुजी ने कहा था–हम सब गुणातीत समाज के सदस्य हैं। हम दिल्ली, सांकरदा, विद्यानगर वाले नहीं हैं; हम किसी के नहीं हैं, हम सब गुणातीत समाज के हैं। हम सब गुणातीत समाज के सदस्य बनेंगे, तो ये ब्रह्मभाव प्रगट होगा, वर्ना ब्रह्मभाव प्रगट नहीं हो सकता।*** *इसलिए हम सबको अभी*

और मंज़िल भी काटनी है। हम यहाँ तक पहुँचे हैं कि सब सुखी हैं, आनंद में हैं, संतुष्ट हैं। लेकिन, फिर भी हमारी यात्रा को अक्षरधाम तक जाना है। जीतेजी अक्षरधाम का सुख प्राप्त करना है, जीतेजी संकल्परहित जीवन जीना है और गुरुजी का ऋण अदा करना है। जैसे काकाजी का ऋण अदा करने के लिए गुरुजी ने काकाजी को स्वयं प्रगट किया और स्वयं काकाजी का स्वरूप बन गए। उसी प्रकार, हम गुरुजी का स्वरूप बन जाएँ, तब उनका ऋण अदा होगा। हमारी ये मंजिल अभी बाकी है। इस मंजिल पर हमें जाना है। हमें ये नहीं बोलना है कि हम गुरुजी के शिष्य हैं। हमें ये बोलना है कि जैसे गुरुजी ने काकाजी को प्रगट किया, वो हमने सीख लिया है। हम काकाजी का परोक्षभाव में पूजन करते हैं, पर हम वो काकाजी को प्रगट कर सकते हैं। हमारे दिल में काकाजी विराजमान हैं, हमें उन्हें प्रगट-प्रत्यक्ष करना है और उस प्रत्यक्षभाव में जाना है। हमें गुरुजी से प्रार्थना नहीं करनी है कि गुरुजी आप करो। हमें स्वयं गुरुजी-काकाजी को प्रगट करना है। आज के दिन योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी और स्वामिजी, साहेबजी, दिनकरभाई यहाँ विराजमान हैं, तो ये दिव्य स्वरूपों के चरणों में यही प्रार्थना करता हूँ। अभी मैं आपके साथ हूँ। मैंने बॅच लगाया तो मैंने गुरुजी से कहा कि मैं दिल्ली का हूँ, सांकरदा का नहीं हूँ। तो, आप सब आशीर्वाद दें कि ***हमारी ये मंजिल, जो हमें नया रोड मिला है उस पर हम चलें और गुरुजी का ये महोत्सव, गुरुजी ने जो हम सबके लिए प्रयत्न किया है, वो हम सफल बनाएँ...*** *सहजानंदस्वामिजी महाराज की जय।*

तत्पश्चात् प.पू. गुरुजी के 80वें प्राकट्य दिन निमित्त पू. डॉ. दिव्यांग एवं मुक्तों ने **'मुस्कुरा कर जो तूने है अपना लिया...'** भजन प्रस्तुत किया और किस प्रकार हरिभक्तों के सुख-दुःख का सहभागी बन कर प.पू. गुरुजी ने हर एक को जो निराले अपनेपन का एहसास करवाया है, वो वीडियो क्लीप द्वारा हरिभक्तों की ज़ुबानी जाना और... **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी** के निम्न आशीर्वाद से प.पू. गुरुजी के 80वें प्राकट्य दिन की विशिष्ट सभा का समापन हुआ –

जैसे-जैसे निष्ठा बढ़ती जाएगी, वैसे-वैसे संबंध बढ़ता जाएगा। *निष्ठा के पाँच वचनामृत हैं।* ***प्रथम 27*** *की पहली लाइन –*

'जिसकी ऐसी समझ है, उसके हृदय में भगवान सर्व प्रकार से विराजमान होते हैं।'

प्रभु ने अद्भुत बात करी कि 'निष्ठा' में वे सर्व प्रकार से निवास करते हैं। काकाजी और पप्पाजी निष्ठा के बल से ही पूरा जीवन जी गए; हम सब ऐसा जीते हो जाएँ उसके लिए वे लगातर प्रयास करते रहे। मैंने काकाजी से एक बार पूछा कि जब तक प्रसंग बनते हैं और भावफेर हो जाता है, तब तक निष्ठा सच्ची ,पक्की या झूठी ? वचनामत प्रथम 27 की पहली लाइन में लिखा है कि जिसके दिल में ऐसी समझ हो, उसके हदय में प्रभु संपूर्ण रूप से निवास करते हैं। ***हम सभी को निष्ठा के बल से ही जंग जीतनी है।*** *वच. प्रथम के 37 और 14 के इल्काब से दासत्व प्रगट हो जाता है।* ***जब तक किसी के प्रति भी फ़र्क़ आ जाता है, तब तक निष्ठा का कोई ठिकाना नहीं है – ये बात पक्की मानना। जैसे-जैसे निष्ठा दृढ़ होती है, वैसे-वैसे निर्दोषबुद्धि***

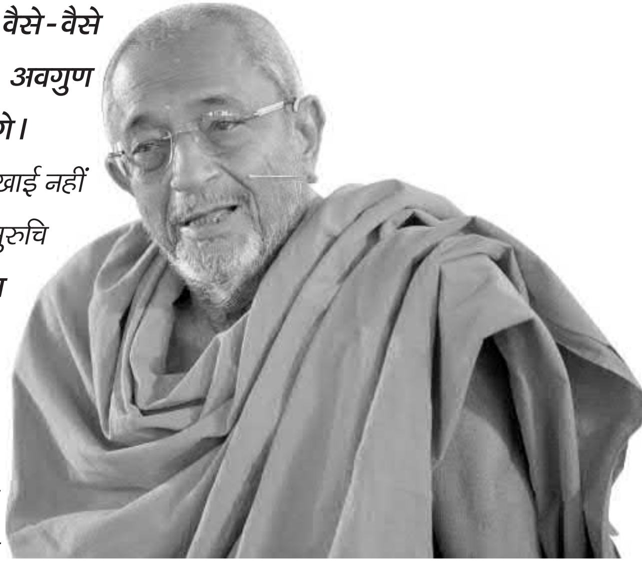

दृढ़ होती है। जैसे-जैसे निर्दोषबुद्धि दृढ़ होती है, वैसे-वैसे सुख, शांति और आनंद के फुव्वारे उड़ते हैं। अभाव, अवगुण का अस्तित्व नहीं रहेगा। निरंतर शुभ विचार प्रगटेंगे।

मैंने बापा से पूछा था – बापा, अंधेरे के सिवा कुछ दिखाई नहीं देता। बापा ने दो बातें कही – हमें किसी भी संजोगों में सुरुचि नहीं छोड़नी है। निष्ठा दृढ़ करते ही जाना। ***जब तक मान में झूलते हैं, दूसरे के प्रति भावफेर करते हैं, तब तक तुम्हारे जीव में निष्ठा नहीं है।*** *हमें लाभ और हानि निकालना है। एक भी बुरा विचार उत्पन्न नहीं हो और अखंड सद्भाव, अखंड शुभ विचार, अखंड आनंद का नाम ही निष्ठा है। महाराज, स्वामी, शास्त्री महाराज, योगी महाराज, काकाजी, पप्पाजी से अंतर की प्रार्थना करें कि ऐसी निष्ठा में हमें जल्दी ले जाओ। ऐसा कौन-सा पाप हो गया है कि अंतर में शुभ विचार रहते ही नहीं, हम टटोलें। हम सभी को जाग्रत बनना है। काकाजी और पप्पाजी की कथावार्ता में सच में निमग्न हो जाना है। निष्ठा के वचनामृत प्र. 27, 37, 62, जेतलपुर 4 और 5 में निमग्न हो जाना है... ब्रह्मानंद निरंतर प्रगटेगा, हमें ऐसी निष्ठा करनी है। हमें हर साल एकत्र होना है और निष्ठा के पाँच वचनामृत की जुगाली करनी है। हमेशा आनंद ही रहें, हमें ऐसी भूमिका में जाना है।* ***दास के दास बन जाएँगे, तो मान का संकल्प हमें नहीं उठेगा।*** *जिसकी निष्ठा पक्की होगी, उसमें मानरूपी राक्षस बिलकुल नहीं होगा।* ***अरुचि या भावफेर होता है, वो मान ही है। किसी की क्रिया नहीं जँचती, मिठास से नहीं बोल पाते वो मान है, ज़ोर से बोल जाते हैं वो भी मान है।*** *अनंत प्रकार के मान हैं...*

दादुकाका की बातें हम गोंडल में सुनते थे... बापा ने आणंद में एक बार मुझसे कहा था – हम गोंडल जा रहे हैं, तुम्हें आना है। मैंने कहा – ठीक है स्वामिजी। मैं बापा के साथ उनकी गाड़ी में गया था, रात को गोंडल पहुँचे। सुबह दादुकाका आए, तब काकाजी का दर्शन किया। काकाजी ने मुझसे पूछा – आपका नाम क्या ? कहाँ से आए हो ? मैंने कहा – आणंद से। मणीकाका के घर आपका दर्शन किया था।

हम स्वामिनारायण के खिलाफ थे, लेकिन कोई पूर्व के संस्कार होंगे कि मैं महंतस्वामी के पिताजी के घर डेढ़-पौने दो साल रहा। मणीकाका के घर रहे नहीं होते, तो निष्ठा पक्की नहीं हुई होती। धीरे-धीरे हेत करते-करते सत्संग की अच्छी शुरुआत करवाई। मणीकाका का स्वभाव मुझे खूब जँचा। वे अपेक्षा और आग्रहरहित बातें करते थे। मैं धीरे से पूछता था और वे धीरे से जवाब देते...

मैंने एक बार मणीकाका से पूछा कि यदि निष्ठा दृढ़ हो, तो घर में झगड़ा होता है क्या ?

उन्होंने कहा – नहीं होता।

मेरा जहाँ घर था, वहाँ आस - पास तीन घर स्वामिनारायण को मानने वाले थे। सुबह-सुबह वहाँ खूब झगड़ा होता है...

गीता मुझे बहुत पसंद थी, सो मैं वह खूब पढ़ता था। कृष्ण मेरा प्रिय पात्र था...

जिसकी ऐसी समझ हो कि भगवान सरल, हितकारी, मंगलकारी हैं उसकी निष्ठा पक्की है। हम सभी को ***निष्ठा पक्की करनी है–***

- *तू दिव्य, तेरे सभी दिव्य*
- *तू हितकारी*
- *तू मंगलकारी*
- *तू कर्ताहर्ता*

भले धीरे-धीरे करो, लेकिन ***निष्ठा के ये चार गुण हमारे जीवन में सिद्ध हों, तो भगवान की मूर्ति सांगोपांग हम में निवास करके रहेगी...*** *जब तक अंधेरा दिखाई देता है, तब तक निष्ठा में कसर है। हमें धीरे-धीरे आगे बढ़ना है, चिंता नहीं करना। हम में सौ प्रतिशत निष्ठा दृढ़ हो, अंधेरा नहीं दिखेगा। लेकिन, यदि निष्ठा पक्की नहीं होगी, तो तुम्हारा एक प्रतिशत भी विकास नहीं होगा। सर्व प्रकार से सुखी नहीं होंगे। हठ, मान और ईर्ष्या जाएँगे नहीं। ढोंग, दंभ, प्रदर्शन, दिखावा जाएगा नहीं...*

किसी का स्वभाव जँचे नहीं, इसका अर्थ कि हमने अभाव तो लिया ही है न ! पर, वह भी भगवान का भजन करता है, हमें उसका देखने का अधिकार नहीं है। ***किसी का देखने, सुनने, बोलने का अधिकार नहीं है...*** *एक बात पक्की रखना कि* ***प्रभु की निष्ठा दृढ़ किए बिना आख़िरी जन्म नहीं होता। जन्म-मरण के रोग निकालने के लिए निष्ठा के सिवा अन्य कोई साधन नहीं है।*** *भगवान की निष्ठा के लिए जीवन जीना है। निष्ठा पक्की होगी, तो किसी का देखने-विचारने का मन नहीं होगा। लेकिन, जब तक तुम अन्यों का देखते हो, विचारते हो और अपेक्षा रखते हो कि फलां को ऐसा-वैसा वर्तना चाहिए, तब तक तुम्हारी निष्ठा पक्की नहीं है... भगवदी का संग करना, पर 'फलां ऐसा' ये सब देखना बंद कर देना। अरुचि किसी के प्रति नहीं रखना, हमें तो पहले अपनी दाढ़ी बुझानी है।* ***ऐसा करोगे तो सात दिन में प्रकाश हो जाएगा...*** *हमें सुखी होना है।*

सभा में किस हेतु आते हैं ?

- *सुखी होने के लिए*
- *हठ, मान, ईर्ष्या निकालने के लिए*
- *चौधराहट ख़तम करने के लिए*
- *घर में सबके साथ संप और सुहृद्भाव से जीने के लिए*
- *सभी के स्वभाव जँचाने के लिए*

✱ अपनी आत्मा का कल्याण करने के लिए

लड्डू खाने के लिए नहीं आते हैं। जाग्रत बनो! पहला नंबर लाने वाला विद्यार्थी अन्य को नहीं देखता... ***आँख, कान, नाक, जीभ भगवान से युक्त रखना।*** *आँख से योग्य देखना, कान से योग्य सुनना, जीभ से योग्य बोलना व खाना... हमें सुखी होना है।*

हे प्रभु! हमें ऐसा बुद्धियोग देना कि माँ जैसे साधु के साथ दोस्ती करके, हम हमारे जीवन को धन्य और कृतार्थ करें। देखना हो, तो साधु को देखना। साधु प्रेम का अवतार है। उसे अरुचि नहीं होगी, अभाव नहीं आएगा और भावफेर नहीं होगा। उसका प्रेम तुम्हारे प्रति कभी कम नहीं होगा। वो तुम्हें देता ही रहेगा... माँ जैसे साधु मस्ट, मस्ट, मस्ट। ***ऑक्सीजन नहीं लोगे तो चलेगा, लेकिन साधु का समागम मस्ट! ऐसे साधु के साथ दोस्ती हो जाए, तो हम में से हठ, मान और ईर्ष्या निकल जाए। काम, क्रोध और लोभ चले जाएँ।*** *शुभ विचार और पवित्र प्रेम प्रगट हो जाए और हमारी यात्रा प्रभु की ओर चलेगी... भगवान की निष्ठा पक्की होगी, तो अन्न-वस्त्र मिलेगा ही, वो भगवान स्वामिनारायण का वरदान है। बस माँ जैसे साधु की गोद में खेलें।* ***साधु बनना कोई आसान बात नहीं है, पूर्व के संस्कार हो तभी बन पाते हैं।*** *उसके लिए लायकता चाहिए... प्रभु हमें बुद्धियोग देना कि माँ जैसे साधु की गोद में बैठ कर हम अपने जीवन को धन्य और कृतार्थ करके सर्व प्रकार से धन्य करें—यही प्रार्थना!*

6 दिसंबर 1967 को साधु के रूप में प.पू. गुरुजी ने दिल्ली में प्रथम बार अपने चरण धरे। इन पचास वर्षों में गुरुहरि काकाजी के बल व प्रेरणा से, प.पू. गुरुजी ने गुरुवर्य योगीजी महाराज के स्वप्न को उत्तरभारत में किस प्रकार मूर्त किया, उसकी मानो झलक निहारने के लिए **24 दिसंबर** की **सायं** सभी दिव्यधाम में एकत्र हुए। सर्वप्रथम सत्संग के युवकों ने प.पू. गुरुजी के गुणों एवं उनके गुरुहरि काकाजी के साथ के संबंध को चरित्रार्थ करते **'सत्संग कुटुंबभाव का करके गुरुजी...'** भजन पर भावनृत्य प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् आशिषवर्षा बरसाते हुए **प.पू. गुरुजी** ने कहा—

...मेरे जन्मदिन निमित्त इतनी सारी बातें हुई। स्वामिजी पहले कहते थे—'सिद्धि बिना की प्रसिद्धि बड़ी खतरनाक है।' मैं सावधान तो हूँ, लेकिन ऐसा कहते हैं कि माया की आँधी में टिकना बड़ा मुश्किल भी हो जाता है। बेशक, मुझे भलीभांति ख्याल है कि ***मेरे जीवन में कुछ भी हुआ है, वो मेरी मरज़ी से नहीं हुआ। बापा, काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी, साहेब—इन पुरुषों ने करवा लिया है।*** *आप सभी जानते हैं कि मुझे अकेलापन कभी भी-तनिक भी बर्दाश्त ही नहीं होता। तो, जैसे कि गुजराती में कहते हैं—'तमारा बधानी हुंफमां' मैं निभ गया।*

जो पुराने जोगी हैं, उनको याद होगा कि भादरण वाले मणिकाका के भाई अंबुभाई का लड़का देवेन्द्र मेरे साथ कॉलेज में पढ़ता था। मुझे बराबर याद है कि 15 दिसंबर 1953 को उसने मुझसे कॉलेज में पूछा—आज हमारे स्वामिनारायण के बड़े महाराज आ रहे हैं, सुंदराबाई हॉल में इनका स्वागत है; तुझे आना है? मैंने

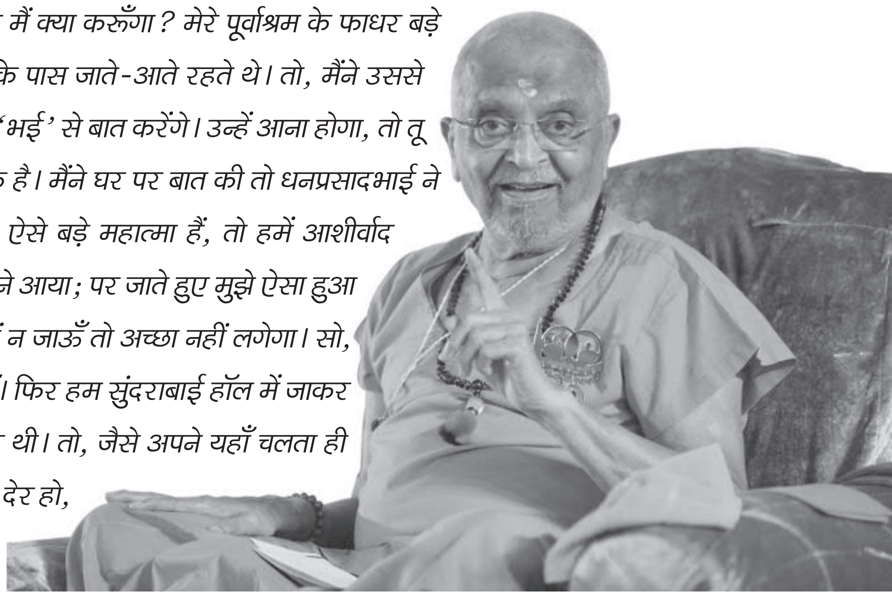

सोचा – ये महात्माओं में जाकर मैं क्या करूँगा ? मेरे पूर्वाश्रम के फाधर बड़े धार्मिक थे। संतों - महात्माओं के पास जाते - आते रहते थे। तो, मैंने उससे कहा – तू शाम को घर आ जा, 'भई' से बात करेंगे। उन्हें आना होगा, तो तू उन्हें ले जाना। उसने कहा ठीक है। मैंने घर पर बात की तो धनप्रसादभाई ने कहा – हाँ, मैं जाऊँगा। अगर ऐसे बड़े महात्मा हैं, तो हमें आशीर्वाद मिल जाएगा। देवेन्द्र घर पर लेने आया; पर जाते हुए मुझे ऐसा हुआ कि फाधर अकेले जाएँ और मैं न जाऊँ तो अच्छा नहीं लगेगा। सो, मैंने कहा – चलो मैं भी आता हूँ। फिर हम सुंदराबाई हॉल में जाकर बैठे। बापा को आने में कुछ देर थी। तो, जैसे अपने यहाँ चलता ही रहता है कि बड़े संत के आने में देर हो, तो अन्यों के थोड़े लाभ वगैरह शुरू कर देते हैं। यूं छगनभाई, हर्षदभाई वगैरह बोले कि इतने में आवाज़ आई – मोटास्वामी आए, मोटास्वामी आए। हम समझे जिनके दर्शन करने के लिए हम आए हैं, लगता है वे आ गए। मोटास्वामी आकर बैठे तो मैंने सोचा – जैसे सब तारीफ़ करते हैं, ऐसा तो इनमें लगता नहीं है। फिर थोड़ी देर के बाद बापा आए। बापा का फेस - ललाट एकदम चमकदार, लाइट मारते उनके फेस ने एकदम हमें खींच लिया। इससे भी ज़्यादा जब काकाजी ने प्रवचन किया, तो हमें काकाजी के बारे कुछ पता भी नहीं था और उस समय काकाजी इतने बड़े स्पीरिच्युअल व्यक्ति हैं, ऐसी सत्संग समाज को भी एक्सपेक्टेशन नहीं होगी। मैंने धनप्रसादभाई से कहा भी कि बापा से ज़्यादा चमकदार इनका ये सेक्रेटरी लगता है। फिर हमें हुआ कि बापा की मूर्ति मिले तो अच्छा है। आशीर्वाद लेने के लिए क्यू में पाँव छूने गए। तब कोई विवेक नहीं था, न ही मेरी और कोई एप्रोच थी, सो हमने सीधा बापा से कहा – बापा, आपकी फोटो चाहिए। बापा ने काकाजी की तरफ उंगली का इशारा करके कहा – इन्हें मिलना, वहाँ से मिल जाएगी। **मानो, वो एक इशारा था कि हमें सत्संग में कहाँ जाना है।** बाकी मेरे नेचर को देखते हुए यदि शुरुआत से मैं काकाजी के कॉन्टेक्ट में नहीं आया होता, तो आज मैं संस्था में ही होता और क्या करता, वो आप सब भी समझ सकते हो। तभी काकाजी के पास जाकर मैंने कहा – योगीबापा ने कहा है कि दादुभाई से फोटो माँगना। उन्होंने कहा – आप ऑफिस पर आना, फोटो ऑफिस में होते हैं। फिर मैं वहाँ गया, तो उस समय काकाजी, हर्षदभाई सब बैठे हुए थे, वे सब धीरे - धीरे चले गए, तब मैंने काकाजी से बात की।

तब काकाजी ने मुझसे सूर्य की बात की थी कि भगवान को तो सब भजते हैं; लेकिन ये सूर्य प्रगट है तो हमें उजाला, प्रकाश, तेज़, ऊर्जा मिलती है। वैसे ही जीवन में भगवान हमें प्रगट और सूर्य समान मिलने

चाहिएँ। बापा की मूर्ति देते हुए काकाजी ने कहा था – बापा ऐसे एक सूर्य हैं और उनके प्रताप से मैं भी सूर्य हूँ। ऐसा पहली मुलाक़ात में ही बोला था। आज मुझे ख्याल आता है कि पूर्व का इनसे ज़रूर कोई संबंध होगा, वर्ना पहले इन्ट्रोडक्शन - मीटिंग में मैं भी सूर्य हूँ ऐसा कहने की कोई हिम्मत नहीं कर सकता। सो, मैं क्या कहता हूँ कि **मुझे जो खींचा है, इस रास्ते पर लिया है, उसमें इन पुरुषों का ही योगदान है।** इन्होंने ही मुझे हर तरीके से संभाला हुआ है। काकाजी के बाद पप्पाजी ने भी संभाला। मुझे दीक्षा लेने जब जाना था, तो पप्पाजी पूर्वाश्रम के घर पर सुबह भोजन करने आए। फिर शाम को स्टेशन छोड़ने जाने की बात की, तो ताराबहन ने कहा कि सवेरे तो गए थे। पप्पाजी बोले– 'मेरा भतीजा जा रहा है, तो मुझे जाना पड़े न!' यूं बा और पप्पाजी स्टेशन छोड़ने आए थे। ये कैसा है कि आज जैसे कि कीर्तन पर डांस किया – सत्संग कुटुंबभाव का करके गुरुजी... ऐसे **कुटुंबभाव के सत्संग में मैं पला-बढ़ा हूँ, इसलिए जो भी आता है – हर एक सत्संगी को मैंने सहज ही यह घुट्टी पिलाई है।**

काकाजी ने एक बार मुझसे कहा – निष्ठा वाले मुक्त तुम्हें मिल जाएँगे। मतलब कि हमें ढूंढने नहीं जाना है। इसका दूसरा मीनिंग ये भी निकलता है कि जो भी आता है वो काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी या ऐसे गुणातीत स्वरूपों द्वारा भेजे हुए मुक्त हैं। बस, **मेरी तो एक ही समझ है कि अपने सत्संग के परिवार का आया है। सो, वो जहाँ जुड़ा हुआ है, उसकी सीमेंटिंग वहाँ और ज़्यादा फिक्सअप कर दें, ताकि जगत में जाकर कहीं फंसेगा नहीं।** वर्ना मन का उतार - चढ़ाव ऐसा होता है कि थोड़ा - सा कुछ इधर-उधर होने पर मन में हो जाए कि अब यहाँ नहीं रहना है।

आज हमारे दिल्ली में भी देखो हर एक आते हैं। मैं इनसे कोई ज़्यादा कथावार्ता नहीं करता, पहले करता था, यह मार्गदर्शिका वगैरह सुनते हैं तो ख्याल पड़ता है। मैंने भी अभी एक प्रवचन सुना, तो मुझे ताज्जुब हुआ कि मैं इतनी - इतनी बातें करता था। आज मुझे बोलना भी होता है, तो मैं सोचता हूँ कि अभी कहाँ बोलेंगे? क्या बोलेंगे? यूं करते-करते आप लोगों ने ही मुझे संभाला है और दरअसल तो मैं संभाला गया नहीं, निभाया गया हूँ। मैंने यहाँ सत्संगियों को निभाया नहीं है, ये मुक्तों ने मुझे निभाया है। मुझे हमेशा उत्साह - उमंग दिया है। आज ये जो फंक्शन भी हुआ है, बोला तो ऐसा ही जाएगा कि गुरुजी ने बहुत अच्छा फंक्शन किया। लेकिन, हक़ीक़त ऐसी नहीं है, जो कुछ भी हुआ है वो यहाँ के समाज ने और इससे भी ज़्यादा इस फंक्शन का मुझे आनंद ये है कि **सारे गुणातीत समाज ने इस फंक्शन को उठा लिया है।** तब काकाजी का एक सेन्टेंस याद आता है –

ये सब अकेले हाथ नहीं हुआ। ये दिल्ली वालों ने ही किया है ऐसा भी नहीं है, मैंने ही किया है ऐसा भी नहीं है, हम सबने मिलकर किया है। आज सांकरदा से पूरी टीम तकरीबन एक महीने से यहाँ लगी रही है। इससे तो, मेरी हिम्मत बनी रहती थी। मुंबई से जो भरतभाई वगैरह सारी टीम आई। बीच में वशी आ करके ख़ास देख कर गए कि कुछ कमी हो तो देखें - करें। साहेब बीच में एक बार खुद आए थे। तब भी

देख कर गए थे और कहा था कोई कामकाज हो तो कहना। हरिधाम से प्रेमस्वामी वगैरह के मॅसेज आते रहते थे। ये चीज़ें बताती हैं कि ***सभी ने मिलकर जो काम किया उसकी आज मिठास और सुवास हमें महसूस होती है।*** *दूसरी ओर – जिन-जिन सेवकों ने काम किया है, ओहो-ओहो ! मैं कल्पना भी नहीं कर सकता, जी-जान लगा कर, कमरतोड़ काम किया हुआ है। आपने गेट का उद्‌घाटन देखा, दो दिन से हमारा शैलेष सोया नहीं था। उद्‌घाटन के समय भी गेट के ऊपर कुछ काम चल ही रहा था। इसी तरह हर एक चीज़ – मूर्तिप्रतिष्ठा के समय पर भी देखो, तो आख़िर तक उसकी पेंटिंग चलती रही। सबने मिल कर काम किया है, तो आज हर चीज़ में सरसता प्रगटी है।* ***हम इस बात को समझें कि हम अकेले जितनी भी सेवा करेंगे वो खुद को अच्छी ज़रूर लगेगी, पर 'सरस छे-सरस छे' – ये भावना सब में तभी प्रगटेगी जब मिलजुल कर करी होगी।*** *इस उत्सव में एक मर्म यह है कि सबने मिल कर किया; तो हरेक को अपनेपन की खुशबू मिली है, भावना प्रगटी है। आप सभी जानते हैं कि हमारी ऐसी औकात ही नहीं है कि इतना बड़ा उत्सव हम कर सकें। पर, मिल-जुलकर या दूसरों की सपोर्ट से जो भी करना तै किया, तो इसमें एक अपनापन प्रगटा।* ***आज यहाँ जो भी आए होंगे, वे लौट कर ये नहीं कहेंगे कि हम दिल्ली के उत्सव में गये थे, ये ज़रूर कहेंगे कि हम हमारे उत्सव में गए थे।*** *हर एक के मन में से ये उद्‌गार आएगा ही आएगा। आज यहाँ स्वामिजी, साहेबजी बैठे हैं, तो बस हमारी ये रीति और नीति बरकरार रहे, ऐसा आशीर्वाद सबको देकर जाएँ कि* ***ये मति बदले नहीं कि हम सब एक-दूसरे से जुड़े हुए एक परिवार हैं, इनके बिना हम अकेले-अधूरे हैं।*** *पूर्णता इसी में प्राप्त होती है। सहजानंदस्वामी महाराज की जय।*

प.पू. गुरुजी द्वारा आशिष प्राप्त करने के बाद, डेढ़ दिन से जिसका ट्रेलर देख कर सभी मुक्त खूब उत्सुक हो रहे थे, वह डॉक्यूड्रामा **'प्रत्यक्ष की पराभक्ति का पंचम पुरुषार्थ'** स्क्रीन पर सायं करीब साढ़े छः बजे शुरू हुआ। इस वर्ष प.पू. गुरुजी को दिल्ली आए हुए पचास वर्ष पूर्ण हुए। सो, इसमें गुरुवर्य योगीजी महाराज के वरद् हस्त दीक्षा लेकर साधु बनने के बाद से–

प.पू. गुरुजी का अब तक का जीवन, उनका स्वरूपों के साथ का संबंध

और

गुरुहरि काकाजी से प्राप्त गुणातीतज्ञान के अनुरूप अनुपम गुरुभक्ति करके,

उन्होंने जो आदर्श स्थापित किया है, उसे दर्शाने का अल्प प्रयास किया है।

सच, ऐसी दिव्य विभूतियों के अलौकिक क्रियाकलाप की तो कोई सीमा ही नहीं है; पर तकरीबन साढ़े चार घंटे की फुटेज में उसे समाविष्ट किया। फिर भी, डॉक्यूड्रामा शुरुआत से ही दर्शकों के लिए इतना रोमांचक बना था कि किसी को समय का ख्याल ही नहीं पड़ा। **प.पू. शांतिभाई साहेब** ने तो प.पू. गुरुजी से कहा भी कि साढ़े चार घंटे कहाँ पास हो गए पता ही नहीं चला। रात को ग्यारह बजे प्रसाद लेकर सभी अपने ठहरने के स्थान पर गए।

25 दिसंबर – क्रिसमस की **सुबह** गुरुहरि काकाजी - पप्पाजी की शताब्दी मनाने की शुभ घड़ी आई। 'विन्टेज कार' में विराजमान स्वरूपों का आज 'मिल्ट्री बैंड' से स्वागत किया गया। मिल्ट्री की जोशीली धुन बजाते लाल पगड़ी बाँधे सिक्ख, सभी के भीतर एक अनोखा उत्साह उत्पन्न कर रहे थे। स्वरूपों के मंचस्थ होने के बाद, सर्वप्रथम प.पू. काकाजी से जुड़े जगराँव के पुराने जोगी प.भ. झाँझी साहेब के छः - सात वर्षीय धेवते **देव** ने **'काका मेरा काम करोगे, क्या लोगे...'** भजन प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् पू. राकेशभाई ने स्क्रीन पर दिख रहे संतरे और उसकी फाँकों के रूप में आज की थीम का निम्न सत्य उजागर कराया –

संतरा देख कर, सभी को अचरज होगा कि भला इसका क्या अर्थ ? परंतु, यह संतरा एक मर्म प्रगट करता है।

*एक **आर्षदृष्टा विभूति** ने कह दिया था –*

गुणातीत समाज यानि क्या ? एक संतरे की फाँकों के समान है और उसका कवर (यानि छिलका) दादुभाई हैं।

जब तक दादुभाई हैं, तब तक वे जुड़े रहेंगे।

प.पू. गुरुजी भी अकसर दोहराते हैं कि –

जैसे बॅप्स के संस्थापक ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज एवं ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज हैं,

उसी प्रकार गुणातीत समाज के आद्य सर्जक गुरुहरि काकाजी - पप्पाजी हैं।

इन्हीं के कारण आज सभी लौकिक - पारलौकिक रौनक दिखाई देती है

और

यदि इन्हें गौण कर दिया, तो हमारी भक्ति में कूवत नहीं आएगी।

इसलिए इस बंधुजोड़ी शताब्दी शिविर का सूत्र भी प.पू. गुरुजी ने यही दिया –

'गुणातीत समाज की एकता और अखंडता हमारा मंत्र है...'

और इस हेतु – हम गुरुहरि काकाजी - पप्पाजी को कभी गौण न करें – न भूलें !

तदोपरांत **प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामिजी** ने आशीर्वाद दिया –

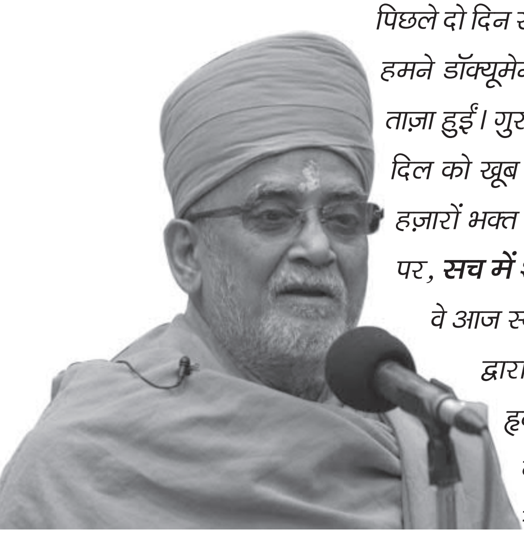

*पिछले दो दिन से मुक्तों ने हम सब को निरंतर ब्रह्मानंद में सराबोर कर दिया। कल रात हमने डॉक्यूमेन्ट्री का दर्शन किया, सच में खूब आनंद हुआ, सारी पुरानी स्मृतियाँ ताज़ा हुईं। गुरुजी का उस वक्त किया हुआ दर्शन और गुरुजी का आज का दर्शन... दिल को खूब खुशी होती है। काकाजी-पप्पाजी की शताब्दी भव्य तरीके से मनाएँ, हज़ारों भक्त एकत्र हों, बढ़िया प्रोग्राम करें, यह तो करना ही है - हमारी भक्ति है। पर, **सच में शताब्दी मनाई तब कही जाए, जब उनके हृदय में ठंडक हो जाए।** वे आज स्वामिजी, साहेबजी, अक्षरविहारीस्वामिजी, दिनकरभाई, गुरुजी जैसों द्वारा प्रगट हैं। सो, ये सारे स्वरुप - गुणातीत पुरुष जो मिले हैं, उन सब के हृदय में हम ठंडक करवा सकें, वही सच्ची शताब्दी मनाई कही जाए, वर्ना तो काकाजी के शब्दों में नौटंकी करी। बाकी, आज तो स्वामिजी, साहेबजी, अक्षरविहारीस्वामिजी और सारे गुणातीत स्वरुपों से आशीर्वाद*

लेने का दिन है। अब तक हमने अपने ढंग से बहुत कुछ किया, पर अब हमारी जीवनशैली ऐसी हो जाए, जैसी आपने माहात्म्य, दासत्व, रंकभाव, सुहृद्भाव की ग्रहण की है। ऐसा बुद्धियोग हमें भी मिले, ऐसा हम सब का जीवन सहज बने, ऐसी आज कृपा बरसाना – यह उनके चरणों में पहली प्रार्थना है।

बाकी तो जैसे स्वामिजी कहते हैं कि गुणातीत पुरुष का वर्णन नहीं कर सकते, सच में संभव ही नहीं। स्वामिजी कहते ही हैं कि हम बापा के दर्शन करते, तब सोचते थे कि ये चरणारविंद धरती पर आ ही नहीं सकते। कितनी अद्भुत बात है और उन चरणारविंद के - उन पुरुषों के दर्शन होते हैं और वही दर्शन स्टेज पर हो रहे हैं, उसमें रत्तीभर भी फ़र्क़ नहीं है। ऐसी सोच से चौबीसों घंटे - हर पल स्वामिजी, साहेबजी, अक्षरविहारीस्वामिजी और गुरुजी जी रहे हैं। ये सभी भगवान के सुख से सुखी हैं। हम यहाँ बैठ कर उनकी वाह - वाह करें, इससे उन्हें प्राप्त नहीं कर पाएँगे। परंतु , एक बात बहुत पक्की है कि वे 'जी हज़ूरी' स्वीकार करेंगे। वह 'जी हज़ूरी' यानि – हृदय से ऐसी प्रार्थना हो जाए कि ये दर्शन धरती पर प्राप्त नहीं हो सकते।

साहेबजी के लिए योगीबापा ऐसा कहते थे – जसुभाई , आप हमारे भागीदार हो।

हम कितने भाग्यशाली हैं यह बात सोचें।

काकाजी - पप्पाजी से बापा ने कहा था – आप दोनों मिलकर जो भी करो, उसमें मैं आ गया।

अहोहो ! हमारे जीवन में कितनी बड़ी बात हो गई।

बापा को स्वामिजी से कहना पड़ा – प्रभुदासभाई, मेरे पास जो भी कुछ था, सब आपको दे दिया। अब मेरे पास आपको देने के लिए कुछ भी नहीं है।

हमारा कितना बड़ा अहोभाग्य है कि इन पुरुषों की हमें प्राप्ति हो गई। बस अब तो उनकी स्मृति में रहकर आनंद किया करना है और वह आनंद यानि संबंध से जीने की बात है।

*भगवान स्वामिनारायण का धरती पर अवतरण **सुहृद्धर्म** का स्थापन करने हेतु हुआ, निष्काम धर्म, निर्मानी धर्म का स्थापन करने हेतु हुआ। वो निष्काम धर्म, निर्मानी धर्म यानि सुहृद्धर्म ! **बापा के समय में उसकी शुरुआत काकाजी - पप्पाजी ने करी।** हमारा कितना बड़ा सौभाग्य ! सालों पहले लोग संतों के लिए कहते थे कि ये बेचारे... पर उन्हें ख्याल नहीं था कि (काकाजी - पप्पाजी ने) हम सब को सच्ची गोद में बिठा दिया था। **स्वामिजी हमेशा कहते हैं कि ताड़देव यानि आत्मीयता की गंगोत्री, जहाँ से समाज की शुरुआत हुई।** भगवान स्वामिनारायण ने वच. अंत्य 7 और 11 में मूर्ति के सुख और निर्विकल्प समाधि की जो बात स्पष्ट की, वह हमारा पूरा समाज प्राप्त कर सके, उसकी शुरुआत काकाजी - पप्पाजी ने ताड़देव से करी।*

*वही काकाजी - पप्पाजी इन गुणातीत पुरुषों के द्वारा धरती पर अखंड हैं; बस उनकी मरज़ी में वरतें, वही साधन, धर्म, ज्ञान, वैराग्य और भक्ति है। उनका संबंध देख कर जीवन जीना है... **काकाजी 'हरा अनुग्रह' की बहुत बात करते, उनकी मूर्ति खूब मनमोहक थी, खूब पसंद आती। उनका प्रेम, उनका वचन, उनकी गोद कभी भूल से भी भूला नहीं सकेंगे। पर , हमें अपने ढंग - अपनी रीति से जीने की आदत है ; तो आप हम सब को बुद्धियोग दें – ऐसा हरा अनुग्रह करें ताकि बस संबंध देख कर जीते हो जाएँ, सहज दासभाव से जी पाएँ।** काकाजी - पप्पाजी कैसे संबंध देख कर जिए ! अगर वे ऐसा न जिए होते, तो*

पप्पाजी ऐसा कभी न कहते कि भगवान के भगत की जूठी थाली यदि धोने को मिल जाए, तो मैं दस रुपये दूँगा। यह बात कौन कह सकता है ? यह बात सामान्य - सी लगती है, लेकिन सामान्य नहीं है। ***ये पुरुष संबंध की महिमा में कैसे डूबे हुए होंगे ! उन्होंने ऐसा जीकर बताया है, केवल कथाएँ नहीं की।***

आज मंगलकारी शुभ दिन है कि दोनों पुरुषों का अवतरण हुआ, बापा उन्हें धरती पर लेकर आए। ***स्वामिजी तो ऐसा भी कहते हैं कि बापा यदि काकाजी को धरती पर न लाए होते, तो योगीजी महाराज की पहचान शायद अधूरी रहती।*** *हम कितने भाग्यशाली हैं कि बड़े पुरुषों की हमें गोद मिल गई। इन बड़े पुरुषों ने हमें संभाला, निभाया, हमारी आदतें उन्होंने जँचाई। अब हमारी बारी है कि उनके सबंध वालों की हर चीज़ जँचाएं, उनके संबंध वालों की सेवा उनके भाव से करना हमारा फर्ज़ - भक्ति है। उनके संबंध वालों के समक्ष मैं कुछ नहीं, अति तुच्छ हूँ– ऐसा मान कर जीने का समय है। हे स्वामिजी ! हे साहेबजी ! हे गुणातीत पुरुष ! त्रुटियाँ हमारी हैं, आप हमें बल नहीं देंगे ? हमें अब ऐसा ही जीना है, ऐसी दृढ़ता की है और करनी है। पर, हमारी यह दृढ़ता हमेशा बनी रहे और सहजता से हम आपकी मरज़ी - अनुवृत्ति के अनुसार जीते रहें। आप ही करवाना, आप ही हमारे जीवन में उपायभूत होना – ऐसा आप ही कर देना, ऐसी आपके श्री चरणों में प्रार्थना के साथ जय स्वामिनारायण !*

जैसे कि 23 दिसंबर की सुबह गुरुवर्य योगीजी महाराज की 125वीं जन्मजयंती का आयोजन था। परंतु, उस दिन समय के अभाव के कारण, सत्संग के युवक रास द्वारा वात्सल्यमूर्ति गुरुवर्य योगीजी महाराज के प्रति भक्ति अदा करने से वंचित रह गए थे। सो, गुरुवर्य योगीजी महाराज के आध्यात्मिक वारिसदारों की इस शताब्दी सभा में युवकों ने **'बापा के निस्वार्थ प्रेम ने...'** भजन पर रास प्रस्तुत किया।

यद्यपि गुरुहरि काकाजी को स्थूल देह त्याग किए 32 वर्ष हो गए, लेकिन संपर्क में आते नए मुक्तों को भी एहसास होता है कि गुरुहरि काकाजी आज भी - अब भी पल - पल उनके साथ हैं। अतः शताब्दी निमित्त स्क्रीन द्वारा मुक्तों ने गुरुहरि काकाजी की प्रत्यक्ष हाज़िरी के अनुभवों की श्रृंखला का लाभ लिया।

और...

गुणातीत ज्योत – प.पू. ज्योति बहन से जुड़े नन्हे सेवक **पू. नील गज्जर** ने **'तारी एक-एक पळ जाए लाखनी...'** भजन से अपना भाव प्रकट किया।

पू. ओ.पी. अग्रवालजी दो - तीन साल पहले ट्रेन से मुंबई से दिल्ली आ रहे थे, तब उन्हें एक परिवार मिला था जिनके बेटे **पू. शिवम्** ने छोटी - सी आयु से ही गाना शुरू किया और सिंगिंग की कई प्रतियोगिताओं में अच्छी श्रेणी हासिल की है। पूर्व का ही कोई संबंध होगा कि शताब्दी के भजनों की रिकॉर्डिंग में उसने एक भजन सेवारूप गाया। वह अपने माता - पिता के संग इस उत्सव में स्वरूपों का आशीर्वाद लेने के लिए आया था। सो, उसने **'स्पीडी प्रगति के लिए संत लाभदायक है...'** और **'उत्सव अनेरो आंगणे छायो...'** भजन प्रस्तुत किया।

गुणातीत प्रकाश के **पू. इलेशभाई** ने **'धन्य-धन्य आवा संतने...'** भजन गाकर भक्ति अदा की।

'मैत्रीमिलन महोत्सव – 2010' में पवई के भाइयों ने गुरुहरि काकाजी - पप्पाजी की शताब्दी का बिगुल बजाया था, तब प.पू. गुरुजी ने चाँदी का नोट प्रकाशित करवाया था। सो, सात साल पहले की अद्भुत स्मृति

को जाग्रत करते हुए, अबकी बार प.पू. गुरुजी ने गुरुहरि काकाजी - पप्पाजी शताब्दी शिविर के स्मृति चिन्ह के रूप में सौ रूपये का चाँदी का नोट तैयार करवाया। इस पर गुरुहरि काकाजी - पप्पाजी की मूर्ति के संग उनका प्राकट्य दिनाँक और ब्रह्मसूत्र अंकित हैं। **प.पू. दिनकर अंकल** ने इसका अनावरण करके आशिष वर्षा की–

...25 दिसंबर, आज क्रिसमस का भी दिन है और साथ में तीसरे दिन की शिविर भी; जो आज शाम को पूरी होगी। ***तीन दिन से आत्मा को बहुत - बहुत आनंद मिल रहा है। उसे हम अखंड कायम ही बनाएँ, ये गुणातीत स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना।***

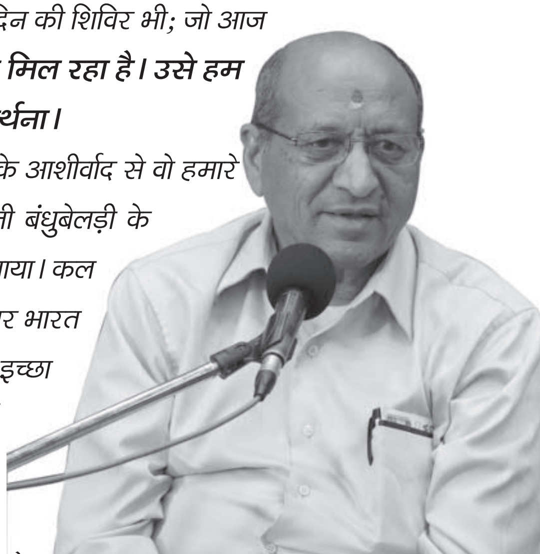

कल स्वामिजी ने निष्ठा के 5 वनचामृत हमें बताए। स्वामिजी के आशीर्वाद से वो हमारे अंदर बैठ जाएँ - पक्के हो जाएँ, सिद्ध हो जाएँ। काकाजी-पप्पाजी बंधुबेलड़ी के उत्सव में पहले दिन योगीजी महाराज के प्रागट्य पर्व का उत्सव मनाया। कल गुरुजी के प्रागट्य पर्व का उत्सव मनाया। गुरुजी के गुजरात से उत्तर भारत में आए पचास साल हुए। योगीजी महाराज - काकाजी का जो भाव, इच्छा या संकल्प था, वो गुरुजी ने सचमुच पूरा किया। उसका भी हमें बहुत सुंदर दर्शन हुआ। दो दिन के बाद 27 दिसंबर को हमारे प्रेमस्वरूपस्वामिजी का भी प्रागट्य दिन आएगा। उनके चरणों में भी प्रार्थना करते हैं कि आपके जैसी भक्ति, सेवा, समझदारी आए और आप व कोठारीस्वामी जैसे एक ही हैं – ऐसी समझदारी हमारे दिल में दृढ़ हो जाए। स्वामिजी, काकाजी, पप्पाजी, सभी गुणातीत स्वरूप हमें गुणातीतानंदस्वामिजी के पहले प्रकरण की पहली बात व पहले प्रकरण की 343वीं आख़िरी बात की बहुत महिमा कहते हैं। शिकागो में स्वामिजी ने फोन पर वही आशीर्वाद दिए थे कि पहला प्रकरण की पहली और पहला प्रकरण की आख़िरी बात ही हमारा आशीर्वाद है।

...आप अपूर्णता न मानना कि भगवान नहीं मिले हैं और भगवान मिलते तो कितना अच्छा होता। वे कहते हैं कि वर्तमान समय में भगवान मौज़ूद ही हैं। गुणातीतानंदस्वामी कहते हैं कि जूनागढ़ में मैं बैठा हूँ; तब गुणातीतानंदस्वामी ने ये बात पक्की करवाई थी और आज वही बात हम यहाँ दृढ़ कर रहे हैं। आज ***जो हरिभक्तों ने ऐसे गुण गाए कि काकाजी का हमने दर्शन नहीं किया, लेकिन वही काकाजी गुरुजी के अंदर हमें दर्शन दे रहे हैं, ये बात पक्की करनी है। जब तक ये बात पक्की नहीं होगी, तब तक अंदर आनंद भी इतना ही कम आएगा।*** *शायद ये बात हमारे लिए न भी हो, क्योंकि आज हम सब भाग्यशाली हैं कि हम तो यह करके बैठे हैं। पर इस भाव से जो नहीं कर सकते हैं, उनके लिए प्रार्थना करें।*

...स्वामी की यह बात हमारी प्रेक्टिकल लाइफ में देखेंगे, तो जैसे गाड़ी के अंदर पैडल होता है। उस पैडल पर पैर लगाएँगे तो गाड़ी भागेगी। ऐसी बात हमारी आध्यात्मिक गाड़ी के पैडल (महिमा) की है। इस बात से हम हमारी स्पीड व प्रगति बढ़ा सकते हैं। अक्षरधाम में हमारे जाने का संकल्प जल्दी पूरा कर सकते हैं। स्वामी की बात का रहस्य यह है कि ऐसी 'महिमा' होगी, तभी हमारे अंदर वो शक्ति - पावर आएगी। रक्षाबंधन के दिन काकाजी भी बार-बार कहते – हमारी रक्षा किस प्रकार की होगी? जैसे अर्जुन के पुत्र की रक्षा करने के

लिए कुंती माता ने रक्षा बाँधी थी, वो रक्षा नहीं। काकाजी कहते – हमारी महिमा की कसर से रक्षा हो। गुणातीत स्वरूपों के प्रति जितनी महिमा होनी चाहिए, उतनी महिमा की कसर हो तो उससे रक्षा हो। जितनी महिमा समझेंगे तो पहले प्रकरण की पहली बात सिद्ध हो जाएगी। इस हेतु स्वामिजी सचेत करते हैं कि कथा, कीर्तन बातें कितनी करें, लेकिन मैं आत्मारूप हूँ, यूं मान कर न करें तो कोई फ़ायदा नहीं है। अतः आठ प्रहर भजन करना चाहिए। मैं देह नहीं, देह में रहते हुए भी मैं आत्मा हूँ, ब्रह्म हूँ, अक्षर हूँ और मुझ में परमात्मा परब्रह्म पुरुषोत्तम प्रगट रूप से अखंड रहे हैं। वे कैसे हैं ? सर्व अवतारों के अवतारी और सर्व कारण के कारण हैं तथा सबसे परे हैं। वे जो मुझे प्रगट मिले हैं, उनमें सांख्य और योग दोनों आ जाते हैं।

स्वामी की सारी बातें सांख्य का पूरा समुद्र हैं और उन बातों से भगवान के साथ जुड़ने का योग पूरा हो जाता है। तो, स्वामी की पहले प्रकरण की 343वीं बात गाड़ी की 'ब्रेक' की तरह है। गाड़ी में यदि ब्रेक नहीं होगी, तो हमारी गाड़ी कहीं गिर जाएगी या टकरा जाएगी। यदि ब्रेक होगी तो गाड़ी पर हमारा पूरा कंट्रोल रहेगा। यह बात हमारे सत्संग में भी बहुत इम्पॉर्टंट है और गुणातीतानंदस्वामी ने आशीर्वाद दे दिया है कि उसमें सांख्य और योग दोनों आ गए। जो करना है, जहाँ जुड़ना है और जहाँ से दूर भागना है, वो दोनों आ गए। हम कथावार्ता-कीर्तन करें, नृत्य का प्रोग्राम करें या यहाँ बैठ कर जो कथा सुन रहे हैं या कर रहे हैं – भले करें, लेकिन इसमें यदि प्रभु की - गुणातीत स्वरूपों की स्मृति नहीं होगी, तो वो काम की नहीं है। आज सुबह हम नाश्ता कर रहे थे तब गुरुजी ने एक बहुत अच्छी बात बताई कि काकाजी कई बार कांतिभाई देसाई से कहते थे कि टेबल पर रुमाल पड़ा है; तुम यदि रुमाल उठाओगे नहीं, तो भी मैं तुम्हें डाटूंगा और अगर रुमाल उठाओगे तो भी डाटूँगा। डाँट तो खानी ही है। तो फिर क्या करें ? ***गुरुजी बता रहे थे कि उसका मर्म यह था कि आपको यदि रुमाल उठाना है, तो प्रभु की स्मृति करके उठाओ और रुमाल उधर ही रखे रहने देना है, तो भी प्रभु की स्मृति करके रहने दो।*** *प्रभु की स्मृति करके करेंगे, तो ये गुणातीत स्वरूप राज़ी होंगे, उनका यही अभिप्राय है।*

जैसे हमारे अंदर श्वास अखंड चलता है, तो हमें थोड़ा भी पता चलता है कि श्वास लेते हैं या नहीं। ***हार्टबीट चलती है,*** *वो भी* ***नॅचरल*** *है।* ***ऐसे ही स्वामिनारायण धुन-भजन भी नॅचरल हो जाए*** *– ऐसी संतों-गुरुचरणों में प्रार्थना है। आज के दिन गुरुजी के आशीर्वाद मिलें वही हमारा भाव है। जय स्वामिनारायण।*

'बंधुजोड़ी शताब्दी' के निमित्त गुणातीत समाज केन्द्रों के मुक्तों ने **गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी की मूर्ति को हार अर्पण** करके अपनी भावना व्यक्त की। **प.पू. अश्विनभाई** एवं **प.पू. शांतिभाई** के नज़दीक आ रहे **अमृतपर्व** के निमित्त पू. अभिषेक व पू. विश्वास ने सभी की ओर से **हार एवं शाल अर्पण** किया और... तभी **संतभगवंत प.पू. साहेबजी** एवं **प.पू. गुरुजी** ने **'गुणातीत समाज का ध्वज'** एवं **'हमारे राष्ट्र ध्वज'** वाले शताब्दी के विशिष्ट मोमेन्टो का अनावरण करके, सर्वप्रथम प.पू. अश्विनभाई और प.पू शांतिभाई को दिया। **प.पू. गुरुजी** ने इस स्मृति चिन्ह की महत्ता बताई –

यह 'गुणातीत समाज' का मोमन्टो है; न कि दिल्ली के फंक्शन का है। इसी लिए इसमें किसी विभूति स्वरूप की, किसी के सिग्नेचर या मूर्ति नहीं रखी है। जिस देश को भगवान स्वामिनारायण ने पसंद किया और धरती

'प्रत्यक्ष की पराभक्ति का पंचम पुरुषार्थ' डॉक्यु ड्रामा दर्शन...

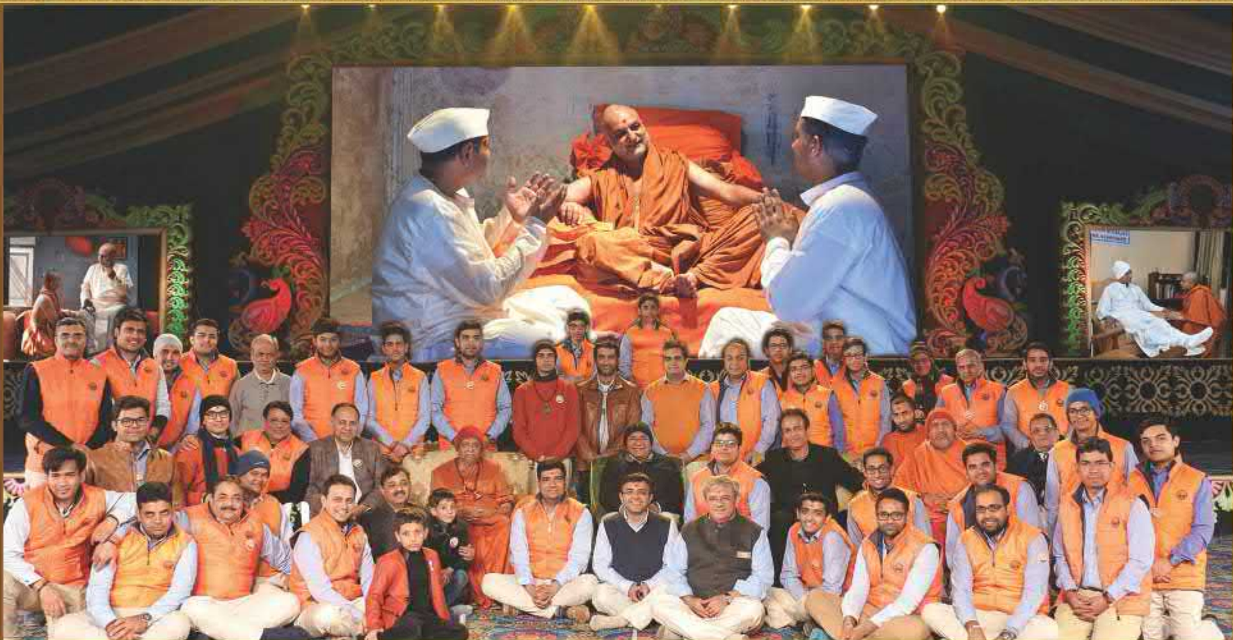

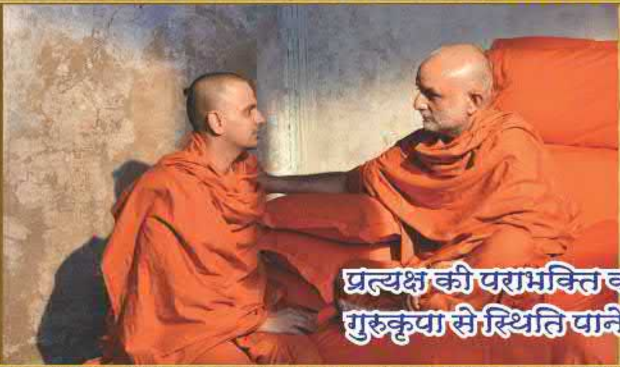

प्रत्यक्ष की पराभक्ति का पुरुषार्थ है ये पंचम,
गुरुकृपा से स्थिति पाने का मार्ग ये सर्वोत्तम...

पा लें दया हम ऐसे संत की, करके समागम...

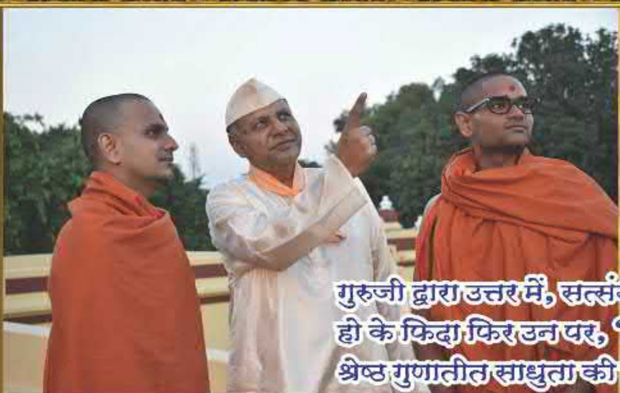

गुरुजी द्वारा उत्तर में, सत्संग काका ने फैलाया,
हो के फिदा फिर उन पर, 'हरा अनुग्रह' बरसाया,
श्रेष्ठ गुणातीत साधुता की स्थिति बख़्शिश दी परम...

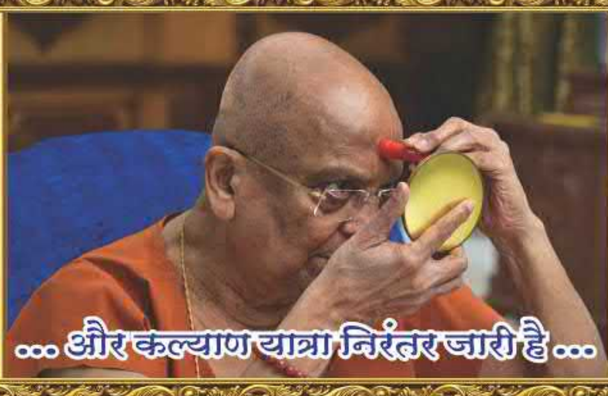

... और कल्याण यात्रा निरंतर जारी है ...

आर्षदृष्टा विभूति ने कह दिया था–
गुणातीत समाज यानि क्या? एक संतरे की फाँकों के समान है और उसका कवर (यानि छिलका) दादुभाई हैं। जब तक दादुभाई हैं, तब तक वे जुड़े रहेंगे...
गुणातीत समाज के आद्य सर्जक गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी हैं।
यदि इन्हें गौण कर दिया, तो हमारी भक्ति में कूवत नहीं आएगी।

इस ध्वजा को रखने से हमारे जीवन के हर क्षेत्र में हमारी विजय पताका फहरती रहेगी– ऐसे आशीर्वाद साहेब सबको दें...

– प.पू. गुरुजी

सच में शताब्दी मनाई तब कही जाए, जब काकाजी-पप्पाजी के हृदय में ठंडक हो जाए... वर्ना तो काकाजी के शब्दों में नौटंकी करी।

– प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामिजी

हार्टबीट चलती है, वो भी नॅचरल है।
ऐसे ही स्वामिनारायण धुन-भजन भी नॅचरल हो जाए...

–प.पू. दिनकर अंकल

'स्पीडी प्रगति के लिए संत लाभदायक है...'

आई, कभी ना आएगी, ये पल जो आज आई है, शताब्दी काकाजी की है, शताब्दी पप्पाजी की भी...

पप्पाजी-काकाजी और यहाँ विराजमान सब स्वरूप हमें एक ऐसी दिशा में ले जा रहे हैं, जहाँ सुख ही सुख है।

– प.भ. दिलीपभाई भोजाणी

'भारत सरकार' ने इतिहास में पहली बार 200 रूपये का नोट जारी किया... उससे बना 'संयुक्त शताब्दी' का विशिष्ट हार...

रब जीतेजी जिनसे हैं पाए...
ऋण कैसे हम उनका चुकाएं...
आओ मिल के महिमा गाएँ, काका-पप्पा की,
ओ मिल के शताब्दी मनाएँ, काका-पप्पा की...

गुणातीत कुटुंब के सारे हम हैं एक,
ये संकल्प, जीवन में प्रगटाएँ,
तभी हम सच्ची शताब्दी मनाएँ, काका-पप्पा की...

शताब्दी मिल के मनाएँ, सभी स्वरूपों की;
योगी कुनबा मनाए, शताब्दी स्वरूपों की
निश्रा में उनकी मनाएँ, शताब्दी स्वरूपों की...

जीवन में अपने वो उतारें, ब्रह्मसूत्र जो दिए, काका और पप्पा ने
राजमार्ग है बताया, काका-पप्पा ने...

प्रत्यक्ष की मूर्ति दिल में बिराजे, आपके ही सुर पर मेरा तंत्र नाचे,
एकता से जी पाएं, मन का जग छूट जाए, संग मूर्ति रहे, जुड़ा तुमसे रहूँ
सजदा....

25 दिसंबर 2017, सायं

दृष्टा-सृष्टा हैं, गुणातीत समाज के वे, यशगान आज करें...

आज्ञा से योगीजी की, चुनाव प्रचार कराया,
बल प्रभु का ही लेकर, नंदाजी को जितवाया...

गढपुर मंदिर की अद्भुत सेवा काकाजी ने की
शास्त्रीजी ने स्मृति उन्हें चंदन आलिंगन की दी...

विमुखनारायण की जय, मुक्ताक्षर पुरुषोत्तम की जय,
दिव्यबंधु जोड़ी ने देखो किया अनुपम काज,
दोनों ने रच दिया, धरती पर गुणातीत समाज...

योगी ही मेरा आतम है, मैं केवल उनका प्रकाश,
ऐसी दृढ़ प्रतीति हो गई पप्पाजी को ख़ास...

प्रसाद वेढ़मी का योगीजी, स्वहस्त पप्पाजी को खिलाएँ,
पप्पाजी को लगा योगीजी दिल में आन समाए...

कोई कहे कुछ इससे पहले कह दिया बापा ने,
'केश नहीं उतारेंगी ये, पढ़ी-लिखी हैं बहनें',
प्रथा विरुद्ध कार्य को गिनाया, काका-पप्पा को विमुख ठहराया...

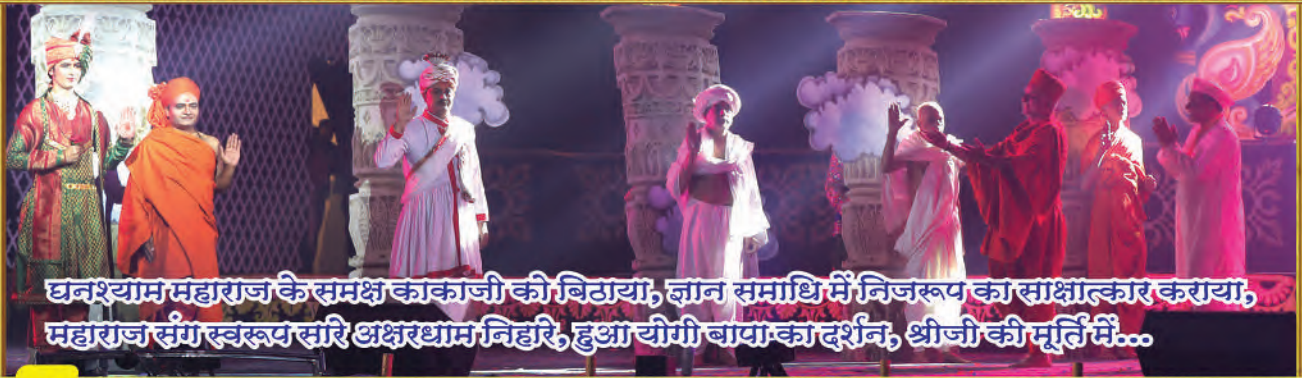
घनश्याम महाराज के समक्ष काकाजी को बिठाया, ज्ञान समाधि में निजरूप का साक्षात्कार कराया,
महाराज संग स्वरूप सारे अक्षरधाम निहारे, हुआ योगी बापा का दर्शन, श्रीजी की मूर्ति में...

नृत्य नाटिका तैयार करवाने के लिए दिल्ली आए पू. प्रदीपभाई (वडोदरा) एवं उनके सहयोगी पू. राकेशभाई पर प्रसन्नता व्यक्त करते प.पू. गुरुजी...

सभा मंडप में बैठ कर घड़ी याद ही नहीं आती और सेशन खतम होने के बाद भी ऐसा मन होता है कि यहीं बैठे रहो।

– पू. डॉ. नीलम बहन

श्रीहरिनो सनेडो...

'आनंदोब्रह्म'

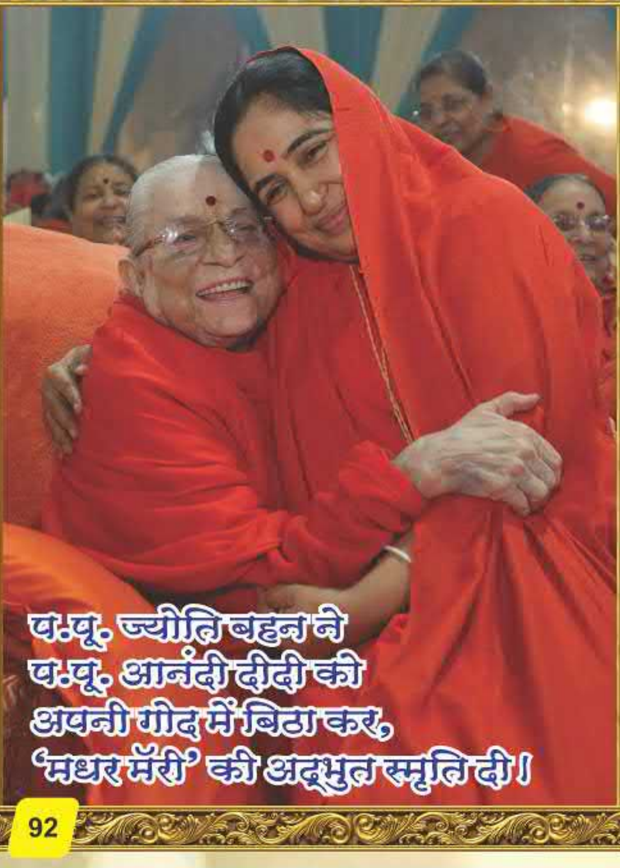

प.पू. ज्योति बहन ने
प.पू. आनंदी दीदी को
अपनी गोद में बिठा कर,
'मधर मॅरी' की अद्‌भुत स्मृति दी।

गुणातीत समाज की एकता और अखंडता हमारा मंत्र है।

समाधि स्थल 'अक्षरतीर्थ' पर गुरुहरि काकाजी की प्रासादिक वस्तुओं की छोटी-सी प्रदर्शनी...

प.पू. गुरुजी के 81वें प्राकट्य दिन की मंगल बेला के अवसर पर
प.पू. देवी बहन के वरद् हस्तों नवदीक्षित बहनों की भागवती दीक्षा विधि

धरा हुई सुहागिन श्रीजी के प्राकट्य से
बिन्दी, कंठी, चूड़ी, माला, प्रभु नाम की पहनो...

13 मार्च 2018, सायं प.पू. गुरुजी का 81वाँ प्राकट्योत्सव

*पर आए – ऐसा **भारत हमारा देश** है, सो उसकी ध्वजा रखी है। इससे भी अधिक उन्होंने आशीर्वाद दे दिया कि भारत वर्ष में मैं मानवस्वरूप में अखंड रहूँगा और अपने स्वरूपों की गोद में हमें बिठा दिया। उसकी स्मृति रूप भारत के ध्वज के साथ 'गुणातीत समाज' के ध्वज को कपल करके मोमेन्टो बनाया है।*

इस ध्वजा को रखने से हमारे जीवन के हर क्षेत्र में हमारी विजय पताका फहरती रहेगी –

ऐसे आशीर्वाद साहेब सबको दें...

27 दिसंबर को हरिधाम के **कोठीरीश्री प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामिजी** का **प्राकट्य दिन** नज़दीक ही था, सो सभी की ओर से पू. सुहृद्स्वामी ने उन्हें हार व शाल अर्पण किया। **प.पू. वशीभाई** ने प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामिजी का संक्षिप्त माहात्म्यगान किया। तत्पश्चात् **प.पू. अश्विनभाई** ने आशीष दी –

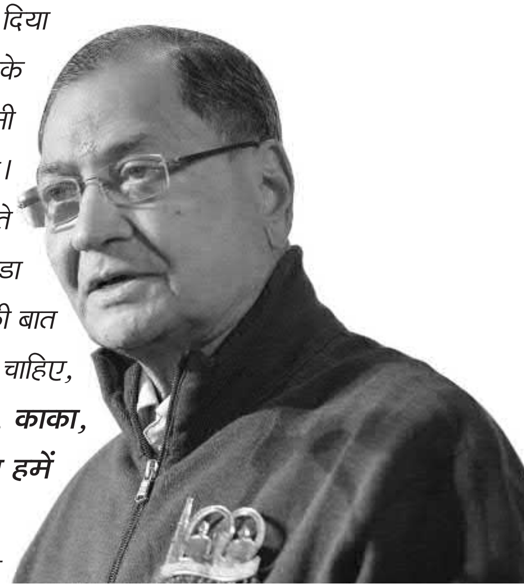

*प.पू. गुरुजी ने इस महोत्सव को उत्सव के बजाय शिविर का नाम दिया और गुरुहरि प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी ने दोनों दिन आशीर्वाद में उसके मुताबिक जीवन जीने का आहार हमें दिया। पहले दिन गुणातीतानंदस्वामी की बातों में प्रकरण एक की पहली और अंतिम बात का मर्म बताया। आज पूज्य दिनकरभाई ने वही बात दृढ़ करवाई। दूसरे दिन यानि बीते हुए कल में प.पू. स्वामिजी ने पाँच वचनामृत का उल्लेख करके, गढडा प्रथम 27 के मुताबिक़ संत में भगवान अखंड निवास करके रहने की बात समझाई। इन दोनों बातों का उल्लेख जानने के बाद हमें कैसे जीना चाहिए, उसकी सुंदर प्रेरणा और आशीर्वाद सभी स्वरुपों ने दिया है। **बापा, काका, पप्पा, स्वामिजी और सोनाबा रूपी पंचम कृपा का पात्र आज हमें प.पू. मुकुंदजीवनस्वामिजी गुरुजी के द्वारा प्राप्त है।***

...पहले जो आश्चर्य हुए, अभी जो हो रहे हैं और आगे जो होने वाले हैं, वो मुझे मिले प्रत्यक्ष प्रभु ही सब कर रहे हैं, ऐसी समझ से काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी और सोनाबा जिए हैं, यह हम सब का प्रत्यक्ष अनुभव है। कई भक्तों को काकाजी का अदभुत लाभ दिल्ली और उत्तर भारत के प्रदेशों में मिला है। (विडियो क्लीप में) उन सबका विश्वासपूर्वक एक ही सुर था कि काकाजी भगवान को अखंड धार के जिए हैं, भगवान उनमें रहे हैं और उनके द्वारा इस पृथ्वी पर विचरण कर रहे हैं। वे जो भी कर रहे हैं, वे मेरे हित और मंगल के लिए ही कर रहे हैं, ऐसा जिस-जिसने माना वे स्वरुप से एकरूप-एकाकार बन गए; क्योंकि भगवान को कोई भेद नहीं होता। देह से अलग स्वरूप में हमें दर्शन देते हैं, पर जो पारमेश्वरी शक्ति उनके माध्यम से काम कर रही है, उसमें कोई भेद नहीं है। हमारी ही कसर, कमी और गलत सोच थी।

*इसीलिए इस बार - इस साल के इस उत्सव के लिए कहा गया है – **वन्स इन अवर लाइफटाईम**। मेरे जीवन का **ये एक ऐसा उत्सव है कि जिससे एक नए माइलस्टोन की ओर हम सब सामूहिक रूप से उठाव लेने का संकल्प करते हैं।** इसके लिए प.पू. गुरुजी ने जो परिश्रम किया है, हम सब को जो मार्गदर्शन दिया है, खुद जी कर बताया है और जिन्हें उनके साथ ऐसी प्रीति हुई, जिन्होंने उनका वचन माना, उनके प्रति*

निर्दोषभाव - दिव्यभाव हुआ, उनको उन्होंने अग्रसर किया है।

सो ही, ***काकाजी के स्थूल रुप से न रहने के बावजूद, वे गुरुजी द्वारा ही काम कर रहे हैं या गुरुजी और काकाजी के स्वरुप में कोई भेद नहीं है। क्योंकि गुरुजी ने काकाजी, पप्पाजी, हरिप्रसादस्वामिजी में कभी भी कोई भेद न देखा और न ही रखा। यह ब्रह्माकार वृत्ति है, गुणातीत स्थिति और गुणातीत अवस्था है, जिसकी दृष्टि केवल महाराज के प्रति है।*** *हम सब और व्यक्तिगत रुप से मैं प.पू. गुरुजी से ऐसे आशीर्वाद की प्रार्थना करता हूँ कि आप हम सब पर ऐसा रूड़ा आशीर्वाद बरसाओ। बचपन में जब काकाजी की शिविर में जाते, तो जब वे बातें करते तब मंत्रमुग्ध होकर हम उनकी मूर्ति में खींचे रहते। बाकी तो वे क्या कहते थे वो समझने की कक्षा नहीं थी, यदि कुछ समझे भी तो वो स्वीकारने की कक्षा नहीं थी और यदि स्वीकार हो भी गया, तो रोज़मर्रा की जिंदगी में वो बात आचरण में उतारनी मुश्किल थी। पर, गुरुजी ने पंचम पुरुषार्थ के माध्यम से हम सब पर पंचम कृपा बरसा के सरल और आसान बनाई है।*

...वचनामृत में महाराज ने कहा है कि भगवान अखंड निवास करके रहे हैं, ऐसा मेरे प्रगट गुरुहरि के प्रति भाव, मेरी दृढ़ता, मेरा जुड़ाव हो और चाहे कोई मान दे या अपमान करे, हमें समभाव रहना चाहिए। हमारे 60 साल का इतिहास देखेंगे तो काकाजी, पप्पाजी, सोनाबा ने साथ में मिल कर कष्ट उठाया और अपमान सहा, फिर भी उस समय उनकी ब्राह्मीस्थिति का यदि दर्शन करेंगे तो ख्याल पड़ेगा कि उनकी एक ही दृष्टि थी कि मेरे योगी बापा ही ये कर रहे हैं, करवा रहे हैं...

28 दिसंबर को सांकरदा के **पू. स्नेहलस्वामिजी** का **जन्मदिन** होने के कारण पू. मैत्रीस्वरूपस्वामी ने उन्हें सभी की ओर से हार व शाल अर्पण किया। **प.पू. गुरुजी** ने पू. स्नेहलस्वामी द्वारा की गई सेवा की स्मृति की और आशीर्वाद दिया–

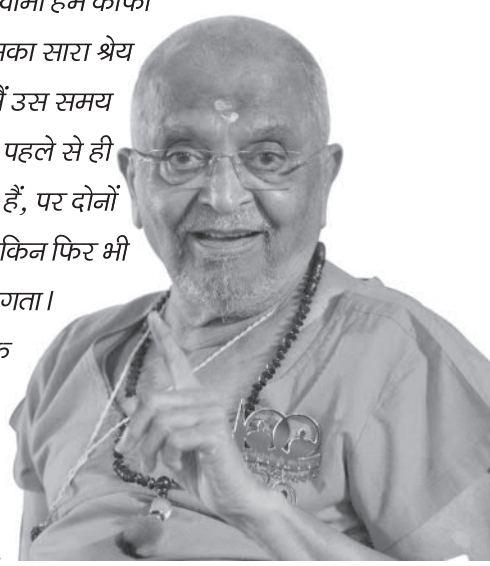

स्नेहलस्वामी अक्षरविहारीस्वामिजी के सेवक, पर साथ - साथ उन्होंने अक्षरविहारीस्वामिजी और मेरा अधिकार बराबर स्वीकारा। कल अक्षरविहारीस्वामिजी ने बात बताई थी कि स्नेहलस्वामी हमें कॉफी बना कर पिलाते थे और अक्षरविहारीस्वामिजी व मैं कॉफी पार्टनर थे। इसका सारा श्रेय स्नेहलस्वामी को जाता है, क्योंकि उन्होंने दोनों का सरीखा ध्यान रखा। मैं उस समय एकदम कड़क कॉफी पीता था और स्वामी एकदम लाइट कॉफी पीते थे। पहले से ही हमारा ऐसा है। मैंने पहले भी बात करी थी कि हम दोनों भाई - भाई जरूर हैं, पर दोनों की प्रकृति भिन्न। ये एकदम शांत और भले ही मेरी बॉडी साथ नहीं देती, लेकिन फिर भी मैं हलचल तो करता ही रहता हूँ। कोई चैन से बैठा हो, वह मुझे अच्छा नहीं लगता। कैसे कोई एक्साइट हो, यही मेरा हमेशा प्रयत्न रहता है। जबकि अक्षरविहारीस्वामिजी को ऐसा होता है कि यदि कोई एक्साइट हुआ हो तो उसे शांत कर दूँ। पर, उस समय दोनों का मेल रख कर स्नेहलस्वामिजी ने दोनों की साँझी सेवा की। इसलिए स्नेहलस्वामी को खूब - खूब वंदन है।

कल (डॉक्यूड्रामा) में बात सुनी कि 1997 में मेरा 60वाँ जन्मदिन मनाया,

तब मैंने पूछा था कि क्या मैं आपको 60 साल का लगता हूँ? सोलह साल का लगता होऊँगा। इसी प्रकार ***आज*** *भी* ***80वाँ जन्मदिन मना रहे हैं, तब मैं खुद ही कहता हूँ कि मैं 80 साल का हूँ ही नहीं।*** *कल की बात सुन कर मैं सोच रहा था कि अब 80 साल की उम्र में मैं कितने साल का लगता हूँ? मैंने बहुत ज़ोर डाला, तो मुझे लगा कि* ***18 साल का हूँ। शरीर से नहीं, हार्ट से मैं 18 साल का हूँ।***

...कल से मुझे कोई कह रहा था कि गुरुजी ये 'दिव्यधाम' में से जाने का मन नहीं करता और अगर घर पर चले भी जाते हैं, तो ऐसा रहता है कि कब वापिस चले जाएँ। यहाँ एक माहौल ही बदल गया। ये फंक्शन के बारे में भी मुझे एक आनंद रहता है। आप सबने ***काकाजी के मुँह से दो चीज़ें सुनी होंगी। एक – मेरा काम मेरे ईष्ट करते हैं और दूसरा – ये सब अकेले हाथ नहीं हुआ है। ये दोनों बातें इस उत्सव में दिखाई पड़ती हैं। हक़ीक़त में ये अकेले हाथ से नहीं हुआ है। सारा गुणातीत समाज इसके लिए लग पड़ा।*** *अक्षरविहारीस्वामिजी ने सांकरदा से पूरा स्टाफ भेज दिया। ज्योत से सारे सेवक आ गए और सभी ने मिलकर काम उठा लिया।*

मैंने कल भी बात करी थी कि इस उत्सव में बाहर से आए सारे मुक्तों को देख कर मैं ताज्जुब हो गया। स्वाभाविक है कि वे मुझसे मिलने आते हैं, मंदिर में आकर दर्शन करते हैं; मैं उन्हें पूछता - करता भी हूँ, लेकिन किसी को जानता नहीं। तब ऐसा लगता है कि ओहो ! हम दिल्ली में बैठे रहे हैं, लेकिन पूरे गुणातीत समाज की संख्या में भी खूब विकास हुआ है, क्वालिटेटिवली तो सहज ही दिखाई पड़ता है। ***साहेब, अक्षरविहारीस्वामी, स्वामिजी, ज्योत – सभी ने इनमें महिमा भरी होगी कि अपना एक सेंटर दिल्ली में है। 'अपना सेंटर' कहा होगा तभी इन सबका यहाँ आने का मन किया होगा। सो, मुझे भी ऐसा हुआ कि जब इतनी उमंग से सबको यहाँ भेजते हैं, तो हर एक को इस मंदिर में अपनापन महसूस होना चाहिए। सो, अपने हर एक स्वरूप की यहाँ मूर्तियाँ होनी ही चाहिए। और... इसीलिए हमने परसों साहेबजी और स्वामिजी की मूर्ति की प्रतिष्ठा कराई।*** *हरिधाम से कोई भी सेवक आएगा, उसे कहा जाएगा कि आप दिल्ली मंदिर ज़रूर जाना वहाँ अपने स्वामिजी की मूर्ति है; सहज ही बोलेंगे। आज काकाजी की मूर्ति किसी भी सेंटर में देख कर मैं कैसा खुश होता हूँ! यहाँ सत्संग की शुरुआत ही थी, तब हमारे यहाँ से 3-4 साल का एक सेवक योगेश गुजरात गया था; उसने देखा कि यहाँ काकाजी की मूर्ति नहीं है। वो हर जगह मुझे पूछता रहा कि काकाजी की मूर्ति क्यों नहीं है ? मैंने कहा यहाँ अब डॅवलप्मेंट चल रही है, तो सहज है कि अपने स्वरूप की मूर्ति रखेंगे। तब जाकर वो शांत - चुप हुआ। तो, आज जैसे* ***अश्विनभाई ने बहुत अच्छी बात करी कि हम सबको इस दिशा में चलना है।*** *अभी मैंने साहेब से भी बात करी कि हमने* ***मोमेंटो जो बनाया है, उसमें दिल्ली का कोई नोटिफिकेशन नहीं है।*** *सिर्फ शताब्दी महोत्सव के सिम्बोल का नीचे स्टीकर रखा हुआ है। बाकी* ***ये सारा 'गुणातीत समाज का' महकमा है*** *– यह बात हम भूलें नहीं।*

यह सारा उत्सव काकाजी की जगह पर मानो साहेब ने उठा लिया हो ऐसा लगता है *– हक़ीक़त में। मैं अभी कह ही रहा था कि मैं नहीं बोलूंगा। तो साहेब ने खड़का कर मुझे कहा – क्यों नहीं बोलना, बोलना ही है। फिर मुझे लगा कि अब तो आज्ञा पालनी ही पड़ेगी। तो, मेरा यह कहना है कि हमें यहाँ से और कोई चीज़ नहीं ले*

जानी है। मैं समझता हूँ गुजराती में प्रवचन हुए होंगे, वह हिन्दी भाषियों को समझ नहीं आया होगा। हिन्दी में हुए प्रवचन थोड़ा बहुत ही गुजराती लोग पकड़ पाए होंगे। लेकिन, जैसे वचनामृत में भी कहा हुआ है कि ये उत्सव इसलिए करते हैं कि अंतकाल पर भी स्मृति हो जाए, तो हमारा बहुत बड़ा श्रेय हो जाएगा। अब अंतकाल वाली बात रही नहीं है। स्वामिजी, साहेब, अक्षरविहारीस्वामी, भरतभाई, शांतिभाई साहेब अंतकाल तक की राह देखेंगे क्या ? अब तो कहते हैं न कि समरीसूट केस जैसा बन जाता है। पप्पाजी बोलते थे कि इस पल से ही अक्षरधामरूप रहना है। मतलब अक्षरधाम में रहना है। पर ये हमारे भेजे में बैठ जाए, इसलिए ये शिविर होती हैं।

तो, यहाँ जो कुछ भी बातें हुई होंगी उसकी जुगाली करो, आपस में गोष्ठी करो। इससे क्या होगा कि 2-3 जने मिल कर इन बातों की गोष्ठी करते रहेंगे, तो हमारे जीवन में वो फिर दृढ़ होगा और हम उसी तरह वर्ताव करते रहेंगे। इससे भी अधिक, मानो हमें ये बातें समझ नहीं आई; पर मेरे अनुभव की बात करता हूँ कि भले बातें समझ न आएँ, एक काम तो हो सकता है न कि इसकी स्मृति करके भजन करें कि महाराज उत्सव में जो बात हुईं, वो मुझे समझ नहीं आई हैं, लेकिन मुझे कोरा नहीं रखना। यूं दिल से - एक चित्त प्रार्थना करेंगे तो भीतर में वे सुझाएँगे या सूझेगा या कोई आ करके उस पोईन्ट पर तुम्हें बता जाएगा कि इस बार उत्सव में ये बात बहुत अच्छी हुई। फलस्वरूप हमें इस उत्सव का ज्ञान मिल भी जाएगा।

तो, बस उत्सव को – अपने गुणातीत समाज के उत्सव को हम यहाँ से इस तरह लेकर जाएँ और हमेशा गुणातीत समाज की एकता और अखंडता की बात पर बरकरार रहें। अखंडता खूब ज़रूरी है। आज देखो, ***हमारे प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदीजी भारत की एकता ही नहीं, भारत की अखंडता के लिए लगे हुए हैं।*** *यूं हमारे गुणातीत समाज के अंदर ये एक भावना हो कि सारे गुणातीत समाज के अंदर हरेक मुक्त-हम सब गुणातीतभाव के अंदर वर्तते हुए हरेक को नज़र आ जाएँ। साहेब, अक्षरविहारीस्वामिजी, दिनकर अंकल इतना आशीर्वाद दें – यही प्रार्थना।*

प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी नादुरस्त तबियत के कारण आज के उत्सव में नहीं आ पाए थे। सो, उनकी तबियत की चिंता करते हुए **प.पू. गुरुजी** ने निम्न प्रार्थना के साथ अंतर के रूदन से धुन करवाई–

स्वामिजी नादुरुस्त तबियत होते हुए, किसी का न मानते हुए, हमारे लिए दिल्ली आए। लेकिन, कल रात से उन्हें डायरिया के कारण काफ़ी कमजोरी आ गई है। सो, अभी सभा में नहीं आए हैं। इन्हें डायरिया हो गया वगैरह तो हमारा उनके प्रति एक मायिकभाव है। उन्होंने किसलिए ये चरित्र ग्रहण किया होगा, हमें समझ नहीं आता है। लेकिन ऐसे प्रभुधारक संत या प्रभु स्वरूप का एक ही मक़सद है कि तुम मेरे ढंग से क्यों बर्तते नहीं हो ? उन्हें अंदर कहीं कसक तो यही है कि सारा जब समाज मेरा है, मेरे ढंग से क्यों नहीं चलता ? इसलिए सभी अभी धुन करें कि स्वामी ! हमारी जो भी गलती हुई हो, माफ़ करो। ठीक हो जाओ।

सभा के अंत में **प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी** की ओर से **पू. विज्ञानस्वामिजी** ने गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी स्वरूप **संतभगवंत प.पू. साहेबजी** एवं **प.पू. गुरुजी** को हार अर्पण किया। विसर्जन प्रार्थना करके सभी ने प्रसाद के लिए प्रस्थान किया।

25 दिसंबर – क्रिसमस की **सायं** बंधुजोड़ी शताब्दी शिविर की पूर्णाहुति के समय भी स्वरूपों ने 'विन्टेज कार' द्वारा सभामंडप में प्रवेश किया। उनकी अगुआनी चार घोड़ों पर सवार मुक्तों और हाथों में गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी के चिन्ह लिए छः मुक्तों ने स्वागत भजन के जोश से की। स्वरूपों के मंचस्थ होने के बाद, स्त्री स्वतंत्रता और स्वाधीनता की प्रतीक बहनों को भी इसी प्रकार सभामंडप में प्रवेश करवाया गया। प.पू. गुरुजी की आज्ञा एवं भावना के अनुसार, प्रत्येक सत्र की भाँति प्रवेश द्वार पर प्रभु के भाव से चंदन का तिलक लगा कर स्वागत किया गया। परंतु, इस सत्र में चंदन के तिलक के साथ, प.पू. गुरुजी ने सभी मुक्तों के लिए अद्भुत स्मृति भेंट आयोजित की थी और वह थी आशीर्वाद युक्त दो रुपये की नोट ! दरअसल, **दीवाली के दूसरे दिन-नूतन वर्ष पर जो-जो हरिभक्त प.पू. काकाजी का दर्शन करने के लिए ताड़देव जाते, तो प.पू. काकाजी उन्हें एक रुपये का नोट देते थे। सो, प.पू. काकाजी और प.पू. पप्पाजी का एक-एक रुपया जोड़ कर, प.पू. गुरुजी ने दो रुपये की नोट प्रसाद रूप में दिलवाई।**

सभा के प्रारंभ में गुणातीत समाज के आद्यसर्जक दिव्य बंधुजोड़ी की मूर्ति को सभी की ओर से **श्री दिवेशजी** और **श्री रवि गुप्ताजी** ने जो हार अर्पण किया, उसके विषय में पू. राकेशभाई ने बताया –

*इस **दिव्य बंधुजोड़ी** के ऐक्य को मानते हुए उनकी **शताब्दी अलग-अलग न मना करके 'संयुक्त रूप' से** भारत की राजधानी में **हम मना रहे हैं, यह हमारे जीवन का एक अद्वितीय व अनूठा प्रसंग है, जो दोबारा नहीं आएगा।** प.पू. काकाजी और प.पू. पप्पाजी दोनों की **'संयुक्त शताब्दी' का जोड़ 200** होता है। मानो हमारी इस समझ को उचित ठहरा कर बधाई देना चाहती हो, यूं **'भारत सरकार' ने भी इतिहास में पहली बार 200 रूपये का नोट जारी किया है...** सो, 200 रुपये के नोटों द्वारा बने विशिष्ट हार में शताब्दी को इंगित करते 100 नोट्स से हमारी भक्ति व्यक्त कर रहे हैं...*

तत्पश्चात् संतभगवंत प.पू. साहेबजी की मूर्ति का क्ले मॉडल बनाने वाले शिल्पकार **श्री अर्जुन वाजपेयीजी** को सम्मानित किया गया। बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव के इस ग्रांड फिनाले पर निम्न प्रार्थना के साथ स्क्रीन पर गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी के ब्रह्मसूत्रों का चाबियों के रूप में दर्शन किया –

काकाजी और पप्पाजी ने सत्पुरुष के साथ संबंध दृढ़ करने के लिए समय-समय पर कई कितनी आध्यात्मिक कुंजियाँ- चाबियाँ दीं...

काकाजी तो अकसर कहते –

मैं तुम्हें हर बार अध्यात्म की चाबियाँ देता हूँ, पर तुम खो देते हो।

तो, अब प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूपों की निश्रा में तीन दिन हमने सत्संग की जो अद्भुत कुंजियाँ पाई हैं, उनके अनुरूप अपने प्रगट सत्पुरुष से प्रगाढ़ संबंध कर लें, तभी सही मायने में हमने बंधुजोड़ी शताब्दी शिविर मनाई कही जाए।

इस सत्र की शुरुआत में गुरुहरि पप्पाजी के मानसपुत्र और लंडन गुणातीत ज्योत की ढाल समान **प.भ. दिलीपभाई भोजाणी** ने शताब्दी वंदना की–

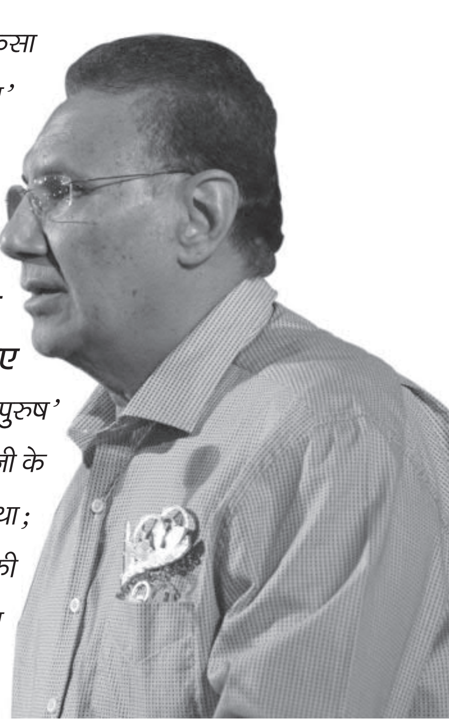

...जीतेजी अक्षरधाम प्राप्त करना किसे कहते हैं, उसका माहौल और जीवन कैसा हो ? हमें वो बताने के लिए काकाजी, पप्पाजी और बा ने 'गुणातीत समाज' खड़ा किया, उसके बीज बोए और हमारी आत्मा में एक उचित स्थान लिया - कृपा की, जिसका आनंद आज हमें मिल रहा है। उसकी भावांजली अर्पण करने के लिए हम एकत्रित हुए हैं। वैसे ***पप्पाजी - काकाजी दोनों शाश्वत् हैं, वे गए नहीं हैं। सदेह हमारे साथ नहीं हैं, परंतु अपनी यादें, अपना ज्ञान और अपने द्वारा तैयार किए मुक्तों को हमें विरासत में देकर गए हैं।*** *सो ही, उनका कार्य जारी रखने के लिए मंचस्थ संतस्वरूप जो आज के 'युगपुरुष' हैं, वे उनके बताए मार्ग पर चलने के लिए निकल पड़े हैं। वैसे पप्पाजी-काकाजी के कार्य की बात करें, तो मानस से मानस को एकजुट करने का उनका प्रयास था; उसका परिणाम आज हम देख रहे हैं। एक अलौकिक दिव्य गुणातीत समाज की रचना हो गई है। पप्पाजी, काकाजी और बा ने बहुत कष्ट उठाया, बहुत सहन किया, लेकिन आज अभी जो बदलाव आया, जो सुख हमें मिल रहा है वो उसका फल है। हमारा समाज इतना बड़ा नहीं है, पर एक सुखी दिव्य परिवार है। जब भी हम फंक्शन करते हैं, तो मॅन पावर की शार्टेज ही होती है। लेकिन पोज़िटिव साइड देखें, तो एवरी सेवक हॅज़ बीकम मल्टीटास्किंग। काकाजी-पप्पाजी के बल से एक साथ कितना कुछ करते हैं। अभी मैं आशिषभाई के साथ थोड़ी बातचीत कर रहा था; उन्होंने बताया कि यहाँ थकान होती ही नहीं है। मैंने पूछा कितने घंटे सोते हो ? वे बोले– पता नहीं, लेकिन काम -सेवा जारी है। दुनिया में सब जगह ऐसा नहीं होता है। हम तो दुनिया में जाते ही नहीं हैं, लेकिन जाएँगे तो पता चले कि यहाँ क्या सेवा हो रही है !*

अश्विनभाई ने सुबह हमें एक आध्यात्मिक कारण बताया कि इसे शिविर क्यों कहा गया है ? इसका एक दूसरा पहलू यह भी है कि हम जो दिल्ली के बाहर से शिविर में आए हैं, उन सबके लिए एक सीख है कि माहात्म्ययुक्त सेवा कैसे करनी चाहिए ? सिस्टम कैसे एफीशियन्टली चलना चाहिए ? तीन-चार दिन से हम सब आए हुए हैं। सब कुछ – एडमिनिस्ट्रेशन, ऑफिसिस, बिक्री केन्द्र देखो। आज सुबह वीरेनभाई मुझे किचन में ले गए थे और बताया कि देखो, आवाज़ भी नहीं है। सारी टीम को जो सेवा दी गई है वो अपने आप कर रहे थे। एक तरफ सब्जी कट रही थी, तो दूसरी तरफ पकौड़े बन रहे थे, बर्तन धुल रहे थे, सब काम एफीशियन्ट्ली हो रहा था।

स्वामिनारायण भगवान को पृथ्वी पर आकर योगीजी महाराज द्वारा एक नूतन कार्य - इवोल्यूशन करवाना

*था, इसलिए उन्होंने काकाजी और पप्पाजी को पसंद किया। जीवों को सकारात्मक रूप में परिवर्तित करने के लिए इन्होंने हमारे भीतर के सत्य को उजागर किया है, जिससे धीरे-धीरे हमारी निष्ठा बढ़ती जा रही है... एक आध्यात्मिक अनुशासन चाहिए। हम बहुत ऊँचे लेवल का जीवन जी रहे हैं; **धीरे-धीरे पप्पाजी-काकाजी और यहाँ विराजमान सब स्वरूप हमें एक दूसरी दिशा में ले जा रहे हैं, जहाँ सुख ही सुख है।***

मैंने एक बार पप्पाजी से पूछा – आप कहते हैं कि 'स्थिति' कर लो, ये स्थिति क्या होती है? पप्पाजी ने बताया – रोम-रोम में प्रभु को रखेंगे, तो फिर संकल्प करते ही आपका काम हो जाएगा, इसे 'स्थिति' कहते हैं। पप्पाजी के पास मैं कभी-कभी बैठा रहता था। पप्पाजी के पास किसी का फोन आता या उनसे कोई मिलने आता है और कहता कि पप्पाजी ये तकलीफ़ है - वो तकलीफ़ है। पप्पाजी सुनते और कहते – हाँ, हम महापूजा करेंगे। सत्पुरुषों को बैठकर महापूजा करने की ज़रूरत नहीं होती, उनके कहने से ही काम हो जाएगा।

*...**गुरुजी और मेरा एक अनोखा संबंध है। ज़्यादा बातचीत नहीं होती, लेकिन उनकी आँखों में मेरे लिए जो प्रेम है, धी एफेक्शनल लव धेट आई गॉट इन हिज़ आईज़ फॉर मी, आई कॅन विज्युलाईज़ इट, आई कॅन फील इट।** परसों उन्होंने एक ही शब्द मुझसे पूछा – कम्फर्टेबल ? लेकिन इस शब्द के साथ उनका प्रेम था, वो दिल में महसूस होता है। यही सत्संग है, इसी सत्संग के लिए - यही सुख पाने के लिए हम सब लगे हुए - जुटे हुए हैं। मैं कभी-कभी टी.वी. के धार्मिक चेनल्स देखता हूँ, तो मुझे लगता है कि ये सब ठीक है - अच्छा है, लेकिन सत्पुरुष जीवन में न हों तो कुछ नहीं हो सकता। इसलिए पप्पाजी-काकाजी ने पहले क्या किया? हमारे दिल में स्थान लिया! कल हमने गुरुजी का जीवन चरित्र देखा! दिल्ली स्टेशन पर उतरे तो कुछ नहीं था, कोई लेने नहीं आया, कहाँ जाना है, कुछ पता नहीं था। पर, काकाजी के बल - शक्ति से आज एक दिव्य परिवार खड़ा कर दिया! तो, हम जो प्रभु की शक्ति बोलते हैं, उसकी एनर्जी गुरुजी, स्वामिजी, अक्षरविहारीस्वामिजी, साहेबजी जैसे हमारे सब स्वरूपों द्वारा आती है, वो हम सब को फील होती है...*

काकाजी जब-जब इंग्लॅण्ड आते थे, तो सभा होती थी। हम नए - नए थे, फिर भी काकाजी हमें कहते – अभी आज्ञा तो सब पालते हैं, लेकिन 'अनुवृत्ति स्वरूप' में कब जाओगे? हम उन्हें कैसे कहते कि अभी तो आज्ञा भी अच्छी तरह हम नहीं पालते हैं, तो अनुवृत्ति की बात ही कहाँ है? बट, धे हेव लॉट्स ऑफ एक्सपेक्टेशन्स फ्रॉम अस कि हमने मेहनत की है तो तुम ऐसा जीओ। आज हम देखें तो काकाजी ने कितना काम किया? यहाँ का समाज, दिनकरभाई के द्वारा यू एस ए का समाज, पवई का समाज! कितना काम किया? इन सब में दिनकर अंकल, वशीभाई, भरतभाई, बापु की पार्टनर्शिप है। दर्शन करके खुशी होती है। पप्पाजी के कार्य की बात करें, तो इतनी बड़ी 'गुणातीत ज्योत' उनकी क्रियेशन है। योगीजी महाराज ने तो कह ही दिया था कि बहनें भगवान भजें तो क्या हरज़? साथ ही पप्पाजी - काकाजी से कह दिया कि बहनों के लिए स्थान गोंडल नहीं, आपके प्लाट में बनाओ। तब तो विद्यानगर में स्टुडेंट्स के रायट्स कितना कुछ होता था। और... आज तो विद्यानगर इज़ वॅल बीहेव्ड स्टूडेंट सीटी; बहनों की पोजेटिव एनर्जी जो मिलती है; वहाँ से कोई गुज़रता है, तो

सिर झुका कर जाता है। कई कितनी डॉक्टर्स, टीचर्स, नर्सीस, इलेक्ट्रीकल इंजीनियर्स हैं। सो, एडमिनिस्ट्रेशन वाइज़ काम चलता है। ***ज्योति बहन, हंसा बहन, देवी बहन, जसु बहन, पदु बहन आध्यात्मिक काम करती ही हैं। उन्होंने पप्पाजी को धारा हुआ है; तो आज भी ज्योत में नई-नई बहनें दीक्षा लेने के लिए आती हैं। कइयों ने तो काकाजी-पप्पाजी का दर्शन भी नहीं किया है। यहाँ भी अक्षरज्योति में 'एवर स्माइलिंग' आनंदी दीदी संभालती हैं। यूं सब जगह पप्पाजी-काकाजी का कार्य जारी ही है।*** *इतना ही नहीं, अनुपम मिशन में देखें, तो साहेबजी, अश्विनभाई, शांतिभाई आध्यात्मिक उत्थान कर ही रहे हैं। गुणातीत प्रकाश के भाई - अनसंग हीरोज़ बहनों की सेवा में लगे हुए हैं। उनका कहीं पर नाम भी नहीं आता है, लेकिन वे सुख लेते हैं और आध्यात्मिक रीति से प्रगति कर रहे हैं। काकाजी-पप्पाजी ने इतना बड़ा समाज तैयार किया है, हमारे लिए तो गर्व की बात है।*

ऐसे फंक्शन्स हमें रेगुलर्ली करने चाहिएँ, क्योंकि ऐसी जगह ही सेवा और माहात्म्य का दर्शन होता है... *वरिष्ठ भाई, संतों, बहनों के स्वास्थ्य के लिए हम हर रोज़ थोड़ी प्रार्थना करेंगे कि उनका स्वास्थ्य अच्छा रहे...*

तदोपरांत **प.पू. भरतभाई** ने सत्पुरुष को राज़ी करने की कुँजी बताते हुए आशीर्वाद दिया–

...चार दिन से हम बहुत-बहुत बढ़िया एक माहात्म्य में डूबे हुए हैं। गुरुजी और सभी भक्तों ने हमारे लिए सुबह से लेकर रात को 11 बजे तक यही बात, और कोई सोच ही नहीं–ऐसा माहौल तैयार किया है। बहुत आनंद आया। रीयली उसके पीछे जो एफर्ट्स देखते हैं, तो ऐसा लगता है कि हम जो ये चार दिन मना रहे हैं, उसके लिए इन्होंने 6-8 महीने से कितना एर्फट किया होगा। तभी इतना अच्छी तरह से हम देख पाते हैं और उसे एन्जोय कर पाते हैं।

नई पीढ़ी के लिए ये सब जानना बहुत ज़रूरी है कि किस तरह दिल्ली का सारा उत्थान - विकास हुआ है और इसके पीछे सभी स्वरूपों का – पर्टिक्युलर्ली काकाजी, गुरुजी और संतों का कितना परिश्रम है। ***डॉक्यूड्रामा में जो दिखाया है, वो मेरे ख्याल से बहुत कम है; क्योंकि इन लोगों ने और भी ज़्यादा परिश्रम किया है।*** *पर, सब तो दिखा भी नहीं पाते। तो, धन्यवाद है कि ये सब दर्शन कराया। कई बात ऐसी होती हैं कि हमें कुछ पता नहीं होता है। आज सुबह हम खड़े थे, तो एक छोटी बच्ची आई और मुझसे पूछने लगी– काकाजी और पप्पाजी का कुछ नाम तो होगा? उन्हें काकाजी और पप्पाजी क्यों बोलते हैं? मैंने सोचा बात तो इसकी सही है। फिर उसे समझाया कि काकाजी का नाम 'दादुभाई' और पप्पाजी का नाम 'बाबुभाई' है। योगीजी महाराज*

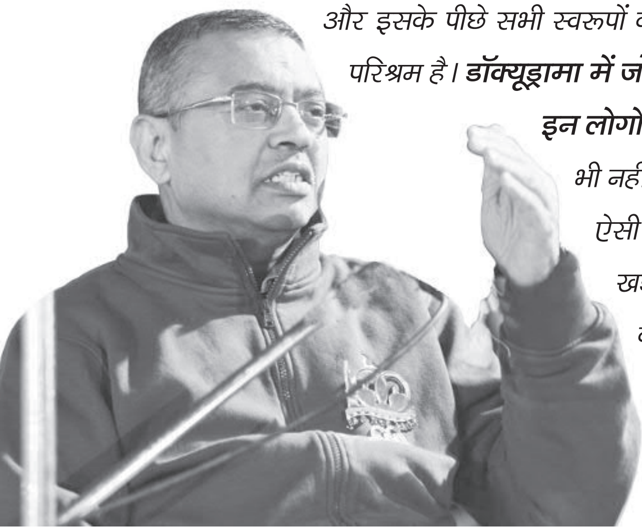

दादुभाई साहेब और बाबुभाई साहेब कहते थे। दादुभाई को काकाजी इसलिए कहते हैं कि वे हमारे अक्षरविहारीस्वामिजी के अंकल - काका हैं, इसलिए सारा गुणातीत समाज उन्हें काकाजी के नाम से जानता है और बाबुभाई अक्षरविहारीस्वामिजी के पप्पा हैं, इसलिए वे हमारे पूरे गुणातीत समाज के पप्पाजी बन गए।

काकाजी और पप्पाजी का इतिहास बहुत - बहुत कठिन परिश्रम से भरा हुआ है। उन्होंने गुणातीत समाज व पूरे स्वामिनारायण सम्प्रदाय के लिए जो कार्य किया है, वो अद्‌भुत है। मैं हमेशा एक ही बात याद करता हूँ कि स्वामिनारायण भगवान से लेकर सभी स्वरूपों ने ऐसा ही कार्य किया है। **स्वामिनारायण भगवान** ने वचनामृत में बताया है कि आप (विवेक)समझदारीपूर्वक सचेत रहना। आप जो मेरे कहलाते हो, उनमें मुझे **तनिक भी कसर रहने नहीं देनी है। भगवान का हमारे लिए ऐसा एक वरदान है।** ऐसा कौन कह सकता है कि आप जो मेरे कहलाते हो, उसमें मुझे कोई भी कसर नहीं रहने देनी है और उसके लिए मैं आया हूँ। **गुणातीतानंदस्वामी** ने भी अपनी बातों में बताया है कि पहले तो मुझे दो बात का आग्रह था, पर अब एक ही बात का आग्रह है और वो यह है कि **सबको मेरे जैसा साधु बनाना है।** ऐसा कौन कह सकता है ? इसलिए हम सब बहुत भाग्यशाली हैं और बहुत ही निहाल हो गए हैं। मुफ़्त में मौज मिली है; पुण्यशाली हैं, क्योंकि ऐसे संबंध में आ गए हैं। ऐसे ही योगीजी महाराज और शास्त्रीजी महाराज ने वरदान दिया है। **योगीजी महाराज** ने जब संत बनाए, तब वे बोले – **मुझे आप सबको शास्त्रीजी महाराज जैसा बनाना है। इस बात को काकाजी बार-बार दोहराते थे कि बापा ने लिख कर दिया है कि जागास्वामी जैसे चालीस बनाने हैं।** यह एक प्रकार का वरदान है। ऐसे ही काकाजी को जब साक्षात्कार हुआ, तब **काकाजी** ने भी कहा – **मुझे जो सुख मिला है, वो मुझे सबको देना है।** काकाजी और पप्पाजी जब छोटे थे , तब से यही भावना रही। बचपन में रामलीला देखने गए और उसमें देखा कि राजा दशरथ स्वर्ग सिधारे। तब काकाजी ने पप्पाजी से पूछा कि हमें तो ये स्वर्ग पृथ्वी पर लेकर आना है। पप्पाजी ने कहा – ला सकते हैं यदि हम आपस में झगड़ें नहीं , तो। काकाजी ने पूछा – झगड़ा किस कारण होता है ? पप्पाजी ने कहा – हमारी पत्नी आएँगी, उनके कारण होता है। काकाजी ने कहा – तो हम उन्हें झगड़ा नहीं करने देंगे और हम एक - दूसरे से ऐसे मिलकर रहेंगे। आज हम देखते हैं कि **ये पुरुष हमारे लिए 'अक्षरधाम' पृथ्वी पर लेकर आए हैं, ऐसा बड़ा कार्य किया है।**

1984 में काकाजी महाराज जब लंडन गए, तब पप्पाजी, बा, बेन, साहेब सभी स्वरूप वहाँ हाज़िर थे। काकाजी सबसे डिस्कस कर रहे थे कि लंडन की गवर्नमेंट किसी को दुःखी नहीं रहने देती। जॉब नहीं होती तो घर वगैरह भी देती है, इसलिए कहावत थी कि वे (लंडन में रहने वाले) तो रानी के जमाई हैं। काकाजी कहते – हम स्वामिनारायण के हैं, वे अपने किसी भी भक्त को ज़रा भी दुःखी नहीं होने देंगे। उनका आश्रित हमेशा सुख से आनंद में रहे, ऐसी हमें व्यवस्था करनी चाहिए और आज हम देखते हैं कि **गुरुजी ने कुटुंबभाव से ये बात यहाँ प्रस्थापित की है कि हम सब यहाँ एक फॅमिली मेम्बर हैं और इसलिए हम में से किसी को भी कोई तकलीफ़ नहीं रहती। काकाजी महाराज की ये जो भावना थी, वही सही**

अर्थ में गुरुजी ने साकार की है। *गुरुजी से प्रार्थना करते हैं कि उस कार्य में हम भी इसी प्रकार से जुड़ जाएँ और ऐसा समाज डेवलप करने में हम भी उस कार्य में जुड़ें। तब काकाजी बहुत-बहुत राज़ी हो जाएँगे।*

काकाजी-पप्पाजी की ऐसी भावना है कि हम सब भगवान में रहकर, ब्रह्मरूप होकर जीवन जीते हो जाएँ। गुणातीतानंदस्वामी ने बताया ही है कि हमें जो दुःख है, वो देह का दुःख कम है और मन का दुःख ज्यादा है। मन का वो दुःख न रहे, इसलिए हमें इस ब्रह्मविद्या की कॉलेज में आना पड़ेगा। यहाँ ये सब गुणातीत स्वरूप, संत हमें बहुत अच्छी तरह से मार्गदर्शन देते हैं और हमें एलीवेट करते हैं। इन स्वरूपों ने पक्का किया है कि सबको अक्षरधाम में बिठाना है, सबको सुखी करना है। तो वे करते ही रहेंगे और करेंगे ही उसमें कोई डाउट नहीं है।

गुरुजी एक बहुत बढ़िया एक्ज़ाम्पल देते हैं–

एक राजा जंगल में शिकार करने के लिए गया था। साथ में बहुत सारे सिपाही थे। जंगल में शिकार करते-करते राजा अकेला पड़ गया और उसे बहुत प्यास लगी। आस-पास काफ़ी नज़र दौड़ाई, तो थोड़ी दूरी पर एक झोपड़ी दिखाई दी। उसने सोचा कि झोपड़ी में पानी मिलेगा। थोड़ा पास जाकर देखा, तो बाहर एक मटका पड़ा था। झोंपड़ी के नज़दीक जाते हुए राजा ने मन में सोचा कि पानी पीने के बाद, इस झोंपड़ी के मालिक को एक हज़ार सोना मुहर भेंट में दूँगा। पर, राजा को झोंपड़ी के नज़दीक आता देख कर, उसके मालिक ने बाहर आकर मटका फोड़ दिया। सारा पानी ज़मीन पर बह गया और राजा निराश होकर लौट गया। पर, दरबार में जाकर अपने सिपाहियों को भेज कर उस आदमी को बुलाया। सिपाही उस आदमी को ढूंढ कर जब राजमहल में ला रहे थे, तो वह डर गया कि वो तो राजा था जिसे देख कर मैंने मटका फोड़ दिया था। मुझसे गलती हुई है, तो कुछ न कुछ सजा तो मिलेगी ही। पर, जब दरबार में पहुँचा, तो राजा ने अपने आदमी से कहा कि इसे एक हज़ार सोना मुहर दे दो। यह सुन कर सब विचार में पड़ गए कि राजा ने इसे एक हज़ार मुहर देने के लिए क्यों कहा होगा? फिर राजा ने सारी बात बताई। यह एक्जाम्पल देकर गुरुजी कहते हैं कि ***हम सब चैतन्य ऐसे गुणातीत स्वरूपों के संबंध में आते हैं, तो ये स्वरूप हम में कुछ नहीं देखते कि हम में क्या है या क्या नहीं है। हमारे चैतन्य को देख कर वे सोच लेते हैं कि मुझे इससे ये काम करवाना है और इसे मुझे 'स्वरूप' बनाना है। आप करो या नहीं भी करो, लेकिन आपको ऐसा कार्य करते हुए कर ही देंगे, इसमें कोई डाउट नहीं है।*** *इसलिए काकाजी कई बार हमें कहते – बापु और गुरुजी का जब हो सकता है, तो तुम्हारा तो होगा ही। पर, गुरुजी ने इसी प्रकार का जीवन जिया है।* ***गुरुजी बहुत ही निखालस हैं, संबंध की अपेक्षा वे कोई भी कॅलक्यूलेशन नहीं रखते...***

काकाजी और पप्पाजी की जितनी भी बात करें उतनी कम हैं। काकाजी का एक एक्जाम्पल देता हूँ। काकाजी को साक्षात्कार हुआ और वे सर्वज्ञ थे... उनके संबंध में आए हम लोगों का काम हो ही गया है, उसमें कोई सवाल ही नहीं है। वे हमें हमेशा अनोखा दर्शन कराते थे। काकाजी को भगवान स्वामिनारायण की

द्विशताब्दी निमित्त डॉक्यूमेन्ट्री फिल्म बनवानी थी। उस समय डायरेक्टर ***राजन ठाकुर*** *थे, जो काकाजी को मानते नहीं थे। लेकिन, उनके साथ के अन्य दो जो थे वे काकाजी को बड़े संत मानते थे। तो, काकाजी ने उन्हें कहलवाया कि पहले हम एक मीटिंग करें, फिर डॉक्यूमेन्ट्री तैयार करेंगे। राजन ठाकुरजी ने अपने साथियों से कहा कि मैं तुम्हारे साथ चलूँगा, लेकिन उनके पाँव नहीं छूऊँगा। ऐसे* ***किसी व्यक्ति में भगवान हैं, वह मैं नहीं मानता।*** *वे तीनों ताड़देव आए। काकाजी अपने सोफे पर पाँव लंबे करके बैठे थे। दो आदमियों ने काकाजी के पैर छुए, लेकिन राजन ठाकुरजी ने नहीं। काकाजी के साथ बात करते-करते उनके मन में विचार उठा कि यदि ये कोई अलौकिक पुरुष हैं या सच में कोई बड़े दिव्य संत हैं, तो जब तक मैं इनके पास बैठा रहूँ, तब तक इनके पाँव हिलने नहीं चाहिए। काकाजी के साथ करीब चालीस मिनिट तक सारी डिस्कशन चली, पर काकाजी वैसे ही पाँव लंबे करके बात करते रहे। हाथ हिलाया, मगर पाँव वैसे के वैसे रहे। राजन ठाकुरजी लगातार पाँव की ओर ही देखते रहे कि काकाजी का पाँव हिलता है या नहीं। सारी बातें होने के बाद काकाजी ने प्रसाद मँगवाया और तीनों को देने लगे। लेकिन, राजन ठाकुरजी की निगाह तो काकाजी के पाँव पर ही थी। तब प्रसाद देते हुए काकाजी ने उनसे कहा– क्या देख रहे हो, ये पाँव हिलने वाले नहीं हैं। फिर तो वे सीधा काकाजी के चरणों में पड़ गए और जब तक जिए, तब तक उन्हें यह प्रसंग याद रहा। यूं जिसे 'स्वामिनारायण' का कुछ भी ज्ञान नहीं, काकाजी उसे भी ऐसी प्रतीति करा सकते हैं, तो हम पर तो बहुत बड़ी कृपा है कि ऐसे संतों का उन्होंने हमें जोग दे दिया है। गुरुजी हमारे भाग में आए हैं, उनकी हमें भेंट दी है तो हम बहुत-बहुत भाग्यशाली हैं।*

तो, ऐसे ही अखंड आनंद, खुशी में हम रहें और उनका कार्य करते रहें व हमेशा उनकी तरफ दृष्टि करके जीते रहें। इस बार हमने गुरुजी को जो कार्ड दिया है, उसमें सूर्यमुखी बनाया है, क्योंकि गुरुजी सूर्यमुखी बनकर जिए हैं। ***सूर्यमुखी का मुँह हमेशा सूर्य की तरफ होता है। सूर्य यानि 'सत्पुरुष' और गुरुजी की दृष्टि हमेशा काकाजी की ओर और ऐसे स्वरूपों की ओर रही है।*** *कार्ड के अंत में ऐसा भी दिखाया है कि* ***गुरुजी खुद सूर्य बन गए हैं।***

तो, हम उनकी ओर ऐसी दृष्टि रखकर सूर्यमुखी की तरह जीवन जिएँ, ऐसी प्रार्थना है। सभी गुणातीत संत, स्वरूप हमें खूब-खूब आशीर्वाद दें और हम सच्चे अर्थ में ऐसे भक्त बनकर - ब्रह्मरूप होकर परब्रह्म की भक्ति करते हो जाएँ। गुरुजी के शब्दों में मूर्ति में रहते हो जाएँ। काकाजी भी हमेशा कहते थे– आप कोई भी क्रिया करो, पर 11 बार स्वामिनारायण का नाम लेकर करो। तो हम ऐसा करते हो जाएँ। कुछ भी नहीं, पर इतना तो करें ही – ऐसी आज के दिन स्वामिनारायण भगवान और सभी गुणातीत स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना है।

जैसे सुबह वशीभाई ने बताया था, अगले साल 2018 दिसंबर में अक्षरविहारीस्वामिजी के यहाँ सांकरदा में जो मंदिर बन रहा है, उसका इनॉग्युरेशन, मूर्तिप्रतिष्ठा और काकाजी - पप्पाजी की शताब्दी का महोत्सव

फीनाले वहाँ मनाएँगे। सो, सभी भक्त वहाँ आएँ यही प्रार्थना है। उससे पहले 3 फरवरी को स्वामिजी के यहाँ हरिधाम में मना रहे हैं, तो उसके लिए भी हम सबको आमंत्रण देते हैं। सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

तकरीबन तीस-पैंत्तीस साल से **पू. अमृतभाई पटेल साहेब**, प.पू. गुरुजी का सान्निध्य पाकर दिल्ली मंदिर में अपनी कला का विभिन्न क्षेत्र में सदुपयोग कर रहे हैं। अबकी बार भी शिविर के कलात्मक क्षेत्र में उन्होंने सहयोग दिया और ख़ास तो मंदिर में गुरुहरि काकाजी के समाधि स्थल **'अक्षरतीर्थ'** पर **पू. अनिलजी** एवं **डॅकोरेशन टीम** के सहयोग से उन्होंने गुरुहरि काकाजी की प्रासादिक वस्तुओं की छोटी-सी प्रदर्शनी का जो आयोजन किया, वह केवल आकर्षक ही नहीं, बल्कि गुरुहरि काकाजी की प्रत्यक्ष हाज़िरी महसूस करा रही थी। सो, प.पू. गुरुजी की प्रसन्नता की अभिव्यक्ति के रूप में पू. आशिष शाह ने उन्हें हार व शाल से सम्मानित किया और तब **पू. अमृतभाई** ने अपना भाव व्यक्त किया–

मेरे लिए बोलने का विषय तकलीफ़ वाला है। लेकिन, गुरुजी ने मुझे जो सम्मान दिया है, वो मेरे लिए शायद कुछ ज़्यादा ही है। ***मेरे लिए गुरुजी का सबसे ज़्यादा सम्मान यह है कि उन्होंने मुझ पर विश्वास रखकर सभी कामों के लिए चुना, यही मेरा सबसे बड़ा सौभाग्य है।*** *उससे ज़्यादा मेरे लिए कुछ हो नहीं सकता।* ***मैंने कुछ नहीं किया है, ये पूरी टीम का काम था, मेरे अकेले का उसमें कुछ नहीं था।*** *हम बहुत सारे लोग एक साथ गुरुजी की आज्ञा से काम में जुड़े थे, उसमें मैं भी एक थोड़ा-सा हिस्सेदार था, बस इतना ही था। मतलब जितनी समझ थी, उतना साथ मिलकर काम किया, तो गुरुजी को इसके लिए बहुत-बहुत प्रणाम और जय स्वामिनारायण।*

दिव्य बंधुजोड़ी गुरुहरि काकाजी - पप्पाजी ने केवल गुरुवर्य योगीजी महाराज में लयलीन रहते हुए, उनसे संबंध वालों की परवरिश में अपना जीवन न्यौछावर कर दिया। सो, उनकी शताब्दी निमित्त **'रोम-रोम योगी बिराजे...'** प्रार्थना भजन **पू. डॉ. दिव्यांग** एवं मुक्तों ने प्रस्तुत किया। जिसे सुनते हुए **संतभगवंत प.पू. साहेबजी** ने अपनी **समाधिस्थ अवस्था** का दर्शन कराया और पूरा सभाखंड दिव्यबंधु की स्मृतियों से भर गया!

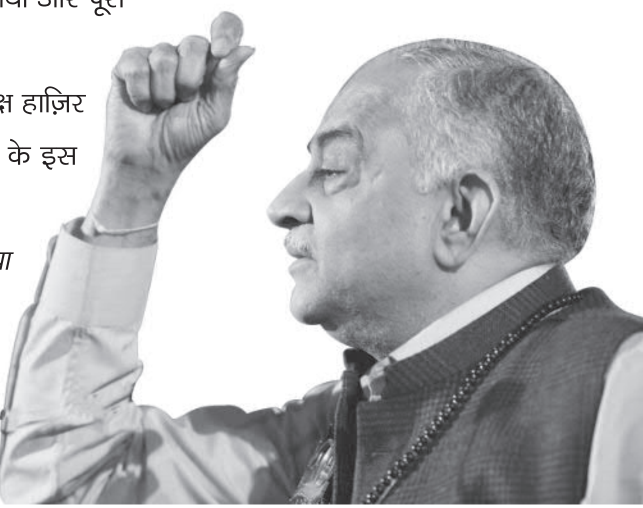

जिनकी महापूजा में प्रभु अपने स्वरूपों सहित प्रत्यक्ष हाज़िर महसूस होते हैं, ऐसे **प.पू. वशीभाई** ने शताब्दी शिविर के इस सत्र में माहात्म्य का मानो प्रवाह ही बहाया–

...दो दिन से हम अक्षरधाम में हैं। भरतभाई ने जैसे बताया कि करोड़ों धन्यवाद हैं गुरुजी को कि इस तरह का आयोजन किया। गुरुजी का जो स्टाइल है या वे बोलते थे कि छोटे पैमाने या शिविर के रूप में ही शताब्दी मनानी है, लेकिन इतना बड़ा माहौल और इतनी बड़ी स्क्रीन लगाई

है, तो ये स्क्रीन जिसने बनाई उसे धन्यवाद है। पीछे - दूर बैठने वालों के लिए मोस्ट-मोस्ट बेनिफिशियल थिंग। धे केन सी स्वामिजी, साहेबजी, गुरुजी वेरी नाईस्ली। तो, करोड़ों धन्यवाद गुरुजी को बीकॉज़ ***टू सॅन्स में हम काकाजी-पप्पाजी की सॅन्टीनरी राजधानी में मना रहे हैं।*** *कौन हो गए ये इतने बड़े पुरुष ? यह सिर्फ हम नहीं कहते, दो दिन पहले महेन्द्र नागपालजी आए थे, वे कह रहे थे कि गुरुजी ने अशोक विहार की काया पलट कर दी है।*

शताब्दी का पवई में उद्घोष हुआ। पहला चरण पेरिस में किया, दूसरा शिकागो में किया और जैसा अभी बताया कि गुरुजी ने सही पैमाने में दिल्ली में मनाया। काकाजी अकसर कहते थे– आनंद करो, भाई आनंद करो। पप्पाजी कहते थे– अक्षरधाम मीन्स ब्यूक गाड़ी और ताजमहल होटल। जैसे गर्ग साहेब ने बताया कि स्पीरीच्युआलिटी में ऐसा माना जाता है कि तप, व्रत, दान करो। जैनों में बहुत उपवास करते हैं, मगर यहाँ ऐसा नहीं है। यहाँ तो आनंद करो और अक्षरधाम में रहो। तो, काकाजी-पप्पाजी ने पृथ्वी पर आ कर यह कर दिखाया! ही रिडिफाइन्ड धी स्पीरीच्युआलिटी... बापा व काकाजी बताते थे कि गुरुजी महाराज के समय के आनंदस्वामी हैं। तो, आनंदस्वामी मीन्स लाइफ में हर एक पल आनंद करो, भाई आनंद करो। डॉक्युड्रामा में कल जैसे देखा कि ए-103 में चोर आए तब भी आनंद में थे। साइकिल चोरी हो गई, तो भी आनंद। एन्जॉय एवरी मोमेन्ट। पप्पाजी कहते थे – इस समय से ही ब्रह्मरुप मान कर जिओ।

...कल महेन्द्र जयस्वाल ने अपने इन्टरव्यू में बताया कि काकाजी ने उनसे कहा था कि गुरुजी वामन सिर्फ दिखते हैं, ही इज़ ए फीबल बॉडी। मुझे गुरुजी के साथ बचपन से बहुत लगाव है। उस समय गुरुजी की बॉडी इतनी फीबल कि पेट पर हाथ लगाओ, तो उल्टी हो जाती थी। इतनी छोटी - वामन बॉडी है, लेकिन उन्होंने कार्य विराट किए हैं। आज यह विराट कार्य है कि काकाजी - पप्पाजी की शताब्दी राजधानी दिल्ली में मना रहे हैं। ***जैसे वामनजी ने तीन कदम में पृथ्वी, पाताल और सर्वस्व मांग लिया। ऐसे ही गुरुजी ने*** *लव एट फर्स्ट साईट से पहला कदम उठाया, जब सुंदराबाई हॉल में काकाजी और योगीजी महाराज से मिले। योगीजी महाराज को पहली बार में ही कह दिया कि आई बिलांग टु यु, वो* ***पहला विराट कदम। दूसरा विराट कदम*** *– जब साधु हुए और स्वरूपनिष्ठा से जुड़ कर 'मैं तेरा प्रकाश' बनकर जिए व काकाजी और योगीजी महाराज को राज़ी किया और जब यहाँ दिल्ली में आए; फिर तो कल हमने डॉक्युड्रामा में देखा कि 50 साल में जो कार्य किया, वो उनका* ***तीसरा विराट कदम।*** *तो ये* ***वामन देह और विराट कार्य!***

योगीजी महाराज ने 51 साधु होने के लिए कहा तो वर्तमान समय के ऑल बीग सेन्ट्स में से कोई एकदम तैयार नहीं था। लेकिन, ***योगीजी महाराज अपना कार्य पूरा करने के लिए काकाजी को लेकर आए थे।*** *पूरे इतिहास में काकाजी - पप्पाजी का कॉन्ट्रीब्युशन मेक्सीमम है। योगीजी महाराज की मरज़ी थी कि मुझे पढ़े-लिखे साधु बनाने हैं। उस समय परिस्थिति ऐसी थी कि एक साधु बनने आता था और एक चला जाता था। वामन का विराट कार्य इसलिए कहता हूँ कि गुरुजी फेमिली में बड़े थे और... नेशनल रेयॉन कंपनी में काम*

करते थे। 1953 में दसवीं पास होना वो बिग डील था, जबकि गुरुजी उस समय ग्रेज्युएट थे। लेकिन, बापा ने आज्ञा की कि आप साधु हो जाओ और सब छोड़ कर साधु हो गए! तब उनकी जो जर्नी चालू हुई, वह पहला कदम शुरू हुआ। तकलीफ़ आई, फिर भी वहाँ आनंद ही आनंद। गढडा में दीक्षा देने के बाद योगी बापा ने किसी मंदिर में नहीं रखा, सीधा मुंबई कांदीवली में माणेकलाल सेठ का एक बंगला था, वहाँ रहने के लिए भेजा। वहाँ भी आनंद ही आनंद। फिर विमुख प्रकरण हुआ और... अक्षरभुवन से सीधा 360 डिग्री ट्रांसफर करके सोखड़ा में डाल दिया, जहाँ 40 के बीच में एक ही बाथरूम था, लेकिन वहाँ भी आनंद ही आनंद किया। आनंद का रहस्य यह था कि **आनंदस्वामी और महाराज का जैसा संबंध था, वैसा ही गुरुजी और काकाजी का संबंध था।** यह मैं तात्विक रूप से कहता हूँ। आप पढ़ना, गढडा प्रथम 58 में आनंदस्वामी ने महाराज से प्रश्न पूछा है कि हमें इतनी प्रॉबल्म है, मन के संकल्प कैसे टलेंगे? तो महाराज ने भारपूर्वक कहा है कि 'अतिशय बड़े पुरुष' की यदि कोई सेवा हो जाए, तो ये सब टल जाते हैं। उस समय का इतिहास कहता है कि बड़े-बड़े परमहंस थे, तब **अतिशय बड़े पुरुष** गुणातीतानंदस्वामी को कोई पहचान नहीं सका, लेकिन आनंदस्वामी ने पहचाना। स्वामी की नौवें प्रकरण की बयालीसवीं बात से यह भी ख्याल पड़ता है कि आनंदस्वामी का महाराज के साथ जैसा संबंध था, वैसा गुणातीतानंदस्वामी के साथ बनाया। वो कैसे? तो एक बार गुणातीतानंदस्वामी अमदावाद में पुरुषोत्तमभाव की बड़ी बात कर रहे थे; तब रॅफरंस देने के लिए किसी को तो पूछना पड़ता है न! आनंदस्वामी बहुत सीनियर साधु थे। रामानंदस्वामी के समय से बड़े जीनियस संत थे। ही वॉज़ वेरी इम्पार्शियल ऑल्सो। तो उनसे पूछा कि हे आनंदस्वामी, बताओ महाराज ने ऐसा कहा था? उन्होंने तुरंत बताया—हाँजी, फलां समय में महाराज ने पुरुषोत्तमभाव की बात की थी। यूं गुणातीतानंदस्वामी की मरज़ी व रहस्य समझे। ऐसा ही संबंध गुरुजी का योगी बापा के साथ हुआ कि बापा ने कहा– साधु होना है-ये करना है। तो गुरुजी बोले–हाँजी। काकाजी ने दिल्ली में कहा–यहाँ चौकी बनानी है। तो गुरुजी बोले–हाँजी। काकाजी के साथ ऐसा संबंध स्थापित हुआ। **काकाजी** कहते थे–**मुकुंद, तूने मेरे जैसे मिस्टीक आदमी का भरोसा किया है, तो तेरा काम हो गया।** उस समय काकाजी ने जो कहा, वो बात आज प्रुव हो गई है कि काम हो गया। **बड़े पुरुष जो आशीर्वाद देते हैं, वो होता है।** वे जो बोलते हैं वो होता ही है। पवई में शुरुआत में एक बार मेरे बर्थडे पर जसभाई साहेब आए थे; उस समय वहाँ आने में खूब तकलीफ़ थी। बहुत बारीश होने से उनकी पूरी पेंट भी गीली व मैली हो गई थी। आज वहाँ काकाजी के वचन से इंटरनेशनल स्पीरीच्युअल रिसर्च सेंटर हो गया। वहाँ सब इंटरनेशनल कंपनियाँ आई हैं...

पीक्युलारीटी की एक बात–जब काकाजी ने गुरुजी को दिल्ली भेजने का तीसरा कदम उठाया, तो काकाजी ने उनसे कहा–'मुकुंद बी लो प्रोफाइल।' हम सब देख रहे हैं कि गुरुजी इतने बड़े काम करते हैं। मगर वे याद रखते हैं कि 'बी लो प्रोफाइल।' गुरुजी कोई पब्लिसिटी नहीं करते कि दिल्ली में इतना काम हुआ है। ये तीन फरवरी पार्क जो बनाया है, उसकी पब्लिसिटी भी नहीं करते। काकाजी के संबंध से गुरुजी ने लो

प्रोफाईल रहना पकड़े रखा।

फिर यहाँ आने के बाद उनका सैकन्ड स्टेप था – मैं तेरा (प्रभु - सत्पुरुष का) प्रकाश! कल डॉक्यू ड्रामा में दिखाया कि कड़ाके की ठंड में पंजाब में वे कैसे विचरण करते थे। योगीस्वामी यहाँ बैठे हैं, वे साक्षी हैं कि उस समय कितनी डिफिकल्ट परिस्थितियाँ थीं। अभी देखें तो ठंड में हम उठ नहीं सकते, लेकिन तब सुबह 4 बजे उठ कर खुली जीप में जाना।

...एक और अच्छा प्रसंग है – 1973 ***'भारत साधु समाज'*** *के हेड* ***स्वामी हरिनारायण नंदाजी*** *थे, उन्हें गुरुजी का बहुत गुण आया था। गुरुजी भजनीक हैं, तो रात को ढाई बजे भजन करते थे। रात को बाथरूम जाने के लिए हरिनारायण नंदाजी उठे, तो उन्हें लगा कि रात को आवाज़ कहाँ से आ रही है? सो पता लगा कि कोई भजन कर रहा है। जब पास में गए तो देखा कि गुरुजी भजन कर रहे थे। उन्हें बहुत गुण आया कि वाह! ये अच्छे संत हैं।*

भारत साधु समाज *को सॅन्टीनेरी सेलिब्रेशन ऑफ रामतीर्थ मनाना था। 1973 में मेरे बीकॉम के एग्ज़ाम्स खतम हुए थे, तो काकाजी ने मुझसे कहा – चलो, तुम रामतीर्थ मिशन के कूपन वगैरह बेचने का काम करो। एक बार तो सुबह आठ बजे फर्स्टक्लास नई धोती, नया झब्बा टोपी वगैरह पहन कर काकाजी सबसे बोले – चलो-चलो, हमें जल्दी जाने का है। भारतीय विद्याभवन की तीसरी मंजिल पर गीता भवन में गए। वहाँ सुबह किसी न किसी का लेक्चर होता है। तब वहाँ कुर्सी वगैरह नहीं थी। एक पाट पर बैठ कर व्यक्ति लेक्चर देता था। काकाजी को हरिकृष्ण अग्रवाल और बचुभाई ड्रेस वाले से मिलना था। हम गीता भवन में गए तो वहाँ लेक्चर चल रहा था। मैं साथ में ही था, काकाजी एक कॉमन मॅन की तरह वहाँ बैठ गए। मैंने काकाजी से कहा – आपको तो स्टेज पर बैठना है, आप क्यों इधर बैठ रहे हैं? काकाजी ने मुझसे कहा – चुप्प। तो,* ***स्वामिजी जो दास का दास होने की बात करते हैं, वो काकाजी ने साक्षात् जीकर बताया।*** *साक्षात्कार वाले इतने बड़े पुरुष, लेकिन यूं ही बैठ गए। बाद में जब बचुभाई ड्रेस वाले की नज़र पड़ी, तो उन्होंने इमीडिएट्ली उन्हें ऊपर बुला लिया। ऐसे भारत साधु समाज का काम करके काकाजी ने रामतीर्थ मिशन को पूरा सपोर्ट किया था।*

मैं आपको गुरुजी के प्रेज़न्स ऑफ माईंड की एक बात करता हूँ। गुरुजी अमेरिका के वीज़ा के लिए वीज़ा ऑफिसर के पास गए। ऑफिसर ने नॉर्मल क्वेश्चन्स पूछे – यू नो। दूसरे वीन्डॉज़ पर लेडिज़ बैठी थीं, सो गुरुजी ने उसे बताया कि हमारा नियम है हम लेडीज़ से बात नहीं करते। वीज़ा ऑफिसर ने गुरुजी से कहा कि एक्च्युअली यू शुड कोओपरेट विथ अस। तो गुरुजी बोले – वी वोन्ट माईन्ड कॉओपरेटींग यू; बट, वी शॅल हॅव टु डु वन फास्ट। उसे यह बात समझ नहीं आई। तो, गुरुजी ने उसे समझाया कि हमें लेडीज़ से बात करना एलाउड नहीं है। लेकिन, कभी ऐसा हो जाए तो एक व्रत करना पड़ता है। यूं समझाया तो वो ऑफिसर हँस पड़ा और स्टेम्प लगा दी कि जाओ तुम्हारा वीज़ा हो गया। वे ऐसी सहज कॉन्सीयसनेस में रहते हैं, तो सहज में

ऐसा जवाब दे दिया।

...1973 से 1978 तक काकाजी फॉरेन जाते रहे। गुरुजी की इंगलिश इज़ एक्सल। काकाजी वॉज़ गोइंग टु लंडन और काकाजी की स्टाइल ऐसी थी कि व्हेरेवर यु गो, डु सच थिंग्स, यु गीव पीपल वॉट धे वॉन्ट। ही सेइड वी आर गोईंग टु यू.के. एण्ड यू.एस.ए.; धॅर पीपल अन्डरस्टेन्ड इंगलिश। इफ आई गीव इन गुजराती, वॉट पीपल विल अन्डरस्टेन्ड ? उनकी भावना थी कि 'लॉर्ड स्वामिनारायण एन्ड एप्लाईड ब्रह्मज्ञान' की छोटी ब्रॉशर लिखनी है। सो, गुरुजी को मुंबई बुलाया। वहाँ उसके लिए बार-बार प्रेस पर दौड़ना पड़ता था। गुरुजी इतने थक जाते थे कि आकर कहते कि कॉफी बना दो। पर, उस समय भी आनंद ही आनंद था। जो आनंद नाम था, उसे वे सार्थक करते थे। कांतिकाका के साथ इनका सहस्त्रधारा जाना हुआ था। वहाँ भी आनंद ही आनंद किया-करवाया। यह उनका दूसरा विराट स्टेप था। तीसरा स्टेप वो कि जो उन्होंने स्पीरीच्युअल एचीवमेन्ट की एण्ड धेर वॉज़ हिज़ क्रीयेटिव इनटेलीजेन्स ऑल्सो! जैसा कि कल डॉक्युड्रामा में सबने देखा कि काकाजी की स्टेम्प, काकाजी लेन, स्वामिनारायण मार्ग। बट जो स्पीरीच्युआलिटी में किया, उसके लिए दिनकरभाई कहते हैं– 'गुरुजी मीन्स टेन्डर कॅयर।' थोड़े दिन पहले अरुण जेटलीजी से मिलने के लिए हम यहाँ आए थे। तब हमने देखा कि शोभनाभाभी की लगभग 2 साल की पोती है। वो मंदिर आई, तो गुरुजी को मालूम है कि उसे पॉपकोर्न पसंद हैं; सो सेवक से उसे पॉपकोर्न भिजवाया। दूसरी ओर– 85 साल के हिम्मतभाई ठक्कर आए थे, तो गुरुजी ने उनके लिए चाय बनवाई कि वशीभाई को जैसी चाय देते हो, वैसी हिम्मतभाई के लिए बनाओ। इस प्रकार, दोनों एक्सट्रीम उम्र वालों के लिए टेन्डर केयर! पॉलिटिक्स से जुड़े काशीराम राणा की जैसी टेन्डर केयर की, वैसी महेन्द्र नागपाल की करी। उनको अंदर से हर एक के लिए खूब भाव है। जितना मल्कानी साहब के साथ किया, उतना आज भी गर्ग साहब के साथ! छोटे से छोटा हो या बड़े से बड़ा हो। आज का आया हो या पुराने से पुराना हो, सभी की टेन्डर कॅयर करके उनकी प्रगति कराना, गुरुजी का एकदम ब्रिलियन्ट स्पीरीच्युअल स्टाइल है। सिमिलरली बच्चों को भजन करते-कराते देखें। मोंडे का 15 साल का लड़का कीर्तन महापूजा करता है। उसकी भावना यह है कि मैत्रीस्वामी दूसरी सेवा कर सकें, इसलिए मैं यह करूँ। तो, ये भावना डालने वाले कौन ? वो तो गुरुजी हैं। दो दिन पहले लेडी डिप्टी सुपरिन्टॅन्डन्ट ऑफ पुलिस प्रेमवती आई थीं। गुरुजी ने मुझसे कहा कि वशी आप ज़रा बात करो। उससे बात की, तो वो इतनी खुश हो गई और बोली कि मुझे यहाँ दिव्यता लगती है, आई एम सो मच प्लीज़्ड। वो फंक्शन के लिए साड़ी भी लेकर गई कि फंक्शन में पहनकर आऊँगी। सबको देखकर गुरुजी को पता चल जाता है कि इसे को क्या चाहिए ? स्पीरीच्युआलिटी में उसकी रिक्वायरमेंट क्या है ? भले जगत के पदार्थ देकर भी उनको स्पीरीच्युअली आगे लेना, वो गुरुजी की क्वॉलिटी है। हरिभक्तों की सांसारिक प्रॉब्लम्स को भी वे देखते हैं। हम लोगों ने देखा है कि **भजन से कैसे-कैसे हमारे संतों, साधक बहनों, गृहस्थों सबको डॅडिकेटेड बनाया है। ये सब गुरुजी का कमाल है।**

आज एक दूसरी छोटी बात करनी है। काकाजी अपना काम करते ही रहते हैं। हमें लगता है हम करते हैं।

*तो, **सांकरदा** के मंदिर के लिए आपको अचंभा होगा कि जून से दिसंबर 8 महीने में गुम्बद तक काम आ गया। तीन मंजिल तक काम हो गया, इट्स ए मिरेकल ! अब अगले साल सांकरदा में बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव करने का भरतभाई ने ज़िक्र किया। क्यों सांकरदा में करना है ? क्योंकि ये वो जगह है कि जहाँ **वड़ताल से बड़ौदा जाते हुए स्वामिनारायण भगवान, 500 परमहंस और दोनों आचार्य – रघुवीरजी महाराज और अयोध्याप्रसादजी महाराज के साथ वहाँ रूके थे।** सो, **वो प्रसादी का स्थान है।** शास्त्रीजी महाराज ने पहला मंदिर वहीं बनाने का सोचा था और कहा था कि वासद की ओर दरवाज़ा करना। सोखड़ा, सांकरदा, वासणा में योगीजी महाराज रहे हैं, इसलिए उन्हें योगीजी महाराज की रमण रेत के गांव कहते हैं। सो, आपसे ख़ास प्रार्थना है कि अगले साल आप सबको वहाँ आना है। आप चिंता मत करना, जैसे गुरुजी ने यहाँ किया है, वहाँ सबके ठहरने की व्यवस्था हो जाएगी। **ये पूरा साल काकाजी - पप्पाजी की सॅन्टीनेरी... काकाजी का एक सूत्र था लॅट हिम वर्क। काम तो वे करने वाले हैं, पर बीच में हम हमारा संकल्प, हमारे कार्य कौशल्य की कॉन्सियसनेस से उन्हें बॉधरेशन देते हैं। भूल जाते हैं कि ही इज़ वेरी-वेरी पावरफुल। इस एक साल में हम हर रोज़ कुछ न कुछ करें; कम से कम 'बंधुजोड़ी शताब्दी की जय' तो बोलें।** बाकी, वे इतने पावरफुल हैं कि वे हमारी मनसा पूरी कर देंगे। काकाजी कहते थे – बैलगाड़े में बैठ कर दिल्ली नहीं जाया जा सकता, रॉकेट स्पीड चाहिए। वो स्पीड **काकाजी - पप्पाजी ने** आध्यात्मिकता में दिखाई है। **ट्रांसफॉर्मेशन ऑफ क्रूड नेचर किया है।***

तो, आज ये सब बड़े स्वरूप बैठे हैं। तो उनके चरणों में प्रार्थना करनी है कि हम हर रोज़ ऐसे जीकर आपकी शताब्दी मनाएँ और शताब्दी का जयघोष करें। सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

तत्पश्चात् जगरांव के **पू. अनूप टांगरीजी** ने **'तेरे मंदिर के आगे काका, मेरा फ्लॅट बन जाए...'** भजन से अपना भाव प्रकट किया... सत्संग के युवाओं ने **'रब जीतेजी जिनसे हैं पाए...'** भजन पर **भांगड़ा** करके, सभी स्वरुपों की शताब्दी का जयघोष किया और दिल्ली के दस-ग्यारह वर्षीय बालक **पू. लक्ष्य** द्वारा **'ओ पालनहारे...'** भजन प्रस्तुत किए जाने के बाद **संतभगवंत प.पू. साहेबजी** ने आशीर्दान देते हुए कहा –

*अद्भुत, खूब अद्भुत ! चार दिन से काकाजी- पप्पाजी शताब्दी महोत्सव, प.पू. गुरुजी के 80वें प्रागटय दिन का महोत्सव मना रहे हैं, जो प.पू. गुरुजी के आशीर्वाद के साथ समाप्त होगा। चार दिन सच में सबने खूब आनंद किया और अंत में भांगड़ा नृत्य द्वारा तो पूरा माहौल आनंदमय कर दिया। सच में चार दिन की शिविर में अद्भुत पराकाष्ठा रुप सबने आनंद किया। **ये चार दिन के आनंद के पीछे, प.पू. योगीजी महाराज के संकल्प और कृपा, प.पू. काकाजी की आज्ञा एवं पप्पाजी व स्वामिजी के आशीर्वाद के साथ प.पू. गुरुजी के दिल्ली में आए पचास साल की तपस्या का फल है।** कल सांस्कृतिक प्रोग्राम के उपलक्ष्य में जो अद्भुत डॉक्युमॅन्ट्री दिखाई गई, उसमें काकाजी, गुरुजी और भोला के पात्र ने सब का दिल जीत लिया। उन*

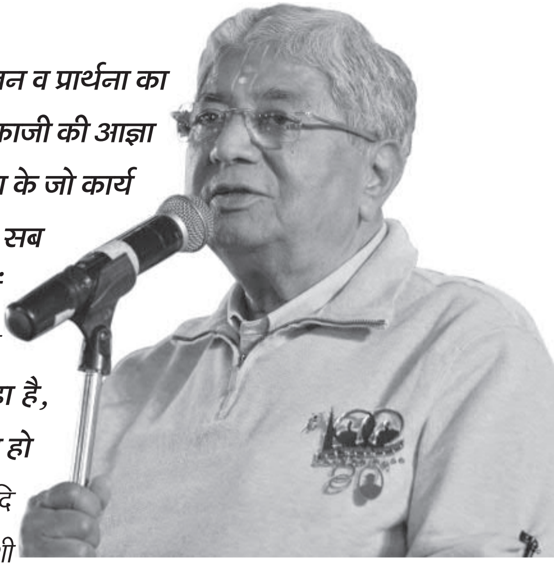

लोगों ने खुब सुंदर अभिनय किया।

गुरुजी ने यहाँ आकर प्रभु को प्रगटाने के लिए धुन, भजन व प्रार्थना का सहारा लेकर, काकाजी में सम्यक् निर्दोषबुद्धि रख कर, काकाजी की आज्ञा का अक्षरशः पालन करके सभी भक्तों पर प्यार-दुलार बरसा के जो कार्य किया, उसका सुंदर दर्शन कल सांस्कृतिक कार्यक्रम द्वारा सब भक्तों ने किया। अपने सारे **गुणातीत समाज के सभी केन्द्रों में से** संत, युवक संत, संत बहनें और गृहस्थ भाई सभी आए हैं; पर **सभी को यह अनुभूति है कि ये जो महोत्सव मनाया जा रहा है, उसकी अलग ही खुशी है। सभी को अपनेपन का जो एहसास हो रहा है, वही तो सच में महोत्सव मनाया कहा जाए।** सबको यदि पूछेंगे तो सभी के दिल में ये भाव है कि खूब आनंद आया - खूब खुशी हो रही है। किस चीज़ की खुशी व किस चीज का आनंद ? यह प्रभु की भक्ति, प्रभु को राज़ी करने का भाव, मिलजुल के एक मन होकर सेवा करने की भावना, प्रभु के भक्तों की सेवा को प्रभु की सेवा मानने की उमंग और ऐसे जीते हुए परिवार व कुटुंबभावना की खुशी है। **सामान्यरुप से परिवार जब इकठ्ठा होता है, तो दूर - दूर से सब आते हैं। तब साथ में बैठने का, रहने का, खाने या बातें करने का एक आनंद सारे परिवार वाले मानते हैं। वैसा ही आनंद हमारे गुणातीत समाज के सभी मना रहे हैं।** सच में ये पूर्णाहुति की सभा शिविर की फलश्रुति है। प.पू. गुरुजी ने खूब परिश्रम और तपस्या करी है। कल हमने स्वामिनारायण मार्ग, काकाजी लेन और उसमें अक्षरपुरुषोतम स्वामिनारायण मंदिर के विषय में देखा व सुना।

कल स्वामिजी ने बात करी कि स्वामिनारायण भगवान की निष्ठा हो, प्रभु का आसरा हो और संतों का जोग हो तो हठ, मान, ईर्ष्या के भाव मिट जाते हैं, जिससे जीतेजी ही सुख, शांति और आनंद से जीते हो जाते हैं। स्वामिनारायण के आश्रित होकर, स्वामिनारायण मार्ग पर चलेंगे और उन्होंने जो नियम दिए हैं, उसी में रहकर इस मार्ग पर अग्रसर होंगे, तो सत्पुरुष का जोग हो जाएगा।

भगवान स्वामिनारायण ने वचनामृत प्रथम 54 में कहा है कि संत ही मोक्ष का द्वार हैं। काकाजी लेन में प्रवेश करके, अक्षरपुरुषोतम मंदिर के द्वार पर गुरुजी का संबंध होने पर, उनके संबंध से ही अक्षरधाम का दरवाज़ा खुल जाता है। अक्षरपुरुषोतम महाराज के साक्षात् दर्शन होते हैं और जीवन धन्यता को पाता है। गुरुजी ने स्वामिनारायण मार्ग, काकाजी लेन और अक्षरपुरुषोतम स्वामिनारायण मंदिर परिसर खड़ा करके, साधना की इस पद्धति का सच में हमें दर्शन कराया है। स्वामिजी, गुरुजी, अक्षरविहारीस्वामी, सर्व दिव्य स्वरुपों, सर्व दिव्य बहनों के सान्निध्य में चार दिन से सच में खूब खुशी हो रही है। हमें गुरुजी के जीवन का अद्भुत दर्शन हुआ। **गुरुजी खूब - खूब इन्टेलीजेन्ट हैं, पर हृदय से प्रेमल और भावुक हैं। उनके हृदय**

__में योगीजी महाराज के लिए जो प्यार-जो दिव्यभाव था, वैसा ही दिव्यभाव काका, पप्पा, बा, हरिप्रसादस्वामी, महंतस्वामी, अक्षरविहारीस्वामी के प्रति रहा।__ सच में वे योगीरुप, काकारुप, पप्पारुप होकर हम सब को आनंद करा रहे हैं। हमने कल डॉक्यूड्रामा में देखा कि साइकिल चोरी हो गई, तब गुरुजी ने सेवक को पुराने जूते लाने के लिए कहा। भोला सोच में पड़ गया कि इतने पुराने जूतों का क्या करेंगे? आसपास चोरियाँ होती थीं, इस वजह से गुरुजी ने पुराने जूते लाइन में रखवाए, ताकि चोर आए तो उसे ऐसा न लगे कि यहाँ कोई रहता नहीं है और सच में रात को चोर आए, तो बहुत सारे जूते देखकर भाग गए कि अगर यहाँ रुके तो डंडे पडेंगे। यूं __गुरुजी अगर बाहर के चोर भगा सकते हैं, तो वैसे ही हमारे भीतर रहे हुए नकारात्मक भाव के चोरों को भी भगा सकते हैं, उसमें कोई संशय नहीं है।__ ऐसे बहुत सारे मज़ाकिया प्रसंग देख कर खूब आनंद आया। __गुरुजी खुद आनंद स्वरुप हैं और सबको आनंद कराते हैं।__ एक बार जोड़ के साधु के साथ वे दिल्ली से सांकरदा जा रहे थे, तो बहुत सामान था। वडोदरा स्टेशन पर टी.सी. जहाँ खड़ा था उसी के सामने इनका डिब्बा आया। टी.सी. ने देखा कि दो ही संत हैं और खूब लगेज लेकर आए हैं। सो, टी.सी. ने उन्हें रोक कर पूछा– टिकिट ली है? तो गुरुजी ने कहा– हाँ ली है ना! गुरुजी ने टिकिट दिखाई, तो टी.सी. बोला – ये टिकिट नहीं, लगेज की टिकिट है? गुरुजी बोले – हाँ, हमारा ही लगेज है और साथ ही ले जाना है। इस तरह बहुत बहसबाजी चलाई। उनके पीछे मुसाफिरों की भीड़ लग गई, तो परेशान होकर टी.सी. ने कहा – चलो, तुम यहाँ से बाहर निकलो। यूं गुरुजी सामान ले के बाहर निकल गए। आप सोचो ऐसी तरकीब कौन कर सकता है? कल स्वामिजी ने बताया कि संतों का जोग होगा, तभी हठ,मान, ईर्ष्या के भावों के चुंगल में से निकल सकते हैं। तो, गुरुजी हमें माया – क्लेश से बाहर निकालने के लिए आए हैं। ऐसे संतों की हमें प्राप्ति हुई है। सच में हम पर काकाजी की बहुत बड़ी कृपा है।

काकाजी-पप्पाजी की शताब्दी हम मना रहे हैं और काकाजी-पप्पाजी ने हमें ऐसे संतों के सान्निध्य में रखा है और उनके प्रगटीकरण का हमें इस तरह दर्शन करा रहे हैं। __स्वामिजी, गुरुजी, अक्षरविहारीस्वामिजी, संतों, संत बहनों की हमें प्राप्ति हुई है, तो उनके प्रति सम्यक् निर्दोषबुद्धि और भक्तों में सुहृद्भाव रख माहात्म्ययुक्त सेवा करेंगे, तो सच में इस पंचम पुरुषार्थ के फलरूप अखंड आनंद में रहते हो जाएँगे।__ ऐसा अखंड आनंद करते हो जाएँ वही उन्हें कराना है। इसलिए स्वामिनारायण भगवान देह धारण करके मूल अक्षर गुणातीतानंदस्वामी को साथ में लाए और ऐसे गुणातीत साधु द्वारा हमारे सामने प्रगट रहे हैं। तो ऐसे प्रगट सत्पुरुष में निर्दोषबुद्धि रखकर भक्ति करें। गुरुजी, स्वामिजी, अक्षरविहारीस्वामिजी की तबियत अच्छी रहे, सभी प्रत्यक्ष स्वरुपों की तबियत अच्छी रहे – यही गुरुचरणों में प्रार्थना।

आज 25 दिसंबर 'मेरी क्रिसमस - नाताल' के शुभ दिन की सभी को बहुत सारी शुभकामनाएँ और आने वाला नया साल सबके लिए खूब मंगलकारी हो – ऐसी प्रभुचरणों, गुरुचरणों में प्रार्थना के साथ सबको जय स्वामिनारायण।

तत्पश्चात् **प.पू. गुरुजी** ने अपने आशीर्वचन से कृतार्थ किया–

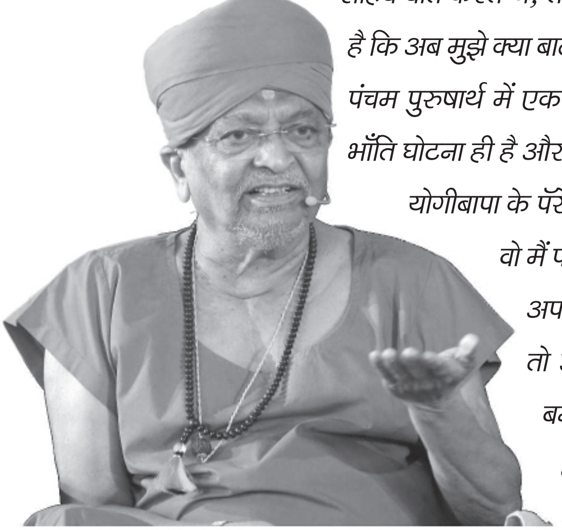

साहेब बात करते थे, तब से मेरे ब्रेईन का एक पोर्शन प्री-ऑक्यूपाई रहा हुआ है कि अब मुझे क्या बात करनी है। अपने यहाँ कोई नई बात नहीं है। प्रत्यक्ष के पंचम पुरुषार्थ में एक जगह काकाजी ने लिखा भी है कि 64 परी पीपर की भाँति घोटना ही है और वही सब दर्दों का इलाज है। मैं यह सोच ही रहा था कि योगीबापा के पॅरेबल्स - बोधकथा की किताब का एक प्रसंग याद आया। वो मैं पढ़ कर बताता हूँ। एक मियाँ खाने का बहुत शौकीन था। अपनी बीबी से कहता कि अगर बाजरे की रोटी बनाएगी, तो उसके साथ चने की दाल होनी चाहिए। चने का रोटी बनाएगी, तो साथ में उड़द की दाल होनी चाहिए। यूं बदलाव होना चाहिए। एक ही तरह का खाना अब मैं नहीं खाऊँगा। लेकिन, बीबी ने कुछ नया नहीं बनाया। सो मियाँ ने कहा – ये क्या ? इतना कहने पर भी तू यही बनाती रहती है। आर्थिक रूप से वैसे मियाँ की हालत कमजोर थी। सो, बीवी ने कहा कि और कुछ घर में है नहीं, तो यही बनेगा और तुम्हें खाना ही पड़ेगा। मियाँ रूठ कर बैठ गया। आख़िर कब तक भूखा रहता ? सो, 4 बजे मियाँ के पेट में चूहे दौड़ने लगे। वो घर पर गया और खाना खाने बैठा, तो देखा कि वही चने की दाल और वही चने की रोटी बनी हुई है। वह बोला हम यह नहीं खाएँगे। तब बीवी ने कहा – यही चने की दाल और यही चने की रोटी जब खाओगे, तभी तुम्हारी भूख जाएगी। इसका सार समझाते हुए बापा कहते हैं कि इसी प्रकार हम लोग जब भगवान पाने के लिए निकले हैं, तो एक ही रास्ता है कि भगवान पुरुषोत्तम नारायण की पहचान करनी पड़ेगी। भगवान की पहचान क्या कि जैसे साहेब ने बात करी कि महाराज को सर्वोपरि पुरुषोत्तम नारायण समझें, गुणातीतानंदस्वामी को मूलअक्षर ब्रह्म समझें और जिन्होंने अक्षरपुरुषोत्तम के स्वरूप को प्रगटाया हुआ है, ऐसे सत्पुरुष को मोक्ष का द्वार समझें। यह ज्ञान जो समझेगा उसमें भगवान निवास करके रहते हैं। ये बात अब सब जानते हैं। हाँ, काकाजी ने एक बार बात करी थी कि इसमें तीन तत्त्व बताए हैं। एक बार मेरे ख्याल से पौषी पूनम की शिविर में ***काकाजी ने कहा था – अब मैंने और पप्पाजी ने चौथी बात की खोज की है कि उनके संबंध वाले मुक्त को भी उनके जैसे ही दिव्य मानेंगे, तो सारी प्राप्ति का प्रोसेस सरल और स्पीडी बन जाएगा।*** *तब काकाजी बोले भी थे – यह एक नई टॅक्नीक है। बाद में भी उन्होंने मुझसे कई बार बात की कि अब जो सारी डॅवलपमेन्ट होती जा रही है, वो एक एडवान्समेन्ट यह हो रही है जिससे कि सारे काम सरलता से हो सकें और स्पीडी हो सकें।*

इस उत्सव में मैंने खुद भी देखा। ढाई दिन पहले मैं यहाँ आया था, तो मैं सोचता था कि ये लोग किस प्रकार करेंगे ? मैंने आशिष से पूछा भी था, लेकिन उसने कहा – हो जाएगा गुरुजी, आप चिंता न करो। और... मैंने

*देखा कि दो दिन के अंदर तो यहाँ सब अपटूडेट हो गया। वो क्या था कि एक तो मॅन पावर और दूसरा सायन्स टेक्नोलॉजी की एडवांस्मेंट। ऐसा ही स्पीरीच्युआलिटी के लिए काकाजी ने कहा था कि ब्रह्म के संबंध मात्र से जो प्राप्ति होगी वो एकदम सरलता से हो जाए, ऐसी एक एडवांस्मेंट हुई है। गुणातीतानंदस्वामी ने कहा है – सुखपाल में बैठकर हलवा-पूरी खाकर भजन करना है। पप्पाजी इसे अलग ढंग से कहते – ब्यूक गाड़ी और ताजमहल होटल। फिर वे पूछते भी थे – तुम्हें दुःख मिश्रित सुख लेना है या प्यॉर सुख - केवल सुख लेना है? काकाजी ने इस बारे में बात की कि यदि यह पक्का करेंगे कि उनके संबंध वाले अर्थात् वो **सत्पुरुष जिन्होंने प्रभु को प्रगटाया है, मानो साहेब, दिनकरभाई, स्वामिजी, अक्षरविहारीस्वामिजी के संबंध वाले हम सभी एक-दूजे में दिव्यभाव रखेंगे, तो प्रभु को धारना – उनकी प्राप्ति आसानी से और स्पीडीली कर पाएँगे।** आज का सारा ज़माना स्पीडी है। और... स्पीडीली प्राप्त करने की यह करामत है। तीन दिन के अंदर यही बात चलती रही है। सो, यही चने की दाल यही चने की रोटी। बात तो कोई नई हुई नहीं है। कोई बाहर का आया होगा, तो उसे भी यही लगेगा कि इनके यहाँ इसके सिवाय कोई बात ही नहीं है। लेकिन असल में जैसे योगीबापा ने कहा कि जिसे भगवान चाहिए, उसके लिए यह एक ही रास्ता है कि महाराज को सर्वोपरि पुरुषोत्तम नारायण समझें। मूल अक्षरब्रह्म गुणातीतानंदस्वामी को अक्षरब्रह्म का अवतार समझें और उनके अखंड धारक सत्पुरुष के प्रति आत्मबुद्धि से जुड़े हुए हों, तो उनके **संबंधवालों के प्रति भी ऐसे ही कुटुंबभाव से, ऐसी ही आत्मीयता से हम जीवन जिया करें। आपस में इनके सुख से सुखी, इनके दुःख से हमारे भीतर भी ऐसा ही दुःख हो जाए – वो सच्ची आत्मीयता है।** किसी भगत को कोई दुःख आ गया और हम कहें कि उसका करम ही ऐसा होगा तो महाराज भी क्या करेंगे। उसका तो जो होना होगा, पर महाराज हम पर क्रॉस मारेंगे - ज़ीरो मार्क दे देंगे। उसके बजाय हम धुन - भजन करें। अपनी कक्षा के अनुसार जिस प्रकार उसे सहायभूत हो सकते हैं, ऐसे हों – वो सच्ची आत्मीयता है। ऐसी आत्मीयता मैंने काकाजी में देखी है। आप विचार करो कि कॉलेज में मुझे एड्मीशन न मिले और वो भी मेरी गल्ती से, तब भी काकाजी ऑफिस का अपना सारा काम छोड़ कर मेरे साथ कॉलेज आए और क्यू में खड़े रह कर प्रिंसिपल से बात की। काकाजी के जाने के बाद वाइस प्रिंसिपल अलीम चंदानी ने फॉर्म मंगवा कर फिर से देखा और बताया कि इसने फॉर्म ही गलत भरा हुआ है। वो फॉर्म में कोई कॉलम होगी कि तुमने कहाँ तक स्टडी की है? मुझे एड्मीशन चाहिए था इंटर सायंस में और मैंने लिख दिया था कि मैंने इंटर सायंस पास किया हुआ है। देखो, गलती मेरी थी, तब भी काकाजी उस समय कुछ बोले ही नहीं। हां, मुझे याद आया कि इतना ज़रूर कहा था – राजा, मूर्ति में रहकर फॉर्म भरा था? सो, हम कुछ न करें। पर, भक्तों के अंदर ऐसे एक कौटुम्बिक भावना से मिल-जुल जाएँ और स्वामिनारायण, स्वामिनारायण, स्वामिनारायण भजन करें।*

अंत में **प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी** ने आशिषवर्षा की –

...प.पू. साहेबजी और गुरुजी ने आशीर्वाद दे दिया। उन्होंने हमें जो समझाया वही हमें करना है। इसलिए मैं

ज़्यादा कुछ नहीं कहना चाहता हूँ। मगर सांकरदा केन्द्र की ओर से समग्र गुणातीत समाज के साथ, मैं सबको हमारी ओर से अगले साल 'बंधुजोड़ी शताब्दी उत्सव' के अंतिम सोपान में 27 से 30 दिसंबर का निमंत्रण देता हूँ। मेरी साक्षात् ये दिव्य स्वरूपों काकाजी-पप्पाजी के चरणों में और पू. हरिप्रसादस्वामिजी, पू. साहेबजी, पू. गुरुजी और सब गुणातीत स्वरूपों के चरणों में यही प्रार्थना है कि यहाँ पर जो कुछ भी हमें समझाया है कि हमारा गुणातीत समाज एक है। हम सब 'गुणातीत समाज के सदस्य' हैं, उसका हमें गौरव है–ऐसा सबके अंतर में एक साल के अंदर हो जाए, ऐसी मेरी ये स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना है।

परंतु, बंधुजोड़ी शताब्दी शिविर यहीं समाप्त नहीं हुई। सत्संग के युवकों के द्वारा बंधुजोड़ी का यशगान करना तो शेष था। अतः मंच से नीचे आकर सभी स्वरूपों ने आसन ग्रहण किया। इसी दौरान, सभी केन्द्रों के कुछ मुक्तों ने स्वरूप बहनों के समक्ष **'श्रीहरिनो सनेडो ...'** करके अपना आनंद व्यक्त किया और आख़िर में सत्संग के युवकों ने **'दिव्य बंधुजोड़ी ने देखो किया अनूठा काम...'** संक्षिप्त नृत्यनाटिका द्वारा गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी के कुछ चुनिन्दा प्रसंग दर्शा कर, बंधुजोड़ी की दिव्य स्मृति में सबको सराबोर कर दिया! फलस्वरूप प.पू. गुरुजी ने राज़ी होकर, नृत्यनाटिका तैयार करवाने के लिए गुजरात से आए **पू. प्रदीपभाई** एवं उनके सहयोगी **पू. राकेशभाई** को हार एवं स्मृति भेंट द्वारा सम्मानित किया।

प.पू. आनंदी दीदी की प्रेरणा से ही **पू. राकेशभाई शाह** एवं **पू. हेमंतभाई मर्चंट** ने इस नृत्यनाटिका का भजन तैयार किया था, सो बहनों के विभाग में **प.पू. आनंदी दीदी** पर प्रसन्नता उड़ेलते हुए **प.पू. हंसा दीदी** ने अपनी प्रसादी की शाल उन्हें ओढ़ाई और जैसे कि 25 दिसंबर क्रिसमस का बड़ा दिन था, तो मातृत्व की प्रतीक और **गुरुहरि काकाजी महाराज** की कृपादृष्टि प्राप्त **प.पू. ज्योति बहन** ने **प.पू. आनंदी दीदी** को अपनी गोद में बिठा कर, **'मधर मॅरी'** की अद्‌भुत स्मृति दी। तदोपरांत गुणातीत समाज की भगवान भजती बहनों एवं भाभियों ने प.पू. हंसा दीदी, प.पू. ज्योति बहन की निश्रा में भांगड़े के भजन पर 'आनंदोब्रह्म' करके, इस पल को चिरंजीव बना कर प्रसाद के लिए प्रस्थान किया। यूं, बंधुजोड़ी शताब्दी शिविर की अविस्मरणीय पूर्णाहुति हुई।

सच, इस शिविर में सबके आनंद का कोई छोर नहीं था। **पू. डॉ. नीलम बहन** ने तो प.पू. दीदी से कहा भी– ***यहाँ (सभा मंडप) में बैठ कर घड़ी याद ही नहीं आती और सेशन खतम होने के बाद भी ऐसा मन होता है कि यहीं बैठे रहो।***

पर, इस अलौकिक आनंद का मूल कारण तो यह था कि गुणातीत समाज के पुराने जोगी-निज़ी समाज तो एकत्र था ही और इससे भी अधिक सभी केन्द्रों से जुड़े सेवक, गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी के प्रति ऋण अदा करने और उन्हें राज़ी करने की भावना से अपने कार्यकौशल्य के अनुसार सेवा में रत थे। सो, जैसे कि गुरुहरि काकाजी महाराज की कही बात प.पू. गुरुजी बार-बार दोहराते हैं–***यह सब अकेले हाथ नहीं हुआ! धन्यवाद है मेरे साथीदारों को...*** तो, वाक़ई **संतभगवंत साहेबजी** की भी जब-जब प.पू. दीदी से बात हुई

तो उन्होंने ख़ास कहा – *कोई भी कामकाज़ हो, तो कहना।* सांकरदा से **प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी** की आज्ञा से पू. गुरुजी (निष्कामजीवनस्वामिजी), पू. बापुस्वामिजी तो शिविर से पूर्व दिल्ली मंदिर में पूछने के लिए आए कि किस प्रकार की सेवा की आवश्यकता है ? गुणातीत ज्योत से **प.पू. हंसा दीदी** की आज्ञा से पू. ईलेशभाई एवं मुक्त, पवई से **प.पू. वशीभाई**, पू. गिरीशभाई इत्यादि के साथ सेवा हेतु विचार-विमर्श करने के लिए आए और... शिविर से कई दिन पूर्व आकर मुक्त अपनी-अपनी सेवाओं में जो अपनेपन से जुट गए, उसी की सुवास ये चार दिन महसूस हुई। और तो और, प्रभु की अनुकंपा से प्रकृति ने भी कैसा साथ दिया कि उस दौरान मौसम भी खूब खुशनुमा रहा ! यूं, कई कितने ही मुक्त तन, मन, धन से भक्तिरूप सेवा में तत्पर थे कि हर एक का उल्लेख करना तो संभव ही नहीं। लेकिन, उन सभी की सेवा-भावना के प्रति नतमस्तक होकर, लेखनी को विराम देते हुए सभी **प्रत्यक्ष स्वरूपों के पवित्र चरणारविंद में प्रार्थना करते हैं कि जैसे आपने कृपा करके गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी बंधुजोड़ी शताब्दी शिविर से लाभांवित करके हमें निहाल किया, उसी प्रकार आप सभी की शताब्दी आपकी निरामय स्थूल हाज़िरी में पूरा गुणातीत कुनबा मना कर जीवन को धन्य करे... यही 12 मई–गुरुवर्य योगीजी महाराज की 126वीं जन्मजयंती एवं 12 जून–गुरुहरि काकाजी महाराज की प्राकट्य शताब्दी पर गद्‌गद् कंठ से आज़ीज़ी !!**

Statement about ownership and other particulars about newspaper —

'भगवत् कृपा' (Form IV Rule 8)

1.	Place of Publication	:	Yogi Divine Society, 'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-52
2.	Periodicity of its Publication	:	Bi-Monthly
3.	Printer's Name	:	Prabhaker Rao
4.	Nationality	:	Indian
	Address	:	'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-52
5.	Publisher's Name	:	
	Nationality	:	As above
	Address	:	
6.	Editor's Name	:	
	Nationality	:	As above
	Address	:	
7.	Owner's Name	:	Yogi Divine Society
	Nationality	:	Indian
	Address	:	'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-52

I, Prabhaker Rao, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd/-
PRABHAKER RAO
Signature of Publisher

Date: 10 May, 2018

प.पू. गुरुजी के 81वें प्राकट्य दिन की मंगल बेला...

22 से 25 दिसंबर 2017 को गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी बंधुजोड़ी शताब्दी शिविर के दौरान प.पू. गुरुजी का 80वाँ प्राकट्य पर्व, प्रत्यक्ष स्वरूपों की निश्रा में गुणातीत समाज के सभी मुक्तों ने भावपूर्ण हृदय से मनाया। सो, अब जब **13 मार्च 2018 को प.पू. गुरुजी 81 वर्ष** के हो रहे थे, तब प.पू. गुरुजी ने इस उत्सव को स्थानिक रूप से ही मनाने के लिए कहा। प.पू. गुरुजी की आंतरिक प्रसन्नता ही मुक्तों का जीवन ध्येय है। अतः प.पू. गुरुजी के 81वें प्राकट्य निमित्त कोई निमंत्रण कार्ड भी नहीं छापा, केवल वॉट्सएप से सभी को सूचित कर दिया। परंतु, प.पू. गुरुजी का प्रत्यक्ष स्वरूपों एवं अपने साथी मुक्तों के साथ जो अनूठा संबंध है, उस संबंध एवं दिव्य प्रेम के वश **प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. दासस्वामिजी, प.पू. महेन्द्र बापु** एवं **प.पू. वशीभाई** के साथ-साथ कई मुक्तों का मॅसेज आया कि वे प.पू. गुरुजी के प्राकट्य दिन पर आ ही रहे हैं। यूं, गुणातीत समाज के अधिकांश आत्मीय मुक्त इस मंगल बेला पर उपस्थित हो गए।

13 फरवरी 2018, महाशिवरात्रि-प.पू. ज्योति बहन के **85वें प्राकट्य दिन** के मंगल अवसर पर, दिल्ली सत्संग समाज की निम्न पाँच बेटियों को **प.पू. दीदी** ने **प.पू. गुरुजी** की आज्ञा से पार्षदी दीक्षा दी थी।

आत्मीय स्वजन **प.भ. राजकुमार शर्माजी** की सुपुत्री पू. करुणा, जिसे **तुलसी** नाम मिला।

प.भ. संतोष पाठकजी की दो सुपुत्री पू. श्वेता व पू. जमना जिन्हें **चंदन** व **केसर** नाम मिला।

प.भ. सुरेशसागरजी की सुपुत्री पू. सरयू जिसे **कंकु** नाम मिला

और

प.भ. लक्ष्मी शुक्लाजी की सुपुत्री पू. शुभी जिसे **मौली** नाम मिला।

जैसे कि **बहनों के किसी भी महत् कार्य के लिए प.पू. गुरुजी हमेशा मातृसंस्था 'गुणातीत ज्योत' की विभूतियों को ही आगे रखते हैं,** प.पू. दीदी ने **प.पू. हंसा दीदी** से प्रार्थना की कि 13 मार्च-प.पू. गुरुजी के 81वें प्राकट्य दिन के शुभ अवसर पर आप इन पाँच दीक्षार्थी बहनों को अपने वरद् हस्तों से **भागवती दीक्षा** प्रदान करने के लिए दिल्ली मंदिर आएँ। प.पू. हंसा दीदी ने यह प्रार्थना सहज ही स्वीकार की और अपने आगमन की सूचना भी दे दी। परंतु, मार्च की शुरुआत में उन्हें हार्ट की थोड़ी तकलीफ आई और डॉक्टर्स ने आराम करने की सलाह दी। सो, 12 मार्च की सुबह प.पू. हंसा दीदी की ओर से **प.पू. देवी बहन**, चंडीगढ़ आई हुईं **प.पू. प्रेम बहन** और मुंबई से **प.पू. माधुरी बहन** दिल्ली मंदिर आ गईं।

13 मार्च की **सुबह** नौ बजे गुणातीत समाज के सभी केन्द्रों की वडील बहनों की निश्रा में होती महापूजा के दिव्य माहौल में पाँच दीक्षार्थियों की भागवती दीक्षा संपन्न हुई और अंत में प.पू. वशीभाई, प.पू. देवी बहन, प.पू. प्रेम बहन, प.पू. माधुरी बहन एवं प.पू. दीदी ने आशिष वर्षा की।

सायं करीब छः बजे मंदिर के पीछे के प्रांगण में गुणातीत स्वरूपों के सभामंडप में प्रविष्ट होने के बाद, स्वामिनारायण धुन से प.पू. गुरुजी के 81वें प्राकट्योत्सव की विशिष्ट सभा का शुभारंभ हुआ। स्वरूपों के

आसन के पीछे गुणातीत समाज एवं राष्ट्र ध्वज को कपल करके लगाया था। ध्वजों के मध्य में गुणातीत समाज एवं हमारे राष्ट्र का लोगो लगाया था। मंच के सबसे ऊपर गुरुहरि काकाजी महाराज द्वारा दिया सूत्र – **'एकता' ही एकांतिकभाव है** और प.पू. गुरुजी के हृदय की भावना – **'कुटुंबभाव' एकता का आधार है,** अंकित था। स्वरूपों के आसनों के मध्य में हार्ट सर्जन **स्वर्गीय डॉ. नीतू मांडके** की फोटो श्रद्धांजली के रूप में लगाई थी। वह इसलिए कि ठीक बीस साल पहले उन्होंने प.पू. गुरुजी के हार्ट का ऑपरेशन खूब अपनेपन से मॅटीक्यूलस्ली किया था और उनका परिवार आज भी खूब आत्मीयता से जुड़ा हुआ है। इसीलिए उनकी धर्मपत्नी **पू. डॉ. अल्का मांडके** दिसंबर में तो आई ही थीं, फिर भी प.पू. गुरुजी के प्राकट्योत्सव के लिए दोबारा ख़ास आईं।

मंचस्थ स्वरूपों का पुष्प हार से स्वागत करने के उपरांत सर्वप्रथम **प.पू. महेन्द्र बापु** ने माहात्म्यगान करते हुए कहा –

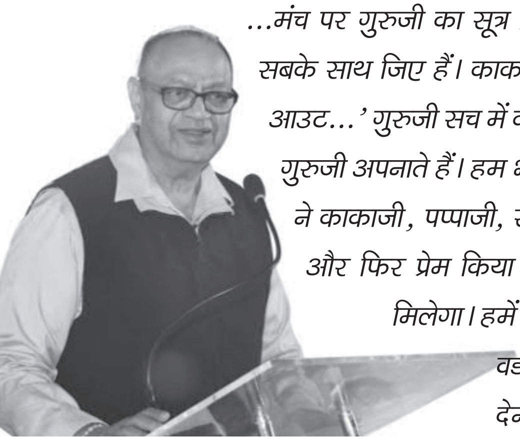

...मंच पर गुरुजी का सूत्र लिखा है – 'कुटुंबभाव एकता का आधार है।' गुरुजी ऐसी एकता से सबके साथ जिए हैं। काकाजी की भाँति गुरुजी का प्रिंसीपल रहा है – 'लिव लाईक बाय गिविंग आउट...' गुरुजी सच में काकाजी की एक बहुत बड़ी पहचान हैं... काकाजी की मास्टर की 'धुन' गुरुजी अपनाते हैं। हम भी वही मास्टर की अपना कर सुख, शांति और आनंद में रहें... गुरुजी ने काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी को माईक्रोस्कोपीक दृष्टि से विश्लेषण करके ग्रहण किया है और फिर प्रेम किया है... गुरुजी आप हमें अपना समझ कर डाँटना, तो हमें बहुत बल मिलेगा। हमें सच्ची राह बताना, चाहे हम फॉलो कर सकें या न कर सकें। आप हमारे वडील हैं, आप काकाजी की पहचान हैं, उनका रूप हैं। तो हमें खूब बल देना...

प.पू. गुरुजी से एक अनूठे सखाभाव से जुड़े **पू. दासस्वामिजी** बंधुजोड़ी शताब्दी शिविर के लिए दिसंबर में दिल्ली आने वाले ही थे, लेकिन उनके पाँव में फ्रेक्चर हो जाने के कारण वे तब आ नहीं पाए। लेकिन, जैसे कि प.पू. गुरुजी ने उनके साथ सखाभाव का अनूठा संबंध बनाया है, तो उस प्रेम के वश प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी की अनुमति लेकर वे विशेषतः आए।

उत्तरभारत में हिन्दीभाषी मुमुक्षु होने के कारण प.पू. दीदी की प्रेरणा से पू. राकेशभाई ने कुछ वर्ष पहले हिन्दी में दो श्लोक बनाए थे। लेकिन, प.पू. गुरुजी तो वह गाने की अनुमति देते ही नहीं हैं। **प.पू. शांतिभाई** एवं **पू. मनोजभाई सोनी साहेब** ने भी प.पू. गुरुजी के लिए एक अन्य श्लोक गुजराती में बना कर भेजा था। अब जब पू. दासस्वामिजी दिल्ली मंदिर आए, तो पू. राकेशभाई को विचार आया कि प.पू. दासस्वामिजी को छंद इत्यादि का अच्छा ज्ञान है, तो एक बार उनसे ये श्लोक चॅक करवा लें। सो, प.पू. दासस्वामिजी को देखने के लिए तीन श्लोक दिए गए। प.पू. दासस्वामिजी ने पू. राकेशभाई के बनाए श्लोक में बदलाव तो कर दिया, साथ ही अपनी भावना प्रकट करता एक अन्य श्लोक भी बना दिया। यूं कुल मिला कर चार श्लोक बन गए! अतः प.पू. गुरुजी के प्राकट्य पर्व की सभा में इन श्लोकों का ही विश्लेषण करते हुए **प.पू. दासस्वामिजी** ने गुणातीत समाज के समस्त मुक्तों की ओर से निम्न आशिष याचना की –

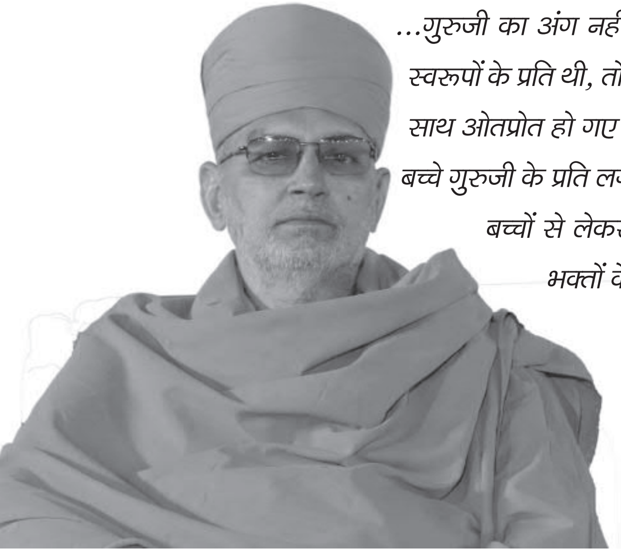

...गुरुजी का अंग नहीं था, फिर भी उनकी दृष्टि योगीबापा, काकाजी, गुणातीत स्वरूपों के प्रति थी, तो उनकी मरज़ी समझ कर, उनकी प्रसन्नता के लिए वे सबके साथ ओतप्रोत हो गए। हम आज देखते हैं कि यहाँ मच्छर काट रहे हैं, तब भी दो बच्चे गुरुजी के प्रति लगाव के वश यहाँ बैठे रहे हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि ऐसे बच्चों से लेकर मल्कानी अंकल तक, दिल्ली, पंजाब व हरियाणा के सब भक्तों के साथ वे ओतप्रोत हो गए हैं।

*जैसे कि महेन्द्र बापु ने कहा कि **गुरुजी ने अपना कुछ अस्तित्व नहीं रखा। कोई लोगो या सूत्र में या पत्रिका के किसी डिज़ाईन में कहीं भी गुरुजी दिखाई नहीं देते।** बस अक्षरपुरुषोत्तम महाराज, बापा और काकाजी को उजागर करने के लिए उन्होंने सब कुछ किया...*

जो पूरी गुणातीत परंपरा है, उसे उन्होंने मंदिर में प्रतिष्ठित कर दिया। दिखावे के लिए नहीं, गुणातीत समाज के सब संतों-भक्तों को राज़ी करने के लिए भी नहीं, लेकिन सर्वदेशीयता–संप, सुहृद्भाव, एकता का जो सिद्धांत है, उसकी पुष्टि करने के लिए और हम जो उनके जोग में आए हैं, वो इसी राह पर चलें और बापा, काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी और प्रत्यक्ष स्वरूपों की प्रसन्नता प्राप्त कर लें इस हेतु यह किया है। उनकी ऐसी भक्ति अद्वितीय है...

*उनमें कोई दंभ नहीं है, स्पष्ट कह देते हैं। स्वामिजी कई बार कहते हैं– सच्चे निर्दंभ कौन हैं? गुणातीतानंदस्वामी-अक्षरब्रह्म! अक्षरब्रह्म के गुण और उनका साधर्म्य पाने वाले ही निर्दंभ हो सकते हैं। हमारे गुरुजी ऐसे निर्दंभ हैं। बापा, काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी के साथ उनका निष्कपट संबंध है। मैं और प्रेमस्वामी तो कई सालों से देख रहे हैं कि **गुरुजी बहुत भजन करवाते हैं।** कल रात को बारह बजे के बाद गुरुजी के जन्मदिन की सबको उमंग थी, पर उन्होंने साढ़े बारह बजे से एक बजे तक भजन करवाया। नो केक कटिंग, नो हार-नथिंग डुईंग। भजन करो, बस और **भजन के समय वे सब कुछ भूल जाते हैं। उन्हें भूलने में कोशिश नहीं करनी, हमें कोशिश करनी पड़ती है... केवल भजन का ही आसरा लेना है, हमें उनसे वह सीख-प्रेरणा मिलती है।** वे किसी के बंधु, माता, पिता हैं और हम जैसों को वे सखा मानते हैं वो हमारा गौरव है।*

...आज योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी, अक्षरविहारीस्वामिजी के चरणों में प्रार्थना करनी है कि अब 81, 82, 83 वर्ष उनके अनुभव और शारीरिक दोनों रूप से भले लगें, पर 18, 19, 20, 21 यूं 100 वर्ष तक आप सब स्वस्थ रहें, यह बहुत बड़ी ज़रूरत है। यदि हमारे जीवन में से हम आपको निकाल दें, तो कुछ नहीं है। सब मुर्दे हैं हम। जो भी कुछ है वो आपका स्वास्थ्य और प्रसन्नता है। आपका अस्तित्व ही हमारे लिए सब कुछ है। जैसे कोठारीस्वामिजी भले दो-तीन साल बीमार रहे थे, लेकिन सबको एहसास होता था कि

कोठारीस्वामिजी हरिधाम में हैं। आज वो एहसास नहीं है और इस एहसास का हम जो बचे हुए हैं, उन्हें साक्षात्कार करना है। महाराज की मरज़ी से ज्योति बहन को हमने गँवा दिया, कोठारीस्वामिजी को गँवा दिया। लेकिन, अक्षरपुरुषोत्तम महाराज, शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी-पप्पाजी-स्वामिजी महाराज से ज़ाहिर मे मेरी प्रार्थना है कि सौ साल तक अब इनमें से हम किसी को गँवाना नहीं चाहते। बहुत कुछ गँवा दिया, अब बस हो गया... हम सबकी यह प्रार्थना है कि हम आपको गँवाना नहीं चाहते हैं; लेकिन जल्दी से जल्दी हम आपकी पहचान बन जाएँ, जैसे गुरुजी काकाजी और सभी स्वरूपों की पहचान बने–ऐसे हम आपकी पहचान बन जाएँ। तब तक आप इस पृथ्वी पर से दृष्टिअगोचर नहीं होना और स्वास्थ्य निरामय रहना चाहिए... धॅर शुड नॉट बी एन आयोटा ऑफ लॉस इन धी हेल्थ ऑफ धीस स्वरूप्स–ऐसी हमारी प्रार्थना है। उसमें नक्षु से लेकर मल्कानी अंकल तक सब राज़ी हैं... हमें साधना में आगे ले जाने के लिए आप हमें अधिकार से डाँटो, तिरस्कार करो, रोग या देशकाल की ज़रूरत हो तो वह दो। लेकिन, आपके स्वरूप में मनुष्यभाव और मायिकभाव न रहे। जो स्वरूप अभी विद्यमान हैं, उनमें से किसी को भी सदा, सर्वदा सौ-सौ साल के लिए हम गँवाना नहीं चाहते हैं। उन्हें इसलिए गँवाना नहीं चाहते कि हमारी जो साधना अधूरी है, उन्हें हमसे जो अपेक्षा है वह उनकी उपस्थिति में पूरी कर सकें। ऐसी पात्रता हम सब में आए... शतं जीवः गुरुजी, शतं जीवः गुरुजी !

तत्पश्चात् दिसंबर में प.पू. गुरुजी के 80वें प्राकट्य पर्व निमित्त बनाया भजन **'मुस्कुरा के जो तूने है अपना लिया'** **पू. डॉ. दिव्यांग** एवं मुक्तों ने प्रस्तुत किया। भजन के लिए म्यूज़िक बजाने के लिए, दिसंबर की भाँति अबकी बार भी **प.पू. वशीभाई** की आज्ञा से **पू. सचिनभाई परब** अपने साथियों के साथ आ गए थे। उनकी टीम के द्वारा बजाए म्यूज़िक में एक अपनापन महसूस होता है, जो भजन सुनने वालों को दिव्यता का एहसास कराता है। **पू. लक्ष्य** द्वारा भी भजन प्रस्तुत किए जाने के बाद **पू. ओ.पी. अग्रवालजी** ने प्रासंगिक उद्बोधन करते हुए कहा–

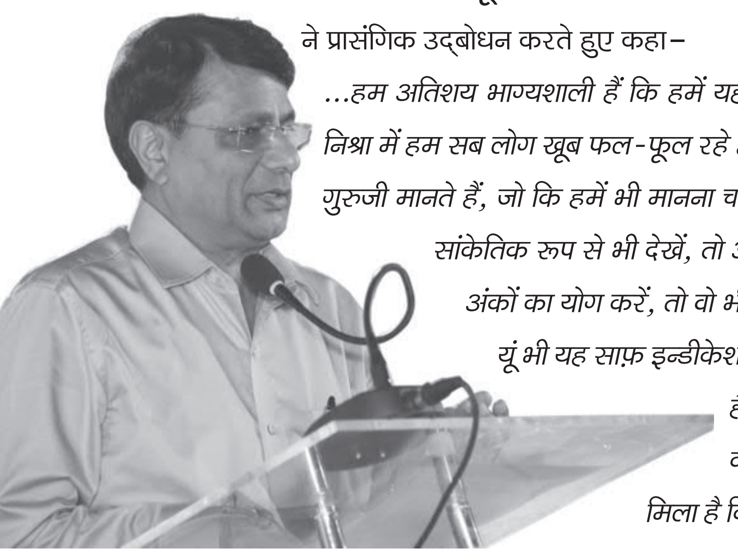

...हम अतिशय भाग्यशाली हैं कि हमें यह सत्संग मिला। ऐसे समर्थ गुरु मिले जिनकी निश्रा में हम सब लोग खूब फल-फूल रहे हैं। हम सब खूब धन्य-धन्य हो गए... जैसा कि गुरुजी मानते हैं, जो कि हमें भी मानना चाहिए कि उनका आज अट्ठारहवाँ जन्मदिन है। सांकेतिक रूप से भी देखें, तो आज का दिनाँक 13.3.2018 है और उसके सब अंकों का योग करें, तो वो भी 18 ही आता है और वर्ष भी 2018 चल रहा है। यूं भी यह साफ़ इन्डीकेशन है कि गुरुजी का हम 18वाँ जन्मदिन मना रहे हैं... ठीक 90 दिन के बाद ***12 जून*** *को काकाजी की शताब्दी भी आ रही है। हमें जीवन में मौका मिला है कि हम उसमें शामिल हो रहे हैं, जब काकाजी को*

धरती पर आए सौ वर्ष पूरे हो रहे हैं और उसके हम साक्षी बन रहे हैं। ***लौकिक कुटुंबों के अंदर भी ऐसा कुटुंबभाव हो नहीं सकता, जिसका दर्शन यहाँ होता है... हम सोचते हैं कि हमें गुरुजी से लगाव है, परंतु कई हज़ार गुना गुरुजी हमें प्यार करते हैं...***

भूल गया सब कुछ, याद नहीं अब कुछ हे गुरुजी! आई लव यू, वी लव यू।

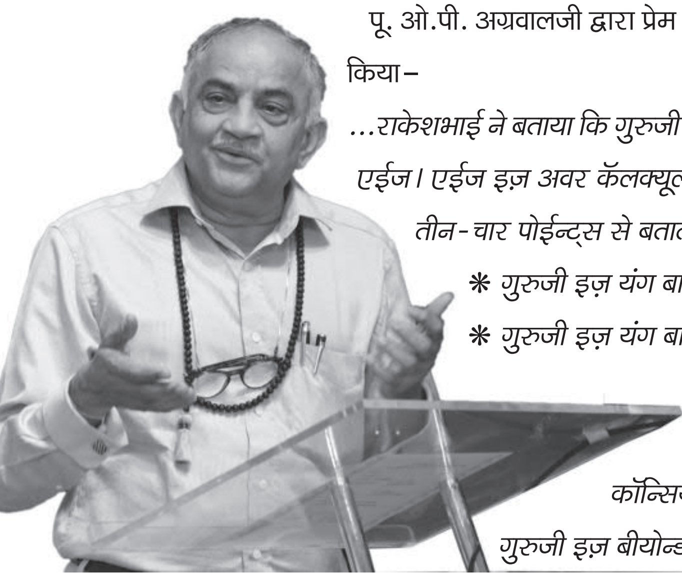

पू. ओ.पी. अग्रवालजी द्वारा प्रेम से भरे भाव के बाद, **प.पू. वशीभाई** ने माहात्म्यगान किया–

...राकेशभाई ने बताया कि गुरुजी का 18वाँ प्राकट्य दिन है। गुणातीत पुरुष इज़ बीयोन्ड एईज। एईज इज़ अवर कॅलक्यूलेशन। गुरुजी के बारे में तो सच में वे 18 साल के हैं। तीन-चार पोईन्ट्स से बताता हूँ।

* *गुरुजी इज़ यंग बाय हिज़ थिंकिंग।*
* *गुरुजी इज़ यंग बाय हिज़ रीलेशनशिप मेन्टेनन्स।*
* *गुरुजी इज़ यंग बाय मेनेजिंग धी चेईन्ज।*
* *गुरुजी इज़ यंग बाय रीमेइनिंग इन ब्राह्मिक कॉन्सियसनेस।*

गुरुजी इज़ बीयोन्ड माईन्ड, बीयोन्ड इन्टलेक्ट-ब्रह्म में रहते हैं।

...लिव विध धी प्रेज़न्ट-नाउ। पप्पाजी का सूत्र है–इसी पल धामरूप होकर जीओ। गुरुजी इसका बेस्ट एग्ज़ाम्पल हैं... हमें किसी के प्रति पूर्वाग्रह रहता है, धिस इज़ 'एईज' एन्ड नो पूर्वाग्रह–धेन ईट इज़ 'बीयोन्ड एईज'। आज की ज़रूरत है, सो गुरुजी युवक-संत बनाते हैं, गृहस्थों को भी आज के मुताबि़क सीख देते हैं। ***दासस्वामी ने जैसे बताया–ब्रह्मरूप की जो टेक्नीक है, वह वचनामृत-स्वामी की बातों का रॅफरन्स देकर वे आज की बात समझाते हैं। इसीलिए वो एईज को डिफाई (अवहेलना) करते हैं...***

दो दिन पहले गुरुजी ने कहा था कि हम आपस में एक-दूजे के प्रति माहात्म्य से जिएँ। वो माहात्म्य दृढ़ करने की चाबी स्वामी की पहले प्रकरण की पहली बात है कि महाराज अपना अक्षरधाम, पार्षद, ऐश्वर्य सब साथ लेकर आए हैं और वे वैसे के वैसे हैं... भजन से ऐसा माहात्म्य दृढ़ होता है। हम रोज़ रात को प्रार्थना करें कि हे प्रभु! मेरा स्वभाव रिलेशन बनाने में तकलीफ देता है, उसे टोल दो... काकाजी कहते थे रात का भजन सालों की ग्रंथि पिघला देता है और माहात्म्य दृढ़ कराता है।

कथावार्ता... वच. कारियाणी 12 में लिखा है कि कैसा भी कामी, क्रोधी, लंपट जीव हो, लेकिन ऐसे सत्पुरुष की बात का विश्वास करें कि वे जो कह रहे हैं, वो बात वैसी ही है। इन्होंने जो कहा है वो डेढ़ सौ प्रतिशत वैसा ही है। ऐसा मान कर, उस कथावार्ता का स्मरण करके अपने माईन्ड व दिल-दिमाग़ में उतार कर, उसका

मनन-चिंतन करके जुगाली करेंगे, तो माहात्म्य की कसर टल जाएगी और अखंड माहात्म्य में रहते हो जाएँगे...

प.पू. वशीभाई की माहात्म्य युक्त आशिष याचना के बाद सभी केन्द्रों के मुक्तों ने **प.पू. गुरुजी** को प्राकट्य दिन निमित्त **हार अर्पण** करके भावना व्यक्त की और दिल्ली मंदिर के संतों-युवकों ने सभी की ओर से बोक्स के रूप में एक विशिष्ट कार्ड अर्पण किया, जिसके खुलने पर सभी गुणातीत स्वरूपों के साथ प.पू. गुरुजी के अनूठे संबंध के दर्शन के साथ-साथ, प.पू. गुरुजी की विभिन्न मूर्तियों का भी दर्शन होता था। बीच-बीच में प्रार्थना अंकित थी। इसी दौरान **पू. संजयजी** (आलू वाले) एवं मंडल ने भजन प्रस्तुत किया।

तदोपरांत **प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी** ने आशीर्वाद दिया–

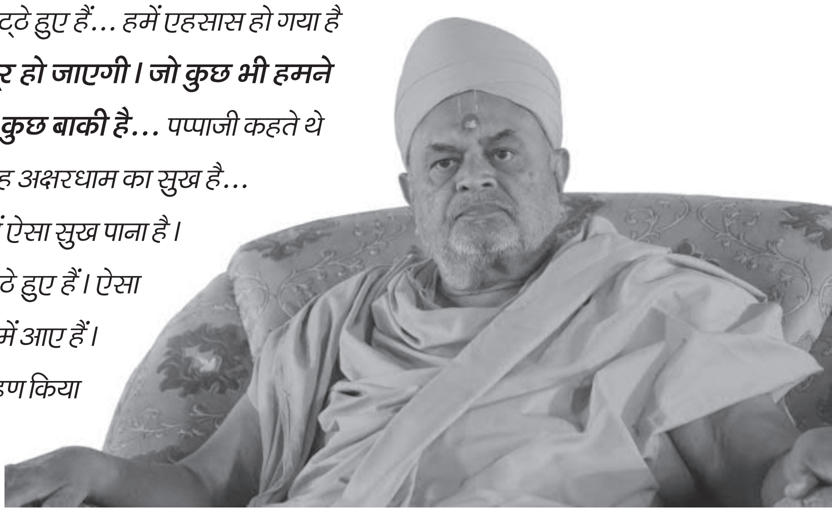

*हम यहाँ कुछ न कुछ पाने के लिए इकट्ठे हुए हैं... हमें एहसास हो गया है कि **हमारी कसर गुरुजी के द्वारा दूर हो जाएगी। जो कुछ भी हमने पाया है वह अल्टीमेट नहीं है, बहुत कुछ बाकी है...** पप्पाजी कहते थे कि जहाँ दुःख का लेशमात्र भी न हो, वह अक्षरधाम का सुख है... काकाजी कहते थे कि इसी जन्म में हमें ऐसा सुख पाना है। ऐसा सुख पाने के लिए हम यहाँ इकट्ठे हुए हैं। ऐसा सुख पाने के लिए हम गुरुजी के चरणों में आए हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि उन्होंने हमें ग्रहण किया है। सारी जिम्मेदारी उनके सिर पर है, हमें उन्हें साथ देना है। स्वामी की बातों में लिखा है कि हमें कुछ नहीं करना है, बस **गुरुजी जैसे संत जो मिले हैं, उनके समक्ष दो हाथ जोड़ कर यही कहना है कि आप जैसा कहोगे वैसा मैं करूँगा। तो ब्रह्मरूप हो जाएँगे।** यह बात बोलने में जितनी सरल लगती है, वैसा करना इतना सरल नहीं है। हमारा मन-बुद्धि कुतर्क करती है, इसलिए आसान नहीं है। पर, हमें यही करना है कि गुरुजी कुछ भी बोलें तो हम उसका पालन करें। कैसी भी परिस्थिति हो, लेकिन उनका जो वचन है उसका पालन करें तो उनकी कृपा हम पर होती है।*

गुरुजी की आप सब पर कृपा है, हर एक के साथ अलग-अलग संबंध है... गुरुजी के अंतर की प्रसन्नता प्राप्त करके जीतेजी अक्षरधाम का सुख हम सभी को सुलभ हो, ऐसी दिव्य स्वरूपों के चरणों में अंतर की प्रार्थना !

अंत में सभा की पूर्णाहुति करते हुए **प.पू. गुरुजी** ने एक जाग्रत साधक की झाँकी कराते हुए आशिष दी–

यहाँ कुछ पुराने जोगी बैठे हैं, उन्हें याद होगा कि बहुत शुरुआत में ताड़देव-काकाजी के यहां जो सत्संग होता था, वहाँ एक बात दोहराई जाती थी कि यहाँ किसी का कुछ देखना नहीं; सब दिव्य हैं। हम भी ये बातें सुनते थे।

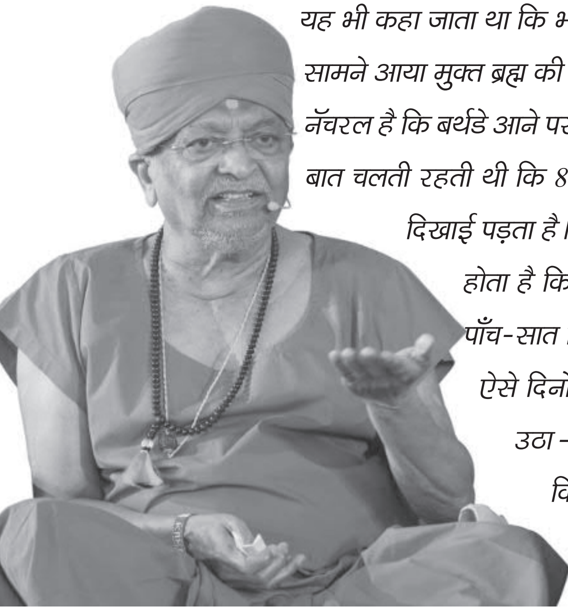

यह भी कहा जाता था कि भगवान के भक्तों को ब्रह्म की मूर्ति मानो। पप्पाजी भी कहते थे कि सामने आया मुक्त ब्रह्म की मूर्ति माना जाए...

नॅचरल है कि बर्थडे आने पर ऐसी बातों का रीकलेक्शन होता ही रहता है। मेरे दिमाग़ में भी ये बात चलती रहती थी कि 80-81 साल हो गए, लेकिन सामने आया मुक्त तो, वो जो है वो दिखाई पड़ता है। ऐसा नहीं है कि वह दिखने से कोई इरीटेशन होता है। पर, ऐसा होता है कि इसे ब्रह्म की मूर्ति कैसे माना जाए? इस उधेड़बुन में मैं पिछले पाँच-सात दिन से था।

ऐसे दिनों में मेरे मन में प्रार्थना निकल ही जाती है। सो, आज सुबह जब उठा – ऐसी प्रार्थना हुई कि महाराज आज मुझे कोई अच्छा सूत्र देना। किसी में से भी देना या सभा में से देना, कैसे भी देना। सुबह काढ़ा पीकर धुन करने के बाद मैं स्नान करने जाता हूँ।

मैं स्नान करने जाने का सोच ही रहा था कि इतने में एक मुक्त मेरा नाश्ता लेकर आया।

मैंने उसे सहज ही मज़ाक में पूछा – आप नाश्ता लेकर आए हो, तो नहा कर आए हो?

उसने कहा – हाँ, नहा कर आया हूँ।

मैंने पलट कर कहा – तुम लगते तो नहीं हो कि नहाए हो।

उसने फट् से जवाब दिया – आप नहीं नहाए हो, इसलिए हम नहाए हुए नहीं लग रहे। आप नहा लो, तो आपको लगेगा कि हम नहा कर आए हैं।

बात छोटी-सी, मज़ाक की है। पर, असल में मैंने जो प्रार्थना की थी, उसका ये जवाब था कि **तुम ब्रह्मरूप हो जाओगे, तो सामने वाले को तुम ब्रह्मरूप मान पाओगे।** अपने महाराज किसी को छोड़ते नहीं हैं। यूं साफ़-साफ़ बता दिया कि यदि हम ब्रह्मरूप हो जाएंगे, तो सामने वाले ब्रह्म की मूर्ति माने जाएंगे।

जिन-जिन्होंने योगीजी महाराज को देखा है, वे कह ही नहीं सकते कि योगीजी महाराज हमें दिव्य नहीं मानते थे। काकाजी भी ऐसे ही थे। एक बार तो काकाजी ने मुझसे कहा – मैं तुझे दिव्य मानता हूँ, तू मुझे क्यों नहीं मान पाता। ये तो स्वरूप को दिव्य मानने की बात है; मुक्तों को दिव्य मानने की बात तो काफ़ी दूर की बन गई! तो आज के दिन पहले तो इस हेतु प्रार्थना करनी है; इसके अतिरिक्त कोई उपाय ही नहीं है। भगतजी महाराज ने कहा था कि मेरा जीव सत्संगी हो जाए। हम खुद ब्रह्मरूप हों, ऐसा महाराज आप हमें कर दो...

सभी ने तारीफ़ की कि गुरुजी ने यहाँ कुटुंबभाव प्रगटाया है। बेशक़ ये हमेशा **मेरी ख़्वाईश रही है कि हम एक फॅमीली की तरह ही रहें। जहाँ एक-दूसरे को कुछ कह भी सकें। हक़दावा भी कर सकें, उनके काम में भी एक फॅमीली मेम्बर की तरह इन्वॉल्व हों।** पर, ये सब मुझे महाराज ने आप सबके

द्वारा सिखाया है।

1997 में मुझे हार्ट की तकलीफ आई, तो दिल्ली के महावीर अस्पताल में मुझे ले जाया गया। मुझे एकदम ख्याल आया कि इसके लिए तो मुझे डॉ. मांडके के पास मुंबई जाना है। क्योंकि मुझे पता था कि डॉ. मांडके का स्वामिजी के साथ बहुत क्लोज़ रेपर्ट है। सो, मैंने डिसाईड किया कि वहीं जाऊँगा; जबकि उस समय कोई भी मॅडिकल ट्रीटमेन्ट के लिए लोग 'एम्स' में दिल्ली आते थे। कइयों ने कहा भी कि सब दिल्ली आते हैं और... ! उस समय पप्पाजी भी विराजमान थे; उनसे भी कहा कि गुरुजी से कहिए कि यहीं ट्रीटमेन्ट करवा लें।

पर, जैसे कि पप्पाजी कहते थे कि हम साक्षीभाव में रहें, वैसा वे जी करके दिखाते थे।

पप्पाजी ने तो कह दिया – गुरुजी को जहाँ तसल्ली लगती हो, वहाँ उसे जाने दो। हम क्यों बीच में इन्टरप्ट करें ?

डॉ. मांडके को फोन किया तो उन्होंने सीधा अस्पताल आने के लिए कहा।

मुंबई में लीलावती अस्पताल में गए, मेरा ऑपरेशन हो गया। तब पाँच-छः दिन वहाँ रहा।

आख़िर में बिल आया।

उसे देख कर मैंने कहा – साईन कर देता हूँ, पर एक बार डॉ. मांडके को दिखा दें, क्योंकि ऑपरेशन उन्होंने किया है।

डॉ. मांडके आख़िर समय में मिलने आए, तो हमने उन्हें बिल दिया।

डॉ. मांडके ने डॉक्टर्स की लाख-सवा लाख फीस पर सर्कल कर दिया और बोले – इन लोगों को पता नहीं है कि आपका और मेरा क्या रीलेशन है ? तुम्हारी फीस मैं थोड़े ले सकता हूँ ?

मैंने कहा – डॉक्टर, अस्पताल में इन्होंने जिस ढंग से किया होगा, वह बराबर ही किया होगा।

वे एकदम बोले – अरे ! मेरे बाप का ऑपरेशन किया है, तो इनकी ऐसी हिम्मत कैसे हुई कि मेरी फीस लिखें।

यूं, महाराज ने ऐसे मुक्तों को भेज कर कुटुंबभाव मेरे अंदर दृढ़ कराया है। वर्ना मैं बहुत सॅल्फफिश हूँ। अब यह सॅल्फफिशनेस धीरे-धीरे डायवर्ट हुई होगी, वो बात अलग है।

इस कुटुंबभाव को प्रगटाने के लिए भी पुराने या नए सभी जानते हैं कि गुरुजी के जीवन के अंदर सबसे बड़ा रोल काकाजी का है। ***सत्संग की ए,बी,सी,डी से लेकर आज जो मैं बीहेव करता हूँ, वो सारी काकाजी की देन है। मेरे जीवन के अंदर यदि काकाजी नहीं होते, तो इस सत्संग में मेरा कोई अस्तित्व रह नहीं सकता... मेरा क्या, आज सत्संग का, इवन बॅप्स का भी जो बोलबाला है, बुनियाद में वो काकाजी की बदौलत है। मेरी बात शायद कइयों को न भी जँचे, लेकिन भीतर में तो वे भी इस बात को समझते होंगे।*** *किस तरह कि – योगीजी महाराज को तो सब ऑडिनरी भले-भोले और सेवाभावी साधु समझते थे। लेकिन, समाधि में काकाजी ने महाराज के स्थान पर उन्हें देखा, तो काकाजी ने ये बिगुल बजाया कि जोगी महाराज भगवान का भव्य स्वरूप हैं, महाराज स्वयं उनके द्वारा काम करते हैं। फिर जो समाज*

तैयार हुआ वो 'योगी परिवार' धीरे-धीरे आज 'गुणातीत समाज' बना नज़र आता है। वो सुख, आनंद या बेनिफिट के आज हम हिस्सेदार बने हुए हैं। तो, आज जो कुछ भी हैं वो हम न भूलें कि काकाजी की बदौलत हैं। मैं तो काकाजी की धीरज पर फिदा हूँ। पहले तो उन्होंने सबके दिल में अपना स्थान बना लिया, फिर जीव में बिठाया कि काकाजी हमारे हैं, हमारा जीवन काकाजी के लिए है। पर, इससे उन्हें अपनी पूजा नहीं करवानी थी। धीरे-धीरे जैसे इनकी बातों का हर एक को भरोसा आने लगा, वैसे अक्षरधाम से पप्पाजी इत्यादि चैतन्य मुक्तों की जो सारी केबिनेट आई, वे उनकी दिव्यता - महिमा ज़ाहिर करने लगे।

*मैं युवक था, तब बा की कोई बात मुझे जँची नहीं, सो मैं उनके बारे में बड़बड़ाते हुए 6 डी में पहुँचा। तब कांतिकाका भी वहीं बैठे थे। मेरी बड़बड़ाहट सुन कर उन्होंने मुझसे कहा कि इसमें पड़ना नहीं। कांतिकाका का एक डर भी था और ऐसा भी था कि वे अपने हैं, उन्हें ज़्यादा ख्याल होगा। फिर मेरा लटका हुआ मुँह देख कर काकाजी ने खूब पूछा, तो मैंने उन्हें बताया। उन्होंने एक ही बात की कि–**तू समझे या न समझे, 'आ पप्पो भी मारा जेवो ज छे।' तो हमारे बीच में कभी पड़ना नहीं। जैसी मेरी आज्ञा मानता है, वैसी पप्पा की भी मानना और यदि मेरी आज्ञा न मान कर तू पप्पा की आज्ञा मानेगा, तो मैं तुझ पर ज़्यादा राज़ी हो जाऊँगा।***

यूं, एक देशस्थज्ञान में से सर्वदेशीयता में वे हमें ले गए हैं।

आज सारा समाज ये मानने के लिए तैयार तो हो गया है कि महाराज एक ही जगह से प्रगट रहते हैं, ऐसी बात नहीं है। हम भी मानते हैं कि महाराज सिर्फ 'गुणातीत समाज' के अंदर प्रगट हैं, ऐसा नहीं है। आज प्रमुखस्वामी, महंतस्वामी के द्वारा महाराज वैसे के वैसे कार्य कर रहे हैं। ये दूसरी डवलपमेन्ट हुई।

अब तीसरी बात यह आई है कि जहाँ हमारी सबकी गाड़ी अटकी हुई मानी जाए। मैं कई बार कहता हूँ कि हमें एक-दूजे के साथ प्यार, लगाव, मुहब्बत, अपनापन ज़रूर है, पर जो महिमा होनी चाहिए वहाँ कसर पड़ जाती है। तो, जन्मदिन के दिन दूसरी कोई बात करनी नहीं है। हम इस फेज़ को पार कर लें। हम बोलते ज़रूर हैं कि सारी सभा अक्षरधाम की है, लेकिन दिल की सच्चाई से सोचना कि हम मानते हैं कि यह अक्षरधाम की सभा है ? नहीं मान पाएँगे। तो यह पक्का हो जाए कि 'जहाँ देखें वहाँ रामजी', वो परम एकांतिक स्थिति को हम पाएँ।

ये मैं इसलिए कहता हूँ कि एक बात का मुझे ख्याल आ गया है कि जैसे अक्षरविहारीस्वामिजी ने बात की कि आज्ञा पालनी पड़ेगी, ऐसा है-वैसा है। पर, यहाँ कैसा है कि आज्ञा नहीं भी पालेंगे तो गुणातीतानंदस्वामी ने आशीर्वाद दिया है कि सभी को मारकूट कर भी अक्षरधाम में ले जाना है। सो, इस बारे में तो निश्चिंतता है। मार ज़्यादा या कम कितनी खानी, वो हम पर निर्भर है। वो आज सोच लें... यही चने की दाल, यही चने की रोटी जब खाएंगे तब भूख जाएगी। अक्षरधाम की सभा का 'दर्शन' जब हमें धरती पर हो जाएगा, तब हमारी भूख मिट जाएगी...

और... विसर्जन प्रार्थना करके सभी ने प्रसाद के लिए प्रस्थान किया... ❑

अलविदा... दासत्वभक्ति के मूर्तस्वरूप प.पू. कोठारीस्वामिजी !

'पंजा एक' – ऐसा तुम पाँच संतों (स्नेहलमंडल) को दृढ़ कराना है। इस मुद्दे के काम में मेरा साथ देना। हमें अखंड अक्षरधाम में ही रहना है। जो फ़र्क़ रखेगा, उसे अंत में परेशानी रहेगी ही।

– गुरुहरि काकाजी महाराज

गुरुहरि काकाजी महाराज का स्नेहलमंडल यानि – प.पू. कोठारीस्वामिजी, प.पू. गुरुजी, प.पू. शास्त्रीस्वामिजी, प.पू. प्रेमस्वामिजी एवं प.पू. दासस्वामिजी ! वाक़ई, पू. कोठारीस्वामिजी के नेतृत्व में इस स्नेहलमंडल ने गुरुहरि काकाजी महाराज के इस आशीर्वाद को आत्मसात् करके प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूपों की आंतरिक प्रसन्नता पाई...

गत वर्ष **13 नवंबर 2017** की सुबह करीब नौ बजे, कई सालों से किडनी के असहनीय रोग को भी प्रकट प्रभु का प्रसाद मान कर जीते, **प.पू. कोठारीस्वामिजी अक्षरधाम सिधारे** !

यह खबर सुनते ही प.पू. गुरुजी का हृदय रो पड़ा और तुरंत ही प.पू. कोठारीस्वामिजी के अंतिम दर्शन हेतु वड़ोदरा जाने की तैयारी में लग पड़े। और... सुबह साढ़े ग्यारह बजे तो प.पू. गुरुजी, पू. सुहृदस्वामिजी, पू. अभिषेक एवं पू. आशिष एयरपोर्ट जाने के लिए मंदिर से रवाना हो गए। सायं पौने चार बजे बड़ौदा पहुँच कर सीधा हरिधाम प.पू. कोठारीस्वामिजी के दर्शनार्थ पहुँचे। अंबरीष हॉल में उन्हें पुष्प हार अर्पण किया। उपस्थित मुक्तों द्वारा पूजन होने के तत्पश्चात् प.पू. कोठारीस्वामिजी की पालकी को रथ पर विराजित करके 'स्वामिनारायण धुन' का जाप करते हुए अंत्येष्ठि स्थल पर ले गए। **प.पू. स्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. संतभगवंत साहेबजी, प.पू. गुरुजी, प.पू. निर्मलस्वामिजी, प.पू. भरतभाई** के रूप में समस्त गुणातीत समाज की हाज़िरी में प.पू. कोठारीस्वामिजी को अंतिम विदाई दी गई। उनकी पंचभूत की देह भले ही विश्वानल को समर्पित हो गई, किन्तु संतत्व की सुवास और साधुता से भरी उनकी स्मृति सभी के हृदय में सदैव के लिए अंकित हो गई है।

प.पू. स्वामिजी से आज्ञा लेकर, प.पू. गुरुजी रात की सवा नौ बजे की फ्लाईट से दिल्ली के लिए रवाना होकर, उसी रात को ही करीब बारह बजे दिल्ली मंदिर पहुँचे।

गुजरात, माणावदर के निवासी पू. देवशीभाई पटेल एवं पू. रूडीबा के यहाँ 'कुरजीभाई' रूप में जन्मे, प.पू. कोठारीस्वामिजी का परिवार आरंभ से ही स्वामिनारायण संप्रदाय का अनुयायी था। अतः अपने पिता एवं भ्राताश्री हरिभाई साहेब के ज़रिए वे गुरुवर्य योगीजी महाराज एवं गुरुहरि काकाजी के संपर्क में आए। गुरुवर्य योगीजी महाराज ने उनकी चेतना को परख कर, उन्हें साधु बनने के लिए आग्रह किया; जबकि प.पू. कोठारीस्वामिजी साधु बनने के लिए असमंजस में थे। गुरुवर्य योगीजी महाराज ने 51 शिक्षित युवकों को साधु बनाने का एक बिगुल बजाया था। इस भगीरथ कार्य में साथ देने के लिए गुरुहरि काकाजी दिन-रात जुटे हुए थे। अतः प.पू. बापा की अथाह महिमा का गान करके, गुरुहरि काकाजी ने प.पू. कोठारीस्वामिजी को

साधु बनने के लिए तैयार कर लिया।

यूं जूनागढ़ की बाउद्दीन सायन्स कॉलेज में शिक्षा लेते **पू. कुरजीभाई**, गुरुहरि काकाजी के प्रेम के वश 51 योगेश्वरों के साथ प.पू. बापा के वरद् हस्त साधु की दीक्षा प्राप्त करके **'साधु पुरुषोत्तमचरणदास'** बने। साधु बनने के बाद दादर मंदिर में प.पू. बापा व काकाजी के ही भाव से प.पू. महंतस्वामिजी की निश्रा में रहते हुए, तकिए-बिछौने के विभाग के 'कोठारी' के रूप में उन्होंने खूब भावना से सेवा की। उनकी सादगी, विनयशील तथा संवेदनशील व्यवहार से प.पू. महंतस्वामिजी भी अत्यंत राज़ी थे। संस्था से पृथक होने के बाद गुरुहरि काकाजी के वचन से, वे प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी की निश्रा में सोखड़ा मंदिर में आए। सोखड़ा मंदिर में रहते हुए प.पू. स्वामिजी ने उन्हें कोठारी के रूप में नियुक्त किया। तब से वे **'कोठारीस्वामी'** के रूप में पहचाने जाने लगे। अपने सहज-सरल स्वभाव के कारण, पू. प्रेमस्वामी को अपने संगी के रूप में रखते हुए वे सभी गुणातीत स्वरूपों के दिल में बस गए। पुराने मुक्तों ने **गुरुहरि काकाजी को 'पू. अश्विनभाई - पू. शांतिभाई' की भाँति, 'कोठारीस्वामी-प्रेमस्वामी' की जोड़ी का नाम दोहराते अकसर सुना ही है...**

साधना के आरंभ में प्रत्येक साधक को भीतर या बाहर की कोई न कोई परेशानी आती है। अतः साधक, सत्पुरुष से एकांत में, अपने मन की बात भी कर लेता है। परंतु, साधु बनने के बाद शुरुआत के दिनों से ही सभी ने देखा कि वे कभी भी गुरुवर्य योगीजी महाराज या गुरुहरि काकाजी के पास एकांत में बैठे ही नहीं। एक बार तो **गुरुहरि पप्पाजी** ने उनसे पूछा भी– *तुम्हें कभी बेचैनी नहीं होती ?*

प्रत्युत्तर में **प.पू. कोठारीस्वामिजी** ने कहा था– *बेचैन तो मेरा मन ही होता है न ! मुझे तो बापा की स्मृति में निमग्न रहना है।*

वाक़ई, प.पू. बापा की स्मृति से ऐसी भावना से युक्त पू. कोठारीस्वामिजी की प्रकृति दिव्य बनी। *'जैसे प्रभु रखें, वैसे रहना है'*–ऐसी एक दृढ़ता से उन्होंने प्रत्येक परिस्थिति को अत्यंत समता व सहजता से स्वीकारा। और... उनके निर्दंभ, प्रेमालु एवं मातृत्वयुक्त स्वभाव के कारण **प.पू. स्वामिजी** ने उन्हें **'चैतन्य जननी'** और **'सत्संग समाज के माता-पिता'** के रूप में नवाज़ा! **गुरुहरि काकाजी** तो उन्हें **'मन बिना का साधु'** कहते। गुरुहरि काकाजी एवं प.पू. स्वामिजी के प्रति उनकी दासत्वभक्ति आदर्श रूप है।

यूं तो पिछले दो साल से प.पू. गुरुजी कई बार प.पू. कोठारीस्वामिजी की तबियत देखने के लिए कभी सोखड़ा, बड़ौदा, राजकोट या मुंबई भी गए और पू. डॉ. महेन्द्र मर्चंट से तो अकसर उनकी तबियत के विषय में पूछते ही थे। लेकिन, पिछले वर्ष दीवाली-अन्नकूट के तुरंत बाद प.पू. गुरुजी, प.पू. स्वामिजी के बुलाने पर सोखड़ा गए थे। तब प.पू. कोठारीस्वामिजी की तबियत देख कर वे खूब चिंतित भी हुए। लेकिन, **प.पू. स्वामिजी** ने उन्हें प.पू. कोठारीस्वामिजी की तबियत अच्छी होने का आश्वासन देते हुए कहा–

मैं छः महीने तो विदेश में रहता हूँ और यहाँ आने के बाद में भी अकसर बाहर ही होता हूँ। लेकिन, कोठारीस्वामी ने सोखड़ा मंदिर का कार्यभार न केवल अच्छी तरह, बल्कि मेरी रुचि-मरज़ी के अनुसार बहुत अच्छी तरह संभाला है...

प.पू. गुरुजी को यह बात इतनी स्पर्श कर गई कि दिल्ली मंदिर लौटने के बाद उन्होंने सेवकों के समक्ष खूब गद्‌गद् हृदय से यह बात दोहराई। देखा जाए तो प.पू. कोठारीस्वामिजी प.पू. स्वामिजी की एक बाँह या एक फेफड़ा कहे जाएँ। सो, ऐसे दिव्य पुरुष को श्रद्धा सुमन अर्पण करते हुए, उनके पुनीत चरणों में यही प्रार्थना कि आपकी भाँति हम सभी अपने प्रत्यक्ष प्रभु को निश्चिंत करके जीवन को धन्य कर लें...

ज्योति-सी ज्योत जलाते रहें...

गुणातीत समाज के अधिकांश मुक्त समाज को अवगत ही है कि **14 जनवरी 2018** – मकरसंक्रांति के पावन दिन प.पू. काकाजी के शब्दों में – **'निर्दोषबुद्धि की बुलबुल'**, गुणातीत समाज के सर्जन व उत्थान का अभिन्न अंग बनी **प.पू. ज्योति बहन** ने सुबह 3:25 पर, मुंबई के लीलावती अस्पताल में स्थूल शरीर त्याग कर सर्वत्र व्यापक रूप धर लिया! जिस भूमि पर सर्वप्रथम उन्होंने एवं प.पू. तारा बहन ने स्त्री स्वातंत्र्य व स्वाधीनता का प्रतीक बन कर भगवान भजने का निर्णय लिया था, वहीं पर अपनी जीवनलीला समेटी। मुंबई से उनका पार्थिव शरीर गुजरात लाने के बाद, देश-विदेश से उनके अंतिम दर्शन हेतु आ रहे मुक्तों के इंतज़ार में करमसद के अस्पताल में दो दिन रखा गया। 16 जनवरी की सुबह उनकी कर्मभूमि 'गुणातीत ज्योत' के प्रांगण में उनका पार्थिव देह सभी के दर्शनार्थ रखा गया।

इसी दौरान, प.पू. ज्योति बहन के प्रति मुक्तों के अटूट विश्वास और प्रेम का दर्शन हुआ, जब सात लड़कियों ने प.पू. ज्योति बहन के पार्थिव देह के समक्ष **प.पू. हंसा दीदी** के वरद् हस्त भागवती दीक्षा प्राप्त की। सच, यह क्षण खूब संवदेनशील व मननीय था कि जिस गुरु की निश्रा हेतु भगवान भजने का निर्णय लिया था, उसकी स्थूल रूप से ग़ैरमौज़ूदगी होने पर भी मुमुक्षु बहनें अपने मार्ग पर अडिग रहीं! **वाक़ई, उन्होंने प.पू. ज्योति बहन को जीवंत माना होगा तभी यह कदम ले पाईं होंगी न!** गुणातीत समाज के सभी केन्द्रों के मुक्तों ने प.पू. ज्योति बहन का पूजन, आरती, प्रदक्षिणा की और फिर गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी, प.पू. सोनाबा-बेन की मूर्ति सहित **'समन्वय रथ'** में उन्हें विराजमान करके, प्रभुकृपा व गुणातीत ज्योत की प्रदक्षिणा करवाई। स्वामिनारायण मंत्रोच्चार के साथ रथ ने **'पप्पाजी तीर्थ'** की ओर प्रस्थान किया। मार्ग में **'ब्रह्मज्योति'** पर गुरुहरि काकाजी एवं प.पू. सोनाबा की समाधि की प्रदक्षिणा करने के बाद रथ 'पप्पाजी तीर्थ' पहुँचा।

यहाँ भी एक अकल्पनीय निष्ठा व प्रीति का दर्शन हुआ। देह त्याग से पहले किसी मुक्त को प.पू. ज्योति बहन ने कहा होगा कि तुम्हारी शादी मैं कराऊँगी। सो, उस लड़के-लड़की ने प.पू. ज्योति बहन को प्रगट मान कर, उनके पार्थिव देह के समक्ष एक-दूजे को वरमाला पहनाई और सात प्रदक्षिणा करके दृढ़तापूर्वक माना कि प.पू. ज्योति बहन ने आज हमारा विवाह करवा दिया! सच, प.पू. ज्योति बहन ने मुक्तों के दिल में कैसा स्थान लिया होगा ? सभी मुक्तों द्वारा दर्शन, प्रदक्षिणा व आरती के बाद अंत्येष्ठि विधि हुई। सभी आंतरिक रुदन से खूब भरे थे क्योंकि प.पू. ज्योति बहन तो किसी के लिए भगवान का स्वरूप, किसी के लिए मातृछाया, किसी की बहन या किसी की सखी या किसी की तो सर्वस्व थीं। इसलिए अंतर से एक प्रार्थना होती थी –

हे ज्योति बहन आपको पाने के लिए तो वर्षों लग जाएँ,
आपकी भक्ति की रीति है अनोखी, उसे समझ कर वर्तने का प्रयास करें तो वर्षों लग जाएँ,
ईश्वर के अनंत अवतारों के विषय में सुना है, लेकिन...

आप व प.पू. सोनाबा जैसी सर्वदेशीय स्त्री की देह में ईश्वरी तत्त्व को पुनः आगमन करने में कई युग लगेंगे।

वाक़ई , प.पू. ज्योति बहन का ब्रह्मलीन होना गुणातीत समाज के लिए एक भारी क्षति कही जाए। दरअसल, **वे पूरे सत्संग समाज केन्द्रों को आपस में जोड़ने वाली एक कड़ी थीं।** वे जिससे भी मिलती उसे अपनी निजी लगती थीं। यहाँ तक कि गुणातीत समाज में भगवान भजती प्रत्येक केन्द्र की बहनों को वे अपनी लगतीं। सभी के साथ उनका कैसा अपनापन होगा कि सच्ची सूझ देने के लिए हमेशा वे तत्पर रहती थीं।

एक बार वे दिल्ली-अक्षरज्योति आई हुई थीं। तब बहनें किराए के फ्लैट में रहती थीं। अक्षरज्योति की साधक बहन से काँच का एक कप टूट गया।

वहाँ से गुज़रते हुए सहज ही प.पू. ज्योति बहन ने उनसे पूछा – *अब टूटे हुए इस कप का क्या करोगी ?*

साधक बहन ने कहा – *कूड़ेदान में डाल दूँगी, ताकि किसी को चुभ न जाए।*

प.पू. ज्योति बहन फट् बोलीं – *इसी प्रकार, हमारे जड़-स्वभाव जो मुक्तों को चुभ जाते हैं, वो भगवान व संत को जँचते नहीं। सो, उन्हें भी इस प्रकार फैंक देना चाहिए।*

यूँ, अध्यात्म सूझ देने में वे हमेशा स्पष्ट रहीं। लेकिन, यह उन्होंने स्वयं से जीकर दिखाया; सो ही उनकी बातें सबको अपील भी करती थीं। उनका वर्तन ही बातें करता था।

85 वर्ष की आयु में एक महीना आईसोलेशन में रहने के बावजूद, **21 दिसंबर से 26 दिसंबर 2017 – गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी बंधुजोड़ी शताब्दी शिविर में वे ज़बरन् दिल्ली आईं।** उनकी तबियत देखते हुए निजी सेविकाओं और यहाँ तक कि प.पू. आनंदी दीदी ने फोन द्वारा उन्हें तबियत संभालने हेतु न आने के लिए प्रार्थना की और प.पू. गुरुजी ने भी न आकर वहीं से आशीर्वाद भेजने के लिए कहलवाया। लेकिन, उनका एक ही उत्तर रहा –

मैं पॅरिस-अमेरिका, किसी भी जगह शताब्दी में नहीं जा पाई थी, अब जब मेरे घर में ही यह उत्सव है, तब भले ही 'अक्षरज्योति' में आराम करूँगी, पर मुझे तो आना ही है।

अचंभे की बात थी कि 21 तारीख़ को दिल्ली एयरपोर्ट पर उतरने के बाद, दो घंटे का ट्रॉफिक झेल कर वे पू. मल्कानी अंकल के घर पू. शीला आंटी की तबियत देखने के लिए गईं। फिर वहाँ से दो घंटे ट्रॉफिक की थकान सह कर अशोकविहार मंदिर पहुँची। तब भी वे एकदम फ्रेश लगती थीं और शिविर के चारों दिन करीब चार-चार घंटे के सभी सत्रों में वे सतत हाज़िर रहीं।

25 दिसंबर, सायं शिविर की पूर्णाहुति के बाद सभी बहनों व भाभियों के साथ उन्होंने जो आनंद किया, वह वीडियो देख कर तो कोई कल्पना ही नहीं कर पाएगा कि चंद दिनों के बाद ही इस प.पू. ज्योति बहन ने स्थूल रूप से विदा ली होगी। पर, वे अपनी संकल्प शक्ति से ही **प.पू. गुरुजी के प्रति अपने अपनत्व की अभिव्यक्ति करने** एवं **दिल्ली में सबको अंतिम दर्शन-स्मृतियाँ देने के लिए आई थीं।**

सो ही, 25 दिसंबर की दोपहर को वे स्वयं रसोई में गईं व रोटी बना कर, उस पर चीनी लगा कर उन्होंने प.पू. गुरुजी के लिए भिजवाई और कहलवाया – *लो, मुँह मीठा करो !*

इससे भी अधिक, जैसे कि आजीवन उन्होंने अपने वर्तन से सबके लिए सेवा का आदर्श प्रस्तुत किया है। जब रात को करीब साढ़े ग्यारह बजे अक्षरज्योति में मॅसेज आया कि जो मुक्त कल लौट रहे हैं उनके लिए

'दिव्यधाम' में पूरियाँ बनाई जा रही हैं, तब प.पू. ज्योति बहन अक्षरज्योति में ही रुके हुए थे। उन्होंने जैसे ही यह सुना तो धीरे से अपनी सेविका से कहा– *चल, हम 'दिव्यधाम' पूरी बनाने के लिए चलें।* और... 'अक्षरज्योति' में किसी को बताए बिना, पू. ऋषभ गोयल – जिसने नृत्यनाटिका में कांतिकाका का किरदार किया था, उसके साथ गाड़ी में 'दिव्यधाम' के रसोईघर में पहुँच कर कहने लगीं कि पूरी बनवाने के लिए आई हूँ। **यूं , 85 वर्ष की आयु में भी उन्होंने अपने ब्रह्मसूत्र– 'लावो सेवा ! सेवक हाज़िर है' का सभी को दर्शन कराया !** बेशक, यह पता चलते ही प.पू. गुरुजी ने उन्हें वापिस बुलवा लिया था।

गुरुहरि काकाजी के अंतर्धान होने के पश्चात् गुरुहरि पप्पाजी ने प.पू. गुरुजी से कहा था कि प्रभुधारक दिव्य विभूति तो चिरंजीव हैं; उनके साथ की पलों को हम शाश्वत् कर लेंगे, तो हमारे लिए वे गए ही नहीं हैं– सदैव साथ ही हैं। तो, प.पू. ज्योति बहन के निम्न ग्यारह ब्रह्मसूत्रों को आदर्श बना कर, अपने अंतर में उतार कर सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करें–

1. सत्पुरुष का चिंतन ही प्रारब्ध मिटाने का इरेज़र है।
2. जो झुकता है, वो नारायण को जँचता है। हे मन ! तू झुक।
3. कल करना सो आज कर, आज करना सो अब।
4. नींव के बिना की यह इमारत धड़ाम से गिर जाएगी, तो इससे काम कब लेंगे ?
5. सब कुछ जानने के बावजूद भी मिट्टी के लौंदे की भाँति फ्लॅक्सीबल बन जाना।
6. श्रद्धा से प्रार्थना करने वाले को साधना मुश्किल लगती ही नहीं।
7. अहोहो ! अखंड आनंद किया करो।
8. 'करेंगे या मरेंगे' की भावना से प्रभु के लिए या-होम हो जाना।
9. प्रभु को अपना मन सौंप देंगे, तो उन्हें हमारे तंत्र का जैसे इस्तेमाल करना होगा, वैसा करेंगे।
10. विश्वासु को उदासी आ ही नहीं सकती। कुरेद कर दुःख खड़े नहीं करना।
11. अडिग निश्चय, अगाध श्रद्धा और अखूट विश्वास से जो साधना करता है, उसके लिए कुछ भी असंभव नहीं है।

ऐसी साधना हिमालय को पिघला देती है, ब्रह्मांड को उखाड़ कर फेंक देती है और भगवान को वश में कर लेती है।

जितनी साधना करेंगे, उतनी प्राप्ति और सिद्धि मिलती है।

हे ! चैतन्य जननी ब्रह्मस्वरूपिणी ज्योति बहन, स्वरहित होकर आप सबके साथ ऐसी ओतप्रोत हुईं कि किसी को एहसास ही नहीं होने दिया कि आप इतनी महान – एक प्रभुधारक विभूति हैं।

गुरुहरि काकाजी के आशीर्वचन में लिखें तो – चैतन्यों की डॉक्टर बन कर **स्त्री-पुरुष भाव से परे रहते हुए** आपने सबका व्यावहारिक-आध्यात्मिक सभी प्रकार से जतन करके उन्हें अक्षरधाम के सुख का अनुभव कराया है। कैसे भी संजोगों में आपका निर्मल प्रेम व सहजता माहौल को जीवंत बना देता; इसीलिए मुक्त आपकी ओर खींचे चले आते। अपनत्व युक्त आपकी प्रकृति हर केन्द्रों के हर मुक्तों को एहसास कराती कि ज्योति बहन हमारी हैं।

सो, आपकी ही भाँति भेदरहित दिव्यदृष्टि से सभी मुक्तों को अपना कुटुंबी मान कर प्रगट प्रभु को राज़ी करने के लिए हम तत्पर बनें – ऐसी आपके श्रीचरणों में अंतर से प्रार्थना !

क्षमाप्रार्थना

गुरुहरि काकाजी महाराज की आज्ञा से पिछले 40 वर्ष से **'भगवत् कृपा'** के माध्यम से **प.पू. गुरुजी** कथावार्ता रूपी नैवेद्य प्रदान करके, मुमुक्षुओं के व्यावहारिक व आध्यात्मिक उत्थान के लिए निरंतर प्रत्यनशील हैं।

परंतु, पिछले वर्ष बंधुजोड़ी शताब्दी की प्रवृत्तियों में व्यस्त होने के कारण **जुलाई - अगस्त** अंक के बाद 'भगवत् कृपा' से आपको लाभान्वित नहीं कर पाए, उसके लिए हम तहेदिल से क्षमाप्रार्थी हैं।

– संपादक गण

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि. 11.5.2018, शुक्रवार	—	एकादशी – व्रत
(2)	दि. 12.5.2018, शनिवार	—	**ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज की जयंती** **प.पू. गुरुजी की भागवती दीक्षा तिथि** **एवं** **अनुष्ठान शिविर का मंगल प्रारंभ (सायं 7:00 से 9:00)**
(3)	दि. 1.6.2018, शुक्रवार	—	गुरुहरि पप्पाजी महाराज का दृष्टा दिन 'गुणातीत ज्योत' – स्थापना दिन
(4)	दि. 10.6.2018, रविवार	—	एकादशी – व्रत
(5)	**दि. 12.6.2018, मंगलवार**	**—**	**गुरुहरि प.पू. काकाजी महाराज की प्राकट्य शताब्दी** **एवं** **'अनुष्ठान शिविर' की पूर्णाहुति** ***(सायं 6:30 से 9:15)***
(6)	दि. 23.6.2018, शनिवार	—	भीम एकादशी – व्रत
(7)	दि. 27.6.2018, बुधवार	—	वटसावित्री – व्रत
(8)	दि. 9.7.2018, सोमवार	—	एकादशी – व्रत
(9)	दि. 14.7.2018, शनिवार	—	रथयात्रा

शताब्दी शिविर की पूर्व तैयारियाँ...

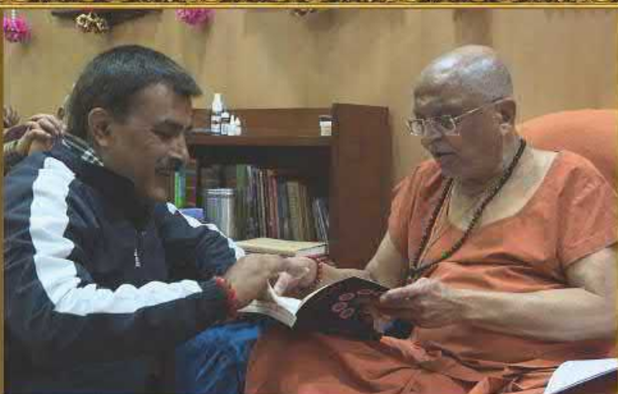

शताब्दी शिविर की पूर्व तैयारियाँ...

Air Mail **R.N.I. 28971/ 77**

'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine – Despatched Bimonthly

If undelivered please return to :— *Printer, Publisher, Editor :-*

SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI

'Taad-dev', Kãkãji Lane, Swãminãrãyan Mãrg, Ashok Vihãr-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 2730 1327

Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A 6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052